Discussion on the 150th Anniversary of The National Song ?Vande Matram?

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, आज हम सदन में हमारे राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम की 150 वर्ष की यात्रा का स्मरण कर रहे हैं। माननीय श्री बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय जी द्वारा रचित वंदे मातरम की प्रत्येक पंक्ति भारत की प्रकृति, मातृत्व, वात्सल्य, सौंदर्य और शक्ति का अद्भुत संगम है। यह गीत उस युग में आशा की ज्योति बनकर उभरा जब देश गुलामी के अंधकार से जूझ रहा था। इस गीत ने लाखों भारतीयों को अपने भीतर स्वतंत्रता का स्वपन देखने का साहस दिया। असंख्य स्वतंत्रता सेनानी फांसी के तख्ते पर चढ़ते हुए और गोलियों का सामना करते हुए, यातनाओं को सहते हुए अपने अंतिम क्षणों में भी वंदे मातरम का उद्घोष करते रहे और मातृ भूमि के चरणों में अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया। आज हम उन ज्ञात और अज्ञात सभी वीरों को प्रणाम करते है, जिनके बलिदान ने वंदे मातरम को केवल एक गीत ने राष्ट्रीय संकल्प का प्रतीक बना दिया।

वंदे मातरम की ऊर्जा आज भी उतनी प्रखर है जितनी स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में थी। अत: मैं माननीय प्रधानमंत्री जी से अनुरोध करता हूं कि वह इस विषय पर अपने विचार सदन से साझा करें।

प्रधानमंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी) : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका और सदन के सभी माननीय सदस्यों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं कि हमने इस महत्वपूर्ण अवसर पर एक सामूहिक चर्चा का रास्ता चुना है। जिस मंत्र ने, जिस जय घोष ने देश की आज़ादी के आंदोलन को ऊर्जा दी थी, प्रेरणा दी थी, त्याग और तपस्या का मार्ग दिखाया था, उस वंदे मातरम को पुण्य स्मरण करना, इस सदन में हम सभी का यह बहुत बड़ा सौभाग्य है। हमारे लिए गर्व की बात है कि वंदे मातरम के 150 वर्ष पूरे होने पर इस ऐतिहासिक अवसर के हम साक्षी बन रहे हैं।

एक ऐसा कालखंड जो हमारे सामने इतिहास की अनगिनत घटनाओं को अपने सामने लेकर आता है। यह चर्चा सदन की प्रतिबद्धता को तो प्रकट करेगी ही लेकिन आने वाली पीढ़ियों के लिए भी, दर-पीढ़ी के लिए भी शिक्षा का कारण बन सकती है, अगर हम सभी मिलकर इसका सदुपयोग करें।

आदरणीय अध्यक्ष जी, एक ऐसा कालखंड है, जब इतिहास के कई प्रेरक अध्याय फिर से हमारे सामने उजागर हुए हैं। अभी-अभी हमने हमारे संविधान के 75 वर्ष गौरवपूर्वक मनाया है। आज देश सरदार वल्लभ भाई पटेल की और भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती भी मना रहा है।

अभी-अभी हमने गुरु तेग बहादुर जी का 350वां बलिदान दिवस भी मनाया है और आज हम वंदे मातरम् की 150 वर्ष निमित्त सदन की सामूहिक ऊर्जा को उसकी अनुभूति करने का प्रयास कर रहे हैं। वंदे मातरम् 150 वर्ष की यात्रा अनेक पड़ावों से गुजरी है, लेकिन अध्यक्ष जी वंदे मातरम् को जब 50 वर्ष हुए, तब देश गुलामी में जीने के लिए मजबूर था और वंदे मातरम् के सौ साल हुए, तब देश आपातकाल की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। जब वंदे मातरम् के सौ साल का अत्यंत उत्तम पर्व था, तब भारत के संविधान का गला घोंट दिया गया था। जब वंदे मातरम् सौ साल का हुआ, तब देश भक्ति के लिए जीने मरने वाले लोगों को जेल की सलाखों के पीछे बंद कर दिया गया था। जिस वंदे मातरम् के गीत ने देश को आज़ादी की ऊर्जा

दी, उसके जब सौ साल हुए तो दुर्भाग्य से एक काला काल खंड हमारे इतिहास में उजागर हो गया। हम लोकतंत्र के गीरो में थे।

आदरणीय अध्यक्ष जी, 150 वर्ष उस महान अध्याय को, उस गौरव को पुन:स्थापित करने का अवसर है और मैं मानता हूं कि सदन ने भी और देश ने भी इस अवसर को जाने नहीं देना चाहिए। यही वंदे मातरम् है, जिसने 1947 में देश को आज़ादी दिलाई, स्वतंत्रता संग्राम का भावात्मक नेतृत्व इस वंदे मातरम् के जय घोष में था।

अध्यक्ष जी, आपके समक्ष आज जब मैं वंदे मातरम् 150 निमित्त की चर्चा आरम्भ करने के लिए खड़ा हुआ हूं, यहां कोई पक्ष-प्रतिपक्ष नहीं है क्योंकि हम सब यहां जो बैठे हैं, एक्चुअली हमारे लिए ऋण स्वीकार करने का अवसर है कि जिस वंदे मातरम् के कारण लक्षावधि लोग आजादी का आंदोलन चला रहे थे, उसी का परिणाम है कि आज हम सभी यहां बैठे हैं और इसीलिए हम सभी सांसदों के लिए, हम सभी जन प्रतिनिधियों के लिए वंदे मातरम् के ऋण स्वीकार करने का यह पावन पर्व है और इससे हम प्रेरणा लेकर वंदे मातरम् की जिस भावना ने देश की आज़ादी की जंग लड़ी, उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम पूरा देश एक स्वर से वंदे मातरम् बोल कर आगे बढ़ा। आज फिर से एक अवसर है हम सब मिलकर देश को साथ लेकर चलें। आज़ादी के दीवानों ने जो सपने देखे थे, उन सपनों को पूरा करने के लिए वंदे मातरम् 150वां वर्ष हम सभी के लिए प्रेरणा बने, हम सब की ऊर्जा बने और देश आत्मनिर्भर बने। हम वर्ष 2047 में विकसित भारत बनाकर रहें, इस संकल्प को दोहराने के लिए कि वंदे मातरम् हमारे लिए एक बहुत बड़ा अवसर है।?(व्यवधान) दादा, आपकी तबीयत तो ठीक है न। कभी-कभी इस उम्र में हो जाता है।?(व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, वंदे मातरम् की इस यात्रा की शुरूआत बंकिम चन्द्र जी ने सन् 1875 में की थी। गीत ऐसे समय लिखा गया था, जब सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद अंग्रेज सल्तनत बौखलाई हुई थी और भारत पर भांति-भांति के दबाव डाल रही थी, भांति-भांति के जुल्म कर रही थी। भारत के लोगों को अंगेजों के द्वारा मजबूर किया जा रहा था। उस समय उनका राष्ट्रीय गीत था-?God save the queen? इसको भारत के घर-घर में पहुंचाने का एक षड्यंत्र चल रहा था। ऐसे समय बंकिम दा ने चुनौती दी और ईंट का जवाब पत्थर से दिया। उसमें से वंदे मातरम् का जन्म हुआ। इसके कुछ वर्ष बाद सन् 1882 में जब उन्होंने आनंद मठ लिखा, तो इस गीत का उसमें समावेश किया गया।

आदरणीय अध्यक्ष जी, वंदे मातरम् ने उस विचार को पुनर्जीवित किया था, जो हजारों वर्षों से भारत की रग-रग में रचा-बसा था। उसी भाव को, उसी संस्कृति को, उसी परंपरा को और उन्हीं संस्कारों को उन्होंने बहुत ही उत्तम शब्दों में उत्तम भाव के साथ वंदे मातरम् के रूप में हम सबको बहुत बड़ी सौगात दी थी। वंदे मातरम् सिर्फ राजनीतिक आज़ादी की लड़ाई का मंत्र नहीं था। केवल अंग्रेज जाएं और हम खड़े हो जाएं, अपनी राह पर चलें, इतने मात्र तक ही वंदे मातरम् प्रेरित नहीं करता था। यह उससे भी कहीं आगे था। आज़ादी की लड़ाई इस मातृभूति को मुक्त कराने की जंग थी। अपनी मां भारती को उन बेड़ियों से मुक्ति दिलाने की एक पवित्र जंग थी। वंदे मातरम् की पृष्ठभूमि हम देखें, उसके संस्कार सरिता देखें, तो हमारे यहां वेदकाल से एक बात बार-बार हमारे सामने आई है। जब हम वंदे मातरम् कहते हैं, तो वेदकाल की वही बात हमें

याद आती है। वेदकाल से कहा गया है ? ?माता भूमि: पुत्रोहं पृथिव्या:? अर्थात् यह भूमि मेरी माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूं।

महोदय, यही वह विचार है जिसे प्रभु श्रीराम ने भी लंका के वैभव को छोड़ते हुए कहा था : ?जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी? । ?वन्दे मातरम्? इसी महान सांस्कृति परम्परा का एक आधुनिक अवतार है।

महोदय, बंकिम दा ने जब ?वन्दे मातरम्? की रचना की तो स्वाभाविक ही वह स्वतंत्रता आन्दोलन का स्वर बन गया। पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण, ?वन्दे मातरम्? हर भारतीय का संकल्प बन गया। इसलिए ?वन्दे मातरम्? की स्तुति में लिखा गया था :

?मातृभूमि स्वतंत्रता की वेदिका पर मोदमय है,

स्वार्थ का बलिदान है यह शब्द है ?वन्दे मातरम्?,

है सजीवन मंत्र भी, यह विश्वविजयी मंत्र भी,

शक्ति का आह्वान है, यह शब्द ?वन्दे मातरम्?,

उष्णशोणित से लिखो, वक्षस्थली को चीरकर,

वीर का अभिमान है यह शब्द ?वन्दे मातरम्? ।?

महोदय, कुछ दिन पूर्व जब ?वन्दे मातरम् 150? का आरम्भ हो रहा था, तो मैंने उस आयोजन में कहा था कि ?वन्दे मातरम्? में हजारों वर्ष की सांस्कृतिक ऊर्जा भी थी, उसमें आज़ादी का जज्बा भी था और उसमें आज़ाद भारत का विजन भी था। अंग्रेजों के उस दौर में एक फैशन हो गया था कि भारत को कमजोर, निकम्मा, आलसी, कर्महीन, इस प्रकार भारत को जितना नीचा दिखा सकें, यह एक फैशन बन गया था और उसमें हमारे यहां भी, जिन्होंने तैयार किए थे, वे लोग भी वही भाषा बोलते थे। तब बंकिम दा ने उस हीन भावना को झकझोरने के लिए और सामर्थ्य का परिचय कराने के लिए ?वन्दे मातरम्? के, भारत के सामर्थ्यशाली स्वरूप को प्रकट करते हुए आपने लिखा था :

?त्वं ही दुर्गा दशप्रहरणधारिणी कमला कमलदलविहारिणी वाणी विद्यादायिनी,

नमामि त्वाम् नमामि कमलां अमलां अतुलां सुजलां सुफलां मातरम्, ?वन्दे मातरम्? ।

?अर्थात् भारत माता ज्ञान और समृद्धि की देवी भी है और दुश्मनों के सामने अस्त्र, शस्त्र धारण करने वाली चंडी भी है ।

महोदय, ये शब्द, यह भाव, यह प्रेरणा गुलामी की हताशा में हम भारतीयों को हौंसला देने वाले थे। इन वाक्यों ने तब करोड़ों देशवासियों को यह अहसास कराया कि यह लड़ाई किसी जमीन के टुकड़े के लिए नहीं है। यह लड़ाई सिर्फ सत्ता के

सिंहासन को कब्जा करने के लिए नहीं है।

यह गुलामी की बेड़ियों को मुक्त कर, हजारों साल की जो महान परम्पराएं थीं, महान संस्कृति थी, जो गौरवपूर्ण इतिहास था, उसको फिर से पुनर्जन्म कराने का संकल्प था।

आदरणीय अध्यक्ष जी, वंदे मातरम् का जो जन-जन से जुड़ाव था, इससे हमारे स्वतंत्रता संग्राम की एक लंबी गाथा अभिव्यक्त होती है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, जब भी, जैसे किसी नदी की चर्चा होती है, चाहे सिन्धु हो, सरस्वती हो, कावेरी हो, गोदावरी हो, गंगा हो, यमुना हो, उस नदी के साथ एक सांस्कृतिक धारा प्रवाह, एक विकास यात्रा का धारा प्रवाह, एक जन-जीवन की यात्रा का प्रवाह उसके साथ जुड़ जाता है, लेकिन क्या कभी किसी ने सोचा है कि आजादी की जंग के हर पड़ाव, वह पूरी यात्रा वंदे मातरम् की भावनाओं से गुजरती थी, उसके तट पर पल्लवित होता था। ऐसा भाव काव्य शायद दुनिया में कहीं उपलब्ध नहीं होगा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, अंग्रेज समझ चुके थे कि सन् 1857 के बाद लंबे समय तक भारत में टिकना उनके लिए मुश्किल लग रहा था और वे जिस प्रकार से अपने सपने लेकर आए थे, ? (व्यवधान) तब उनको लगा कि जब तक भारत को बांटेंगे नहीं, ? (व्यवधान) जब तक भारत को टुकड़ों में नहीं बांटेंगे, ? (व्यवधान) भारत में ही लोगों को एक-दूसरे से लड़ाएंगे नहीं, तब तक यहां राज करना मुश्किल है। ? (व्यवधान) अंग्रेजों ने 'बांटो और राज करो', इस रास्ते को चुना और उन्होंने बंगाल को इसकी प्रयोगशाला बनाया। क्योंकि अंग्रेज भी जानते थे, वह एक वक्त था, जब बंगाल का बौद्धिक सामर्थ्य देश को दिशा देता था, देश को ताकत देता था, देश को प्रेरणा देता था और इसलिए अंग्रेज भी चाहते थे कि बंगाल का यह जो सामर्थ्य है, वह पूरे देश की शक्ति का एक प्रकार से केन्द्र बिंदु है। इसलिए अंग्रेजों ने सबसे पहले बंगाल के टुकड़े करने की दिशा में काम किया और अंग्रेजों का मानना था कि एक बार बंगाल टूट गया, तो यह देश भी टूट जाएगा और वे यावच्चंद्रदिवाकरौ और राज करते रहेंगे, ये उनकी सोच थी। सन् 1905 में अंग्रेजों ने बंगाल का विभाजन किया, लेकिन जब अंग्रेजों ने सन् 1905 में यह पाप किया, तो वंदे मातरम् चट्टान की तरह खड़ा रहा। बंगाल की एकता के लिए वंदे मातरम् गली-गली का नाद बन गया था और वही नारा प्रेरणा देता था।

अंग्रेजों ने बंगाल विभाजन के साथ ही भारत को कमजोर करने के बीज को और अधिक बोने की दिशा पकड़ ली थी, लेकिन ?वंदे मातरम्? एक स्वर, एक सूत्र के रूप में अंग्रेजों के लिए चुनौती बनता गया, देश के लिए चट्टान बनता गया।

आदरणीय अध्यक्ष जी, बंगाल का विभाजन तो हुआ, लेकिन एक बहुत बड़ा स्वदेशी आंदोलन खड़ा हो गया। तब ?वंदे मातरम्? हर तरफ गूंज रहा था। अंग्रेज समझ गए थे कि बंगाल की धरती से निकला बंकिम दा का यह भाव सूत्र??.? (व्यवधान)

प्रो. सौगत राय (दम दम) : आप ?बंकिम दा? बोल रहे हैं! आपको ?बंकिम बाबू? बोलना चाहिए।? (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : ?बंकिम बाबू? बोलूंगा।

थैंक्यू दादा, आपकी भावनाओं का मैं आदर करता हूं।? (व्यवधान) आपको तो ?दादा? कह सकता हूं न, या उसमें भी आपको एतराज हो जाएगा?? (व्यवधान)

अध्यक्ष जी, बंकिम बाबू ने यह जो भाव बीज तैयार किया था, उनके भाव बीज के द्वारा उन्होंने अंग्रेजों को हिला दिया। यह देखिए कि कितनी कमजोरी होगी और इस गीत की कितनी ताकत होगी कि अंग्रेजों को उस पर कानूनी रूप से प्रतिबंध लगाने को मजबूर होना पड़ा। उसके गाने पर सजा थी, छापने पर सजा थी। इतना ही नहीं, ?वंदे मातरम्? शब्द बोलने पर भी सजा होती थी। इतने कठोर कानून लागू कर दिए गए थे।

हमारे देश की आज़ादी के आंदोलन में सैंकड़ों महिलाओं ने नेतृत्व किया, लक्षावधि महिलाओं ने योगदान दिया। मैं बारीसाल की एक घटना का जिक्र करना चाहता हूं। बारीसाल में ?वंदे मातरम्? गाने पर सर्वाधिक जुल्म हुए। आज बारीसाल भारत का हिस्सा नहीं रहा। उस समय बारीसाल की हमारी माताएं, बहनें, बच्चे ?वंदे मातरम्? के स्वाभिमान के लिए मैदान में उतरे थे। उस पर प्रतिबंध के विरोध में लड़ाई के मैदान में उतरे थे और तब बारीसाल की एक वीरांगना श्रीमती सरोजिनी बोस ने कहा था कि ?वंदे मातरम्? पर जो यह प्रतिबंध लगा है, तो जब तक यह प्रतिबंध नहीं हटता है, तब तक मैं अपनी यह चूड़ियां, जो पहनती हूं, उन्हें निकाल दूंगी। भारत में वह एक ज़माना था, जब चूड़ी निकालना एक महिला के जीवन की बहुत बड़ी घटना होती थी। लेकिन, उनके लिए ?वंदे मातरम्? की वह भावना थी, जिसके लिए उन्होंने कहा कि जब तक ?वंदे मातरम्? पर से प्रतिबंध नहीं हटेगा, तब तक मैं अपने सोने की चूड़ियाँ दोबारा नहीं धारण करूंगी। ऐसा उन्होंने व्रत ले लिया था।

इसमें हमारे देश के बालक भी पीछे नहीं रहे थे। उन्हें कोड़े की सजा होती थी। छोटी-छोटी उम्र में उन्हें जेलों में बंद कर दिया जाता था। उन दिनों खासकर बंगाल की गलियों में लगातार ?वंदे मातरम्? के लिए प्रभात फेरियाँ निकलती थीं। इसने अंग्रेजों की ?नाक में दम? कर दिया था। उस समय बंगाल में एक गीत गूंजता था ?

Gurudeb Rabindra Nath Tagore wrote, "Ek Sutre Badhiyachi Sahasrati mon, ek Karje Sopiyachi Sahashro Jiban. Vande Mataram." (We have bound a thousand minds with one thread, and dedicated a thousand lives to one cause? Vande Mataram.

अर्थात् ?हे माँ, संसार में तुम्हारा काम करते और ?वंदे मातरम्? कहते जीवन भी चला जाए, तो वह जीवन भी धन्य है? - यह बंगाल की गलियों में बच्चे कह रहे थे।

यह गीत उन बच्चों की हिम्मत का स्वर था और उन बच्चों की हिम्मत ने देश को हिम्मत दी थी। बंगाल की गलियों से निकली आवाज देश की आवाज बन गई थी। वर्ष 1905 में हरितपुर के गांव में बहुत छोटी-छोटी उम्र के बच्चे जब वंदे मातरम् के नारे लगा रहे थे, तब अंग्रेजों ने बेरहमी से उन पर कोड़े मारे थे। उन्होंने अनेक प्रकार से जीवन और मृत्यु के बीच लड़ाई लड़ने के लिए मजबूर कर दिया था, इतना अत्याचार हुआ था। वर्ष 1906 में नागपुर में नील सिटी हाई स्कूल के उन बच्चों पर भी अंग्रेजों ने ऐसे ही जुल्म किए थे। गुनाह यही था कि वे एक स्वर से वंदे मातरम् बोल कर खड़े हो गए थे। उन्हें वंदे

मातरम् के लिए मंत्र का महत्व है और उन्होंने अपनी ताकत से सिद्ध करने का प्रयास किया था। हमारे जाबांज सपूत बिना किसी डर के फांसी के तख्ते पर चढ़ते थे और आखिरी सांस तक वंदे मातरम्, वंदे मातरम्, वंदे मातरम्- यही उनका भाव घोष रहता था। खुदीराम बोस, मदन लाल डींगरा, राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाह खान, रोशन सिंह, राजेंद्र नाथ लाहिड़ी जैसे अनगिनत हैं, जिन्होंने वंदे मातरम् कहते-कहते फांसी के फंदे को अपने गले पर लगाया था। आप देखिए कि यह अलग-अलग जेलों में होता था, अलग-अलग इलाकों में होता था। प्रक्रिया करने वाले चेहरे अलग थे, लोग अलग थे। जिन पर जुल्म हो रहा था, उनकी भाषा भी अलग थी, लेकिन ?एक भारत-श्रेष्ठ भारत?, इन सब का मंत्र एक ही था - वंदे मातरम्।

चटगांव की स्वराज क्रांति, जिन युवाओं ने अंग्रेजों को चुनौती दी, वे भी इतिहास के चमकते हुए नाम हैं। हरगोपाल पाल, पुलिन विकास घोष, त्रिपुर सेन; इन सबने देश के लिए अपना बलिदान दिया। मास्टर सूर्यसेन को वर्ष 1934 में तब फांसी दी गई, जब उन्होंने अपने साथियों को एक पत्र लिखा, उस पत्र में एक ही शब्द की गूंज थी और वह शब्द था - वंदे मातरम्।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हम देशवासियों को गर्व होना चाहिए। दुनिया के इतिहास में कहीं पर भी ऐसा कोई काव्य नहीं हो सकता, ऐसा कोई भाव गीत नहीं हो सकता, जो सदियों तक एक लक्ष्य के लिए कोटि-कोटि जनों को प्रेरित करता हो और जीवन आहूत करने के लिए निकल पड़ते हो, दुनिया में ऐसा कोई भाव गीत नहीं हो सकता है, जो वंदे मातरम् है। पूरे विश्व को पता होना चाहिए कि गुलामी के कालखंड में भी ऐसे लोग हमारे यहां पैदा होते थे, जो इस प्रकार की भाव गीत की रचना कर सकते थे। यह विश्व के लिए अजूबा है। हमें गर्व से कहना चाहिए, तब दुनिया भी मानना शुरू करेगी।

यह हमारी स्वतंत्रता का मंत्र था, ये बलिदान का मंत्र था, ये ऊर्जा का मंत्र था, ये सात्विकता का मंत्र था, ये समर्पण का मंत्र था, ये त्याग और तपस्या का मंत्र था। ये संकटों को सहने का सामर्थ्य देने का मंत्र था और वह मंत्र ?वंदे मातरम्? था। इसलिए गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने लिखा था ?

??Ek sutre bandhiyachi sohossroti mon Ek karje sonpeyachi sohossro jibon Bonde mataram.?? अर्थात् एकसूत्र में बंधे हुए सहस्त्र मन, एक ही कार्य में अर्पित सहस्त्र जीवन, वंदे मातरम्। यह रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने लिखा था।

आदरणीय अध्यक्ष जी, उसी काल खंड में वंदे मातरम् की रिकॉर्डिंग दुनिया के अलग-अलग भागों में पहुँची और लंदन में जो क्रांतिकारियों की एक प्रकार से तीर्थ भूमि बन गया था, वह लंदन का इंडिया हाउस, वहाँ वीरसावरकर जी ने वंदे मातरम् गीत गाया। वहाँ यह गीत बार-बार गूँजता था। देश के लिए जीने-मरने वालों के लिए वह एक बहुत बड़ा प्रेरणा का अवसर रहता था। उसी समय विपिन चंद्र पाल और महर्षि अरविन्द घोष ने अखबार निकाले, उस अखबार का नाम भी उन्होंने वंदे मातरम् रखा यानि डगर-डगर पर अंग्रेजों की नींद हराम करने के लिए वंदे मातरम् काफी हो जाता था, इसलिए उन्होंने यह नाम रखा था। अंग्रेजों ने अखबारों पर रोक लगा दी, तो मैडम भीखाजी कामा ने पेरिस में एक अखबार निकाला और उसका नाम उन्होंने वंदे मातरम् रखा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, वंदे मातरम् ने भारत को स्वावलंबन का रास्ता भी दिखाया। उस समय माचिस की डिबिया से लेकर बड़े-बड़े शिप्स पर भी वंदे मातरम् लिखने की परम्परा बन गई और बाहरी कंपनियों को चुनौती देने का एक माध्यम बन गया, स्वेदशी का एक मंत्र बन गया। आजादी का मंत्र स्वेदशी के मंत्र की तरफ विस्तार होता गया।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं एक और घटना का जिक्र भी करना चाहता हूँ। वर्ष 1907 में जब वी. ओ. चिदम्बरम पिल्लई, उन्होंने जब स्वदेशी कंपनी का जहाज बनाया, तो उस पर भी वंदे मातरम् लिखा था। राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्यम भारती ने वंदे मातरम् का तमिल में अनुवाद किया, स्तुति गीत लिखे। उनके कई तमिल देशभक्ति गीतों में वंदे मातरम् की श्रद्धा साफ-साफ नजर आती है। शायद सभी लोगों को, हो सकता है कि तमिलनाडु के लोगों को पता हो, लेकिन सभी लोगों को इस बात का पता न हो कि भारत का ध्वज गीत भी सुब्रह्मण्यम भारती ने ही लिखा था। उस ध्वज गीत का वर्णन जिस पर वंदे मातरम् लिखा हुआ था, तमिल में इस ध्वज गीत का शीर्षक था-

?*Thaayin manikkodi pareer. Athai thaazhnthu paninthu*

pukazhnthida vareer. ?

अर्थात् देश प्रेमियों दर्शन कर लो, सविनय अभिनंदन कर लो। मेरी मां की दिव्य ध्वजा का वंदन कर लो। आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं आज इस सदन में वंदे मातरम् पर महात्मा गांधी की क्या भावनाएं थीं, वह भी रखना चाहता हूं। दक्षिण अफ्रीका से प्रकाशित एक साप्ताहिक पत्रिका इंडियन ओपिनियन निकलती थी। इस इंडियन ओपिनियन में महात्मा गांधी ने 2 दिसम्बर 1905 को जो लिखा था, मैं उसको कोट कर रहा हूं। महात्मा गांधी ने लिखा था - "गीत वंदे मातरम्, जिसे बंकिम चंद्र ने रचा है, वह पूरे बंगाल में अत्यंत लोकप्रिय हो गया है। स्वदेशी आंदोलन के दौरान बंगाल में विशाल सभाएं हुई, जहां लाखों लोग इकट्ठा हुए और बंकिम चंद्र का यह गीत गाया।" गांधी जी आगे जो लिखते हैं, यह बहुत महत्वपूर्ण है। यह वर्ष 1905 की बात है। वह लिखते हैं - " यह गीत इतना लोकप्रिय हो गया है, जैसे ये हमारा नेशनल एंथम बन गया है। इसकी भावनाएं महान हैं और यह अन्य राष्ट्रों के गीतों से अधिक मधुर है। इसका एकमात्र उद्देश्य हममें देशभक्ति की भावना जगाना है। यह भारत को मां के रूप में देखता है और उसकी स्तुति करता है।"

अध्यक्ष जी, जो वंदे मातरम् वर्ष 1905 में महात्मा गांधी को नेशनल एंथम के रूप में दिखता था, देश के हर कोने में, हर व्यक्ति के जीवन में, जो भी देश के लिए जीता-जागता था, उन सबके लिए वंदे मातरम् की ताकत बहुत बड़ी थी। वंदे मातरम् इतना महान था, जिसकी भावना इतनी महान थी, तो फिर पिछली सदी में इसके साथ इतना बड़ा अन्याय क्यों हुआ?

मोहम्मद अली जिन्ना ने लखनऊ से 15 अक्टूबर, 1937 को 'वंदे मातरम्' के विरुद्ध का नारा बुलंद किया। फिर, कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू को अपना सिंहासन डोलता दिखा। बजाय, मुस्लिम लीग के आधारहीन बयानों को तगड़ा जवाब देते, करारा जवाब देते, मुस्लिम लीग के बयानों की निंदा करते और 'वंदे मातरम्' के प्रति खुद की तथा कांग्रेस पार्टी की भी निष्ठा को प्रकट करते, लेकिन उलटा हुआ। वे ऐसा क्यों करें, उन्होंने पूछा ही नहीं और न जाना।

उन्होंने 'वंदे मातरम्' की ही पड़ताल शुरू कर दी। ? (व्यवधान) जिन्ना के विरोध के पांच दिन बाद ही 20 अक्टूबर को नेहरू जी ने नेताजी सुभाष बाबू को चिट्ठी लिखी। उस चिट्ठी में जिन्ना की भावना से नेहरू जी ने अपनी सहमति जताते हुए कहा कि 'वंदे मातरम्', यह उन्होंने सुभाष बाबू को लिखा है, 'वंदे मातरम्' की 'आनंद मठ' वाली पृष्ठभूमि मुसलमानों को इरिटेट कर सकती है। मैं नेहरू जी का कोट करता हूं। नेहरू जी कहते हैं - 'मैंने 'वंदे मातरम्' गीत का बैकग्राउंड पढ़ा है। नेहरू जी फिर लिखते हैं कि यह जो बैकग्राउंड है, इससे मुस्लिम भड़केंगे।'

साथियों, इसके बाद कांग्रेस की तरफ से बयान आया कि 26 अक्टूबर से कांग्रेस कार्य समिति की बैठक कोलकाता में होगी, जिसमें 'वंदे मातरम्' के उपयोग की समीक्षा की जाएगी। बंकिम बाबू का बंगाल, बंकिम बाबू का कोलकाता, उसको चुना गया और वहां पर समीक्षा करना तय किया। पूरा देश हतप्रभ था, पूरा देश हैरान था। पूरे देश में देशभक्तों ने इस प्रस्ताव के विरोध में देश के कोने-कोने में प्रभात फेरियां निकालीं, 'वंदे मातरम्' गीत गया, लेकिन देश का दुर्भाग्य की 26 अक्टूबर को कांग्रेस ने 'वंदे मातरम्' पर समझौता कर लिया। ? (व्यवधान) 'वंदे मातरम्' के टुकड़े करने के फैसले में 'वंदे मातरम्' के टुकड़े कर दिए। उस फैसले के पीछे नकाब यह पहना गया, चोला यह पहना गया कि यह तो सामाजिक सद्भाव का काम है। लेकिन, इतिहास इस बात का गवाह है कि कांग्रेस ने मुस्लिम लीग के सामने घुटने टेक दिए। वह मुस्लिम लीग के दबाव में किया। ? (व्यवधान) कांग्रेस का यह तुष्टिकरण की राजनीति को साधने का एक तरीका था।

आदरणीय अध्यक्ष जी, तुष्टिकरण की राजनीति के दबाव में कांग्रेस 'वंदे मातरम्' के बंटवारे के लिए झुकी।

<u>13.00 hrs</u>

इसलिए कांग्रेस को एक दिन भारत के बंटवारे के लिए झुकना पड़ा।? (व्यवधान) मुझे लगता है कि कांग्रेस ने आउटसोर्स कर दिया है। दुर्भाग्य से कांग्रेस की नीतियां वैसी की वैसी ही हैं और इतना ही नहीं, आईएनसी चलते-चलते एमएमसी हो गया है। आज भी कांग्रेस और उसके साथी और जिन-जिन के नाम के साथ कांग्रेस जुड़ा हुआ है ?वंदे मातरम्? पर विवाद खड़ा करने की कोशिश करते हैं।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, किसी भी राष्ट्र का चरित्र, उसकी जीवटता उसके अच्छे कालखंड से ज्यादा जब चुनौतियों का कालखंड होता है, जब संकटों का कालखंड होता है, तब प्रकट होता है, उजागर होता है और सच्चे अर्थों में कसौटी से कसा जाता है। जब कसौटी का काल आता है, तभी यह सिद्ध होता है कि हम कितने दृढ़ हैं, कितने सशक्त हैं, कितने सामर्थ्यवान हैं। सन् 1947 में देश आजाद होने के बाद देश की चुनौतियां बदलीं, देश की प्राथमिकताएं बदलीं, लेकिन देश का चरित्र, देश की जीवटता वही रही, वही प्रेरणा मिलती रही। भारत पर जब-जब संकट आए, देश हर बार ?वंदे मातरम्? की भावना के साथ आगे बढ़ा है। बीच का कालखंड कैसा गया, उसे जाने दीजिए, लेकिन आज भी जब 15 अगस्त और 26 जनवरी की बात आती है, ?हर घर तिरंगा? की बात आती है, तो चारों तरफ वही भाव दिखता है, तिरंगा झंडा फहरते हुए दिखता है। एक जमाना था, जब देश पर खाद्य का संकट आया, वही ?वंदे मातरम्? का भाव था, मेरे देश के किसानों ने अन्न के भण्डार भर दिए, इसके पीछे का भाव ?वंदे मातरम्? ही है। जब देश की आजादी को कुचलने की कोशिश हुई, संविधान की पीठ पर छुरा भोंक दिया गया, आपातकाल थोप दिया गया, तो यही ?वंदे मातरम्? की ताकत थी कि देश एक साथ खड़ा हुआ

और परास्त करके रहा। देश पर जब भी युद्ध थोपे गए, देश पर जब भी संघर्ष की नौबत आयी, तो यही ?वंदे मातरम्? का भाव था। देश का जवान सीमाओं पर अड़ गया और माँ भारती का झंडा फहराता रहा और विजयश्री प्राप्त करता रहा। जब कोरोना जैसा वैश्विक महासंकट आया, यही देश उसी भाव से खड़ा हुआ, उसको भी परास्त करके आगे बढ़ गया।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यह राष्ट्र की शक्ति है, यह राष्ट्र को भावनाओं से जोड़ने वाला सामर्थ्यवान एक ऊर्जा प्रवाह है, यह चेतना प्रवाह है, यह संस्कृति की अविरल धारा का प्रतिबिम्ब है, उसका प्रकटीकरण है। यह ?वंदे मातरम्? सिर्फ स्मरण करने का काल नहीं है, एक नई ऊर्जा, नई प्रेरणा लेने का काल है और हम उसके प्रति समर्पित होते चलें। मैंने पहले ही कहा था कि हम लोगों पर ?वंदे मातरम्? का कर्ज है, यह वही ?वंदे मातरम्? है, जिसने वह रास्ता बनाया, जिस रास्ते से हम यहां पहुंचे हैं।

भारत हर चुनौतियों को पार करने में समर्थ है। वंदे मातरम् के भाव की वह ताकत है। वंदे मातरम् सिर्फ गीत या भाव गीत नहीं, यह हमारे लिए प्रेरणा है, राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों के लिए हमें झकझोरने वाला काम है, इसलिए हमें निरंतर इसको करते रहना होगा। हम आत्मनिर्भर भारत का सपना लेकर चल रहे हैं, उसको पूरा कर रहे हैं। वंदे मातरम् हमारी प्रेरणा है। हम स्वदेशी आंदोलन को ताकत देना चाहते हैं। समय बदला होगा, रूप बदले होंगे, लेकिन पूज्य गांधी ने जो भाव व्यक्त किया था, उस भाव की ताकत आज भी मौजूद है और वंदे मातरम् हमें जोड़ता है।

देश के महापुरुषों का स्वतंत्र भारत का सपना था, देश की आज की पीढ़ी का समृद्ध भारत का सपना है। आज़ाद भारत के सपने को वंदे मातरम् की भावना ने सींचा था। समृद्ध भारत के सपने को वंदे मातरम् की भावना सींचेगी। उसी भावना को लेकर हमें आगे चलना है। हमें आत्मनिर्भर भारत बनाना है। वर्ष 2047 में देश विकसित भारत बनकर रहेगा। आज़ादी के 50 साल पहले कोई आज़ाद भारत का सपना देख सकता था, तो 25 साल पहले हम भी तो समृद्ध भारत का सपना देख सकते हैं, विकसित भारत का सपना देख सकते हैं और इस सपने के लिए अपने आपको खपा भी सकते हैं। इसी मंत्र और इसी संकल्प के साथ वंदे मातरम् हमें प्रेरणा देता रहे, वंदे मातरम् का हम रण स्वीकार करें, वंदे मातरम् की भावना को लेकर चलें, देशवासियों को साथ लेकर चलें। हम सब मिलकर चलें। इस सपने को पूरा करें। इसी एक भाव के साथ इस चर्चा का आज आरम्भ हो रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि दोनों सदनों में देश के अंदर वह भाव भरने वाला कारण बनेगा, देश को प्रेरित करने वाला कारण बनेगा, देश की नई पीढ़ी को ऊर्जा देने का कारण बनेगा।

इन्हीं शब्दों के साथ, आपने मुझे अवसर दिया, मैं आपका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्, वंदे मातरम्।

श्री गौरव गोगोई (जोरहाट) : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं वंदे मातरम् की 150वीं जयन्ती पर इस महत्वपूर्ण चर्चा में भाग लेने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं अपने वक्तव्य के शुरुआत में बंगाल की उस पवित्र भूमि को नमन करना चाहता हूं, जिस भूमि

से ईश्वर चन्द्र विद्यासागर आए, राजा राम मोहन राय जी आए, बंकिम चंद्र चटर्जी आए, स्वामी विवेकानंद जी आए, अरविंद घोष जी आए, खुदीराम बोस आए, कवि नसरुल इस्लाम जी आए, रवीन्द्र नाथ टैगोर जी आए और सुभाष चन्द्र बोस जी आए। वाकई में बंगाल की इस पवित्र भूमि में एक अद्भुत ताकत है। इस भूमि ने देश को न सिर्फ हमारा राष्ट्रगान दिया, बल्कि राष्ट्रगान के साथ राष्ट्रगीत भी दिया। इस समय स्वतंत्रता सेनानियों का उल्लेख किया गया, स्वतंत्रता संग्राम का उल्लेख किया गया। उस समय के कवि, लेखक, जिन्होंने ऐसे शब्दों के प्रयोग किए, ऐसे गीत रचे, ऐसी कविताएं रचीं, जिन गीतों के साथ, जिन शब्दों की प्रेरणा के साथ लाखों स्वतंत्रता सेनानियों को अंग्रेजों का जुल्म सहने की ताकत मिली। वे ऐसे शब्द थे, ऐसे गीत थे - वंदे मातरम्, रवीन्द्र नाथ टैगोर जी के Where the Mind is Without Fear, वह गीत झंडा ऊंचा रहे हमारा। ?सरफरोशी की तमन्ना?, ?विद्रोह?, ?इंकलाब जिंदाबाद? गीत और स्लोगन - ?करो या मरो?, ?जय हिंद?, ?सत्यमेव जयते?, ?भारत छोड़ो? जैसे कई नारे थे, कई गीत थे, इन गीतों तथा इन शब्दों ने स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय समाज को ताकत दी।

वंदे मातरम् के इतिहास और जन्म की बात आदरणीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने कही है। हां, मंगल पांडे के विद्रोह की विफलता के बाद भारत में बैचेनी थी क्योंकि अंग्रेजों का जुल्म बढ़ गया था। जब पूरे बंगाल में भाषा के संदर्भ में क्रांति चल रही थी, इस वक्त में यानी वर्ष 1872 में बंकिम चन्द्र चटर्जी जी इसकी एक महत्वपूर्ण धारा थे। इस क्रांति में राजा राम मोहन राय जी थे, ब्रहमो समाज था और उन्होंने वर्ष 1872 में पहली दो पंक्तियां लिखीं जो आज हमारे राष्ट्रगीत का भाग हैं। वर्ष 1872 और वर्ष 1875 में, लगभग नौ-दस सालों बाद ?आनंद मठ? नॉवल लिखा और इन दो पंक्तियों में और कई पंक्तियां जोड़ीं। ?आनंद मठ? उस संदर्भ में लिखा गया, जिस समय ईस्ट इंडिया कंपनी विभिन्न प्रकार के टैक्स किसानों पर लगा रही थी और इसके कारण उनका जीना बहुत मुश्किल हो गया था। ?आनंद मठ? में यह गीत उल्लिखित था, वास्तव में नारा कब बना? इसकी शुरूआत इसी गीत से हुई थी। इसका इवोल्यूशन, इसका पुनर्जन्म एक राजनैतिक नारे द्वारा वर्ष 1905 में हुआ।

वर्ष 1905 में वायसराय कर्जन में बंगाल के दो भाग करके सोचा कि इससे बंगाल और बंगाल द्वारा पूरे भारत को गहरी चोट पहुंचेगी और यही उनकी गलती थी। अगर मैं कहूं कि आधुनिक स्वतंत्रता संग्राम में वह कौन सा पल था, जिस पल से भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक नई ताकत आई, तो वह वर्ष 1905 का स्वदेशी आंदोलन ही था। स्वदेशी आंदोलन बंगाल के विभाजन के बाद ही उजागर हुआ था। इतिहास में हमने पढ़ा है कि अरबिंदो घोष जी को ताकत मिली, ?वंदे मातरम? द्वारा युगांतर पार्टी में मैसेज गया कि भारत को अब नई दृष्टि, नई ताकत और नए मंथन से विद्रोह करना होगा और यही बात आने वाले समय में पूरे प्रदेश में व्यापक रूप से फैल गई।

?वंदे मातरम? की यात्रा का अध्ययन करना बहुत जरूरी है। बंगाल में भाषा की क्रांति से निकला यह गीत, जिसमें दस वर्ष बाद आनंद मठ नॉवल में और पंक्तियां जोड़ी गई थीं, वर्ष 1905 में बंगाल में राष्ट्रीय नारा बना। इससे लोगों को प्रेरणा मिली और यह पूरे भारत में व्यापक रूप से प्रचारित हुआ। इसके प्रचार के कई माध्यम थे, आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने ग्रामोफोन का उल्लेख किया लेकिन पैम्फलेट और पब्लिकेशन की भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका थी।

पैम्फलेट और पब्लिकेशन के द्वारा बंगाल का यह नारा पंजाब, महाराष्ट्र और मद्रास गया। आदरणीय सुब्रहमण्यम भारती जी ने वर्ष 1905 में इसका ट्रांसलेशन किया, फिर वर्ष 1908 में इसका ट्रांसलेशन हुआ। कई स्थानों पर यह कन्नड़, तमिल, तेलुगु आदि अलग-अलग भाषाओं में ?आनन्द मठ? में आयी। ?आनन्द मठ? के द्वारा ?वंदे मातरम्? की जो व्याख्या की गई है, इसका जो मूल भाव है, वह पूरे देश में फैला।

13.16 hrs (Shri Jagdambika Pal *in the Chair*)

यहाँ पर खुदीराम बोस जी का उल्लेख किया गया। जिस प्रकार से, कोर्ट के ट्रायल्स हुए, सिर्फ खुदीराम बोस जी का ही नहीं, बल्कि अरविन्द घोष जी के कोर्ट ट्रायल्स से भी पूरे देश में यह दृश्य दिख रहा है कि किस प्रकार से ?वंदे मातरम्? के द्वारा हमारे स्वतंत्रता सेनानी ब्रिटिश सरकार का विरोध कर रहे थे। यह केवल स्वतंत्रता सेनानियों के बीच ही नहीं रहा, बल्कि व्यापक रूप से यह छात्रों के बीच भी समा गया।

राजामुंद्री आर्ट्स कॉलेज में ?वंदे मातरम्? का उद्घोष किया गया, काकीनाड़ा आर्ट्स कॉलेज में किया गया। यह गोदावरी, कृष्णा और गुंटूर तक फैला। उस समय के मायमेनसिंह सिटी कॉलेज तक पहुंचा। यही नहीं, वर्ष 1907 में, जब हमारा ?तिरंगा? पूरे विश्व में गया, तो उसमें भी ?वंदेमातरम्? उल्लिखित था।

कला के द्वारा भी इसे प्रदर्शित किया गया। अवनींद्रनाथ टैगोर ने इससे प्रेरणा लेते हुए एक चित्र बनाया था। इस तरह से, कहीं न कहीं पूरे स्वतंत्रता संग्राम में कला और साहित्य का एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

जैसा कि कहा गया, एक राजनीतिक नारे से राष्ट्रीय नारे के रूप में इसे तवज्जो मिलने लगी। ?वंदे मातरम्? केवल एक राजनीतिक नारा ही नहीं, बल्कि इसे राष्ट्रीय गीत के रूप में देखा जाए, इस तरह की तवज्जो, यह महत्व अगर किसी राजनीतिक दल ने इसे दिया, तो वह कांग्रेस पार्टी ने दिया। कांग्रेस पार्टी ने, जब 1905 का स्वदेशी आन्दोलन भी नहीं हुआ था, तो वर्ष 1896 में कलकत्ता में कांग्रेस के अधिवेशन में गुरुदेव रबींद्रनाथ टैगोर जी ने स्वयं मधुर वाणी में ?वंदे मातरम्? को गाया था। बाद में, उन्होंने पंडित नेहरू को पत्र के माध्यम से लिखा- ?The privilege of originally setting the first stanza of Vande Mataram was to the tune was mine, when the author was still alive ?

यह बताने की बहुत जरूरत है कि रबींद्रनाथ टैगोर जी बंकिमचंद्र चटर्जी से बहुत करीब से मिले और उन्होंने भी रबींद्रनाथ टैगोर जी को काफी समर्थन दिया। वर्ष 1905 में स्वदेशी आन्दोलन हुआ और वर्ष 1905 में बनारस में कांग्रेस का अधिवेशन भी हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री जी.के. गोखले साहब कर रहे थे। वर्ष 1905 के उस कांग्रेस अधिवेशन में, सरला देवी चौधरी ने ?वंदे मातरम्? का उद्घोष किया। वर्ष 1905 के बनारस के कांग्रेस अधिवेशन में, उन्होंने ?वंदे मातरम्? में एक महत्वपूर्ण संशोधन लाये। वह संशोधन क्या था? वह संशोधन जनसंख्या थी। जो ऑरिजनल ?वंदे मातरम्? था, उसमें जिस जनसंख्या का उल्लेख किया गया था, वह सात करोड़ थी। उस समय बंकिमचंद्र चटर्जी जिस संदर्भ में लिख रहे थे, वे बंगाल के संदर्भ में लिख रहे थे, जिसमें बिहार, ओडिशा और असम भी था। इसलिए उस संदर्भ में उन्होंने सात करोड़ लिखा था।

लेकिन जब वर्ष 1905 में, बनारस का अधिवेशन हुआ, तो उसमें सरला देवी चौधरी जी ने उस सात करोड़ को 30 करोड़ करके पूरे राष्ट्र की तवज्जो ?वंदे मातरम्? को दी।

वैसे ही महात्मा गांधी जी ने ?इंडियन ओपेनियन? में लिखा था। सन् 1907 में अरविन्दो घोष जी ने ?संध्या? नामक पत्रिका में लिखा था कि ?We want Swaraj for all sons of mother India. What we want is that Hindus and Muslims, both should come together to bring about Swaraj in unison.?

महोदय, आदरणीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने जो मूल बात कही है, मैं उस पर कुछ कहना चाहता हूं। आज मैंने उनके पूरे भाषण को बहुत गौर से सुना है। उनके एक घंटे के पूरे भाषण के दो उद्देश्य थे। पहला उद्देश्य यह था कि उनकी बातों को सुनकर ऐसा लग रहा था कि आपके राजनैतिक पूर्वज खुद ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ रहे थे। ऐसा लग रहा था कि आपके राजनैतिक पूर्वजों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विभिन्न आंदोलनों में भाग लिया था। मुझे आज प्रधानमंत्री मोदी जी के भाषण में इतिहास को दोबारा लिखने या रिवाइज करने की मंशा समझ में आई है।

सभापति महोदय, मैं यहां पर आपके साथ तर्क-वितर्क करने नहीं आया हूं। ? (व्यवधान) उनके भाषण का जो दूसरा उद्देश्य था कि इस राष्ट्रीय गीत ?वंदे मातरम्? के 150 वर्ष पूरे होने की चर्चा को एक राजनैतिक रंग देना था। उन्होंने कांग्रेस वर्किंग कमेटी और पंडित नेहरू जी के बारे में कुछ तथ्य उजागर किए हैं। यह एक आदत है। मेरे पास इसकी पूरी जानकारी है कि जब-जब प्रधानमंत्री मोदी जी किसी भी विषय पर बोलते हैं, तब-तब वे पंडित नेहरू जी का नाम और कांग्रेस पार्टी का नाम कितनी बार लेते हैं।

मैं सिर्फ एक ही उदाहरण देना चाहता हूं। हमने इससे पहले इस सदन में ?ऑपरेशन सिंदूर? की चर्चा पर आदरणीय प्रधानमंत्री मोदी जी का भाषण सुना था। क्या आप जानना चाहेंगे कि तब उन्होंने पंडित नेहरू जी का नाम कितनी बार लिया था? उन्होंने ?ऑपरेशन सिंदूर? की चर्चा के दौरान पंडित नेहरू जी का नाम 14 बार लिया था और कांग्रेस पार्टी का नाम 50 बार लिया था। वैसे ही जब संविधान की 75वीं वर्षगांठ मनाई जा रही थी, तब उन्होंने पंडित नेहरू जी का नाम 10 बार और कांग्रेस पार्टी का नाम 26 बार लिया था। ? (व्यवधान)

जब वर्ष 2022 में महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर प्रधानमंत्री मोदी जी अपनी बात कह रहे थे, तब उन्होंने पंडित नेहरू जी का नाम 15 बार लिया था। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : माननीय सदस्य, किसी का रेफरेंस तो दिया जा सकता है।

श्री गौरव गोगोई : महोदय, मैं यहां पर आपके साथ तर्क-वितर्क करने नहीं आया हूं। जब वर्ष 2020 पर महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर प्रधानमंत्री मोदी जी भाषण दे रहे थे, तब उन्होंने 20 बार पंडित नेहरू जी का नाम लिया था। मैं उनके आज के भाषण का दूसरा उद्देश्य तो समझ गया हूं। मैं बड़ी ही विनम्रता के साथ आदरणीय प्रधानमंत्री मोदी जी, उनके पूरे दल और उनके पूरे ढांचे से कहना चाहता हूं कि आप चाहे जितनी भी कोशिश कर लीजिए, पंडित नेहरू जी का जो योगदान रहा

है, आप उस पर एक भी काला दाग लगाने में सक्षम नहीं होंगे। आप चाहे पूरी कोशिश कर लीजिए, लेकिन आप उनके एक भी योगदान पर काला दाग लगाने में सफल नहीं होंगे।

हां, उससे पहले कांग्रेस वर्किंग कमेटी और मुस्लिम लीग के बीच विद्रोह था। मुस्लिम लीग यह कहना चाहती थी कि पूरे वंदे मातरम् का बहिष्कार करना चाहिए। मुस्लिम लीग को यह अधिकार कहां से मिला? क्या हमारा देश मुस्लिम लीग के अनुसार चलेगा? क्या मुस्लिम लीग के अनुसार कांग्रेस पार्टी चलेगी? कतई नहीं। उस समय के जो हमारे नेता थे, मौलाना आज़ाद साहब ने स्वयं यह कहा था कि मुझे वदे मातरम् पर कोई भी आपत्ति नहीं है। कांग्रेस वर्किंग कमेटी के मौलाना आजाद और मुस्लिम लीग के जिन्ना के बीच यह फ़र्क था।

उनके लाख कोशिश करने और लाख दबाव डालने के पश्चात भी सन् 1937 के कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सेशन में यह निर्णय लिया गया था कि जहां कहीं भी नेशनल गैदरिंग होगी, वहां पर हम शुरू में वंदे मातरम् की पहली दो पंक्तियों को गाएंगे। मुस्लिम लीग ने इस सिद्धांत की बहुत सारी आलोचना की थी। हिन्दू महासभा ने भी इसकी आलोचना की थी।

कभी-कभी हिन्दू महासभा और मुस्लिम लीग के जो राजनीतिक उद्देश्य हैं, वे एक हो जाते हैं। हिन्दू महासभा और मुस्लिम लीग दोनों ने वंदे मातरम् को विशेष और राजनीतिक रूप से देखा। मुस्लिम लीग और हिन्दू महासभा दोनों ने कांग्रेस पार्टी की आलोचना की थी, लेकिन कांग्रेस पार्टी अगर चलेगी, तो किसी हिन्दू महासभा या किसी मुस्लिम लीग नहीं, बल्कि भारत की जो आबादी है, भारत की जो जनसंख्या है, भारत के वन्दे मातरम् का जो मूल भाव है, उसके साथ चलेगी।

आदरणीय प्रधानमंत्री जी बार-बार वन्दे मातरम् की बात कर रहे थे। वन्दे मातरम् किस संदर्भ में लिखा गया? वह ब्रिटिश सरकार के विद्रोह में लिखा गया। हम वन्दे मातरम् का नारा कब लगाते थे? जब हम ब्रिटिश के अंदर खौफ पैदा करना चाहते थे। हम वन्दे मातरम् का नारा कब लगाते थे? जब हम ब्रिटिश को बताना चाहते थे कि हम डरेंगे नहीं और हम झुकेंगे नहीं। वन्दे मातरम् का मूल भाव यही था, जो कि ब्रिटिश का विद्रोह करना था। मैं पूछना चाहता हूं कि आपके राजनीतिक पूर्वजों ने वंदे मातरम् की इस मंशा को कब पूरा किया? आपने कब ब्रिटिश का विद्रोह किया? वन्दे मातरम् का उद्देश्य ब्रिटिश के बीच में डर फैलाना था। मैं पूछना चाहता हूं कि आपने उस मंशा को कब पूरा किया?

आप वर्ष 1937 की बात करते हैं और आपको वर्ष 1937 की बात पर आपत्ति है। मैं पूछना पूछना चाहता हूं कि वर्ष 1942 में जब ?भारत छोड़ो आन्दोलन? शुरू हुआ था, तब आपके राजनीतिक पूर्वज कहां थे? अगर आपको लगता है कि कांग्रेस पार्टी ने वन्दे मातरम् को दुर्बल करने की साजिश की, तो मैं पूछना चाहता हूं कि वन्दे मातरम् का जो मूल उद्देश्य था कि ?अंग्रेजों भारत छोड़ो?, उस ?भारत छोड़ो आन्दोलन? में आप लोग कहां थे?? (व्यवधान)

क्या इतिहास गवाह नहीं कि आपके राजनीतिक पूर्वजों, जिनका मैं नाम नहीं लेना चाहता हूं, उन्होंने खुद कहा था कि इस आन्दोलन में भाग नहीं लेना है।? (व्यवधान) वे खुद बोलते थे।? (व्यवधान) उन्होंने खुद कहा कि इस आन्दोलन में भाग नहीं लेना है। बंगाल में आपके जो राजनीतिक गुरु हैं, मैं उनका भी नाम नहीं लेना चाहूंगा, उन्होंने भी खुद कहा था कि ?भारत छोड़ो आन्दोलन? में भाग नहीं लेना चाहिए। आप वन्दे मातरम् की बात करते हैं, स्वतंत्रता सेनानियों की बात करते है और

प्रोपेगेंडा करने की कोशिश करते हैं। कांग्रेस वर्किंग कमेटी में पण्डित नेहरू जी ने सबके साथ विचार-विमर्श किया था। उसमें सभी शामिल थे। उसमें रबीन्द्रनाथ टैगोर जी भी शामिल थे, जिन्होंने स्वयं कहा कि पहले के जो दो स्टैन्जाज़ हैं, वे इतने मधुर हैं और उनमें इतनी ताकत है, वन्दे मातरम् का जो पूरा सारांश है, वह पहले दो स्टैन्जाज़ में है। उस वर्किंग कमेटी के रेज़ोल्यूशन में पण्डित नेहरू जी ने भी कहा था। मैं पण्डित नेहरू जी को कोट करना चाहूंगा :

?The words ?Vande Mataram? became a slogan of power which inspired our people, and a greeting which ever reminds us of our struggle for national freedom.?

वन्दे मातरम् के पक्ष में पण्डित नेहरू जी और कांग्रेस वर्किंग कमेटी के ये मूलभाव थे। जिस मुस्लिम लीग ने कहा कि पूरे वन्दे मातरम् का बहिष्कार करो। उस मुस्लिम लीग को हमने 24 जनवरी, 1950 को संविधान सभा की बैठक में दोबारा करारा जवाब दिया था। हमने उसके अंतिम दिन पर कहा था कि हम मुस्लिम लीग की बात नहीं सुनेंगे, हम वन्दे मातरम् को नेशनल सॉन्ग की तवज्जो देना चाहेंगे। बंगाल के प्रति हमारा यही आभार था कि उसी कॉन्स्टिट्युएंट असेंबली में यह सिद्धांत लिया गया कि जन-गण-मन हमारा नेशनल एंथम होगा और वन्दे मातरम् हमारा नेशनल सॉन्ग होगा। इस पूरे सिद्धान्त के साथ कौन-कौन से लोग सहमत थे? इसके साथ राजेन्द्र प्रसाद जी सहमत थे, सी. राजगोपालाचारी जी सहमत थे, जी.बी. पन्त साहब सहमत थे, मौलाना आजाद जी सहमत थे और रविशंकर शुक्ला जी सहमत थे। यह आज का इतिहास है।

वास्तविक तौर पर अगर मैं बोलूं कि आपकी पार्टी ने बंगाल को कभी समझने की कोशिश ही नहीं की। सत्ता के लालच में आपने कभी बंगाल को समझा ही नहीं। बंगाल की भक्ति को ? (व्यवधान)

सर, मैं इनके साथ तर्क-वितर्क करने नहीं आया हूं। ? (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई : सर, ये इनकी डिबेट है। ? (व्यवधान)

सर, अगर आप मुझे बोलने देंगे, तो मैं इनसे कहूंगा कि जैसे हमने आदरणीय मोदी जी को सुना, आप भी हमें सुनने का धैर्य रखें। ? (व्यवधान) आप भी धैर्य रखें और धैर्य की कमी मत दिखाइए। ? (व्यवधान) आप संयम की कमी मत दिखाइए। ? (व्यवधान) हमने संयम दिखाया, हमने धैर्य दिखाया, अब आपकी बारी है। ? (व्यवधान)

आपने बंगाल को कभी समझा ही नहीं। ? (व्यवधान) आपने बंगाल की भक्ति को नहीं समझा।? (व्यवधान) आपने बंकिम चंद्र चटर्जी को नहीं समझा। ? (व्यवधान) बंकिम चंद्र चटर्जी जी के जो विचार थे, विज्ञान को लेकर उनके जो विचार थे, एक ?फ्री इंडिया? को लेकर उनके जो विचार थे, आपने उन्हें नहीं समझा। ? (व्यवधान) आपने रवींद्रनाथ टैगोर जी को नहीं समझा। ? (व्यवधान) आपके लिए तो सब कुछ बांग्लादेशी है। ? (व्यवधान)

रवींद्रनाथ टैगोर जी ने वर्ष 1905 में ?आमार शोनार बांग्ला? लिखा था। आप इतिहास नहीं जानते हैं। आपने रवींद्रनाथ टैगोर जी का इतिहास नहीं पढ़ा। जब भी कहीं आपको ?आमार शोनार बांग्ला? सुनाई पड़ता है, तो आपको सिर्फ बांग्लादेशी ही सुनाई पड़ता है। लेकिन, जिस समय वह लिखा गया, बंगाल के पार्टिशन में जो दुख, जो वेदना थी, ?आमार शोनार बांग्ला - मेरा सुनहरा बंगाल? के प्रति जो भाव था, उसको आपने नहीं समझा। आप कभी दिल्ली में अगर बंगाली भाषा

सुनते हैं, तो उसको भी बांग्लादेशी कह देते हैं। ? (व्यवधान) वास्तविकता में बंगाल के लोगों की जो समस्या है, असम में बंगाल के लोगों की जो डी-वोटर्स की समस्या है, आज दस साल आपकी डबल इंजन की सरकार हो गई, लेकिन आपने असम में डी-वोटर्स की समस्या का समाधान नहीं किया।

असम में बंगाल के लोग आज अपने आप को भारतीय नागरिक कहना चाहते हैं, लेकिन, आप ऐसा कानून लेकर आए हैं कि असम में बंगाल के लोग अपने आप को भारतीय नागरिक नहीं, बल्कि उनको अपने बांग्लादेशी न होने का प्रमाण सरकार को देना पड़ रहा है। ? (व्यवधान) यह स्थिति है। ? (व्यवधान) न आप बंगाल को समझे, न आपने राष्ट्र को समझा। ? (व्यवधान) हम इस राष्ट्र गीत के बारे में कह रहे हैं। इसमें जो ?राष्ट्र? है, आपने कभी उस ?राष्ट्र? को समझने की कोशिश नहीं की। यह जो ?राष्ट्र? है, यह एक संघीय ढांचे पर निर्भर है। ? (व्यवधान)

इसमें कई प्रकार की राष्ट्रभक्ति है। ? (व्यवधान) आज अगर भारत एक मजबूत राष्ट्र है, तो वह इसलिए है, क्योंकि इसमें न सिर्फ बंगाल की राष्ट्रभक्ति समाई हुई है, बल्कि इसके साथ तमिल की भी राष्ट्रभक्ति समाई हुई है, इसके साथ असम की राष्ट्रभक्ति समाई हुई है, पंजाब की राष्ट्रभक्ति समाई हुई है, केरल की राष्ट्रभक्ति समाई हुई है, कर्नाटक और तेलंगाना की राष्ट्रभक्ति समाई हुई है और इसके साथ नागालैंड और उत्तर पूर्वांचल की राष्ट्रभक्ति समाई हुई है। ? (व्यवधान) लेकिन, आपने कभी समझा ही नहीं। ? (व्यवधान) हमारे सारे प्रदेशों की राष्ट्रभक्ति इसमें समाई हुई है, तब जाकर भारत को हम एक मजबूत राष्ट्र बना सकते हैं। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : अखिलेश जी, वह आप ले लीजिएगा। जो बाकी रह गया है, वह आप ले लीजिएगा।

? (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई : हमारे राष्ट्र में धर्म अनेक, हमारे राष्ट्र में भाषाएं अनेक, हमारे राष्ट्र में प्रांत अनेक, लेकिन, हमारे राष्ट्र में राष्ट्रगंथ सिर्फ एक है, और वह हमारा भारतीय संविधान है। ? (व्यवधान) पैगम्बर अनेक, धार्मिक ग्रंथ अनेक, मंदिर अनेक, लेकिन, राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में सिर्फ एक ही ग्रंथ है और वह है - ?संविधान? और इस संविधान की सुरक्षा हम आज भी कर रहे हैं। ? (व्यवधान) आप राष्ट्र की बात करते हैं। मैं हमारे नैशनल एंथम के बारे में आपसे पूछना चाहता हूं। आप चाहते थे कि वंदे मातरम् हमारा नैशनल एंथम बने, लेकिन, पूरे देश ने रवींन्द्रनाथ टैगोर जी द्वारा रचित जन-गण-मन को नैशनल एंथम की तवज्जो दी। ? (व्यवधान) आपके लगभग 52 साल, न राष्ट्रीय तिरंगा आपने अपनी शाखाओं में लगाया और न ही नैशनल एंथम अपनी शाखाओं में चलाया। ? (व्यवधान)

आप राष्ट्र की बात करते हो, लेकिन न आपने नेशनल ऐंथम को तवज्जो दी, न ही आपने भारत के तिरंगे को तवज्जो दी। आप राष्ट्र की बात क्या करते हो? इनकी जो सत्ता की परिभाषा है, वह अलग है। इनको लगता है कि अगर सत्ता मिल गई, तो ये पूरे राष्ट्र पर शासन चलाएंगे। ? (व्यवधान) यही फर्क है। संजय जयसवाल जी, धन्यवाद। हमारे लिए सत्ता शासन का नहीं, हमारे लिए सत्ता सेवा का माध्यम है, यह फर्क है।

माननीय सभापति : आप संजय जी, को धन्यवाद दे रहे हैं।

? (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई : सर, यह फर्क राजतंत्र और लोकतंत्र में हैं। राजा शासन करना चाहता है और सेवक भारत के संविधान की सेवा करना चाहता है। यह फर्क राजा और सेवक में है। हम यही देख रहे हैं कि आज हमारे भारत के लोग अनेक समस्याएं उठा रहे हैं, लेकिन उन समस्याओं का एक भी उल्लेख नहीं है। आज हम राष्ट्र की बात कर रहे हैं, राष्ट्र के प्रति हमारी भक्ति की बात कर रहे हैं। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आपकी सेवा के लिए धन्यवाद दे दिया है।

श्री गौरव गोगोई : सभापति महोदय, थोड़ा मुझे सुन लीजिए। हम राष्ट्र के प्रति हमारे कर्तव्यों की बात कर रहे हैं। पहली बार भारत की राजधानी में बम विस्फोट हुआ, लेकिन आज सदन में आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने एक बार भी उसको उजागर नहीं किया। हम वंदे मातरम् की 150वीं जयंती मना रहे हैं, लेकिन क्या हम आज वर्तमान के भारत को सुरक्षा दे पा रहे हैं? क्या दिल्ली की राजधानी में हमने दिल्लीवासियों को सुरक्षा दी? क्या हमने जम्मू कश्मीर में वहां के पर्यटकों को सुरक्षा दी?

माननीय सभापति : यह वंदे मातरम् पर चर्चा का विषय है।

श्री गौरव गोगोई : सर, विकसित भारत की बात कर सकते हैं, तो वर्तमान की बात भी कर सकते हैं। वर्ष 2047 की बात कर सकते हैं, तो वर्ष 2025 की बात भी कर सकते हैं।

माननीय सभापति : आज का विषय वंदे मातरम् के 150 वर्षों की यात्रा का है। आलोचना तो आपको...

? (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई : आज हम सुरक्षा की बात करते हैं।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : उन्होंने किसी की आलोचना नहीं की है। प्रधानमंत्री ने किसी की आलोचना नहीं की है।

? (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई : सभापति महोदय, अगर वास्तव में 150वीं वंदे मातरम् की जयंती का पालन करना है, तो हमें सुरक्षा देनी होगी, श्वांस की सुरक्षा देनी होगी। आज दिल्ली और पूरे उत्तर भारत में गंगा तट पर जितने भी लोग हैं, उनमें किसान हों, श्रमिक हों, आज वे वायु प्रदूषण के कारण सांस नहीं ले पा रहे हैं। आज आप देखिए कि क्या हमारी सीमाएं सुरक्षित हैं? पहलगाम के बाद पाकिस्तान के जो फील्ड मार्शल हैं, वे अमेरिका के राष्ट्रपति के साथ बैठते हैं। पाकिस्तान और अमेरिका के बीच में और करीबी आ गई है, वे और करीब हो गए हैं, लेकिन आप लोग उस पर कुछ नहीं कह रहे हैं।

माननीय सभापति : इसका वंदे मातरम् से क्या लेना?

श्री गौरव गोगोई : आज करेंसी को देखिए। आपने एक बार कहा कि जब करेंसी बढ़ती है, तो यह उम्र का उजागर है। आज की भारतीय करेंसी....

माननीय सभापति : गौरव गोगोई जी, ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा हो चुकी है। उस पर आप लोगों ने भी बात रखी थी और पक्ष के लोगों ने भी बात की है। मुझे लगता है कि आज वंदे मातरम् की 150 वर्षों की यात्रा का विषय है। अगर इस चर्चा को किसी आरोप-प्रत्योराप या विवादों से ऊपर रखें, तो ज्यादा अच्छा होगा।

श्री गौरव गोगोई : सर, धन्यवाद। हम 150वीं जयंती वर्तमान में मना रहे हैं, तो वर्तमान में भारत के प्रति हमारे जो कर्त्तव्य हैं, अगर उनकी बात न करें, तो क्या करें? आपने जिस करेंसी को उजागर किया था कि जब करेंसी बढ़ती है, तो किसी की उम्र का उदाहरण मिलता है, लेकिन आज तो करेंसी सौ रुपये तक पहुंच गई है। आज वायु प्रदूषित है, न हम वायु से सुरक्षित है, न हमारी करेंसी सुरक्षित है, न हमारी सीमाएं सुरक्षित, न हम दिल्ली में सुरक्षित हैं। जम्मू कश्मीर और लद्दाख में उनको जो सुरक्षा मिलनी चाहिए, जो राजनीतिक सुरक्षा मिलनी चाहिए, संपूर्ण राज्य का दर्जा मिलना चाहिए, यूटी का दर्जा मिलना चाहिए, वह हम नहीं दे पा रहे हैं। आज हमारा उद्योग सुरक्षित नहीं है। आज मोनोपॉलीज के कारण आम ग्राहक बड़े-बड़े उद्योगपतियों के पैरों पर पड़ा हुआ है।

हम देख रहे हैं कि इंडिगो की एक मोनोपॉली आयी, जिसके कारण आज आम व्यक्ति रो रहा है। आज एक आम व्यक्ति का घर उजड़ रहा है।

माननीय सभापति : मैं आपसे आग्रह करता कि माननीय अध्यक्ष महोदय ने स्वयं कहा था कि आज हम जो चर्चा कर रहे हैं, यह केवल वर्तमान के लिए नहीं है। आने वाली पीढ़ियों के लोग भी आज की इस चर्चा से प्रेरणा लेंगे।

? (व्यवधान)

माननीय सभापति : मुझे लगता है कि आपको बहुत-से अवसर मिलेंगे, जब आप आलोचना कर सकते हैं, आरोप-प्रत्यारोप कर सकते हैं। आज की चर्चा के लिए मैं आपसे आग्रह करूंगा।

? (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई : सर, वंदे मातरम राष्ट्र के प्रति हमारे कर्तव्यों को उजागर करता है और आज तो हमारा वोट भी सुरक्षित नहीं है। आज तो हमारी वोटर लिस्ट भी सुरक्षित नहीं है।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : इस सदन में चुनाव सुधार पर भी चर्चा होगी।

श्री गौरव गोगोई : सर, आज हम विभिन्न प्रदेशों में देख रहे हैं कि किस प्रकार से यह सरकार यूपीआई की बात करती है, जैम ट्रिनिटी की बात करती है, आधार की बात करती है, लेकिन मशीन रिडेबल वोटर लिस्ट नहीं देना चाहती है। वह काम कागज से करवाना चाहती है। आज न वोट सुरक्षित है, न स्वास्थ्य सुरक्षित है, न सीमा सुरक्षित है, न करेंसी सुरक्षित है, न व्यापार सुरक्षित है। ऑनलाइन कॉमर्स आने के बाद आज भारत का वह छोटा दुकानदार, वह मध्यमवर्ग का दुकानदार पूरा तहस-

नहस हो गया है। इसके ऊपर हमारी सरकार क्या कर रही है? यह सरकार सवाल से डरती है, चर्चा से डरती है और यह चाहती है कि अगर इन्होंने संस्थाओं को कैप्चर कर लिया? (व्यवधान)

***m10माननीय सभापति :** आपने इतनी अच्छी चर्चा शुरू की थी और अगर आप आज की चर्चा पर भाषण दें, तो वाकई वह देश के लिए एक अच्छी चर्चा होगी। मुझे लगता है, आप उस चर्चा को वहीं तक सीमित रखिए।

***m11श्री गौरव गोगोई :** सर, मैं अपने विषय पर ही रहूंगा। यह सरकार यह समझती है कि अगर इन्होंने संस्थाओं को जकड़ लिया, तो भारत की जो सोच है, भारत के जो मूल्य हैं, उनको भी जकड़ लेंगे, उन पर भी कब्जा कर लेंगे, लेकिन यह होनेवाला नहीं है। आप भले ही ? पर कब्जा कर सकते हो, आप भले ही निर्वाचन आयोग पर कब्जा कर सकते हो? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप यह क्या कह रहे हो? आप ?पर नहीं बोल सकते हैं, यह गलत बात है।

? (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई : आप भले ही इनकम टैक्स पर कब्जा कर सकते हो, आप भले ही ईडी पर कब्जा कर सकते हो,? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप किसी पर आरोप नहीं लगा सकते हो।

? (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई : लेकिन भारत की आवाम, भारत के लोकतंत्र ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : ?की जो आलोचना हो रही है, यह कार्रवाई का हिस्सा नहीं होगी। संसदीय कार्य राज्य मंत्री जी।

***m12विधि और न्याय मंत्रालय के राज्य मंत्री; तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अर्जुन राम मेघवाल) :** महोदय, ?पर कब्जा करने वाली बात ये कैसे कह रहे हैं? यह ?का अपमान है। ? (व्यवधान) यह क्या कह रहे हैं? ? पर चर्चा करने के लिए कोई नोटिस दिया है क्या?? (व्यवधान)

माननीय सभापति : हमने उसको कार्रवाई के हिस्से से निकलवा दिया है।

श्री अर्जुन राम मेघवाल : ठीक है महोदय।

***m13श्री गौरव गोगोई :** सर, ये आज हमारे भारत के नागरिकों के आम अधिकारों पर भी कब्जा करना चाहते हैं। जो वोट देने का अधिकार, जो स्वतंत्र विचारों का अधिकार, किसी से प्रेम करने का अधिकार, अपने अनुसार विचार रखने का अधिकार, सरकार की आलोचना करने का अधिकार, सरकार को सवाल पूछने का अधिकार आदि, इन अधिकारों को भी यह छीनना चाहती है। अगर यह इन अधिकारों को छीनना चाहती है, तो यह बंकिम चंद्र चटर्जी की कल्पना के अनुसार भारत का जो

सपना देखा था, उसके विरोध में वे जा रहे हैं। रविन्द्र नाथ टैगोर जी ने जो फ्री इंडिया की कल्पना की थी, उसके विरोध में जा रहे हैं। इसीलिए आज ब्रिटिश तो रहे नहीं, लेकिन ब्रिटिशर की डिवाइड एंड रूल पॉलिसी फोलो करने वाली कुछ राजनीतिक ताकत आज भी हैं। जिस प्रकार से ब्रिटिशों ने सेडिशन का कानून इस्तेमाल करके भारत की वैचारिक स्वतंत्रता को पकड़ने का काम किया, आज भी ऐसी कुछ राजनीतिक ताकत हैं, जो सेडिशन के कानून के द्वारा हमारे ही नागरिकों को जेल में रख रही हैं। इसीलिए आज हम उन ताकतों को कहना चाहते हैं कि हमारी पार्टी, विपक्ष की पार्टी और इंडिया अलायंस भारत के आम नागरिकों के साथ खड़े हैं। कवि रविन्द्र नाथ टैगोर जी की उन महान पंक्तियों के प्रति हम आज भी प्रतिबद्ध हैं, जिनको अंत में उजागर करते हुए मैं अपने भाषण को समाप्त करूंगा।

?Where the mind is without fear

and the head is held high;

Where knowledge is free;

Where the world has not been broken up

into fragments by narrow domestic walls;

Where words come out from the depth of truth;

Where tireless striving stretches its arms toward perfection;

Where the clear stream of reason has not lost its way

into the dreary desert sand of dead habit;

Where the mind is led forward by Thee

into ever-widening thought and action ?

Into that heaven of freedom,

my Father, let my country awake.?

इन्हीं पंक्तियों के प्रति हम हमेशा कार्यबद्ध रहेंगे। यही कहते हुए मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं। जय हिंद, वंदे मातरम।

***m14श्री अखिलेश यादव (कन्नौज) :** आदरणीय सभापति महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने वंदे मातरम् के 150वें वर्ष पर जो ऐतिहासिक चर्चा हो रही है, उसमें मुझे बोलने का मौका दिया।

वंदे मातरम् के 150वें वर्ष के बाद आज हम लोग उसे दोबारा इस सदन में याद कर रहे हैं। हमें इस बात का गर्व है कि हम लोग इस समय पर बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय जी को भी याद कर रहे हैं, जिन्होंने इतना शानदार गीत इस राष्ट्र को दिया है। इस गीत ने लाखों-लाखों लोगों को जागृत किया और उनके बीच उत्साह भरा। आजादी के समय पर, जिस समय अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी जा रही थी, वंदे मातरम् हमें ऊर्जा देता था, हमें ताकत देता था, हमें एकजुट करके अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने का एक माध्यम बनाता था। जब वंदे मातरम् गीत के 150 वर्ष हो रहे हैं और मुझे उस पर बोलने का मौका मिला है, तो उसके लिए मैं आपको बहुत-बहुत आभार और धन्यवाद देता हूं।

वंदे मातरम् की चर्चा में जिस तरह से पूर्व में हमारे कांग्रेस पार्टी के नेता गौरव गोगोई जी ने अपनी बात रखी, उस भावना से जुड़ता हुआ और वंदे मातरम् की भावना से जुड़ता हुआ मैं अपनी बात रखना चाहता हूं। जिस समय कोलकाता के कांग्रेस के अधिवेशन में रविन्द्रनाथ टैगोर जी ने गीत गाया, उसके बाद इसकी लोकप्रियता आम लोगों के बीच पहुंच गई। जब कभी भी लोगों को अंग्रेजों के खिलाफ लड़ना होता था, तो वंदे मातरम् का नारा देकर लोगों को जोड़ने का काम करते थे। हमारा कोई भी आंदोलन रहा हो, स्वदेशी आंदोलन रहा हो, उसमें भी हम लोग इसी नारे के साथ चले। वंदे मातरम् गीत को लेकर हमने देश को इतना एकजुट कर दिया कि अंग्रेज घबराने लगे। जब अंग्रेज घबराने लगे और जहां कहीं भी वे देखते थे कि यह नारा लग रहा है तो वहां पर देशद्रोही का कानून लगाकर लोगों को जेल भेज देते थे। यह भी इतिहास है कि जिस समय बंगाल में बच्चों ने यह गीत गाया, इस गीत को अपने क्लास रूम में गाया, तो उस समय भी अंग्रेजों ने उनके खिलाफ मुकदमा लगाकर उन्हें जेल भेजने का काम किया। अंग्रेजों ने वंदे मातरम् को बैन भी कर दिया, वर्ष 1905 से 1908 तक बैन कर दिया गया। बैन के बाद भी लोग माने नहीं, हमारे क्रांतिकारी लोग माने नहीं। उन्होंने इस वंदे मातरम् गीत को हमेशा अपने दिल और दिमाग में रखा और जनता के बीच में आंदोलन को बढ़ाते रहे।

सभापति महोदय, हमारे सत्ता पक्ष के जो लोग हैं, वे हर चीज को ओन (own) करना चाहते हैं। हम वंदे मातरम् गीत के 150वें वर्ष पर इसे याद कर रहे हैं, हम बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय जी को याद कर रहे हैं कि उन्होंने इतना महान गीत हमें दिया है। सत्ता पक्ष के लोगों के द्वारा हमें समय-समय पर देखने को मिलता है कि जो महापुरुष उनके नहीं हैं या जो चीज उनकी अच्छी नहीं है, उनको वे ओन करना चाहते हैं। वंदे मातरम् गीत के 150वें वर्ष ? (व्यवधान) मैं अभी वह बात कहूंगा। मैं वह बात कहूंगा, मंत्री जी उसका जवाब दीजिएगा।? (व्यवधान) क्योंकि यह बात ओन करने की आ रही है, अपनाने की बात आ रही है तो मैं अपने सत्ता पक्ष के लोगों को यह बात याद दिलाना चाहता हूं।

सत्ता पक्ष के लोगों की जो पार्टी आज भारतीय जनता पार्टी है, जिस समय उसका गठन हो रहा था, हमारे मुंबई और महाराष्ट्र के लोग जानते होंगे कि जिस समय गठन की चर्चा थी, उस समय आपके जो अध्यक्ष चुने गए थे, उनको जो भाषण देना था, उस पर भी बहस चल रही थी। बहस इस बात की थी कि भारतीय जनता पार्टी सेक्युलर रास्ते पर जाएगी, सोशलिस्ट रास्ते पर जाएगी या नहीं जाएगी। तमाम विरोध के बाद भी उस समय उनके जो राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गए थे, उन्होंने अपने भाषण में समाजवादी आंदोलन और समाजवादी विचारधारा का वही रास्ता अपनाया। उन्होंने सेक्युलर रास्ता अपनाया।? (व्यवधान) वही नहीं, जो उनका मंच था, उसमें जयप्रकाश जी की तस्वीर लगाकर भी उन्होंने लोगों में यह भ्रम फैलाने की कोशिश की कि जेपी के रास्ते पर भारतीय जनता पार्टी चलेगी। माननीय मंत्री जी कृपया बताएं कि आज वह

कितने सेक्युलर हैं, कितने सोशलिस्ट हैं। अभी गौरव गोगोई जी ने ठीक कहा कि इंडिगो के हवाई जहाज उड़ नहीं रहे हैं या उड़ाए नहीं जा रहे हैं? यह बात कही गई थी कि गरीब भी उसमें चल सकेगा।

सभापति महोदय, मैं इस बात को दूसरी तरफ नहीं ले जाना चाहता हूं। वंदे मातरम् सिर्फ गाने के लिए नहीं, निभाने के लिए भी होना चाहिए। आज हम आकलन करें, पीछे मुड़कर देखें कि हम इस वंदे मातरम् को कितना निभा रहे हैं। जिस वंदे मातरम् ने आजादी के आंदोलन में सबको जोड़ा, आज के दरारवादी लोग उसी से देश को तोड़ना चाहते हैं।? (व्यवधान) ऐसे लोगों ने पहले भी देश के साथ दगा किया और आज भी कर रहे हैं।

माननीय सभापति : यह चर्चा तो जोड़ने का काम करेगी न? अखिलेश जी, आज वंदे मातरम् की चर्चा जोड़ने का ही काम करेगी।

श्री अखिलेश यादव : वंदे मातरम् कोई दिखावा नहीं है। न ही यह राजनीति का विषय है, क्योंकि हम जब इनके विचारों से, इनके भाषणों से बाहर सुनते हैं, तो ऐसा लगता है कि वंदे मातरम् इन्हीं का बनवाया हुआ गाना है।? (व्यवधान) जिन्होंने आजादी के आंदोलन में भाग ही नहीं लिया है, वे वंदे मातरम् का महत्व क्या जानेंगे। सच तो यह है कि सरफरोश लोग वंदे मातरम् दिल से बोलते थे। उन आजादी के दीवानों के खिलाफ कुछ लोग अंग्रेजों के लिए जासूसी और मुखबिरी का भी काम करते थे। ? (व्यवधान) दसअसल ये राष्ट्रवादी नहीं, बल्कि राष्ट्र विवादी लोग हैं। जैसे अंग्रेज विवाद करके, डिवाइड करके, डिविजन करके राज किया करते थे। ? (व्यवधान)

सभापति महोदय, आज भी वही रास्ता कुछ लोग अपना रहे हैं। वे डिविजन का रास्ता अपना रहे हैं, डिवाइड करने का रास्ता अपना रहे हैं, दरारवादी रास्ता अपना रहे हैं। ? (व्यवधान) इनका इतिहास खंगाला जाए कि इन्होंने आजादी के पहले और आजादी के बाद वंदे मातरम् क्यों नहीं गाया।? (व्यवधान)

सभापति महोदय, आज जब हम वंदे मातरम् पर इतनी चर्चा कर रहे हैं। जिस भाव से हम लोग यहां बैठे हैं, तो कम से कम इतिहास में यह भी खंगाला जाए कि वंदे मातरम् कुछ लोगों ने कब गाया। उन मुखबिरों से यह सवाल पूछा जाए कि स्वतंत्रता के बाद भी उन्होंने अपना गीत क्यों बनाया। उनकी एक रंगी सोच ने तिरंगा क्यों नहीं फहराया? वंदे मातरम् सियासत के झूठे राष्ट्रवादियों के लिए नहीं है। गलत लोगों की गलत मंशा पूरा देश समझता है। ये केवल यही नहीं ओन करते हैं, कभी-कभी भारत माता का जो चित्र है, पेंटिंग है, जिसे कभी बंगाल के महान लोगों ने बनाया था ? (व्यवधान)

सभापति महोदय, आप इनको देख लीजिए।?(व्यवधान)

माननीय सभापति : राजभर जी, आप बैठ जाइए, आपके नेता बोल रहे हैं।

? (व्यवधान)

श्री अखिलेश यादव : सभापति महोदय, यह भी ख्वाब था कि कम्युनल पॉलिटिक्स नहीं चलेगी। कम से कम हमारे उत्तर प्रदेश के साथियों ने कम्युनल पॉलिटिक्स का वहां पर अंत किया है, जहां से इन्होंने कभी शुरू की थी।

सभापति महोदय, वंदे मातरम् एक भाव के रूप में हमारे अंदर बसा है। चाहे उसके शब्द याद न हों, चाहे अर्थ न मालूम हो, चाहे यह पूरा याद न हो, सच्चे भारतीय के अंदर देश प्रेम की भावना जगाने के लिए इसके दो शब्द ही काफी हैं। जो सच में देश की अखंडता और एकता चाहते हैं, जो भाईचारे को बुनियाद मानते हैं, उनके लिए दो शब्द भी पर्याप्त हैं, जो हमें इस वंदे मातरम् से मिलते हैं।

सभापति महोदय, मैं दूसरा किस्सा सुना दूं। सभापति महोदय, इनका इतिहास खंगाल लीजिए, पूरा इतिहास निकाल लीजिए। ये लोग कभी चुनावी सभाओं में बाबा साहेब अम्बेडकर जी की तस्वीर नहीं लगाते थे।?(व्यवधान) अगर यह बात सही है तो आप बता दीजिए। इन्होंने तस्वीर तब लगाना शुरू किया जब इनका एक सहयोगी साथी संगठन, जिस समय समाजवादी पार्टी और बहुजन समाजवादी पार्टी ने मिल कर इन्हें उत्तर प्रदेश में हरा दिया था, उस दिन के बाद से ये बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर जी प्रतिमा और तस्वीर लगाने लगे।

सभापति महोदय, वंदे मातरम् केवल गीत नहीं है। आज हमें यह ऊर्जा भी देता है। उस समय इससे क्रांतिकारियों को ऊर्जा मिलती थी। यह एकजुटता का नारा था। हम सभी को साथ लेकर चल रहे थे। देश के सभी लोगों ने जाति-धर्म को भुला कर एक साथ मिल कर वंदे मातरम् के सहारे अंग्रेजों को भगाने की लगातार कोशिश की। अन्ततोगत्वा यह परिणाम हुआ कि जब देश जागा तो वंदे मातरम् के साथ जय हिन्द का नारा, इंकलाब जिंदाबाद का नारा लगा कर अंग्रेजों को इस देश से भगाया गया।

सभापति महोदय, आज हम चर्चा कर रहे हैं। हम कैसा देश बनाना चाहते हैं और किस दिशा में देश को ले जाना चाहते हैं? सभापति महोदय, मुझे अच्छा लगा कि प्रधान मंत्री जी ने वह बात याद दिलाई है कि अंग्रेजों के जमाने में अगर बच्चे भी वंदे मातरम् गाते थे तो उन्हें देशद्रोही कानून के तहत जेल भेज दिया जाता था। आज जब हम आजाद हैं तो देखिए कि उत्तर प्रदेश में क्या हो रहा है। वहां प्राइमरी स्कूल्स बंद किए जा रहे हैं। वहां 26 हजार से ज्यादा स्कूल्स बंद हो गए। जब हम लोगों ने बच्चों को पढ़ाने के लिए जिम्मेदारी उठाई, पीडीए के लोगों ने जागरूक हो कर उन्हें पढ़ाने की कोशिश की तो कभी अंग्रेजों ने बच्चों पर द्रेशद्रोह का मुकदमा लगाया गया था, आजादी के बाद वहां जो पढ़ने गए और पढ़ाने गए उन पर भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने मुकदमे लगाए। इसलिए हम सभी वंदे मातरम् के उसी भाव से जुड़ कर, हम सभी मिल कर देश को और ज्यादा मजबूत बनाएं, यही हमारी भावना है, यही हमारे माननीय सदस्यों की भावना है। जब हम 150वें वर्ष में इसे याद कर रहे हैं तो हम यह भी याद करें कि जिस भावना से हम लोगों ने वंदे मातरम् को हम लोगों ने देश में गा-गा कर अंग्रेजों को भगा दिया। यह देश कैसे मजबूत हो, कैसे एकजुट हो, बिना भेद-भाव के संविधान से कैसे चले, क्योंकि हमें यह संविधान से मिला हुआ ही गीत है। इसलिए इस गीत के माध्यम से हम किसी पर टिप्पणी और किसी पर कुछ थोपने की कोशिश न करें और न किसी पर कुछ दबाव बनाने की कोशिश करें। मैं सभापति जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

14.00 hrs

***m15DR. KAKOLI GHOSH DASTIDAR (BARASAT):** Vande Mataram! Jai Hind! Hon. Chairperson Sir, today's topic is the celebration of the 150th anniversary of *Vande Mataram.* Beyond this

meeting, I respectfully appeal to all my countrymen to view *Vande Mataram* not just as a national song, not just as a prayer, not just as a poem, but as a determination. This consciousness-creating emotion runs deep in the heart of every Indian, which, resounding in thousands upon thousands and millions of voices, inspired India to take forward the freedom struggle.

Of course, it is difficult for those in power today to understand why, when their predecessor Savarkar secured his own freedom by giving apology bonds and was appointed to the subjugation of British imperialism. In contrast at the same juncture, 64 per cent, that is 398 were Bengali out of all the 585 prisoners in Cellular Jail. These Bengalis fought for the freedom of the motherland and were thrown in Cellular Jail without them ever worrying about their own individual freedom. Who hasn't heard the song ?Ekbar Biday De Maa, ghure asi / Hasi Hasi porbo Fansi, dekhbe Bharatbasi? (Bid me farewell for now, Mother. I shall be back soon / I will wear the noose with a smile when I am hanged, and all Indians shall see)? This was voiced by the youngest martyr Khudiram Bose while going to the gallows, at a time when the predecessors of today?s ruling party were bent on saving India by bowing down to British imperialism with apology bonds. So they will not understand.

Today, when they issue a decree, they remove it within a few moments, but do not apologize. This is condemnable. Today, their parliamentarian Vishweshwar Hegde Kageri is not punished; this is also very unfortunate. And even more than that, today's hundreds of telephone calls and messages that came from West Bengal felt really moving to me. Hearing the way the hon. Prime Minister called Rishi Bankim Chandra Chattopadhyay ?Bankim Da? in his speech, it seemed that he was having a conversation with him over tea. Bengalis and Bengali-speaking people are not taking this well. Bengalis do not accept the insults of all these scholars, like the marble statue of Ishwar Chandra Vidyasagar being broken, or disrespecting Raja Rammohan Roy, for whom I am being able to stand here today, for whom the practice of Sati Daha was abolished, women were educated ? Bengalis do not accept these insults.

***m16माननीय सभापति :** उन्होंने तुरंत बंकिम बाबू कहा, प्रोफेसर सौगत दादा को करैक्ट किया।

***m17DR. KAKOLI GHOSH DASTIDAR:** Even today, Rishi Bankim Chandra Chattopadhyay is called ?Dada? here in this House. Bengalis will not accept this. We follow the parliamentary code of conduct. Just as people of different religions sometimes follow the Gita, the Bible, the Quran, or the Tripitaka, similarly we follow this Constitution which shows us the way. This Constitution is being

completely violated. We want justice. We want justice for this insult to Bengal; we want justice for the insult to the Constitution. Bengal knows how to roar.

माननीय सभापति : उन्होंने रिसपेक्टफुली कहा, इसी सदन में उन्होंने करैक्ट भी कर लिया। उन्होंने सौगत दादा को धन्यवाद देकर कहा भी।

DR. KAKOLI GHOSH DASTIDAR: During the freedom struggle this roar has come to the voice of every Bengali. Jai Hind has come to the voice of Netaji Subhas Chandra Bose, our national anthem ?Jana Gana Mana? is the creation of the ?poet of the world? Rabindranath Tagore ? which has been insulted by their parliamentarian Vishweshwar Hegde Kageri. We consider the patriotism of Bengalis to be above all. We Bengalis do not accept this kind of insult.

Rishi Aurobindo gave the title of ?Rishi? to Bankim Chandra Chattopadhyay. I feel proud that the people of Barasat have elected me here four times, and Rishi Bankim Chandra was the Deputy Magistrate from the same place, and he used to walk there from Kolkata on foot to carry out his work responsibilities in Barasat. Rishi Bankim Chandra first published Vande Mataram in the ? Bongodarshan? magazine on 7 November 1875, and in 1882 it was included in the novel ?Ananda Math?. I think none of them knows this book. I would like to share two lines from there. During the years 1174?75, the king used to strictly collect revenue. In 1175, there was no rain, no harvest, and rice became expensive. The poor ate once a day, and people first started begging ? after that who gives alms? They started fasting, fell ill, sold their cows, ploughs, and ate paddy from the fields. They were affected by diseases like fever, malnutrition, and chicken pox. This is a picture of that time when we were oppressed during British rule.

At that time, this song was composed as a conversation between Mahendra and those who were called sons of the land and who were busy with the work of the country like Bhabananda. ? Vande Mataram / sujalam suphalam malayaja sheetalam / sasyashyamalam Mataram? (?Mother, I praise thee! Rich with thy hurrying streams, bright with orchard gleams, cool with thy winds of delight, dark fields waving ? Mother of might?). Mahendra was surprised hearing this song, didn?t understand anything and asked, ?Who?s the mother?? Bhabananda didn?t answer and continued singing, ?shubhrajyotsna pulakita yaaminim phulla kusumita drumadal shobhiniim suhaasinim sumadhura bhaashhinim sukhadam varadam Mataram? (?Moonlight drapes your trees and streams ? they shine under your gentle watch. In your blooming arms, you offer rest. Your laughter hums low

and sweet; press my head to your feet, Mother, voice soft as prayer.?) Mahendra exclaimed, ?Your narration is about the country. This is not about the mother.? Bhabananda replied, ?The only mother we worship is the motherland. We don?t have parents, wife, friends, children or kin or even a house ? we only have the Motherland which is rich and prosperous in natural resources.? We address our country as the mother goddess. A Bengali?s writing is inflicting such emotions. After all these. Violating the parliamentary code of conduct, the way he was disrespected and the way a decree was issued against him in Rajya Sabha ? I strongly condemn that. Since then, political and religious songs have been sung as national songs in the voices of the freedom fighters. Today, it is the world of photo shoots ? there were no photo shoots then. They fought with a firm resolve to liberate the country. People in Bengal still have it in them. Shame on the government that is constantly insulting Bengalis, insulting the Bengali language. What greater insult can there be than wanting to ban in the parliament the song that everyone has sung together?

The terror of British imperialism is resounding in the voice of this government today. This voice of paying homage to the motherland should not be used as a way to silence the voice of democracy by the government. At present, the government is trying to snatch the democratic voting rights of the people of India by tricking them. Bengalis will not accept this either. The Bengali-speaking population is being attacked. I want to remind the people that the national anthem, the national song, Jai Hind ? all creations from Bengali ? are in the hearts of Bengalis. Therefore, if Bengalis are oppressed and attacked, Bengalis will roar.

Jai Hind. Vande Mataram. Jai Bangla.

***m18SHRI A. RAJA (NILGIRIS):** Mr. Chairman, Sir, the House is witnessing a strange and distinct occasion, which has never occurred in the world. No doubt, irrespective of political colour, when the song Vande Mataram is played, everybody stands and gives his or her respect to show that we are in oneness. Why did I say it is very strange. I have come across a few countries, probably Denmark and New Zealand, that have one more national anthem. But I have not come across any country where a country has two songs under two different nomenclatures with new definitions. One is the national anthem and another is the national song. It is very strange and peculiar to the rest of the world. Then I wanted to search on Google, including the Oxford dictionary, to see what is meant by an ?anthem? and what is meant by a ?song?. An anthem is a song that has special importance for a country. What is meant by a song? A short musical piece with words meant to be sung. Then

another explanation that has been offered in the Oxford dictionary itself is that a song could become an anthem meant for a classless society. So, an anthem has a larger motto and a larger ambition to have inclusive nationalism, so that our forefathers distinguished both poems ? one for the national anthem and another for the national song.

In a country like ours, India, where we are divided by caste, religion, linguistic differences, and territorial differences, yes, we need a national anthem to unite us, to have a unified force in our mind that this is our country. In order to cultivate such patriotism and national conscience, one can understand that there should be a national anthem. But what is the need for a national song? So many correspondences were held to arrive at these two songs with equal status. I am aware that the song Vande Mataram is deeply attached to the freedom struggle. As put by the Prime Minister, and friends such as Shri Gogoi, Shrimati Ghosh from West Bengal, and Shri Akhilesh, all this shows that we have a unanimous voice to celebrate this present form of Vande Mataram, but that does not prohibit us from questioning the genesis of this song, which has been tabled and named as the national song.

I have seen the Prime Minister?s speeches many times over the past 11 years. Of course, the hon. Prime Minister is fond of a few words. One of his best inclinations is towards the word ?appeasement?. Without ?appeasement?, the Prime Minister?s speech will not end. Whether it is the Red Fort or a BJP conference, the tone, voice, and vocabulary are one and the same ? appeasement, appeasement, appeasement! And one more is nepotism, nepotism, nepotism! He is entitled to that. But what kind of appeasement was done as far as Vande Mataram is concerned? I too am fond of the word ?appeasement?. But we are travelling in opposite direction as far as the Vande Mataram song is concerned.

Vande Mataram was popularly acclaimed as the national song, written by the respected Bankim Chandra Chatterjee way back in 1870. But it has given rise to intense contestation in terms of explicit idolatry and religious antagonism. We have attachment to our own language, culture, and regionalism.

That does not mean everything should be glorified without seeing the documents and the credentials of the history. Sir, fortunately, Shri Bankim Chandra Chatterjee did not know what type of contestation took place over the national song *Vande Mataram* since he died before the political

struggle started over the song. Sir, as such, explanation is not possible to give in this forum about what he did during the composition of *Vande Mataram*.

Sir, let me quote a few sentences from the Prime Minister?s speech when he spoke on the 150th celebration of the song. It was held when the stamp release was done by the Prime Minister. I quote, ?In Anandamath, when Santan Bhavannath sings Vande Mataram, another character argues, ?we get inspiration from *Vande Mataram?*. But today, Mother India has 140 crore children. He has got 280 crore arms. More than 60 per cent of these are young. This power belongs to Ma Bharti. What is impossible for us today? What can stop us from fulfilling the original dream of *Vande Mataram*? He further states that this song was subjected to division by cutting off two stanzas which sowed the seed for the partition.

Sir, I want to ask four questions upon the speech that has been delivered by the Prime Minister. One is, who did the division in the *Vande Mataram*? I would also like to know whether the division of the *Vande Mataram* led to the division of the country? Then he said, this crucial aspect has to be dealt with now. I quote, ?the crucial side of the division?. What is the crucial division to know now? This is my second question.

In his speech, he stated that a ?challenging thinking of such a division exists? even today. I want to ask this House. The Prime Minister is saying that a thinking of division still exists in the country today. Where is it? With whom is it? The last question, what is the original dream of *Vande Mataram*? All these four questions have arisen to me in my mind out of the speech that has been delivered by the Prime Minister.

Sir, let me start with Gandhiji. The Government still pretends that they are respecting Gandhiji as the Father of the Nation. Of course, sometimes his name is anathema to the Treasury Benches. Sir, Gandhiji not only praised the *Vande Mataram*, but also he did not hesitate to put encomium to the author too. Sir, Gandhiji said, ?In 1915, we have sung a beautiful national song on hearing which all of us sprang to our feet?.

?? The poet has lavished all the adjectives we possibly could to describe Mother India. It is for you and me to make good the claim that the poet has advanced on behalf of his Motherland?. So, this is the encomium which was given by Gandhi ji to the author of the poem in the year 1915.

Now, please come into 1940. After 25 years, Mahatma Gandhi was distinctly defensive about Vande Mataram when he said: ?That was not a religious cry, but a purely political cry. It should never be chanted to insult or offend the Muslims?.

What happened to Gandhi ji between 1915 and 1940? What happened to this National Song between 1915 and 1940? What are all the elements that pushed Gandhi ji to praise the song in 1915 and what are all the events held between 1915 and 1940 for him to say that the song should not be permitted to be sung? If the elements and events between 1915 and 1940s are correlated or synchronized, then the riddles wrapped upon this National Song ?Vande Mataram? can be unfolded.

Very few points, I want to say in another angle. Anushilan Samiti, a secret revolutionary organization was founded in Bengal in the year 1902 aiming for independence through armed struggle. They were being called as ?Biplabis?. The Professor Ray may be aware about it. ? Biplabis?, militant group, formed themselves to achieve Independence of India in 1902. The greatest proponents of elevating the Vande Mataram to the status of National Song was done by these ? Biplabis?.

The secret documents were seized by the British Government to know about the activities of this Association where it has been disclosed that in the ?Biplabis?, Muslims were not permitted to do struggle activities. When a question was asked, the reply was sent by the Samiti, and I quote: ? Vows taken at the time of admission as members of the organization were sacred to the Hindus, but not the Muslims?. The poem is Vande Mataram; struggle is national struggle for the country; a group was formed; but Muslims were prohibited from chanting Vande Mataram. So, the inference can be that Vande Mataram is a religious thing. Right or wrong, such a space was given to the people and to a community. Its aim was independence, and its utterance prejudiced the Muslims.

Accordingly, between 1905 and 1908, the Home Department revealed that when prayer was going on in the mosque in the State of Bengal, Hindu processionists -- while crossing the mosque, when the prayer was being done by the Muslims -- shouted Vande Mataram, which created enmity. It is documented by the British Government. Still, it is being saved and it is available for perusal.

14.24 hrs (Shri Dilip Saikia *in the Chair*)

In 1907, again anonymous pamphlets were printed on lurid red paper and distributed, which claims that Muslims should not sing Vande Mataram and no Muslim should join the Swadeshi Movement.

Sir, such events increased between 1902 and 1915. What prompted it and how it went? The unrest and disturbances occurred in various places including Bengal, when the matter was referred to the House of Commons. The House of Commons discussed these issues in detail as to why the song Vande Mataram was creating a communal conflict and who was responsible for that. The discussion took place on 16th July, 1907. An appeal was made by Aurobindo Ghosh with a broader sense which I want to re-quote again ? ?What we want is that Hindus and Muslims both should bring the Swaraj in unison and concert?. This appeal was done by Aurobindo Ghosh, having come across that there were disturbances communally between Hindus and Muslims because of the Vande Mataram chanting. The fault is not with the song, I will come to that later. According to them, it is meant for Hindus only, prohibiting Muslims in the struggle. So, divide starts there. Prime Minister asks, ?Who did the division?? Prime Minister asks, ?Who did the division of Vande Mataram song?? the division was done by your forefathers, not by Muslims.

Sir, one more aspect is there. It may be a little bit painful for the West Bengal people, please bear with me, but naked history must be placed before this House.

***m19HON. CHAIRPERSON:** Raja Ji, what do you mean by ?your forefathers? What do you mean by that?

? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: You can ask questions. It should be, ?our forefathers?. You can ask questions.

? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: It should be mentioned like, ?our forefathers?.

? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Raja Ji, please, please be seated.

? (*Interruptions*)

माननीय सभापति : निशिकान्त दुबे जी।

***m20डॉ. निशिकान्त दुबे :** सर, स्पीकर के डायरेक्शंस 114 और 115 को देखा जाए।? (व्यवधान)

सर, महर्षि अरविन्द कॉंग्रेस गरम दल के नेता थे।? (व्यवधान) उन्होंने पहला बम विस्फोट मेरी कंस्टीट्युन्सी देवघर में किया था।? (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: I am allowing him. Please, please be seated.

? (*Interruptions*)

डॉ. निशिकान्त दुबे : सर, अंग्रेज उनको पकड़ना चाहते थे, इसीलिए वे पांडिचेरी गए थे और आप देश को अंग्रेजों के डॉक्यूमेंट के बारे में बता रहे हैं।? (व्यवधान) आप में विभाजनकारी मानसिकता है।? (व्यवधान) ये हिस्ट्री को गलत बता रहे हैं।? (व्यवधान)

सर, ये महर्षि अरविन्द को गलत बता रहे हैं। वर्ष 1902 का जो गजेटियर है, उसे अंग्रेजों ने बनाया, जो हिन्दू और मुसलमान को डिवाइड करना चाहते थे।? (व्यवधान)

सर, इसलिए इनकी बातों को एक्सपंज कीजिए।? (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: If there is anything wrong in his speech, that should be expunged, otherwise all his points should come.

? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Raja Ji, please continue.

***m21SHRI A. RAJA:** Sir, this type of conflicts which happened in Bengal and other areas including UP went on to the extent to investigate the character of the author. What happened? The collection of Shri Bankim Chandra Chatterjee were put into test, including the novel, Anandamath, from where the song, Vande Mataram, was inserted later. Tanika Sarkar, the famous historical researcher has said about the collection of the Bankim Chandra Chatterjee including Anandamath. He wrote many books. These were collected in the name of Bankim Rajbali. About the collection including Anandamath, Tanika Sarkar observed what recitals are available in this collection, including Anandamath. The conversation was held. It is very sensitive.

I quote: ?Unless we drive out these dirty bastards, Hindus will be ruined. When shall we level the mosques to the ground and raise the Ram Madhav temple in their place?? Who is the ? bastard?? Silence. These are the words from which one may clearly infer their intended meaning.

Sir, not only this. Again, in the same novel, describing how our Muslim ruler supposedly protects us, I quote: ?We lost our religion; we lost our caste; we lost our honour and family name; and now we are on the verge of losing even our lives. How can Hinduism endure unless we drive out this dissolute swine?? Such observations, contemplated within the literature of Bankim Chandra, gave rise to animosity.

Sir, I want to bring one more incident to the attention of this House. I make no assertion on the author. In Bengal, Ishwar Chandra Vidyasagar raised his voice for women?s education. I believe the Chair is familiar with his name. He advocated women?s education, the abolition of polygamy, and widow remarriage. He submitted a memorandum with 2,000 signatures to the then Governor General of Bengal. But it was countered by the author of this song, who collected 28,000 signatures asserting that these reforms were against Hindu customs. Therefore, there is reason to believe indeed, reason to conclude that *Vande Mataram* is not merely a set of stanzas, nor is it directed solely against the British, but also against Muslims. These are the reasons I am placing before you.

Sir, Shri R.C. Majumdar correctly observed and I quote: ?Bankim Chandra converted patriotism into religion, and religion into patriotism.? These were the criticisms voiced in those days, and I cannot ignore them. We must acknowledge them ? (*Interruptions*)

***m22HON. CHAIRPERSON:** You kindly keep in mind the historic importance and the emotion of the people of our country. You are doing *post mortem* of *Vande Mataram.* It should not be like that.

***m23SHRI A. RAJA:** Having outlined the elements that fostered resentment in the minds of Muslims, I now turn to the events that unfolded during the period of division in this song.

By the 1930s, unrest and communal tensions had reached a peak which was coined as an outcry that compelled the Congress, with its Hindu and Muslim members, to respond. What kind of response? In April 1937, Pandit Jawaharlal Nehru issued a statement on behalf of the Congress and I quote: ?It must be remembered that the Congress has always had a large number of Muslims in its fold. Some of our most eminent national leaders have been, and are Muslims. But it is true that the

Muslim masses have been largely neglected by us in recent years. We want to correct that omission and carry the message of the Congress to them.?

This Press statement was issued by Nehru Ji. Nehru Ji wanted to correct it, but people are accusing that Nehru Ji did it. Was it unilateral by Nehru? We have to go with the documents and credentials available even now with us. October, 1937 is a crucial and historic month in India?s history since the country?s future destination was moulded for a fair democratic discussion notwithstanding the critics who have clouded it. The correction process started in the month of October, 1937. Nehru Ji wrote a letter to Mr. Bose. In that letter, He wrote: ?While the present outcry against Vande Mataram was to a large extent a manufactured one by the communalists, there is also some substance to the grievances that needed to be met, and people who were communally inclined have been affected by it. Whatever we do, cannot be to pander to the communalist feeling but to meet the real grievances where they exist.? Nehru Ji wrote to Subhash Chandra Bose having taken cognizance of the matter, and gave the Press a report that they would go according to the credentials as per the facts and history. ? (*Interruptions*) It is available there. You get it. ? (*Interruptions*) Yes, you are correct. Mr. Bose was in favour of the full song. ? (*Interruptions*) I will come to it; do not worry. Mr. Bose was requested by Nehru Ji to write to Tagore and get the details. Sardar Vallabhbhai Patel wrote a letter to Tagore asking for details. Dr. Rajendra Prasad wrote a letter to Tagore asking for his opinion. Why was this man Tagore a central person for everybody? A beautiful song was sung by my friend Gogoi and I quote:

?Where the mind is without fear and the head is held high;

Where knowledge is free;

Where the world has not been broken up into fragments by narrow domestic walls;
Where words come out from the depth of truth;
Where tireless striving stretches its arms toward perfection;
Where the clear stream of reason has not lost its way into the dreary desert sand of dead habit;
Where the mind is led forward by Thee into ever-widening thought and action -
Into that heaven of freedom, my Father, let my country awake.?

Why was such trust shown in Tagore? Tagore was the first person in 1896 in Calcutta Session who used to sing Vande Mataram with music. People including Sardar Patel, Dr. Rajendra Prasad,

Pandit Nehru and Subhash Chandra Bose pushed the ball to Tagore.

HON. CHAIRPERSON: Please conclude now.

SHRI A. RAJA : Sir, give me a few minutes.

HON. CHAIRPERSON: Your time is over.

SHRI A. RAJA: Sir, you can adjust some time from the Congress Party also. ? (*Interruptions*) Meanwhile, the matter was seized by the Congress Working Committee and it was scheduled for discussion on 26.10.1937. Six days prior to the schedule, Nehru Ji wrote a letter to Subhash Chandra Bose on 20.10.2037.

HON. CHAIRPERSON: Your time is over.

SHRI A. RAJA: Sir, there were a lot of disturbances.

Sir, Nehru said and I quote:

> ?I have managed to get an English translation of Anandamath, and I am reading it at present to get the background of the song. It does seem, this background is likely to irritate the Muslims.?

This is Nehru.? (*Interruptions*) This is chronological. (*Interruptions*) Sir, I will connect the chain. So, the ball has been shifted to Tagore to decide. Meanwhile, the Congress Working Committee says it will be considered on 26th October. On 20th October, Nehru wrote to Bose. Now, the matter was referred to a sub-committee in the Congress. Who were all the members of the sub-committee? These were Maulana Abul Kalam Azad, Pandit Jawaharlal Nehru, Subhash Chandra Bose, and Narendra Dev. The sub-committee was formed with stipulation to take the advice of the Rabindranath Tagore. So, Tagore became the centre. Now, what did Tagore do? The claim of Tagore on record was:

> ?I was the first person to sing the song Vande Mataram before a gathering of the Calcutta Congress in the year 1896.?

That is the reason the entire trust was given to him. Then, Tagore wrote, categorically:

?I freely concede that the whole Bankim?s Vande Mataram poem, read together with its context, is liable to be interpreted in ways that might wound Muslims feelings.?

To me, again, this spirit of tenderness and devotion expressed in the first portion of the poem:

?The emphasis is given to beautiful and beneficial species as motherland.?

Now, Tagore took a decision that this cannot be permitted.? (*Interruptions*)

Sir, out of the chain of actions, who is aggrieved? In March, 1937 Jinnah wrote a letter to Gandhi and Nehru that the entire Vande Mataram, not twisted in the alteration that has been done by you, is not acceptable to us, not acceptable to the Muslim League.

Sir, my point is, by making a division, the Prime Minister says, you did the appeasement to Muslims. On the contrary, record says, Muslims are aggrieved, then I can say that appeasement was done in favour of Hindus. Sir, all these things are very important. ? (*Interruptions*)

Sir, then, in April 1939, the entire matter was placed before Mahatma Gandhi, and he took a decision that this poem is not fit to play in the public forum. Finished!

Sir, later, on 24th January 1950, it was accepted by the Constituent Assembly. Sir, I am entitled to say this because of the behaviour and the conduct of this Government for the last 11 years, what is the dream of Mahatma, as coined by Prime Minister, I can say. I cannot interpret the dream of Vande Mataram. I am not competent to do that, but I can visualise the dream of Prime Minister. Your dream through the Vande Mataram is to establish a Hindu Rashtra.

HON. CHAIRPERSON: Please conclude.

SHRI A. RAJA: Sir, I would like to conclude in three lines. I have come across somewhere recently, a small three-line poem:

?Moses split the sea.

Prophet Mohammed split the moon.

... Prime Minister split this country in terms of religion?

Thank you.

HON. CHAIRPERSON: The word *?* must be expunged.

***m24DR. BYREDDY SHABARI (NANDYAL):** Thank you, Hon. Chairperson First of all, I would like to thank our hon. Chief Minister, Shri Nara Chandrababu Naidu, my colleagues, and my floor leader for giving me this opportunity to speak on this very important topic representing Telugu Desam Party. ? (*Interruptions*) Sir, the word ?Akshaya?, means one thing that can never be diminished. The song, ? Vande Mataram?, was written on the auspicious day of ?Akshaya Navami?. From then onwards, it has become an eternal song of our country. This is a song that represents courage and hope. This is a song that represents countless memories of India?s collective consciousness. ? (*Interruptions*)

Sir, it was in 1896 when Gurudev Rabindranath Tagore sang this song in the Congress session. From then onwards, it has entered India?s patriotic bloodstream. ? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Hon. Members, please be seated.

DR. BYREDDY SHABARI: In 1905, when thousands of people marched, during the partition of Bengal, with the slogans Vande Mataram, it entered India?s political bloodstream.

Sir, as our hon. Prime Minister mentioned today, we should never forget a few contributions made by our greatest people. One such person is Madam Bhikaiji Cama. She rose the tricolour flag, which had Vande Mataram on it abroad. Madan Lal Dhingra ji walked towards the gallows and the last word he uttered was not out of fear, but out of immense devotion, and that is ?Vande Mataram. When, Veer Savarkar ji was put to *Kala Pani* and brought to death, the only word from the beginning he uttered was Vande Mataram.

A small village from Andhra Pradesh, that is Pedda Karayapalli, was the first village to attain Swaraj and shook empires in the nation. The song Vande Mataram not only inspired the freedom movement, but also shaped the freedom movement. It also fused the spiritual awakening, political awakening and spiritual strength.

Sir, we all have read history from the childhood and I am sure everyone is aware of Lord Warren Hastings. I would like to quote a saying of his to George Colebrooke in ?Gleig?s Memoirs?, Vol-1, ?Soon there is going to be destruction by the *sadhus* and the *sanyasis* and also freely wandering *fakirs* and those people who have infested annually the empires and provinces. Look at the word he has used?. He has used that ?our *sadhus* infest the empires?. Soon this was forgotten.

Our *sadhus* were compared to looters and robbers. But this was again remembered soon after the birth of *Anandamath*. Yet we speak about Lord Warren Hastings, but not about the *sadhus* who had resisted the empires. Sir, this was the ?Macaulay effect?, that our hon. Prime Minister Shri Narendra Modi ji wanted to remove. This was the Macaulay effect that our hon. Prime Minister was talking about.

Sir, the Macaulay mindset has removed greatest people in our history. One such is Uyyalawada Narasimha Reddy, who belongs to Koilkuntla, which is in my constituency. I am proud to say that my mother was born in Koilkuntla. My grandfather and great-grandfather were elected representatives of Koilkuntla. Sir, my forefathers had participated in the freedom struggle. But his name was deleted from history textbook. The name of Pingali Venkayya, the son of Andhra Pradesh, who has designed the National Flag, had been removed. One of the major contributions was removed from history. It was only after the announcement of *Azadi ka Amrit Mahotsav,* by our hon. Prime Minister, Shri Narendra Modi ji, that all these people were again remembered. Now, we see our youngsters, patriotism filled in their bloodstream and walking towards ?Viksit Bharat?.

This is the de-Macaulization that our Prime Minister Narendra Modi ji did. Sir, we sing this ?Vande Mataram? with great pride and zeal irrespective of religion, caste, creed, and sex. It mentions that you bow to the motherland and rise to the nation. I do not know why but a few people from the country, and a few leaders sitting here, cannot bow to the motherland. It is perhaps their foreign DNA that is resisting them from even coming to the Session today and even participating in such an important discussion on ?Vande Mataram?.

Sir, the Vande Mataram song mentions about our orchards and it mentions about our rivers. Not only it talks about the kings and rebels, but it also talks about farmers, and, then, about the children of our country, and, about our teachers, and about a State where it was composed, where it was a war cry, and where patriotic and political bloodstream entered. I do not know why the State that claims to be the Durga Maa?s motherland and, also, the State where Durga Puja is performed every day, never questioned Congress for removing great divine words such as ?*Durga*?, ?*Vani*?, and ?*Kamala*? from the Vande Mataram. Everyone knows that who had done it in 1937. We all have a list of leaders belonging to Nehru ji?s Cabinet who objected to Vande Mataram.

Sir, our former President Abdul Kalam ji sang this Song with great pride and said, ?Do not look at this Song as a religious song; but look at it as an inspirational song where every Hindu and Muslim of our country should sing it with a great pride. Our A.R. Rahman, a music maestro, in his album *?Maa Tujhe Salaam*? has sung this Vande Mataram and created ripples in the entire nation. Dr. Rajendra Prasad ji had also mentioned that the National Song, Vande Mataram, should be equally honoured with the National Anthem. Every Hindu and Muslim of our country has appreciated this statement.

Sir, I appreciate and I am thankful to our hon. Prime Minister for celebrating 150 years of Vande Mataram. This 150 years is not just a journey; it reflects our country itself. This journey of 150 years reflects the courage of our forefathers. It reflects the sacrifices of our villagers. It is also a voice of millions of our country. And this is not just a musical note or lyrics, it is the power which it has got, which fills every Indian?s soul with patriotism.

Sir, this speech is not from a piece of paper, but it is from my heart. I am proud to say here that I bow to my motherland and also rise to the nation. And standing here, in my country?s Parliament, I say, ?Vande Mataram? and ?*Bharat Mata ki Jai*?.

Thank you.

***m25श्री देवेश चन्द्र ठाकुर (सीतामढ़ी) :** धन्यवाद सभापति महोदय, मेरा सौभाग्य है कि आज मुझे इस सदन में 'वंदे मातरम्' पर बोलने का मौका मिल रहा है। इसके लिए मैं आपको और अपनी पार्टी के नेताओं को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

सभापति महोदय, 'वंदे मातरम्' केवल कुछ शब्दों और सुरों का संयोजन नहीं है बल्कि हमारे राष्ट्र की आत्मा सहित हमारे करोड़ों लोगों की जन आकांक्षाओं का जीवंत प्रतीक है। 'वंदे मातरम्' हमें हमारी मातृभूमि की पवित्रता, उसकी समृद्धि और उसके प्रति हमारी निष्ठा का निरंतर समर्पण कराते रहता है। 'वंदे मातरम्' का उच्चारण करते वक्त हम अपनी मातृभूमि के प्रति श्रद्धा, समर्पण और बलिदान का उद्घोष करते हैं। 'वंदे मातरम्' की रचना से पहले के सैंकड़ों वर्षों तक इस देश में विदेशी आक्रमण के इतिहास की कहानी है। स्मरण रहे कि एलेक्जेंडर द ग्रेट ने 320 से 327 ईसा पूर्व (बीसी) में भारत पर आक्रमण किया था। महमूद गजनी ने ग्यारहवीं शताब्दी में बार-बार आक्रमण कर इस देश में मंदिरों को लूटने प्रयास किया।

तैमूर ने सन् 1398 में दिल्ली पर हमला किया और बाबर ने पानीपत की लड़ाई जीतकर मुगल साम्राज्य की यहां पर नींव रखी, नादिरशाह ने सन् 1739 में दिल्ली पर आक्रमण कर कोहिनूर और तख़्त-ए-ताऊस को लूटने का काम किया। इन सबने हमारे देश के शासन और संस्कृति को तोड़ने की कोशिश की, लेकिन भारत की सभ्यता इतनी गहरी और सशक्त थी कि

उन्हें इसे नष्ट करने में कतई सफलता नहीं मिली। सन् 1757 का प्लासी का युद्ध, भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन की निर्णायक शुरुआत थी, जब राबर्ट क्लाइव ने बंगाल पर नियंत्रण स्थापित किया।

सभापति महोदय, सन् 1857 के विद्रोह के उपरांत, सन् 1858 में भारत का शासन ईस्ट इंडिया कंपनी से लेकर सीधे ब्रिटिश क्राउन के हाथों में दे दिया गया, जिसने भारत पर प्रत्यक्ष निरंतर शासन स्थापित करने का काम किया। इसी क्रम में ब्रितानी हुकूमत ने उनके अपने राष्ट्रीय गीत ?गॉड सेव द क्वीन? को इस देश में बढ़ावा देने का काम किया था। वस्तुतः वह गीत ब्रिटिश साम्राज्य की सत्ता और राजा के प्रति निष्ठा का प्रतीक था, परंतु राष्ट्रवादियों ने इसे कतई स्वीकार नहीं किया, क्योंकि हमारी मातृभूमि की भावनाओं और स्वतंत्राओं की आकांक्षाओं के विरोध में था। भारतीयों ने स्पष्ट किया कि हमें ऐसा गीत चाहिए, जो हमारी धरती, हमारी संस्कृति और हमारी स्वतंत्रता की पुकार को अभिव्यक्त करे। यही कारण है कि ?वंदे मातरम्? भारतीयों के लिए सिर्फ एक गीत नहीं, बल्कि यह राष्ट्रीय चेतना का उद्घोष बनकर रह गया। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय जी ने सन् 1870 के दशक में अपनी प्रसिद्ध कृति ?आनंद मठ? में ?वंदे मातरम्? का प्रकाशन किया था। उस समय भारत अंग्रेजी शासन के अधीन था और जनता स्वतंत्रता की आकांक्षा के लिए व्याकुल थी। ऐसे कठिन समय में यह गीत स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हजारों क्रांतिकारियों का प्रेरणास्त्रोत बना। वर्ष 1905 के बंग-भंग आंदोलन से लेकर वर्ष 1942 के ?भारत छोड़ो? आंदोलन तक यह गीत हर संघर्ष में गूंजता रहा। गांधी जी, लोकमान्य तिलक, विपिन चंद्र पाल, अरविंद घोष और नेताजी सुभाष चंद्र बोस जैसे महाने नेताओं ने इसे जन-जन तक पहुंचाने का काम किया। यह गीत आंदोलनकारियों के लिए संघर्ष का उद्घोष और समर्पण का संकल्प था।

सभापति महोदय, संविधान सभा ने गहन विचार-विमर्श के बाद, ?वंदे मातरम्? को भारत का राष्ट्रीय गीत भी घोषित किया। ?जन गण मन? को राष्ट्रगान का दर्जा जरूर मिला, परंतु ?वंदे मातरम्? को समान सम्मान देने का काम हुआ। संविधान सभा के अध्यक्ष डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद ने स्पष्ट किया कि ?वंदे मातरम्? को वही सम्मान दिया जाएगा, जो राष्ट्रगान को प्राप्त है। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने भारत माता को देवी स्वरूप में चित्रित करने का काम किया। आज के समय में ?वंदे मातरम्? की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। यह गीत हमें याद दिलाता है कि हमारी विविधता ही हमारी शक्ति है और अलग-अलग भाषाएं, संस्कृतियां और परंपराएं होने के बावजूद हम सब एक ही माँ ?भारत माता? की संतान हैं। देश के करोड़ों युवाओं के लिए यह गीत आधुनिकता के साथ-साथ मातृभूमि के प्रति निष्ठा का भाव जगाता है।

माननीय सभापति महोदय, ?वंदे मातरम्? हमारे राष्ट्र का आत्मिक घोष है। यह हमें बताता है कि भारत माता की सेवा ही सर्वोच्च धर्म है। आइए हम सब मिलकर इस गीत की भावनाओं को अपने जीवन और कार्यों में आत्मसात करें और आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरित करने का काम करें।

धन्यवाद, सभापति जी।

***m26श्री अरविंद गणपत सावंत (मुम्बई दक्षिण) :** माननीय सभापति जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आज मेरा सौभाग्य है कि राष्ट्रीय गीत ?वंदे मातरम्? पर इस सर्वोच्च सभागृह में अपने विचार प्रकट करने का अवसर मिला। मैं सरकार को भी धन्यवाद देता हूं कि वह यह विषय लाई और खास करके हिंदू हृदय सम्राट शिव सेना प्रमुख बाला साहब ठाकरे और

आदरणीय उद्धव जी को भी धन्यवाद दूंगा और हमारे सभी मतदाताओं और कार्यकर्ताओं को भी धन्यवाद दूंगा, जिन्होंने यहां हमें भेजा है, क्योंकि यदि वे हमें चुनकर यहां न भेजते, तो यह अवसर मुझे न मिलता। ?वंदे मातरम्? के लिए बोलना बहुत स्वाभिमान की बात है, सद्भाग्य की बात है।

सभापति महोदय, आप जानते हैं कि अभी तक बहुत सारे माननीय सदस्यों ने बोला है, उन्होंने बहुत सारी बातें बताई हैं। मैं एक पूर्व घटना के बारे में बताऊंगा कि सन् 1873 में एक घटना घटी, जिसमें श्री बंकिम चंद्र चटर्जी को एक अंग्रेज अधिकारी बरहामपुर छावनी के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल डफिन द्वारा अपमानित किया गया था। इस घटना से उनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा, उन्हें मैदान पार करने के लिए रोक दिया गया और अपना रास्ता बदलने के लिए मजबूर किया गया था। इससे अन्याय और संकट में फंसी मातृभूमि के बारे में इनके विचारों को गहराई से प्रभावित किया।

<u>15.00 hrs</u>

मातृभूमि के अवमान का विचार उनके मन में आया। इसके बारे में दूसरी कथा भी बताई जाती है। उनकी बेटी ने जब उनसे पूछा कि यह गीत आपने कैसे लिखा, तो उन्होंने कहा कि भारत माता मेरे सपने में आईं और माता ने इसे लिखा। ये शब्द मेरे नहीं हैं। उनकी विनम्रता देखिए। उस रचना का लाघव भी मेरा नहीं है। उसने मुझसे हाथ से लिखा दिया। मातृभूमि के बारे में समर्पित भावना इन शब्दों में प्रकट हुई। उस वक्त यह चेतना, चैतन्य निर्माण कैसे हुआ होगा। बंगाल डिवीजन का हादसा हुआ, जो पहले बंगाल प्रोविंस था। पुराने हिंदुस्तान को नजर में रखना पड़ता है। जो आज का बंगाल है, जिसमें ओडिशा है, बिहार है, बांग्लादेश है, वह सब मिलाकर बंगाल प्रोविंस था। वंदे मातरम् का अगला स्टेंजा जो है, उसमें माता के बारे में जो विवरण आया है, उसका कारण वह है, दुर्गा माता की बात इसमें आई है। वही इसका कारण है। उन्होंने यह बताया कि उस माता ने उनसे लिखवाया। उन्होंने कितनी चेतना प्रकट की, कितने चैतन्य का निर्माण किया। बंगाल डिवीजन विभाजन का बंग-भंग उच्चारण किया कि अंग्रेज बंगाल भंग कर रहे हैं। वर्ष 1875 में वंदे मातरम् लिखा गया। उसके पहले आनंद मठ में आया, पिक्चर भी निकली, तो उनके मित्रों ने बताया कि आपने आधा बंगाली में लिखा, आधा संस्कृत में लिखा, इसलिए उसका कुछ प्रभाव नहीं हो रहा है। बंग-भंग के बारे में वह नारा ऐसा गूंजा कि पूरे भारतवर्ष में लोग वंदे मातरम् कहने लगे।

हमें बचपन की याद आती है। मैं स्वतंत्रता के बाद पैदा हुआ। हम स्कूलों में 15 अगस्त, 26 जनवरी को राष्ट्रगीत गाते थे, राष्ट्रगान गाते थे, वंदे मातरम् गाते थे। स्कूलों में 50-60 सालों तक प्रभात फेरियां निकलती रहीं और वंदे मातरम्, भारत की जय करते रहे। इसमें हिंदू, मुस्लिम सभी इकट्ठे घूमते रहे। उसमें एक चीज और याद आती है - झंडा ऊंचा रहे हमारा, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा। हम यह भी गाते थे। आज उसकी याद आती है। वह तिरंगा हमारे मित्र, हमारे सत्तापक्ष के पितृ संगठन ने कभी पचास साल अपने कार्यालय पर नहीं लहराया, न कभी राष्ट्रगीत गाया, न राष्ट्रगान कभी गाया। आज वही लोग वंदे मातरम् की सराहना करने पर आ गए हैं। यह उनका भाग्य है। ?(व्यवधान)

***m27उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री; तथा नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री (श्री प्रहलाद जोशी) :** पहले प्राइवेट बिल्डिंग पर फ्लैग होस्टिंग नहीं होता था।? (व्यवधान) इतना भी मालूम नहीं है। ? (व्यवधान) बाला साहेब

ठाकरे जी अगर अरविंद जी की बात सुनेंगे तो उनकी आत्मा को बहुत दु:ख होगा। ? (व्यवधान)

***m28श्री अरविंद गणपत सावंत :** मैं जो बोल रहा हूं, वह सच्चाई है। डॉ. हेडगेवार जी और माननीय गुरू जी, जिनको मैं आज भी मानता हूं, उनकी किताब में कहीं भी वंदे मातरम् का उल्लेख नहीं है। आप किसी भी किताब में बताइए, डॉ. हेडगेवार जी और गुरू गोलवलकर जी की किताब में कहीं वंदे मातरम का उल्लेख हो तो बताइए। ? (व्यवधान) वर्ष 1907 में भीकाजी कामा ने ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : वंदे मातरम् का जिन लोगों ने विरोध किया, उनके बारे में भी बताइए।

श्री अरविंद गणपत सावंत : कांग्रेस के हर कार्यक्रम में वंदे मातरम् गाया जाता था। इस झगड़े के चक्कर में मैं नहीं पड़ता। वर्ष 1905 में मातृभूमि की सेवा को एक अभियान और कर्तव्य के रूप में बढ़ावा देने हेतु उत्तरी कोलकाता में वंदे मातरम् सम्प्रदाय की स्थापना हुई। 20 मई, 1906 को बरिसाल, जो मैंने अभी बांग्लादेश के बारे में बताया, 10 हजार से अधिक हिंदू और मुस्लिम वंदे मातरम् के झंडे लेकर घूमे। वर्ष 1906 में वंदे मातरम् रामकृष्ण हेगड़े जी दैनिक निकला। 1905 में बंगाल के रंगपुर के स्कूल में लगभग 200 छात्रों पर वंदे मातरम् का नारा लगाने पर 500 रुपये जुर्माना लगाया गया। आज भी ... ।

वर्ष 1906 में बंगाल के नवगठित प्रांतों में बारीसाल में हुए प्रांतीय सम्मलेन के दौरान ब्रिटिश अधिकारियों ने ?वंदे मातरम? को प्रतिबंधित कर दिया। वर्ष 1912 में गोपाल कृष्ण गोखले जी दक्षिण अफ्रीका में केपटाउन पहुंचे तो जुलूस द्वारा ? वंदे मातरम? से उनका स्वागत किया गया।

सबने ?वंदे मातरम? की कहानी बताई, इससे आगे मैं इतना ही कहता हूं कि हम 150वीं वर्षगांठ मनाते हैं तो हमें कुछ चीजों के बारे में अंतर्मुख होने की आवश्यकता है। हम आज़ादी का सम्मान करते हैं, मैं स्कूल की बात कह रहा था, मुझे नंदूरबार याद आ रहा था, महाराष्ट्र में एक जिला है। शिरिश कुमार नाम का 14 साल का एक लड़का हाथ में तिरंगा लहरा रहा था, विदेशी कपड़ों की हो होली जल रही थी, ?भारत माता की जय? कह रहा था, ?वंदे मातरम? कह रहा था और उसे अंग्रेजों की पुलिस ने गोली मार दी, उसकी हत्या कर दी। यह हमारा इतिहास है।

महोदय, वर्ष 1942 में ?चले जाव आंदोलन? हुआ, ये उसमें कहीं नहीं थे। ? (व्यवधान) मुम्बई में अगस्त क्रांति मैदान है, उस मैदान पर सारे देश के नेताओं को अंग्रेजों की सरकार ने अरैस्ट किया था, हिरासत में लिया था, तब एक लड़की खड़ी हुई थी और उसका नाम था अरुणा आसफ अली। वह तिरंगा लेकर मंच पर गई और उसने ?भारत माता की जय? कहा, ? वंदे मातरम? कहा, जुलूस निकला, आजादी का जुलूस निकला।

महोदय, आज जब हम आजादी की बात करते हैं तो आत्मनिर्भरता की बात भी करते हैं। माननीय प्रधान मंत्री जी ने आत्मनिर्भरता की बात कही, मैं उनकी सराहना करता हूं क्योंकि आत्मनिर्भर होना अच्छी बात है। लेकिन क्या हम सही में आत्मनिर्भर हैं? हमारी ऐसी कौन सी संस्था है जो आत्मनिर्भर है? हमारी ऐसी कौन सी संस्था है तो आत्मभान रखकर काम करती है? न्याय व्यवस्था से लेकर ऐसी कोई संस्था नहीं है। सीबीआई, इनकम टैक्स, ईडी और चुनाव आयोग, एक भी संस्था आत्मनिर्भर नहीं है और न ही आत्मभान रखकर काम करती है। ?वंदे मातरम? कहना है तो इसे भी देखना है क्योंकि

इधर भी ?वंदे मातरम? की जरूरत है। हम जिस मां की सराहना कर रहे हैं, जिस मातृभूमि की सराहना कर रहे हैं, उसी मातृभूमि पर लोग न्याय की मांग कर रहे हैं। बेलगांव, कारवाड़, नेपाणी, भालकी, बीदर के साथ महाराष्ट्र में आना है, कर्नाटक में आंदोलन 60 सालों से चल रहा है। सुप्रीम कोर्ट में दावा प्रलंबित है। आज के दिन वहां जाकर देख लें, यह आंदोलन चल रहा है। कर्नाटक में चाहे किसी भी पार्टी की सरकार हो, अरैस्ट करती थी। मैं फिर से कहता हूं कि जनतंत्र का नारा देना पड़ेगा, आत्मनिर्भर होना पड़ेगा, आत्मभान करना पड़ेगा, फिर से ?वंदे मातरम? का नारा देना पड़ेगा क्योंकि संविधान पर आंच आ रही है। हम संविधान के ढांचे पर हमला कर रहे हैं, रोजाना हमला कर रहे हैं। आज एक भी संस्था आजाद नहीं है। क्या आजादी की लड़ाई फिर दोबारा लड़नी पड़ेगी?

हमने क्या किया, प्रधान मंत्री कार्यालय का नाम सेवा तीर्थ रख दिया, महामहिम राज्यपाल कार्यालय का नाम लोक भवन रख दिया। क्या नाम बदलकर कुछ होने वाला है? क्या तीर्थ देखने को भी मिलता है, तीर्थ प्राशन करना तो दूर है। लोक सेवा कहने के लिए तो ठीक है, लेकिन सेवा के लिए मंदिर के दरवाजे बंद हैं और हम आजादी की बात करते हैं, आत्मनिर्भरता की बात करते हैं, ?वंदे मातरम? की बात करते हैं। मणिपुर में आज भी ?वंदे मातरम? की जरूरत है लेकिन आपने ध्यान नहीं दिया, प्रदूषण पर ध्यान नहीं दिया और अब चुनाव आयोग पर भी ध्यान नहीं दे रहे हैं।

मैं आखिर में आपके सामने एक कविता बोलना चाहता हूं। जी.डी. माडुलकर साहब ने एक कविता वर्ष 1948 में गाई थी। मैं इतना ही बताना चाहता हूं कि किस तरह से हमारा कारोबार चल रहा है। आप आत्मनिर्भरता की बात करते हो तो इसे ध्यान से सुनें। यह मराठी में है फिर भी आपको समझ में आ जाएगी।

"Vedmantra hum anhaa vandya, Vande Mataram! Mauliichya muktitecha yadnya jhala Bharati.पूरा देश यज्ञ हो गया ।Tyaant lakho veer deti jivitanchya aahuti. शूरता और वीरता से लोगों ने अपने प्राण अर्पण कर दिए, न्यौछावर कर दिए । Aahutine siddha kela mantr ha Vande Mataram." "Yaach mantrane mrityuche. मृत का मतलब यह है कि जो एकदम निश्चेष्ट बैठे हैं, उनको कुछ नहीं लग रहा है, उन सबको जागृत कर दिया ।"Yaach mantrane mrityuche rashtra saare jaagle. Shastratuki nishthuranchi shantivandi yheangle. अंग्रेजों के पास शस्त्र था, वे निष्ठुर थे। महात्मा गांधी जैसे शांतिदूत उनसे लड़े। Shastraheen ek laabe जिसके पास शस्त्र नहीं है, उसे एक ही मंत्र मिला । Shastraheen ek laabe mantra Vande Mataram; Tyaachi twara, Vande Mataram, Vande Vande Mataram!" "Nirmila haa mantra jyaanni, aacharila jhanjhuni, जिन्होंने ?वंदे मातरम्? मंत्र की रचना की, उन्होंने आचरण भी किया, संघर्ष किया ।"Nirmila haa mantra jyaanni, aacharila jhanjhuni, Te hutatme deha jhule swargavar gaayani. वे हुतात्मा बने। वे स्वर्ग लोक में गये। लेकिन हमारे लिए भगवान हैं, भगत सिंह हैं। Gaat yaanchya nartiche, geet Vande Mataram; Geet Vande Mataram, Geet Vande Mataram!".

जय हिंद। वंदे मातरम्।

***m29SHRI BHASKAR MURLIDHAR BHAGARE (DINDORI):** Honorable Chairman Sir, I am thankful to the house for giving me the opportunity to express my views in the special discussion organized on the 150th anniversary of the national song of India, Vande Mataram, and I also thank my party and our leader, the Honorable Sharad Pawarji, our group leader, the Supriya Suleji.

My previous speakers also expressed their views in the House. As you know, Bankimchandraji wrote this song and the first version of this song was published in ?Bangadarshan? in November 1875. Later, in 1882, this song was included in the novel ?Anandamath? as a part of it. In 1905, when the uprising against the partition of Bengal was going on, the freedom fighters got new energy due to the slogan of ?Vande Mataram?. Vande Mataram is not just a sentiment but a symbol of national identity.

The song Vande Mataram was sung in the Congress session. Anyone who actively participated in the freedom struggle knows that many patriots sang this song during the freedom movement. Many known and unknown heroes made Vande Mataram the slogan of the freedom struggle. The mantra Vande Mataram became a weapon to fight against the British.The President of the Constituent Assembly, Dr. Rajendra Prasad, declared on 26 January 1950 that Vande Mataram will have the same importance as the National anthem ?Jana Gana Mana?. Due to this historical and emotional importance, I feel proud to be participating in the debate in Parliament on the 150th anniversary of Vande Mataram. On this occasion, I am reminded of the freedom fighters of the country, known and unknown, such as the Father of the Nation, Mahatma Gandhi, the first Prime Minister of the country. Pandit Jawaharlal Nehru, Sardar Vallabh bhai Patel, the architect of the Constitution, Dr. Babasaheb Ambedkar, Maulana Abdul Kalam Azad.

I bow down to the revolutionaries Bhagat Singh, Sukhdev, Rajguru, Bhagwan Birsa Munda, Krantisinh Nana Patil, and the revolutionaries Raghavji Bhangre from the constituency I represent, Devji Raut, Pandu Deshmukh, Govind Deshmukh, Amrit Patil, Bhau Malekar from Pethtaluka, Avaji Thackeray Naik, Tanaji Thackeray, Kanoba Warde, Chandba Warde, Laxman Deshmukh, Kalu Naik, Bhau Raja from Surgana Taluka, and many patriots like Laxman Gaikwad, Dawal Bagul, GotiramTalwar, Shravan Kolhe, Sakharam Thackeray, Bhika Pawar, Kalu Pawar, Kashiram Kolhe, Chimana Waghmare from Kalvan Taluka who sacrificed their lives for the country.

We have received the ideological heritage of enlightenment from the thoughts of the beloved deities of Maharashtra, Chhatrapati Shivaji Maharaj, Mahatma Jyotiba Phule, Rajshri Shahu Maharaj, Dr. Babasaheb Ambedkar, and the architect of modern Maharashtra, Yashwantrao Chavan. Under the guidance of honorable Sharad Chandra Pawar, we are trying to take it forward.

I would like to tell the assembly that Vande Mataram is not just a song, it is a thought. This thought is of struggle, of fighting for truth. The background of the song Vande Mataram was taken from ?Anandmath? is drought. Because during that time, there was heavy rain in Maharashtra, due to which the farmers suffered losses, they became indebted. Some farmers even committed suicide.

What our ancestors told us, what we have experienced for thousands of years, living in the Sahyadri Satpuras, is what I am telling in the house. Honorable Chairman, Maharashtra has been hit by a wet drought this year. Due to human errors and the devastation of nature, it is recorded as the worst drought in the history of India. About 1 crore people died during ?Great Bengal famine?. It reminds me of that situation.

Therefore, I would like to read some sentences mentioned in this novel in the assembly. I hope that there are some Bengali colleagues here who will take care of this Marathi translation. While describing the drought and the plight of the farmers, Bankim Chandra writes, People were digging for food, but they did not get food. When the fire burns in their stomach, people go, forget religion and this hunger is so great that man gets up to eat, and yet you talk about religion. Bodies were lying on the side of the road and there was no one to bury them. People were dying for food, mothers had abandoned their children, husbands had abandoned their spouses. It is seen in this that this drought is not only causing physical suffering but also mental and material suffering.

The government has also put our onion farmers in the wind. The farmers have suffered a huge blow in terms of import and export. They did not get a fair price for their onions. The same is the situation for grape growers, tomato, rice and soybean growers.

Honorable Chairman, lakhs of hectares of crops have been damaged today. During this time, the government is not providing any help to them. I am demanding through my channel that this government should not miss this opportunity that my Agriculture Minister honorable Sharad Pawar, has helped the farmers a lot. Honorable speaker, what is the use if the government does not pay attention?

If the beginning of the revolutionary song Vande Mataram is alone, it is a hymn of praise for the great agriculture of the country. If we are discussing in the Lok Sabha whether to honor Vande Mataram, then we should also think about the farmers with the same urgency. Respected Bankim Chandra says in his novel that even though the cities and villages had become graveyards, the British who were collecting taxes did not stop their hunger. Finally, I request that you show positivity towards farmers.

Thank you.

माननीय सभापति : श्रीरंग आप्पा बारणे जी, आप अपनी बात रखिए।

? (व्यवधान)

***m30श्री श्रीरंग आप्पा चंदू बारणे (मावल) :** माननीय सभापति महोदय, इस महत्वपूर्ण विषय पर अपनी बात रखने के लिए शिवसेना के हमारे नेता ने जो अवसर दिया है, उसके लिए मैं उनका आभार प्रकट करता हूं। वन्दे मातरम् की काव्य पंक्तियां केवल शब्द रचना नहीं, बल्कि सम्पूर्ण देश के स्वाभिमान का मंत्र हैं। वन्दे मातरम् देश में पुनर्जागरण का यत्न है। वन्दे मातरम् एक चेतना थी, वन्दे मातरम् एक प्रेरणा थी, वन्दे मातरम् सारे देश की धारणा थी और वन्दे मातरम् राष्ट्रजीवन की संजीवनी योजना थी।

माननीय सभापति महोदय, मुझे गर्व है कि मैं ऐसी पार्टी का सांसद हूं, जिसके सरसेनापति हिन्दू हृदय सम्राट स्वर्गीय श्री बालासाहेब ठाकरे जी कहते थे कि अगर इस देश में रहना है, तो वन्दे मातरम् कहना होगा।? (व्यवधान) बालासाहेब ठाकरे यह भी गर्व से कहते थे कि हम हिन्दू हैं। हमें इस पर भी गर्व है।? (व्यवधान) कई लोग अभी भटके हुए हैं और लोगों ने खुद दूसरी जगह जाकर मिलावट भी की है। मैं उस पर अपनी बात नहीं रखूंगा। आज वन्दे मातरम् एक ऐसा मंत्र है, जो देश के हर प्रांत को एक करता है और हर भाषा को एक करता है। हमें ऐसे राष्ट्रगीत पर गर्व है। मैं अपनी बात मेरी मातृभाषा मराठी में रखूंगा। मैं जिस प्रांत से आता हूं, वह छत्रपति शिवाजी महाराज की भूमि है। मेरे चुनाव क्षेत्र का नाम मावल है।

Honorable Chairman, the history of Maval is inextricably linked with the sacred resolve of Chhatrapati Shivaji Maharaj, 'Swarajya'. Taking along the mighty Mavals born from this very soil of Maval, Shivaji lit the flame of struggle for the liberation of the native land and gave impetus to the fight for freedom. And this tradition of bravery, self-respect and Hindutva was carried forward by the Hindu Hriday Samrat Shiv Sena chief Balasaheb Thackeray, who made Marathi identity, the role of Hindutva and national pride the breath of his life. The flame of our native land?respect expressed in 'Vande Mataram' is beating in every vein of ours. This flame gives us the strength to face death with a smile to protect our land, our culture and our national honor.

Hon?ble Prime Minister Shri Narendra Modi has delivered his speech on the 150th anniversary of the National song "Vande Mataram". Its a sacred celebration of national achievement! Honorable Chairman, I sincerely thank you and my Shiv Sena party leader for giving me the opportunity to speak on this important topic.

Honorable Chairman, today this House has become a witness to an unprecedented, historic and glorious moment. Today we are celebrating the 150th anniversary of the composition of our immortal national song "Vande Mataram", the mantra that brought a smile to the lips of our freedom fighters even on the gallows, which inspired an unwavering resolve in the hearts of millions of Indians to break the shackles of slavery.

This is not just a song, it is a tribute to the native land. The history of this song is not just a history of melodious melodies, it is a history of sacrifice and devotion. It is the slogan of the consciousness of India's civilization. This song is the foundation stone of the Indian national renaissance and unity. It is like an unbroken lamp of patriotism that burns continuously in the heart of every Indian.

This song describes the natural beauty of Mother India and considers her the embodiment of power, religion and maternal love while describing her purity in the air. Bankim Chandra Chattopadhyay composed this song for his novel "Anandamath" in 1875. At that time, he did not know that these few lines would go on to describe the history of India. It will become the great mantra of the freedom struggle and the lifeblood of nationalism. Describing the green land, the calm water, the purity of the air, it is considered the embodiment of power, religion and maternal love.

Honorable Chairman, while talking about the subject of national pride, nationalism and veneration of Bharat Mata, it is impossible to avoid mentioning the Hindu Hriday Samrat Balasaheb Thackeray. His entire life and every step of the Shiv Sena Chief based on the principle of fearless nationalism. For him, 'Vande Mataram' was not just a song, it was the soul of Hindutva and patriotism.

He always said, "He who does not love this native land, who does not venerate this land, has no place on this land." He condemned the politics of appeasement, the National song was given the status of a national pride. Shiv Sena, following the path of Balasaheb Thackeray, is always committed to the respect of the National song.

In 1896, Rabindranath Tagore sang this song for the first time in the Congress session and made the entire country aware of its sanctity. In 1905, during the partition of Bengal, this song became the center of mass agitation. Thousands of youths took to the streets chanting "Vande Mataram."

Lala Lajpat Rai started a patriotic magazine called "Vande Mataram" from Lahore and Sri Aurobindo Ghosh called this song the "National Anthem of Bengal". He had said that this song is a praise of the power of Mother India.

The last words of revolutionary Khudiram Bose and other heroes at the moment of hanging were ? "Bande Mataram!". This song conquered even death and became the highest symbol of love for the native land. The English rulers recognized the power of this song and banned it. For singing this song, many revolutionaries and freedom fighter were given whipping punishment.

But, the saddest thing is that after independence, unnecessary controversy was created over 'Vande Mataram' during the Congress's rule. In 1937, the Congress Working Committee accepted only some parts of this song and ignored the rest. This was the first beginning to weaken the national feeling and, at the same time, it was an insult to the faith of the freedom fighters.

कांग्रेस की ऐसी कौन सी मजबूरी थी, जिसके कारण इस पवित्र वंदे मातरम् की 6 पंक्तियों से चार पंक्तियां हटाई गईं। ये क्यों हटाईं, क्योंकि उनमें दुर्गा का उल्लेख है, उसमें शक्ति रूपी नाम का उल्लेख है। क्या इसीलिए कांग्रेस शासन द्वारा ये चार पंक्तियां हटाई गईं? वंदे मातरम् मज़हबी राजनीति का विषय नहीं है। वंदे मातरम् जैसा गीत तुष्टीकरण की राजनीति का शिकार हो गया। यह दुख की बात है। पहले अंग्रेजों ने इस पर पाबंदी लगाई और देश के स्वतंत्र होने के बाद कांग्रेस पार्टी ने तुष्टीकरण की राजनीति में वंदे मातरम् से दुर्गा का उल्लेख मिटाकर भारत माता की आत्मा के ऊपर आघात किया। मैं अपनी बात रखते हुए इसका निषेध भी करता हूं।

माननीय सभापति महोदय,

"Vande Mataram" broke the barriers of religion, province, caste and gave the feeling that "India is one", and yet to question whether it is an insult to the nation. Even after independence, the Congress did not give this song the same respect as the national anthem. This was an insult to the sacrifice of the freedom fighters.

The prestige of the national song anthem was compromised for regional, religious or political gains. The singing of this song was forced in schools, public programs and government occasions.

The position of not doing it was taken. This was an insult to patriotism.

Shiv Sena, inspired by the thoughts of Balasaheb Thackeray, is committed to ensuring that 'Vande Mataram' always shines as the highest honor of the nation. Let us resolve on this auspicious day that we will never forget the veneration of Mother India. Let us cherish the honor of the National song, and bring its spirit into our lives.

Vande Matram gave hope for freedom struggle to youth, karantikarks & citizens. The youth turned this nation hope into freedom of our nation. This not only song, this is power of mother India. I bow down for every person who sacrifices for the freedom struggle of the nation and lived for vande matram. I wanted to thank our Hon?ble PM for started lots of programs for celebrating Vande Matram. Vande Matram is highest in our ideology given by Balasaheb Thakarey. Lets take a pledge we will never forget the sacrifices made for mothers India.

Jay Bhawani. Jay Shivaji. Vande Matram.

Thank you.

***m31श्री अनुराग सिंह ठाकुर (हमीरपुर) :** सभापति महोदय, धन्यवाद। वंदे मातरम्, वंदे मातरम्, वंदे मातरम्।

यह साल बहुत विशेष है, क्योंकि जहां हम 150वीं जयंती सरदार पटेल जी की मना रहे हैं, बिरसा मुंडा जी की मना रहे हैं, वहीं ?Vande Mataram at 150?. मैं माननीय स्पीकर महोदय का आभारी हूं, जिन्होंने इस पर चर्चा रखी है। मैं अपने दल और अपने नेता आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी का आभारी हूं, जिन्होंने मुझे इस अवसर पर बोलने का मौका दिया। सबसे प्रसन्नता की बात यह है कि वंदे मातरम् पर चर्चा की शुरुआत किसी और ने नहीं, बल्कि देश के यशस्वी प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्वयं की है। एक समय वह था, जब वंदे मातरम् का शताब्दी वर्ष था।

उस समय आपातकाल लगाकर देश को अंधकार में डुबोने और देश के संविधान को तार-तार करने का काम उस समय की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी ने किया था। उस समय तो चर्चा भी नहीं हो पायी थी। आज स्वयं प्रधानमंत्री जी ने अपने भाषण में देश की जनता के सामने वंदे मातरम् के इतिहास और इसके सांस्कृतिक महत्व को देश के सामने रखा है। मैं यही कहूंगा कि एक तरह से आने वाली पीढ़ियों के लिए वह एक बड़ा प्रेरणादायक डॉक्यूमेंट बनेगा। एक ऐसा दस्तावेज जिस पर 150 साल पुरानी जितनी घटनाएं घटी, वंदे मातरम् ने कैसे देश को एकजुट करके रखा और वंदे मातरम् केवल एक गीत नहीं, बल्कि महामंत्र है।

मैं तो आप सबके सामने कहना चाहता हूं कि वंदे मातरम् कोई धार्मिक गीत नहीं है। किसी व्यक्ति, दल या किसी राज्य का गीत नहीं है। वंदे मातरम् राष्ट्र की आत्मा का गीत है। वंदे मातरम् भारत के गौरव का गीत है। वंदे मातरम् भारत की आशाओं और आकांक्षाओं का सुरमय गीत है। भारतीय संस्कृति और विरासत का प्रतीक है। वंदे मातरम् सिर्फ गीत नहीं,

बल्कि राष्ट्रप्रेम की रीत है और इसीलिए कांग्रेस इससे भयभीत है। भयभीत तो इतनी है कि जब इसकी चर्चा शुरू हुई, माननीय प्रधानमंत्री जी सदन में थे, तब भी जिस परिवार को दशकों तक इस देश में नेतृत्व करने का मौका मिला, उसके दो सदस्य सदन में ही उपस्थित नहीं थे। इतना भय या मैं तो कहूंगा कि पंडित नेहरू जी ने तो वंदे मातरम् को छांट दिया था, काट दिया था और उसके बाद देश को बांट दिया था। उसे दो स्टैंजा तक सीमित कर दिया था। राहुल जी ने केवल एक लाईन गाने के लिए मजबूर कर दिया था। आज जब चर्चा हुई, तो दोनों गायब ही रह गए।

मैंने सुना है, अभी गलियारों में चर्चा थी कि शायद पिछले पांच दिन से प्रियंका जी मेहनत कर रही हैं, याद कर रही हैं, आज पूरा वंदे मातरम्, सभी स्टैंजा बगैर पढ़े यहां पर गाने वाली हैं। ऐसा मैंने सुना है, बाहर चर्चा चल रही थी। अब उसका भी इंतजार रहेगा। जो इतने महापाप किए हैं, अब महापाप का प्रायश्चित करने का समय भी आ गया है। वंदे मातरम् के जो हिस्से पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के कहने से काटे गए थे, उन हिस्सों के बड़े किस्से हैं। राहुल जी होते तो उनको जरूर सुनाते। उन हिस्सों में मां दुर्गा की स्तुति थी, शक्ति की आराधना थी और इन हिस्सों को हटाना भारत की आत्मा को चीरने जैसा था।

माननीय सभापति जी, वंदे मातरम् के संक्षिप्त इतिहास पर मैं कुछ कहना चाहूंगा। दिनांक- 07 नवंबर, 1875 के दिन भारत माता के महान सपूत, संत, साधक, साहित्यकार बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय जी ने इसकी रचना की और यह शुभ दिन कार्तिक शुक्ल नवमी थी, अक्षय नवमी था। शायद यही कारण भी है कि आज भी यह वंदे मातरम् कोई कविता नहीं, यह भारत माता एवं इस महान भारत भूमि का एक समर्पित महामंत्र है और आगे आने वाले दशकों तक रहेगा। वंदे मातरम् उतना ही पवित्र है, जितनी वेद की ऋचाएं हैं। वंदे मातरम् उतना ही पाक है, जितनी कुरान की आयतें हैं। वंदे मातरम् उतना ही होली है, जितने बाइबिल के वर्ष हैं। वंदे मातरम् बंकिम चंद्र चटर्जी के कालजयी उपन्यास आनंद मठ का एक अभिन्न अंग है, एक भाग है।

आनंद मठ केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि ऐतिहासिक चेतना का एक दस्तावेज है। अनडिवाइडेड बंगाल की लड़ाई लड़ने वाले ऐसे लोग जो ईस्ट इंडिया कंपनी और स्थानीय सामंती नवाबों के अत्याचारों और शोषणों के खिलाफ लड़ते थे, उन महान सेनानियों के संघर्ष का महामंत्र था वंदे मातरम्। वंदे मातरम् आज भी उतनी ही ऊर्जा का संचार करता है, फिर भी जिन लोगों के दिमागों के दरवाजे बंद हैं, जिन्होंने अपनी बुद्धि और विवेक पर कट्टरपंथ का ताला लगा रखा है, उनके लिए उन्हीं की भाषा में मैं कुछ कहता हूं जो एक अनाम कवि ने लिखा है। चार लाइन आपसे साझा करता हूं कि वंदे मातरम् है क्या?

कौम के खादिम की है जागीर, वंदे मातरम्

मुल्क के वास्ते है अकसीर, वंदे मातरम्

जुल्म से गर कर दिया खामोश मुझको देखना,

बोल उठेगी मेरी तस्वीर, वंदे मातरम्, वंदे मातरम्।

महोदय, एक बहुत बड़े बंगाली साहित्यकार, इस्लामिक स्कॉलर रियाजुल करीम हुए। उन्होंने एक लेख लिखा था ? इस्लाम और वंदे मातरम्। मैं इस्लाम इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि मुझसे पहले के कांग्रेस, डीएमके और अन्य वक्ताओं ने कहा कि मुस्लिम इसके विरोधी थे। मैं इसकी सच्चाई पर प्रकाश डालना चाहता हूं। उन्होंने वंदे मातरम् के समर्थन में एक लेख लिखा? इस्लाम और वंदे मातरम्। रियाजुल करीम ने लिखा कि साजिश के तहत वंदे मातरम् का विरोध शुरू करवाया गया, ताकि मुसलमानों को स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन से धीरे-धीरे हटा दिया जाए। रियाजुल करीम ने लिखा कि वंदे मातरम् वह गीत है, जो गीत गूंगों को जबान दे दे, जो कमजोर दिल के थे, उनको साहस दे दे, जो संन्यासी, विद्रोही हो या भारत का स्वतंत्रता संग्राम या फिर देश के लिए सीमाओं पर लड़ने वाले जवान हों, वंदे मातरम् के उद्‌घोष से ऐसा जोश पैदा होता है कि मुर्दों में भी जान फूंक दे।

बढ़ते कदम रुक जाते हैं, सर तन जाते हैं गुरूर से,

कान में पहुंची जहां झंकार वंदे मातरम्, वंदे मातरम्।।

जिन लोगों ने वंदे मातरम् के विरोध के बहाने मुसलमानों को स्वतंत्रता आंदोलन से अलग करने का प्रयास किया, आज वे देश के विकास में और विकसित भारत की इस सोच के साथ भी उनको जोड़ने के लिए या उनसे अलग हटाने का प्रयास कर रहे हैं। वंदे मातरम् हम राष्ट्र भक्तों के लिए एनर्जी हैं और कुछ लोगों को इससे एलर्जी है। अब एलर्जी वालों का तो हम कुछ कर नहीं सकते। लेकिन इसके 150वें वर्ष पर मैं इतना जरूर कहूंगा कि अंग्रेजों को तो वंदे मातरम् से दिक्कत थी, जिन्ना को वंदे मातरम् से दिक्कत थी, जिन्ना के मुन्ना को भी वंदे मातरम् से दिक्कत है।? (व्यवधान)

<u>15.42 hrs</u> (Hon. Speaker *in the Chair*)

अध्यक्ष जी, मैं बड़ा स्पष्ट कह रहा हूं।? (व्यवधान) सर, मणिक्कम टैगोर जी को क्यों ऐसा लगता है? मैंने इतना ही कहा कि जिन्ना को वंदे मातरम् से दिक्कत थी, अंग्रेजों को वंदे मातरम् से दिक्कत थी और जिन्ना के मुन्ना को भी वंदे मातरम् से दिक्कत है।? (व्यवधान) जिनमें वंदे मातरम् सुनकर ऊर्जा का संचार नहीं होता या तो वे कांग्रेसी हैं, कम्युनिस्ट हैं या लीगी सोच के समर्थक हैं। मैं कहना चाहता हूं कि कांग्रेस का समर्थन मुस्लिम लीग कर रही है। इंडियन मुस्लिम लीग कर रही है कि नहीं कर रही है? उसके समर्थन के बिना राहुल जी और प्रियंका जी शायद चुनकर भी नहीं आ पाते, इसलिए उनका समर्थन लेने की जरूरत पड़ रही है। माननीय अध्यक्ष जी, जिनको वंदे मातरम् से दिक्कत है, मैं उनको सिर्फ इतना ही कहूंगा कि?

Vande Mataram is the most sacred mantra of our freedom struggle. It is the war cry of our Independence that no force on earth can silence. It is the life blood of our national strength and spirit. Vande Mataram is uncompromising, unsilenced and unshaken. These twin words, Vande Mataram, has no beginning, no end. They are eternal and immortal.

हम वंदे मातरम् का एक ओर जहां 150वां साल मना रहे हैं, वहां कुछ लोगों के पास इस महापाप का प्रायश्चित करने का अवसर भी है। लेकिन रेडिकल कम्युनिज्म और लीगी मानसिकता के साथ जुड़े लोग शायद इस पर सुधार न करे, क्योंकि

वंदे मातरम् को उन्होंने आधार बनाया था? पॉलिटिक्स ऑफ एपीजमेंट का, तुष्टीकरण की राजनीति का। उस समय वोट बैंक की राजनीति उनको भविष्य में भी दिख रही थी और आज भी दिखती है। इसलिए बांटो और राज करो की नीति तो अंग्रेजों की थी, लेकिन इनकी नीति काटो, छांटो, विवाद खड़ा करो, फिर जड़ से ही खत्म कर दो। इन्होंने वंदे मातरम् के साथ भी वैसा ही किया और देश के भी दो टुकड़े करने का काम नेहरू जी की सोच के कारण उस समय हुए थे। ये कहते हैं, सोनिया जी ने एक बार कहा कि नेहरू जी को बदनाम करने का काम करते हैं।

सर, मैं बड़ी गंभीरता से कहता हूं। हम लोग जवाहरलाल नेहरू जी को बदनाम नहीं कर रहे। मैं तो देश के सामने सच रख रहा हूं। हम तो देश के सामने सच रख रहे हैं और सच्चाई यही है कि जब वंदे मातरम् को काट-छांट दिया गया तब ओमकार ठाकुर जी हो, पलुस्कर जी हो, उन्होंने कहा कि हम कटा-छंटा वंदे मातरम् नहीं गाएंगे। हम पूरा का पूरा वंदे मातरम् गाएंगे।

जिसको विरोध करना है, वह करे। इन्होंने इसको केवल दो स्टैंजों तक सीमित कर दिया, देश को टुकड़ों मे बांट दिया। उस समय इन्होंने जिन्ना को खुश करने का काम किया और आज जिन्ना के मुन्ना को खुश करने का काम कर रहे हैं।

माननीय सभापति जी, 27 जुलाई, 2018 को कांग्रेस की एक बड़ी रैली दक्षिण कन्नड़ जिले के बंतवाल में हो रही थी। उसमें राहुल जी ने मंच से कहा कि ?Sing only one line.?. अरे! नेहरू जी ने दो स्टैंजे तक कर दिया और राहुल जी एक लाइन तक सीमित कर रहे हैं? ? (व्यवधान) यही नहीं, मुझे नहीं पता कि आखिरकार ये इसका इतना विरोध क्यों करते हैं। इसका मूल कारण क्या है?? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, वंदे मातरम् पर बोलिए।

? (व्यवधान)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : माननीय अध्यक्ष जी,? (व्यवधान) मैं सिर्फ सच्चाई मंच पर ला रहा हूं। वर्ष 2006 में यूपीए की सरकार थी। उस समय कहा गया कि सभी शैक्षणिक संस्थानों में वंदे मातरम् गाया जाएगा, लेकिन कहीं न कहीं कट्टरवादियों ने, जिन्नावादी सोच वालों ने इतना दवाब बनाया कि उस समय की यूपीए चेयरपर्सन ने कहा कि नहीं, इसको आप अनिवार्य मत करिए। इसको स्वैच्छिक कर दीजिए। मेरा सवाल यह है कि क्या वंदे मातरम् अनिच्छा या इच्छा का विषय हो सकता है। वंदे मातरम् गीत इच्छा या अनिच्छा का विषय नहीं हो सकता। मातृभूमि के सामने सर झुकाने से, भारत माता को नमन करने से किसी की धार्मिक भावना आहत नहीं होती है।

अध्यक्ष महोदय, जो लोग अमेरिकन डेमोक्रेसी की बात करते हैं और सेक्युलरिज्म की बात करते हैं, उनको मैं इतना ही कह देना चाहता हूं कि यूनाइटेड स्टेट्स में प्लेज ऑफ एलिजिएंस में, जिसका एक फ्रेज है ? one nation under God?. अमेरिका के स्कूलों में बच्चों को रोज इस पाठ को पढ़ाते हैं, लेकिन हमारे यहां पर वंदे मातरम् गाने पर विरोध करते हैं। मध्य प्रदेश में जब इनकी सरकार थी, तो कहा गया कि मध्य प्रदेश के सेक्रेटेरिएट में वंदे मातरम् धुन नहीं बजनी चाहिए। राहुल जी उस समय अध्यक्ष थे। यह बार-बार वंदे मातरम् का विरोध क्यों होता है?? (व्यवधान) यही नहीं, वर्ष 2009 में वोट बैंक की

राजनीति के लिए उस समय के होम मिनिस्टर ? देवबंद में जमीयत उलेमा-ए-हिंद के तीसवें जनरल सेशन में गए ।? (व्यवधान) ? जिस सेशन में गए, वहां पर वंदे मातरम् के विरोध में रिजोल्यूशन पास हुआ । कांग्रेस पार्टी को इसका जवाब देना चाहिए कि एक नहीं, एक के बाद दूसरा, सबने किया । सर, ?बड़े मियां तो बड़े मियां, छोटे मियां सुब्हान अल्लाह? । वर्ष 2019 में भोपाल सेंट्रल से कांग्रेस के एमएलए आरिफ मसूद हुआ करते थे । उन्होंने एक सार्वजनिक कार्यक्रम में शरिया कानून के अंतर्गत वंदे मातरम् बोलने से मना कर दिया ।? (व्यवधान)

सर, मैं पूछना चाहता हूं कि क्या वंदे मातरम् के गान पर रोक लगाना चाहिए? ? (व्यवधान) यही नहीं, समाजवादी पार्टी के सांसद ?, जिन्होंने वंदे मातरम् को इस्लाम विरोधी कह दिया । ? (व्यवधान) महाराष्ट्र में समाजवादी पार्टी के विधायक ? ने वंदे मातरम् का विरोध किया । ? (व्यवधान) समाजवादी पार्टी के ही एक और विधायक ? महाराष्ट्र में इसका विरोध करते हैं । समाजवादी पार्टी और कांग्रेस पार्टी एक तरह से मिलकर वंदे मातरम् का बार-बार विरोध करते हैं । ? (व्यवधान) अखिलेश जी तो कह देते हैं कि बच्चों को अधिकार है कि कौन-सा गाना सुनना है । सर, यह कोई फिल्मी गीत नहीं है, यह लोरी नहीं है, यह राष्ट्रीय गीत है । ? (व्यवधान) अखिलेश जी, आप आर्मी स्कूल में पढ़े होंगे, लेकिन आपको इतना भी नहीं पता कि वंदे मातरम् और फिल्मी गीत में अंतर होता है । ? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप अपना भाषण समाप्त कीजिए ।

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : अध्यक्ष महोदय, मैं तीन मिनट में अपना भाषण समाप्त कर रहा हूं ।? (व्यवधान) आज भारत धूमिल पड़ चुके अपने स्वर्णिम अतीत को तलाश रहा है और अपने भविष्य को गढ़ भी रहा है । ? (व्यवधान) सर, ध्यान से सुनिएगा, भारत के पूर्व प्रधान मंत्री आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने 19 मार्च, 1973 को कहा था कि वंदे मातरम् इस्लाम का विरोधी नहीं है । क्या इस्लाम को मानने वाले जब नमाज पढ़ते हैं, तो इस देश की धरती पर, इस देश की पाक जमीन पर सिर नहीं झुकाते, माथा नहीं टेकते? ऐसे मुद्दों पर किसी को भी असहमत होने की इजाजत नहीं दी जा सकती । कल वे कहेंगे कि तिरंगा झण्डा है, मगर हम तिरंगे के आगे झुकेंगे नहीं, क्योंकि हम अल्लाह के आगे झुकते हैं? (व्यवधान) हिंदुस्तान में रहने वाले हर आदमी को तिरंगे के सामने झुकना होगा । ? (व्यवधान)

वंदे मातरम् कहना होगा । वंदे मातरम् भारत के राष्ट्रवाद का महामंत्र है । जब-जब हम इस मंत्र को भूले हैं, हम कमजोर हुए हैं । आजादी के अमृत महोत्सव में प्रधान मंत्री मोदी जी ने केवल एक परविार नहीं, बल्कि जितने लोग आजादी के साथ जुड़े थे, स्वतंत्रता संग्राम के साथ जुड़े थे, उनके बारे में गांव-गांव में बताया है ।

सर, ये लोग वंदे मातरम् को कहां से याद करेंगे? इनकी सरकारों के समय यासीन मलिक को ? बिरयानी परोसी जाती थी । उस यासीन मलिक को पाकिस्तान भेजा जाता था । बाटला हाउस के आतंकवादियों के घर जा कर ? जी रोती थीं ।

अध्यक्ष जी, मैं आखिरी बात कह कर अपनी बात समाप्त करूंगा । यह इसलिए जरूरी है कि अगर मैं यह नहीं पूछूंगा तो मेरी बात अधूरी रह जाएगी । मैं एक मिनट में अपनी बात खत्म कर रहा हूं ।?(व्यवधान)

एक मुस्लिम रहमतुल्ला एम सयानी ने वर्ष 1896 में कोलकाता में कांग्रेस के 12वें अधिवेशन की अध्यक्षता की थी, क्या तब यह मुस्लिम विरोधी नहीं थी? वर्ष 1905 में बंगाल के बारीसाल में चिंतरंजन गुहा जी ने वंदे मातरम् के लिए अपना खून बहाया, वर्ष 1907 में वे वंदे मातरम् गाते-गाते सुशील चंद्र सेन ने कोड़े की सजा झेली, वर्ष 1908 में खुदीराम बोस वंदे मातरम् गाते हुए फांसी चढ़ गए, वर्ष 1909 में मदनलाल ढींगरा वंदे मातरम् बोलते हुए लंदन में फांसी पर झूल गए, वर्ष 1927 में राम प्रसाद बिस्मिल वंदे मातरम् बोलते हुए फांसी पर चढ़ गए। दिनेश चंद्र गुप्त ने कोलकाता जेल में वंदे मातरम् का उद्घोष किया।

सर, जब-जब फांसी की सजा हुई है, तब-तब सबने वंदे मातरम् कहा है और देश को आजादी भी दिलाई है। जितनी ज्यादा लाठियां उन पर चलीं, उससे ज्यादा दोगुनी आवाज वंदे मातरम् और जय घोष की उठी। आज इसकी 150वीं जयंती पर इस सदन से भी यह आवाज गूंजनी चाहिए। मैं कहता हूं कि वंदे मातरम्, वंदे मातरम।

सर, हमें यही कहना है।?(व्यवधान) मणिक्कम जी, आप कितना वंदे मातरम् का विरोध करेंगे? अध्यक्ष महोदय, मैं एक सवाल पूछ कर अपनी बात समाप्त करता हूं। मेरा आखिरी सवाल है। आखिर वह कौन सी मानसिकता है, जिस कविता ने अंग्रेजों से लड़ने के लिए राष्ट्रवाद का ज्वार पैदा कर दिया, आज चंद लोग उसका विरोध करते हैं। जिस वंदे मातरम् पर हजारों स्वतंत्रता सेनानियों ने देश के लिए अपनी जान न्यौछावर कर दी, आज उससे दिक्कत है। जिस वंदे मातरम् की धुन विश्व कवि रविन्द्रनाथ टैगोर ने दी, उससे दिक्कत है। जिस वंदे मातरम् को लता दीदी ने गाया, उससे दिक्कत है। ए. आर. रहमान ने जिसको ?मा तुझे सलाम?में जगह दी, उससे दिक्कत है। जो वंदे मातरम् चंद्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह, मदन लाल ढींगरा, वीर सावरकर, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे क्रातिकारियों का अभिवादन था, उससे दिक्कत है। जिस वंदे मातरम् का नारा लगने की वजह से हेडगेवार जी को स्कूल से निकाला गया, उससे दिक्कत है। जिस वंदे मातरम् के समर्थन में लेख छपने के कारण लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को देश निकाला मिलाा, उससे दिक्कत है। जिस वंदे मातरम् को राष्ट्रगीत का सम्मान प्राप्त हुआ, उससे दिक्कत है। आपको किससे दिक्कत है??(व्यवधान)

अध्यक्ष जी, मुझे मेरा जवाब मिल गया है। इन्होंने कहा कि इनको दिक्कत हमसे है। मैंने पहले कहा था कि हमें वंदे मातरम् से एनर्जी मिलती है, लेकिन कुछ को वंदे मातरम् से एलर्जी होती है। ?(व्यवधान) यह एलर्जी दिखती है। आप वंदे मातरम् की 150वीं जयंती पर चर्चा करवा रहे हैं, देश के सामने इतिहास और सच को लाने का अवसर दिया है, माननीय प्रधान मंत्री जी ने देश के सामने एक इतिहास और वास्तविकता को रखा है कि कैसे वंदे मातरम् गीत एक महामंत्र के रूप में देशवासियों को इकट्ठा करता रहा है। मैं माननीय प्रधान मंत्री जी को इसकी शुरुआत करने के लिए एक ओर धन्यवाद करता हूं, साधुवाद देता हूं और दूसरी ओर आपको भी धन्यवाद देते हुए मैं अपना स्थान ग्रहण करता हूं। वंदे मातरम्।

***m32श्री राजेश वर्मा (खगड़िया) :** अध्यक्ष महोदय, मैं अपने लोक सभा खगड़िया की जनता और अपने नेता चिराग पासवान का आभार व्यक्त करता हूं कि आज इस महत्वपूर्ण विषय पर मुझे बोलने का मौका मिला। आज यह सदन ऐतिहासिक धरोहर वंदे मातरम् के डेढ़ सौ वर्ष पूर्ण होने पर एकत्रित हुआ है। वंदे मातरम् केवल दो शब्द नहीं है, इस शब्द ने हमें अटूट् साहस दिया, अदम्य आत्मविश्वास दिया, मातृभूमि के लिए बलिदान की भावना को जगाने का काम किया। यह वह उद्घोष है, जिसने

अंग्रेजी शासन की जंजीरों को तोड़ने में करोड़ों देशवासियों को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। मैं कहना चाहता हूं।

जहां-जहां गूंजा वंदे मातरम् का नाद, वहां-वहां उठ खड़ा हुआ हर भारतीय फरियाद।

मिट गई बेड़ियां, जागी सोयी हुई आत्मा, इस मंत्र ने ही दिया हमें स्वतंत्रता का रास्ता।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से, इस सदन के माध्यम से हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी और इस सरकार का हृदय से धन्यवाद व्यक्त करता हूं। धन्यवाद इसलिए व्यक्त नहीं कर रहा हूं कि उन्होंने विकास के चहुमुखी काम किए, जहां एक तरफ यह सरकार वर्तमान और भविष्य को मजबूत करने का काम कर रही है, वहीं हमारी सरकार इस देश के गौरवशाली इतिहास को एक उत्सव की तरह मनाने का काम कर रही है। चाहे पांच सौ वर्षां के संघर्ष के बाद राम मंदिर के निर्माण की बात हो या बिहार में पुन: हमारे नालंदा विश्वविद्यालय को स्थापित करने की बात हो, एक लंबे समय के बाद आज डेढ़ सौ वर्ष पूर्ण होने पर वंदे मातरम् के जश्न को मनाने की बात हो। यह सरकार पूरी तरह से स्पष्ट कर रही है कि हम लोग विकास और विरासत दोनों को साथ लेकर चलने का काम करते हैं। मैं इसके लिए देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी और एनडीए सरकार को कोटि-कोटि धन्यवाद व्यक्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से बताना चाहता हूं कि बिहार के पटना विधान सभा के पास एक शहीद स्मारक बना हुआ है। बहुत सारे लोग इस शहीद स्मारक का इतिहास नहीं जानते हैं। सात वीर सपूत थे, जिन्होंने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में ठाना था कि वह सचिवालय में जाकर तिरंगा झंडा लहराने का काम करेंगे। अंग्रेजी कलेक्टर ने उस वक्त उन पर गोलियां चलवाईं। सातों वीर जब शहीद हुए, तब उन्होंने तिरंगे को जमीन पर गिरने नहीं दिया। जब वह शहीद हो रहे थे तो अंत में उनकी जुबान पर कोई धर्म नहीं था, एक उद्घोष था, वह उद्घोष वंदे मातरम् था।

आज बिहार का मजदूर कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक अपने पसीने से इस देश का निर्माण करता है। आज जब बिहार रेजिमेंट का जवान गलवान घाटी में चीनी सैनिकों की गर्दन मरोड़ता है तो हुंकार भरता है, उसका उद्घोष होता है, वंदे मातरम्। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू जैसे महान क्रांतिकारियों ने हंसते-हंसते फांसी के फंदे पर अपना बलिदान देने का काम किया और अंतिम वक्त में यदि वह कुछ कह कर गए तो एकमात्र उद्घोष था, वह था, वंदे मातरम्। जहां इस गौरवशाली इतिहास को हम सब मिलकर याद कर रहे हैं, इस जश्न को मनाने का काम हम लोग कर रहे हैं, वहां हम लोगों को इस इतिहास से की गई छेड़छाड़ को भी याद करना चाहिए।

<u>16.00 hrs</u>

अध्यक्ष जी, हमें याद करना चाहिए कि जिस तरीके से वर्ष 1905 में इस गीत ने इस देश को मजबूत और एकता के साथ आगे बढ़ाने का काम किया, वहीं वर्ष 1937 में किस तरीके से तुष्टिकरण की राजनीति और वोट बैंक के लिए वंदे मातरम् के भी टुकड़े कर देने का काम किया गया। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस चाहते थे कि ये पूरा गीत गाया जाए, क्योंकि वे इस गीत की सख्ती को पहचानते थे लेकिन पंडित नेहरू और कांग्रेस के तत्कालीन नेतृत्व के द्वारा यह तर्क दिया गया कि इस गीत से

एक विशेष समुदाय नाराज हो सकता है और छह छंदों वाले इस महान गीत के चार छंद हटा दिए गए। मैं सदन में पूरी जिम्मेदारी के साथ कह सकता हूं कि इस देश का भौगोलिक विभाजन वर्ष 1946 में हुआ लेकिन इस देश का मानसिक विभाजन वर्ष 1937 में हो गया था, जिस दिन वंदे मातरम् को खंडित करने का काम किया गया था। आज का भारत सही मायने में बंकिम चन्द्र जी के वंदे मातरम् के सपने को पूरा कर रहा है। बंकिम बाबू ने जिस ?सुजलाम्? की बात की थी और जिस भारत की कल्पना की थी, आज वह सपना जल जीवन मिशन के तहत पूरा होने का काम हो रहा है। बंकिम बाबू ने जिस ?सुफलाम्? की बात की थी, जिस भारत की बात की थी आज वह हमारे किसान भाइयों की खुशहाली में दिखाई दे रहा है। आज पीएम किसान सम्मान निधि से करोड़ों किसानों को सीधा लाभ हो रहा है, वंदे मातरम् में जिस ?मलयजशीतलाम्? की बात की गई थी, वह आज भारत के इंफ्रास्ट्रक्चर और पर्यावरण संरक्षण में दिखाई दे रहा है।

अध्यक्ष जी, गीत की एक बहुत ही सुंदर पंक्ति ?शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्? यानी वह माँ जिसकी रातें उज्ज्वल चांदनी से खिली हुई हैं। 19वीं सदी में चांदनी सिर्फ उम्मीद की थी लेकिन 21वीं सदी में यह ज्ञान और विज्ञान की चांदनी है।

अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि जब भारत का चन्द्रयान चन्द्रमा में दक्षिण ध्रुव पर उतरता है तो वह बंकिम बाबू की उस शुभ्र ज्योत्स्नाम् का आधुनिक रूप है। आज की सरकार तुष्टिकरण से नहीं, बल्कि संतुष्टीकरण से चलती है। हम योजनाओं का लाभ जाति, धर्म, महजब देखकर नहीं, यह सरकार ?सबका साथ, सबका विकास? के मंत्र के साथ चलने का काम कर रही है। एक तरफ हमें जहां इस बात को लेकर गर्व होता है कि बंगाल में लिखी गई यह कविता, यह गीत जिसने पूरे देश को एकता में बांधने का काम किया, उसी बंगाल में जो जय गुरुदेव रबिन्द्र नाथ टैगोर का बंगाल था, यह वही बंगाल है जो स्वामी विवेका नंद जी का बंगाल था, यह नेता सुभाष चन्द्र बोस जी का बंगाल था, यह वह धरती थी जिसने वंदे मातरम् दिया, लेकिन आज दीदी के राज में इस बंगाल का क्या हाल है, इस बात को भी हमें समझने की जरूरत है। बंकिम बाबू ने जिस बंगाल में मां दुर्गा, मां काली की शक्ति देखी थी, आज वहां रामनवामी की शोभा यात्रा निकालने पर ये पथराव करने का काम करते हैं। वहां वंदे मातरम् बोलने वाले को कम्युनल कहा जाता है और घुसपैठियों को अपना बताया जाता है। वोट बैंक की राजनीति इतनी हावी हो गई है कि देश की सुरक्षा और डेमोग्राफी तक को इन लोगों ने ताक पर रखने का काम किया है और घुसपैठियों के लिए ये रेड कारपेट बिछाकर बैठे हैं।

अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से इन्हें बता देना चाहता हूं कि अभी-अभी बिहार का चुनाव सम्पन्न हुआ है। तुष्टिकरण की राजनीति करने वालों का क्या हाल हुआ है, यह आप देख लें। अब देश केवल विकास और राष्ट्रवाद को चुनने का काम करता है। जो लोग तुष्टिकरण की राजनीति कर रहे हैं, इस बात को याद रखें कि अब ऐसा नहीं होगा। बिहार ने दिखा दिया कि जातिवाद और परिवारवाद की जंजीरें अब टूट चुकी हैं। जनता समझ चुकी है कि कौन देश जोड़ने वालों के साथ है और कौन देश को तोड़ने वालों के साथ है। जनता सब जानती है। जो लोग अभी भी भारत को समझ नहीं पा रहे हैं, मैं उनसे कहना चाहता हूं

?एक प्रांत नहीं है यह भारत एक देश नहीं है यह भारत, बस सोच है जिसमें तन्यता है, वह स्नेह है जिसमें सभ्यता है, वह भाव है जिसमें भव्यता है, वह ज्ञान है जिसमें दिव्यता है, जन-जन में बसा है यह भारत, कण-कण में बसा है यह भारत। ?

वंदे मातरम् हमें याद दिलाता है कि राष्ट्र केवल सीमाओं से नहीं, संस्कारों से बनता है और प्रगति केवल संख्या से नहीं बल्कि संवेदना से आती है। स्वतंत्रता सिर्फ अधिकार नहीं है, कर्तव्य भी है। मैं अंत में एक बात कहना चाहता हूं कि आज इस महत्वपूर्ण विषय में जहां हम सभी सदन के लोग एकत्रित होकर वंदे मातरम् के 150 वर्ष मना रहे हैं तो हमारे प्रतिपक्ष के नेता के अंदर कितनी गंभीरता है और देश के प्रति उनके अंदर कितना प्रेम है, यह दिखाई देता है क्योंकि वे इस समय भी सदन में मौजूद नहीं हैं। मैं उनके लिए कहना चाहता हूं कि

?जो भरा नहीं है भावों से,

बहती जिसमें रस धार नहीं,

वह हृदय नहीं, वह पत्थर है,

जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।?

अध्यक्ष जी, हमारी लड़ाई सत्ता के लिए नहीं है, सत्य के लिए है। हमारी लड़ाई कुर्सी के लिए नहीं है, स्वाभिमान के लिए है। हम रहे या न रहें, यह देश रहना चाहिए और यह तिरंगा शान से लहराना चाहिए और संसद से लेकर सड़क तक एक स्वर में गूंजना चाहिए और वह स्वर कुछ और नहीं वंदे मातरम्, वंदे मातरम्, वंदे मातरम् होना चाहिए।

***m33श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा (वायनाड)** : अध्यक्ष महोदय, आपने आज मुझे इस चर्चा में भाग लेने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देती हूं। आज जिस विषय पर हम चर्चा कर रहे हैं, वह केवल एक विषय नहीं है, बल्कि भारत की आत्मा का एक हिस्सा है। हमारा राष्ट्रीय गीत उस भावना का प्रतीक है, जिसने गुलामी में सोए हुए भारत के लोगों को जगाया, जिसने उन्हें हिम्मत दी कि ब्रिटिश साम्राज्य के सामने खड़े होकर सत्य और अहिंसा के नैतिक हत्यारों का सामना कर पाएं। आज यह चर्चा एक भावना के ऊपर है। जब हम वंदे मातरम् का नाम लेते हैं, तो वही भावना हमारे दिल में उजागर होती है। जब हम वंदे मातरम् का नाम लेते हैं, तो हमें उस पूरे इतिहास की याद आती है, जो स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास था। उसकी पीड़ा, उसका संघर्ष, उसका साहस, उसकी नैतिकता, उसका जो बल था, जिसकी वजह से ब्रिटिश साम्राज्य उसके सामने झुका।

अध्यक्ष महोदय, वंदे मातरम् उस आधुनिक राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति है, जिसने भारत के लोगों को एक राजनीतिक और नैतिक आकाक्षा से जोड़ा। जिसने भारत के लोगों को एक साझा नियति के उत्तराधिकारी, एक साझा भविष्य निर्माता के रूप में देखा, लेकिन आज की यह बहस मुझे कुछ अजीब-सी लग रही है। जैसा कि मैंने कहा, यह गीत देश की आत्मा का हिस्सा बन चुका है। डेढ़ सौ सालों से देशवासियों के दिलों में यह गीत बस चुका है। 75 सालों से हमारा देश आजाद है, तो फिर आज इस बहस की क्या आवश्यकता है? ? (व्यवधान) हमारा मकसद क्या है? जनता द्वारा हमें दिया गया दायित्व, जनता का विश्वास, उनके प्रति हमारी जिम्मेदारी का हम किस तरह से इस्तेमाल कर रहे हैं, हमें यह सोचना चाहिए, क्योंकि इस मोड़ पर हम इस सदन में अपने राष्ट्रीय गीत पर भी बहस करेंगे। ? (व्यवधान) आपने बहस मांगी है। आप तो इलेक्टोरल रिफॉर्म्स पर बहस की मांग इसलिए नहीं मान रहे थे कि जब तक हम इस पर बहस नहीं करेंगे, तब तक उस पर बहस नहीं

होगी। इसकी वजह क्या है? हम आज यहां यह बहस क्यों कर रहे हैं? यह हमारा राष्ट्रगीत है। इस पर क्या बहस हो सकती है? हम यह बहस आज यहां दो वजहों से कर रहे हैं- पहला, बंगाल का चुनाव आ रहा है और हमारे प्रधान मंत्री जी उसमें अपनी भूमिका निभाना चाहते हैं।? (व्यवधान) दूसरी वजह इनका पुराना मकसद है कि जिन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी, जिन्होंने देश के लिए बड़ी-बड़ी कुर्बानियां दीं, उन पर सरकार नए आरोप लादने का मौका चाहती है। देश का ध्यान फिर से जनता के ज्वलंत मुद्दों से भटकाना चाहती है। यही आपका एकमात्र मकसद है। आपका मकसद है कि हम फिर से उसी अतीत में मंडराते रहें, उसी की तरफ हम देखते रहें, जो हो चुका है।

जो बीत चुका है, क्योंकि यह सरकार वर्तमान और भविष्य की ओर देखना ही नहीं चाहती है। वह इस काबिल ही नहीं रही है।

महोदय, सच्चाई यह है कि आज मोदी जी वह प्रधानमंत्री नहीं रहे, जो एक समय में थे। सच यह है कि यह दिखने लगा है। उनका आत्मविश्वास घटने लगा है। उनकी नीतियाँ देश को कमजोर कर रही हैं। मेरे सत्ता पक्ष के साथी चुप इसलिए हैं, क्योंकि अंदर-अंदर से वे भी इस बात से सहमत हैं। आज देश के लोग खुश नहीं हैं, लोग परेशान हैं, वे तमाम समस्याओं से घिरे हुए हैं और उन समस्याओं का हल आप निकाल नहीं रहे हैं।? (व्यवधान) हां ठीक है, उसका भी बोल लेंगे। समय आयेगा तो उसका भी बोल लेंगे, बल्कि कल समय आ रहा है, चुनाव पर चर्चा होगी, उस पर भी बोलेंगे।

महोदय, इनके भी अपने लोग दबी जुबान में कहने लगे हैं कि सारी सत्ता को केन्द्रित करने से देश का नुकसान हो रहा है। इस बीच अगर हम अतीत की बातें नहीं करेंगे तो कौन सी बातें करेंगे? ये किसी अन्य बात के काबिल ही नहीं हैं। इन्हें सिर्फ जनता का ध्यान भटकाना है। इसलिए आज हम ?वन्दे मातरम्? पर चर्चा कर रहे हैं। ?वन्दे मातरम्? देश के कण-कण में जीवित है। इस पर बहस नहीं हो सकती, लेकिन चलिए आपने बहस मांगी, आप बहस करना चाहते हैं तो बहस करते हैं।

आज इस चर्चा को प्रधानमंत्री जी ने शुरु किया, उन्होंने भाषण दिया और इसको कहने में कोई झिझक नहीं है कि भाषण अच्छा देते हैं। थोड़ा सा लंबा भाषण देते हैं, लेकिन भाषण अच्छा देते हैं।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप तो ?वन्दे मातरम्? पर बोलिए।

श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा : सर, मैं उसी पर बोल रही हूँ। अब मैंने तारीफ कर दी तो थोड़ा उस पर और भी बोल लेने दीजिए।

माननीय अध्यक्ष : आज विषय ?वन्दे मातरम्? का है तो हम उस पर ही अपनी बात रखें। यही ठीक रहेगा।

? (व्यवधान)

श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा : सर, मेरी बात ?वन्दे मातरम्? पर ही है।

सर, भाषण बहुत अच्छा देते हैं, लेकिन तथ्यों के मामले में कमजोर पड़ जाते हैं। इसमें भी एक कला होती है कि तथ्यों को किस तरह से जनता के सामने रखा जाए। मैं तो नई-नई हूँ। मैं जनता की प्रतिनिधि हूँ। मैं कलाकार तो नहीं हूँ। इसीलिए

मैं भी सदन के सामने कुछ तथ्य रखना चाहती हूँ, लेकिन मैं सिर्फ तथ्य के रूप में रखना चाहती हूँ।? (व्यवधान) मैं उदाहरण दूँ।

सर, मैं उन्हें उदाहरण दे देती हूँ, वे उदाहरण देने के लिए कह रहे हैं।? (व्यवधान) ?वन्दे मातरम्? की सालगिरह पर जो आपने कार्यक्रम आयोजित किया था, उसमें प्रधानमंत्री जी ने भाषण दिया। उसमें उन्होंने कहा कि वर्ष 1896 में पहली बार बंकिम चन्द्र चटर्जी जी ने यह गीत एक अधिवेशन में गाया। उन्होंने यह नहीं बताया कि वह कौन सा अधिवेशन था। क्या वह हिन्दू महासभा का अधिवेशन था? क्या वह आरएसएस का अधिवेशन था? वे किस बात से कतरा रहे थे कि वह कांग्रेस का अधिवेशन था। मैं और उदाहरण दूँ या अपना भाषण जारी रखूँ।? (व्यवधान) मैं और उदाहरण दे रही हूँ।? (व्यवधान)? वन्दे मातरम्? की जो क्रोनोलॉजी है, उसे भी आप समझिए, जो असली क्रोनोलॉजी है। सन् 1875 में महाकवि बंकिम चन्द्र चटोपाध्याय जी ने इस गीत के पहले दो अंतरे लिखे, जो हमारा राष्ट्रगीत घोषित हुआ था और जिसे हम अपना राष्ट्रगीत कहते हैं। उस समय उन्होंने ये पहले दो अंतरे लिखे। वर्ष 1882 में 7 साल बाद उनका एक उपन्यास ?आन्नद मठ? प्रकाशित हुआ। उस उपन्यास में यही कविता उन्होंने प्रकाशित की, लेकिन इसमें चार अंतरे और जोड़ दिए। वर्ष 1896 में कांग्रेस के अधिवेशन में बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय जी ने पहली बार यह गीत गाया।

सन् 1905 में बंगाल के विभाजन के खिलाफ आंदोलन के समय वंदे मातरम् जनता की एकता की गुहार बनकर गली-गली से उठा। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे महान स्वतंत्रता सेनानी इस गीत को खुद गाते हुए बंगाल की सड़कों पर उतरे। विद्यार्थियों से लेकर किसानों तक, व्यापारियों से लेकर वकीलों तक हर कोई यह गीत गाने लगा। इस गीत की शक्ति को समझिए। ब्रिटिश साम्राज्य इसको सुनकर कांपता था और हमारे देशवासी इसको सुनकर वह मन बनाते थे, वह हिम्मत बनाते थे कि इस भयंकर साम्राज्य के खिलाफ सत्य और अहिंसा के नैतिक हथियारों को लेकर शहीद होने की तैयारी करते थे। यह गीत मातृभूमि के लिए मर-मिटने की भावना को जगाता है। इस गीत की शक्ति यह है। इस गीत का हमारे देश से जुड़ाव यह है, लेकिन जब 1930 के दशक में हमारे देश में जब सांप्रदायिक राजनीति उभरी, तब ये गीत विवादित होने लगा।

मैं यह दूसरा उदाहरण देने वाली हूं, क्योंकि प्रधान मंत्री जी ने अपने भाषण में इसका उल्लेख किया और गलत किया। इसीलिए मैं इसके सच्चे तथ्य आपके सामने रख रही हूं। सन् 1937 में जो कांग्रेस का अधिवेशन कोलकाता में होने जा रहा था, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, उसका आयोजन कर रहे थे। मोदीजी ने जो 20 अक्टूबर का पत्र पढ़कर सदन में सुनाया और कहा कि जवाहरलाल नेहरू जी ने नेताजी को यह चिट्ठी लिखी और कहा कि इस पर चर्चा होनी चाहिए। उससे तीन दिन पहले नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने पंडित जवाहरलाल नेहरू को एक चिट्ठी लिखी थी, जिसका जिक्र प्रधान मंत्री जी ने नहीं किया। ? (व्यवधान) आप सुन लीजिए। ? (व्यवधान) आप नेताजी के लफ्ज़ नहीं सुनना चाहते हैं? बंगाल का चुनाव आ रहा है। ? (व्यवधान) आप सुनिए। ? (व्यवधान) कोई बात नहीं, हम तो देश के लिए हैं। ? (व्यवधान) आप चुनाव के लिए हैं, हम देश के लिए हैं। ? (व्यवधान) हम जितने भी चुनाव हारें, हम यहां बैठे रहेंगे और आपसे लड़ते रहेंगे और आपकी विचारधारा से लड़ते रहेंगे। ? (व्यवधान) अपने इस देश के लिए, अपनी इस मिट्टी के लिए लड़ते रहेंगे, आप हमें रोक नहीं सकते हैं। ? (व्यवधान) आप सुन लीजिए, सुभाषचंद्र बोस जी ने क्या कहा:

?My dear Jawahar, -- reference Vande Mataram -- we shall have a talk in Calcutta and also discuss the question in the Working Committee if you bring it up there. I have written to Dr. Tagore to discuss this matter with you when you visit Shantiniketan. Please do not forget to have a talk with him when you visit Shantiniketan.?

यह 17 अक्टूबर को लिखी जाती है। 20 अक्टूबर को नेहरू जी इसका जवाब देते हैं। इस जवाब की एक पंक्ति प्रधान मंत्री जी ने सुनाई, लेकिन बाकी पंक्तियां क्यों नहीं सुनाई? क्योंकि उनमें नेहरू जी क्या कह रहे हैं:

?There is no doubt that the present outcry against Vande Mataram is to a large extent a manufactured one by the communalists. Whatever we do, we cannot pander to communalists? feelings but to meet real grievances where they exist. I have decided now to reach Calcutta on the 25th morning. This will give me time to see Dr. Tagore as well as other friends.?

आप समझ रहे हैं? चुप हैं, तो समझ ही गए होंगे।

फिर क्या होता है? फिर नेहरू जी कलकत्ता जाते हैं और गुरुदेव जी से मिलते हैं और उसके अगले दिन गुरुदेव जी एक चिट्ठी लिखते हैं। वह चिट्ठी अंग्रेजी में है, उसका एक अंश मैं आपको हिन्दी में बता देती हूं, जिसमें गुरुदेव जी कहते हैं कि ?जो दो अंतरे हमेशा गाए जाते थे, उनका महत्व इतना गहरा था कि उस हिस्से को कविता के शेष हिस्से तथा पुस्तक के उन अंशों से अलग करने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं थी।? उन्होंने यह कहा कि ?स्वतंत्रता संग्राम में हमेशा से वही दो अंतरे ही गाए जाते थे और उनको गाते हुए कुर्बानी देने वाले सैंकड़ों शहीदों के सम्मान के लिए उन्हें ऐसे ही गाना उचित होगा।? उन्होंने यह भी कहा कि ?बाद में जोड़े गए अंतरों का साम्प्रदायिक मायना निकाला जा सकता है और उस समय के माहौल में उनका इस्तेमाल अनुचित होगा।?

इसके बाद 28 अक्टूबर, 1937 में कांग्रेस की कार्य समिति ने अपने प्रस्ताव में ?वंदे मातरम्? को ?राष्ट्र गीत? घोषित किया। उन्हीं दो अंतरों को कार्य समिति की बैठक में महात्मा गांधी जी, नेता जी सुभाष चन्द्र बोस, पंडित नेहरू, आचार्य नरेन्द्र देव जी, सरदार पटेल जी, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जी, सब मौज़ूद थे। ये सभी महापुरुष इस प्रस्ताव से सहमत थे।

आगे क्या होता है, यह भी सुना दूं! भारत की आज़ादी के बाद जब इसी गीत के इन्हीं दो अंतरों को वर्ष 1950 में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी संविधान समिति में भारत का ?राष्ट्र गीत? घोषित किया। तब लगभग ये ही महापुरुष मौज़ूद थे। इनके साथ-साथ बी.आर. अम्बेडकर जी भी सभा में थे और इनके साथ-साथ मेरे सत्ता पक्ष के साथियों के नेता श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी भी मौज़ूद थे। वही दो अंतरे ?राष्ट्र गीत? घोषित किए गए। किसी ने कोई आपत्ति नहीं जताई।

वैसे इन तथ्यों के साथ जुड़ा एक और तथ्य भी है, जो मैं आपके सामने रखना चाहती हूं। आज हम अपने ?राष्ट्र गीत? पर बहस कर रहे हैं, लेकिन हमारा राष्ट्रगान भी एक कविता का एक अंश ही है, एक लम्बी कविता का अंश है। ये दोनों,

राष्ट्र गीत और राष्ट्रगान के अंश को चुनने में सबसे बड़ी भूमिका गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की थी।

?वंदे मातरम्? के इस स्वरूप पर सवाल उठाना, जिसे संविधान सभा ने स्वीकार किया, न सिर्फ उन महापुरुषों का अपमान करना है, जिन्होंने अपने महान विवेक से यह निर्णय लिया, मगर एक संविधान विरोधी मंशा को भी उजागर करता है। क्या सत्ता पक्ष के हमारे साथी इतने अहंकारी हो गए हैं कि अपने आपको महात्मा गांधी जी से, रवीन्द्रनाथ टैगोर जी से, राजेन्द्र प्रसाद जी से, बाबा साहेब अम्बेडकर जी से, मौलाना आज़ाद जी से, सरदार पटेल जी से, सुभाष चन्द्र बोस जी से बड़ा समझने लग गए हैं।

मोदी जी का अपने भाषण में यह कहना कि ?राष्ट्र गीत को एक विभाजनकारी सोच के द्वारा काटा गया?, उन सब महापुरुषों का अपमान है, जिन्होंने अपना पूरा जीवन इस देश की आज़ादी की लड़ाई में झोंक दिया। ?वंदे मातरम्? को विभाजित करने का आरोप लगाकर आप पूरी संविधान सभा पर आरोप लगा रहे हैं, उसके हर एक नेता को दोषी ठहरा रहे हैं। यह हमारी संविधान सभा और हमारे संविधान पर खुला वार है।

जहां तक जवाहर लाल नेहरू जी की बात है, जितना समय हमारे प्रधान मंत्री देश के प्रधान मंत्री रहे हैं, उसके 12 साल हो गए हैं, लगभग उतने ही सालों के लिए जवाहर लाल नेहरू जी जेल में रहे हैं। वे किसलिए रहे हैं? वे इस देश की आज़ादी के लिए रहे हैं। उसके बाद 17 सालों के लिए प्रधान मंत्री रहे। आप इनकी बड़ी आलोचना करते हैं, लेकिन अगर इन्होंने ?इसरो? नहीं बनाया होता तो आज आपका मंगलयान नहीं होता।

अगर उन्होंने डीआरडीओ नहीं बनाया होता तो आज तेजस नहीं बनता! अगर उन्होंने आईआईटी और आईआईएम नहीं बनाया होता तो आज हम आईटी में आगे नहीं होते! अगर उन्होंने एम्स नहीं बनाया होता तो हम कोरोना जैसी बड़ी चुनौती का सामना कैसे करते! ? (व्यवधान)

इसका मतलब है कि इस मुद्दे का आपके पास जवाब नहीं है। अगर उन्होंने बीएचईएल, गेल, सेल और भाखड़ा नांगल जैसे प्रोजेक्ट नहीं बनाया होता, जिसे आप बेच रहे हैं, तो यह विकसित भारत कैसे बनता!? (व्यवधान) पंडित जवाहर लाल नेहरू जी इस देश के लिए जिए और देश की सेवा करते-करते उन्होंने दम तोड़ा। आप मेरी एक सलाह सुन लीजिए। आप मेरी सलाह ले लीजिए।? (व्यवधान)

सर, मैं आपके माध्यम से इनको एक सलाह दे देती हूं। हमारे प्रधानमंत्री महोदय 12 सालों से इस सदन में है और मैं मात्र 12 महीनों से हूं, फिर भी मेरी छोटी सी सलाह है।? (व्यवधान) अभी हाल ही में कुछ महीने पहले चुनाव था। उन्होंने एक सूची निकाली थी कि विपक्षी दलों और उनके नेताओं ने इनके कितने अपमान किये। उसमें उन्होंने शायद 90-99 अपमानों की सूची बनायी थी। मैं उनको एक छोटी सी सलाह देना चाहती हूं। नेहरू जी से जितनी भी शिकायतें हैं, जितनी भी उन्होंने गलतियां की, आपको जितनी भी गालियां उनको देनी हैं, उनका जितना भी अपमान करना है, उसकी भी एक सूची बना लीजिए।? (व्यवधान) नहीं-नहीं, अभी बात खत्म नहीं हुई है। 999 अपमान, 9999 अपमान, इसकी आप सूची बना दीजिए। फिर हम एक समय निर्धारित करते हैं। जैसे आज हमने ?वंदे मातरम्? पर 10 घंटे चर्चा की, उसी तरह से हम अध्यक्ष महोदय

से पूछेंगे। हम एक समय निर्धारित करेंगे। 10 घंटे, 20 घंटे, 40 घंटे, जितनी घंटों में आपकी यह शिकायत पूरी हो जाए। ? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य, आप ?वंदे मातरम्? पर ही बोलें।

श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा : आप शांत हो जाएं और हम बहस कर लेंगे, लेकिन इस सदन का कीमती समय बर्बाद न करें, जिसके लिए जनता ने हमें इस सदन में भेजा है। हमें जनता की समस्याओं को हल करने के लिए चर्चा करनी चाहिए और उस समय को इस्तेमाल करना चाहिए। जैसे हम अंग्रेजी में कहते हैं- Once and for all, let us close this chapter. आप क्लोज कर लीजिए। देश सुन लेगा कि क्या-क्या शिकायतें हैं, किसने क्या किया, इंदिरा जी ने क्या किया, राजीव जी ने क्या किया, परिवारवाद क्या होता है, नेहरू जी ने कौन-सी गलतियां कीं। आप सुना लीजिए, फिर बात खत्म। उसके बाद बेरोजगारी, महंगाई, गांव की समस्याएं, ?

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य, प्लीज आप ?वंदे मातरम्? पर ही बोलें। आप इधर-उधर डाइवर्ट न हों।

? (व्यवधान)

श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा : महोदय, क्या मैं आगे बढ़ूं?? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य, आप ?वंदे मातरम्? पर सार्थक चर्चा करें। आप इधर-उधर डाइवर्ट न हों।

श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा : महोदय, संक्षिप्त में बात यही थी कि हम अतीत की बातें करते रहते हैं।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: किसी को भी डाइवर्ट नहीं होना चाहिए। कोई भी बिना तथ्य के बात न करे। अगर आप ?वंदे मातरम्? पर बोलें तो उचित रहेगा।

? (व्यवधान)

श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी बात मानती हूं, लेकिन ये लोग बिना तथ्य के बहुत सालों से हम पर आरोप लगा रहे हैं।? (व्यवधान) हम चुपचाप सुनते हैं, लेकिन इनको भी सुनने की थोड़ी सी हिम्मत होनी चाहिए। यह राजनीति है, हम बोलेंगे और आप भी बोलेंगे।

माननीय अध्यक्ष: आप ?वंदे मातरम्? पर ही बोलें।

श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा : सर, वंदे मातरम्। महोदय, आज की यह बहस सिर्फ ध्यान भटकाने के लिए की जा रही है, क्योंकि यह सरकार इस देश की वर्तमान असलियत छिपाना चाहती है। आज देश का युवा कितना परेशान है, कितनी मुश्किल में है, पेपरलीक होते रहते हैं, बेरोजगारी है, महंगाई इतनी बढ़ चुकी है, इसकी चर्चा हम सदन में क्यों नहीं कर रहे हैं? आरक्षण के साथ जो खिलवाड़ हो रहा है, उसकी चर्चा हम यहाँ क्यों नहीं कर रहे हैं? महिलाओं की बात होगी, बड़े-बड़े ऐलान

होंगे, मगर उनकी परिस्थितियों को सुधारने के लिए कोई ठोस कदम यहाँ क्यों नहीं उठाया जा रहा है? इन्हीं दरवाजों के बाहर पत्रकार खड़े थे। आपने कहा बगैर तथ्यों के आरोप मत लगाइए, तो मैं बोलूं या नहीं बोलूं।

***m34माननीय अध्यक्ष :** नहीं। बिल्कुल नहीं। आप सदन में जो कुछ भी बोलें, वह तथ्यों के आधार पर बोलें। आपको हर चीज ऑथेन्टिकेट करनी पड़ेगी, इसलिए आप तथ्यों के आधार पर बोलें।

? (व्यवधान)

***m35श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा :** सर, बड़े-बड़े शहरों में प्रदूषण है, लेकिन हम इस सदन में बैठकर सिर्फ छोटी-छोटी बातें करेंगे। ? (व्यवधान) जो अतीत की बातें हैं, आप बार-बार चाहते हैं कि हम पीछे देखें, लेकिन हम आगे भविष्य की बात, वर्तमान की बात, जो असली समस्याएं हैं, उनकी बात न करें, ये छोटी बात होती है। ? (व्यवधान) आपमें हिम्मत है, तो भविष्य की बात करिए, हिम्मत है, तो बात करिए कि बेरोजगारी क्यों है? पेपरलीक क्यों होते हैं?

माननीय अध्यक्ष: आप चेयर को एड्रेस करें।

? (व्यवधान)

श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा : अच्छा मैं अपनी बात खत्म कर लेती हूँ। अध्यक्ष महोदय जी, सच्चाई यह है कि इनका शासन दमन का शासन है। इनकी राजनीति दिखावे की राजनीति है, इवेंट मैनेज़मेंट की राजनीति है। चुनाव से चुनाव तक राजनीति है। तरह-तरह के ध्यान भटकाने वाले मुद्दों की राजनीति है। वंदे मातरम् इस देश के उन्हीं उम्मीदों की गुहार है, जिन्हें आपका शासन हर रोज ठुकरा रहा है। ? (व्यवधान) आज भी सरहद पर जवान जब दुश्मन का सामना करता है, तो उसकी छाती में वंदे मातरम् गूँजता है। ? (व्यवधान) आज भी जब हमारा खिलाड़ी अंतर्राष्ट्रीय खेलों में जाता है, तो उसके दिल की धड़कन में वंदे मातरम् होता है। आज भी इस देश के करोड़ों देशवासी जब अपने राष्ट्र ध्वज को फहराते हुए देखते हैं, तो उनकी जुबान पर वंदे मातरम्,वंदे मातरम्, वंदे मातरम् आता है। ? (व्यवधान) कांग्रेस के हर एक अधिवेशन में वर्ष 1905 से लेकर आज तक सामूहिक तौर पर वंदे मातरम् गाया जाता है। ? (व्यवधान) आपके अधिवेशनों में गाया जाता है कि नहीं, यह बताइए? ? (व्यवधान) अपने देश की आत्मा के इस महामंत्र को विवादित करके आप एक बहुत बड़ा पाप कर रहे हैं। इस पाप में कांग्रेस पार्टी शामिल नहीं होगी। ये राष्ट्र गीत वंदे मातरम् हमें हमेशा से प्यारा है, हमारे लिए हमेशा से पवित्र रहा है और हमारे लिए हमेशा के लिए पवित्र रहेगा। धन्यवाद।?(व्यवधान)

***m36संस्कृति मंत्री; तथा पर्यटन मंत्री (श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत) :** माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्या ने अभी अपने वक्तव्य देते हुए यह कहा कि वंदे मातरम् जब महान कवि बंकिम चंद्र चटर्जी ? (व्यवधान) ने लिखा था। ? (व्यवधान) तब उन्होंने उसे दो टुकड़ों में अलग-अलग जगह पर लिखा था।? (व्यवधान) उन्होंने यह कहा कि वर्ष 1875 में उन्होंने केवल दो स्टैंजा लिखे थे। ? (व्यवधान) 7 वर्षों के बाद वर्ष 1882 में उन्होंने उसके बचे हुए पांच स्टैंज लिखे थे। ? (व्यवधान) मेरा आपके माध्यम सिर्फ इतना अनुरोध है कि वे इसको सत्यापित करें कि यह सूचना उन्हें कहां से मिली है।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : वह जवाब नहीं दे रहे हैं, भाजपा का समय है और वे बोल सकते हैं।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : बंकिम गवेषणा केंद्र, नौहाटी, जो कि बंकिम बाबू की जन्मस्थली पर बना हुआ गवेषणा केन्द्र है, जो शोध केन्द्र के रूप में काम कर रहा है। वह यह कहता है कि बंकिम बाबू ने पूरा वंदे मातरम् एक बार में एक ही साथ में लिखा था। ?(व्यवधान) माननीय सदस्या ने जो वक्तव्य यहां दिया है, उसे वह सत्यापित करें कि यह सूचना उन्हें कहां से मिली है, ताकि इस सूचना को सुधारा जा सके। ? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : श्री अभय कुमार सिन्हा।

? (व्यवधान)

***m37श्री अभय कुमार सिन्हा (औरंगाबाद) :** धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, मैं आज वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने के अवसर पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं एक विपक्षी सांसद होने के नाते और बिहार की धरती का प्रतिनिधि होने के नाते, जहां स्वतंत्रता आंदोलन की धड़कन आज भी महसूस की जा सकती है। मेरे लिए यह क्षण अत्यंत गर्व का विषय है।

महोदय, 1870 के दशक में बंकिम चन्द्र चटर्जी के द्वारा लिखित वंदे मातरम् कोई साधारण गीत नहीं था। यह वह मंत्र था, जिसने अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध हरेक भारतीयों की नसों में हिम्मत, प्रतिरोध और आत्मगौरव की नयी धारा प्रवाहित करने का काम किया था। आज 150 वर्ष बाद भी भले ही परिस्थितियां बदल गयी हों, लेकिन इसके संदेश मातृभूमि की गरिमा, मातृभूमि की रक्षा, एकता और न्याय आज भी उतने ही आवश्यक हैं। जब हम महान गीत वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ मना रहे हैं, तो हमें केवल जश्न ही नहीं मनाना चाहिए, बल्कि वंदे मातरम् के मूल मंत्रों और उसका जो मूल संदेश था, उस पर विचार करना अति आवश्यक है। क्या हमारी मातृभूमि आज सुरक्षित और सम्मानित है? क्या हम अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए पर्याप्त तैयार हैं? क्या हमारी मातृभूमि के हरेक नागरिक को बराबर का सम्मान प्राप्त हुआ है?

अध्यक्ष महोदय, आज बेरोजगारी अपने सबसे उच्च्तम स्तर पर है। बिहार, झारखंड और यूपी से करोड़ों युवा रोजगार की तलाश में पलायन कर रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी विकास ठप है। क्या यही वंदे मातरम् का सपना था?

महोदय, वंदे मातरम् का संदेश था- संपन्न, सुरक्षित और सम्मानित राष्ट्र। अध्यक्ष महोदय, बीते महीनों में कई राज्यों में राष्ट्रीय गीत और राष्ट्र गान को लेकर अनावश्यक विवाद पैदा किया गया। हम बताना चाहेंगे कि अभी हाल ही में बिहार में जो चुनाव हुआ, एक 36 वर्षीय युवा की विचारधारा को, उनकी सोच को हराने के लिए राज्य और केन्द्र सरकार के तमाम तंत्र का इस्तेमाल किया गया। धन, बल, छल, सब कुछ लगाकर हराया गया। लोकतंत्र की उस चुनाव में हत्या की जाती है। आदर्श आचार संहिता का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन किया जाता है। हम याद रखें कि वंदे मातरम हमारी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। इसे राजनीतिक हथियार बनाना हमारे स्वतंत्रता सेनानियों और महान पुरुषों की आत्माओं को ठेस पहुंचाता है।

महोदय, जब बेरोजगारी रिकार्ड स्तर पर है। जब किसानों को एमएसपी की गारंटी नहीं मिल रही है। जब पटना का एम्स हो या दिल्ली का एम्स हो, मरीजों की लाइनें बढ़ रही हैं तो ऐसे समय में राष्ट्रवाद का इस्तेमाल मुद्दों से ध्यान हटाने के लिए नहीं होना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, मैं सरकार से पूछना चाहता हूं कि मातृभूमि के हर एक नागरिक को समान अवसर कब मिलेगा? महोदय, मैं सरकार से पूछना चाहता हूं कि जब आप कुम्भ के मेले में प्रतिदिन आए श्रद्धालुओं की गिनती कर सकते हैं तो फिर आप जातीय जनगणना क्यों नहीं कर सकते हैं? जब पूंजीपतियों के कर्ज माफ कर सकते हैं तो बिहार और अन्य राज्यों के किसानों का कर्ज माफ क्यों नहीं कर सकते हैं?

माननीय अध्यक्ष : यह बजट पर चर्चा नहीं है, यह वंदे मातरम् पर चर्चा है।

श्री अभय कुमार सिन्हा : महोदय, निश्चित तौर पर यह वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ है और हमें प्रण लेने की आवश्यकता है कि हम इस राष्ट्र को समृद्ध, समान और न्यायपूर्ण बनाने में अपना योगदान दें। बहुत-बहुत धन्यवाद महोदय कि आपने हमें बोलने का समय दिया।

वंदे मातरम!

***m38रक्षा मंत्री (श्री राज नाथ सिंह):** हम सभी जानते हैं कि वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ भारत के राष्ट्र गीत के रूप में इस बार मनायी जाएगी। इस पर अभी जो चर्चा प्रारम्भ हुई है, उसमें हमारे प्रधान मंत्री ने बहुत ही तथ्यपरक, सारगर्भित और प्रेरक भाषण देकर इसकी एक अच्छी शुरूआत की है और इसमें कहीं दो मत नहीं है।

महोदय, वंदे मातरम् भारत के इतिहास, वर्तमान और भविष्य के साथ जुड़ा हुआ है। इस वंदे मातरम ने ब्रिटिश साम्राज्य से लड़ने में हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को काफी ताकत दी थी। वंदे मातरम् वह गीत है, जिसके कारण सदियों से सोया हुआ हमारा भारत देश जाग उठा था। वह गीत आधी शताब्दी तक स्वतंत्रता संग्राम का प्रेरक बना रहा। वह गीत, जिसकी आवाज इंग्लिश चैनल पार करके ब्रिटिश पालियामेंट तक पहुंच गयी थी। ऐसा था हमारा यह वंदे मातरम्। वंदे मातरम् जैसे अमर गीत के रचियता बंकिम बाबू ने कहा था कि एक दिन ऐसा आएगा, जब सभी देशवासी वंदे मातरम् गीत के महत्व को निश्चित रूप से समझेंगे और वह क्षण वर्ष 1905 में बंगाल विभाजन के खिलाफ हुए आंदोलन के दौरान आया। इस आंदोलन के समय वह गीत धरती से आकाश तक गूंज उठा था। श्री अरविंदो ने वर्ष 1906 में बिलकुल ठीक ही कहा था- ?The mantra had been given and in a single day whole people had been converted to the religion of patriotism.?

अध्यक्ष महोदय, इसी आंदोलन के दौरान वंदे मातरम् जन-मानस के हृदय में व्याप्त हो गया। इससे तब की ब्रिटिश सरकार इतनी डर गयी थी कि वंदे मातरम् का नारा लगाने के खिलाफ एक सर्कुलर भी जारी कर दिया गया था। लेकिन, ब्रिटिश हुकूमत जनता को 'वंदे मातरम्' कहने से रोक नहीं पाई थी। 'वंदे मातरम्' ने लोगों के अंदर एक नई चेतना भी जागृत कर दी थी। उस समय 'अमृत बाजार' पत्रिका के संस्थापक श्री मोती लाल घोष ने कहा था - "मैं तो 'वंदे मातरम्' गाऊंगा ही, भले ही हमें अपना सिर क्यों न गंवाना पड़े।", यह बात उन्होंने कही थी।

अध्यक्ष महोदय, राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के लिए उस समय 'वंदे मातरम्' संप्रदाय की भी स्थापना की गई थी और उसके सदस्य 'वंदे मातरम्' गाते हुए प्रभात फेरी भी प्रतिदिन निकाला करते थे। उनमें गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर भी कई बार

जाते थे। जब वर्ष 1906 में भारत का प्रथम राष्ट्रीय झंडा बनाया गया था तो उसके मध्य में भी 'वंदे मातरम्' लिखा हुआ था। वह झंडा पहली बार बंगाल की धरती पर ही फहराया गया था। अगस्त, 1906 में जब श्री विपिन चंद्र पाल जी ने राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए एक समाचार पत्र की शुरूआत की थी तो उसका नाम भी 'वंदे मातरम्' ही था। यह वह समय था, जब 'वंदे मातरम्' सिर्फ एक शब्द नहीं रह गया था बल्कि यह एक भावना बन गई थी। यह एक दर्शन बन गया था। It became a poem, pulse and a philosophy. अप्रैल, 1906 में बने नये पूर्वी बंगाल प्रांत में ब्रिटिश समकक्ष सरकार ने 'वंदे मातरम्' के इस सार्वजनिक नारे को लगाने पर रोक लगा दी थी। लोगों ने इस आदेश की अवहेलना की और खुलेआम अवहेलना की थी। विश्वनाथ मुखर्जी ने अपनी किताब 'वंदे मातरम् का इतिहास' में इसका उल्लेख करते हुए लिखा है कि लोगों पर लाठियों की बारिश होती रही, लेकिन जब तक उन्हें होश रहा, तब तक वे 'वंदे मातरम्', 'वंदे मातरम्' का नारा लगाते रहे। उस्मानिया विश्वविद्यालय में भी 'वंदे मातरम्' का नारा लगाने पर रोक लगी थी। इस आदेश को न मानने पर वहां के छात्र श्री रामचंद्र जी को भी जेल की सजा हुई थी। उस समय रामचंद्र जी की आयु बमुश्किल 18 साल की थी। उसके बाद 18 साल की उन्हें सजा भी दी गई थी। उन्हें वीर सावरकर जी ने 'वंदे मातरम् रामचंद्र' की उपाधि से नवाजा था।

अध्यक्ष महोदय, 'वंदे मातरम्' सिर्फ बंगाल में सीमित नहीं रहा। यह भारत में उत्तर से दक्षिण और पूरब से लेकर पश्चिम तक फैल गया था। पंजाब, तमिलनाडु, बॉम्बे प्रेसिडेंसी, सभी जगह लोग 'वंदे मातरम्' बोलने लगे थे। एक-दूसरे का अभिवादन भी 'वंदे मातरम्' बोलकर करते थे। सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि भारत के बाहर भी 'वंदे मातरम्' भारतवासियों के लिए एक मंत्र की तरह कार्य कर रहा था। लंदन, पेरिस, जेनेवा, कनाडा, सभी जगह, जहां भी भारतीय थे, भारत के लोग 'वंदे मातरम्' लगातार बोलते थे। वर्ष 1912 में जब श्री गोपाल कृष्ण गोखले जी दक्षिण अफ्रीका पहुंचे तो उनका स्वागत भी 'वंदे मातरम्' नारों के साथ वहां की जनता ने किया था।

अध्यक्ष महोदय, 'वंदे मातरम्' के साथ शहीद भगत सिंह और शहीद चंद्रशेखर आजाद जी के पत्र प्रारंभ हुआ करते थे। मदन लाल ढींगरा जी का आखिरी शब्द भी 'वंदे मातरम्' था। फांसी पर जाते समय क्रांतिकारी सूर्य सेन के होठों पर भी 'वंदे मातरम्' था। खुदीराम बोस जी के जुबान पर भी 'वंदे मातरम्', 'वंदे मातरम्' ही था। इसलिए, 'वंदे मातरम्' सिर्फ एक गीत नहीं है, यह हमारी राष्ट्रीयता का सूत्र है। भारत की अंतर आत्मा का स्वर है।

अध्यक्ष महोदय, आज जब हम 'वंदे मातरम्' की डेढ़ शताब्दी की गौरवशाली यात्रा का उत्सव मना रहे हैं, तब यह सच स्वीकार करना पड़ेगा कि 'वंदे मातरम्' के साथ जो न्याय होना चाहिए था, वह न्याय नहीं हुआ। आज आजाद भारत में राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत को बराबर का दर्जा देने की बात की गई थी, लेकिन एक हमारी राष्ट्रीय चेतना का अभिन्न अंग बन गया। समाज और संस्कृति की मुख्यधारा में स्थान पा गया। वह हमारे राष्ट्रीय प्रतीकों में शामिल हो गया। वह गान था, हमारा "जन गण मन"। दूसरे गीत को मार्जनलाइज किया गया, उपेक्षित किया गया, उसे खंडित किया गया, वह गीत है ?वंदे मातरम्?। It was treated like an extra. वह धरती जिस पर ?वंदे मातरम्? की रचना हुई थी, उसी धरती वर्ष 1937 में कांग्रेस ने ?वंदे मातरम्? गीत को खंडित करने का निर्णय लिया था।

अध्यक्ष महोदय, ?वंदे मातरम्? के साथ हुए राजनीतिक छल और अन्याय के बारे में सभी पीढ़ियों को जानना चाहिए, इसीलिए इस संबंध में चर्चा हो रही है, क्योंकि यह अन्याय सिर्फ एक गीत के साथ नहीं था, बल्कि आजाद भारत के लोगों के साथ था। यह अन्याय उन लोगों के साथ हुआ, जिनकी सांसों में आजादी की हवा ?वंदे मातरम्? की पुकार में भरी थी। मैं मानता हूं कि उस पुकार को सीमाओं में बांधने की कोशिश की गई, यह इतिहास का बहुत बड़ा छल था। इसलिए हम यह मानते हैं कि ?वंदे मातरम्? का गौरव लौटाना समय की मांग है और नैतिकता का तकाजा भी है।

अध्यक्ष महोदय, इस अन्याय के बावजूद ?वंदे मातरम्? का महत्व किसी भी सूरत में कम नहीं होने पाया और ?वंदे मातरम्? गुरू गोविंद सिंह जी और छत्रपति शिवाजी महाराज जैसे महापुरुषों के स्वराज और स्वधर्म के मूल्यों का यह जीवन स्वरूप बन गया। ?वंदे मातरम्? स्वयं में पूर्ण है, लेकिन इसे अपूर्ण बनाने की कोशिश की गई। ?वंदे मातरम्? हमेशा राष्ट्रीय भावना का अमरगीत रहा है और मैं बल देकर कहना चाहता हूं कि यह सदैव बना रहेगा, दुनिया की कोई भी ताकत इसे कमतर नहीं कर सकती।

अध्यक्ष महोदय, ?वंदे मातरम्? के साथ जो अन्याय हुआ है, उसे जानना इसलिए भी आवश्यक है, ताकि भावी पीढ़ियां ऐसा करने वालों की मानसिकता को, ऐसा करने वालों की सोच को ठीक तरीके से समझ सकें और सबसे महत्वपूर्ण वजह यह है कि ?वंदे मातरम्? के साथ हुआ अन्याय एक आइसोलेटेड इंसीडेंट नहीं था, यह तुष्टीकरण की राजनीति की शुरुआत थी, जिसे कांग्रेस ने अपनाया था। इसी राजनीति ने देश का विभाजन कराया और आजादी के बाद साम्प्रदायिक सौहार्द और एकता को कमजोर किया।

अध्यक्ष महोदय, आज हम ?वंदे मातरम्? की गरिमा को पुनः स्थापित कर रहे हैं, लेकिन कुछ लोग हम सबके खिलाफ यह नैरेटिव बनाने की कोशिश कर सकते हैं कि ?वंदे मातरम्? और ?जन गण मन? के बीच एक दीवार खड़ी की जा रही है और ऐसा नैरेटिव बनाने का प्रयास विभाजनकारी मानसिकता का परिचय देता है। हमारे मन में राष्ट्रगान और राष्ट्रीय गीत के लिए बराबर का सम्मान है। जो लोग यह बात नहीं समझते हैं, वे माँ की ममता को भी नहीं समझते हैं। माँ अपने बच्चों में भेद नहीं करती है। ?जन गण मन? और ?वंदे मातरम्? माँ भारती के दो सपूतों की किलकारियां हैं, माँ भारती की दो आँखें हैं। ?जन गण मन? और ?वंदे मातरम्? दोनों ही हमारे लिए राष्ट्रीय गौरव हैं, दोनों को भारत माता के प्रति अटूट प्रेम है, राष्ट्रवाद और बलिदान की भावना एकसूत्र में बांधती है, इसलिए ?वंदे मातरम्? का उद्घोष किसी के विरुद्ध नहीं है, बल्कि हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान की अभिव्यक्ति है।

अध्यक्ष महोदय, एक समय था, जब भारत दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी, लेकिन कॉलोनियल रूल की कूटनीति और कुशासन ने 19वीं सदी के उत्तरार्ध हमारी मातृभूमि की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। उस समय बंगाल की धरती से ऋषि बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय जी ने ?वंदे मातरम्? का आह्वान किया था। यह आह्वान रामायण के प्रसिद्ध श्लोक से प्रेरित था। वह श्लोक है -

"अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥"

अध्यक्ष महोदय, इस श्लोक में भगवान राम ने लक्ष्मण जी से कहा है कि हे लक्ष्मण! यद्यपि यह लंका सोने की है, फिर भी मुझे यह अच्छी नहीं लगती है, क्योंकि जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।

अध्यक्ष महोदय, यह श्लोक मातृभूमि के उच्चतम स्थान और उसके प्रति प्रेम को दर्शाता है। प्राचीन काल से हम भारतवासी जग जननी, गृह जननी और राष्ट्र जननी की पूजा करते चले आ रहे हैं। हम नदियों को भी मां की संज्ञा देते हैं। भूमि को मां के स्वरूप में देखना हमारी सभ्यता का संस्कार और विचार रहा है। अथर्ववेद में कहा गया है, माता भूमि: पुत्रो अहम् पृथिव्या यानी पृथ्वी हमारी माता है और हम इसके पुत्र हैं। मातृ पूजा की इसी परम्परा से ही वंदे मातरम् गीत का जन्म हुआ है। जो लोग न सभ्यता के मूल्यों को समझते हैं, जो लोग न संस्कृत के महत्व को स्वीकारते हैं, जिन्होंने परम्पराओं को दरकिनार कर दिया है, वे लोग यह बात न पहले समझ सके थे, न अब भी समझ पा रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हमारी सरकार ने वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ को धूमधाम से सारे देश में मनाने का फैसला किया है। वर्षगांठ का यह उत्सव सांकेतिक नहीं होगा। यह कोई दिखावा नहीं है। वंदे मातरम् को एक उचित सम्मान दिलाने का यह एक प्रण है।

आज मैं यहां वंदे मातरम् से जुड़े दो बिंदु सदन के समक्ष रखना चाहता हूं। पहला यह है कि भारत की आत्मा उसकी आध्यात्मिक आस्था है। यह आध्यात्मिक आस्था रिलीजन या मजहब से जुड़ी हुई नहीं है, बल्कि राष्ट्र भक्ति से जुड़ी हुई है। यह बांटने वाली नहीं है, यह समावेशी है। दूसरा, बंकिम चंद्र चटर्जी ने जब भारत माता की मातृ भूमि के रूप में कल्पना की, तब वह कोई पॉलिटिकल कांसेप्ट नहीं था, कोई रिलीजियस कांसेप्ट नहीं था, कोई कम्युनल कांसेप्ट नहीं था। इसे राजनीतिक या साम्प्रदायिक रंग कुछ कट्टरपंथियों ने दिया। उन्होंने इसके गाने पर आपत्तियां उठाई। इन आपत्तियों के पीछे अंग्रेजी हुकूमत की डिवाइड एंड रूल की पॉलिसी थी। इसे दुर्भाग्य से उस समय की कांग्रेस की तुष्टीकरण की राजनीति का भी भरपूर समर्थन मिला। आज हमें इस गलती को पूरी तरह से सुधारना होगा। मां भारती से जुड़े हुए हर प्रतीक के प्रति जो राजनैतिक पूर्वाग्रह है, उनसे देश और समाज को हमें मुक्ति दिलानी ही होगी।

प्रारम्भ में वंदे मातरम् की रचना स्वतंत्र रूप से की गई और बाद में इसे बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने इसे आनंद मठ उपन्यास में शामिल किया। कुछ लोगों को आनंद मठ भी साम्प्रदायिक लगा। इस कारण वंदे मातरम् को भी निशाना बनाया गया। मेरी समझ में आनंद मठ और वंदे मातरम् के प्रति यह सोच कदापि उचित नहीं ठहराई जा सकती। अगर हम उस कालखंड में जाएं, जिसे आनंद मठ चित्रित करता है तो यह स्पष्ट हो जाता है कि आनंद मठ की विषय वस्तु किसी भी मजहब या सम्प्रदाय के खिलाफ कदापि नहीं थी। उस समय बंगाल में भयंकर अकाल था। लोगों को अकाल का सामना करना पड़ रहा था। लोग भुखमरी के कगार पर थे। अंग्रेजों के दबाव में बंगाल का नवाब लोगों से भारी लगान की वसूली कर रहा था। आनंद मठ इस अन्याय के खिलाफ लिखा गया था। इस बात से यह साफ हो जाता है कि वंदे मातरम् और आनंद मठ कभी भी इस्लाम विरोधी नहीं था। यह तो उस दौर के बंगाल के नवाब और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के गठजोड़ के खिलाफ आम जनता की पुकार थी। आनंद मठ उपन्यास में जब उसका एक पात्र भवानंद वंदे मातरम् गाता है तो दूसरे पात्र महेन्द्र पूछते हैं कि माता कौन है? भवानंद उसे जवाब देते हैं कि हम और किसी मां को नहीं मानते, ?जननी जन्मभूमिश्च, स्वर्गादपि

गरीयसी? । हम जानते हैं कि जन्मभूमि ही जननी है । हमारी मां नहीं, पिता नहीं, बंधु नहीं, स्त्री नहीं, पुत्र नहीं, घर नहीं, मकान नहीं, हमारे लिए सिर्फ वही सुजला और सुफला है । क्या ऐसी भावना का चित्रण करने वाला कवि और लेखक कम्युनल हो सकता था? अब समय आ गया है कि वंदे मातरम् और उसके इतिहास का अनबायस्ड इवैल्युएशन किया जाए । वंदे मातरम् के दो अंतरे तो सभी ने सुने हैं, लेकिन बाकी के बारे में लोगों को ज्यादा पता नहीं है ।

17.00 hrs

ओरिजनल वर्ज़न में अधिकांश पदों को भुला दिया गया है । उन पदों में भारत की विशेषताओं को दर्शाया गया है । अब उन पदों के महत्व को पूरी तरह से समझने का अवसर आ गया है और यही वह अवसर है । पहला पद जो हटाया गया, उसमें बंकिम बाबू भारत माता के संदर्भ में कहते हैं - तुम ही विद्या हो, तुम ही धर्म हो, तुम ही हृदय हो, तुम ही मर्म हो, तुम ही मेरे शरीर की प्राण शक्ति हो । मैं ?वंदे मातरम? से इन पंक्तियों को, चाहे जिन्होंने भी निकाला है, इनको निकालने का समर्थन करने वालों से पूछना चाहता हूं कि किस संदर्भ में, किस अर्थ में, किस भावना में, किस तरह से, किस दृष्टि से ?वंदे मातरम? की सारी पंक्तियां सांप्रदायिक और राजनीतिक लगीं? मैं बताना चाहता हूं कि उन्हें ये पंक्तियां सांप्रदायिक और राजनीतिक क्यों लगीं? इसका कारण है कि वे ?वंदे मातरम? को जिन्ना के चश्मे से देख रहे थे । ? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, ?वंदे मातरम? की यह पंक्ति भारत की आत्मा का परिचय है । मैं फिर से दोहराना चाहता हूं कि ?वंदे मातरम? की यह पंक्ति भारत की आत्मा का परिचय है । यह पंक्ति हमें बताती है कि हमारा भारत एक ऐसी सभ्यता है, जिसने आध्यात्मिकता को कभी दीवार नहीं बनने दिया । आध्यात्म वह सूत्र है जो तोड़ने का काम नहीं करता है, बल्कि हमारा आध्यात्म जोड़ने का काम करता है । यह वह सभ्यता है जिसने कभी इस बात पर बल नहीं दिया कि सब लोग एक ही ईश्वर की पूजा करें, एक ही ग्रंथ मानें और एक ही रीति-रिवाज का पालन करें । बंगाली संस्कृति में रचे-बसे बंकिम चन्द्र चटर्जी जी इस बात को अच्छी तरह से समझते थे । एक और पद में उन्होंने लिखा - ?बाहुते तुमि मां शक्ति, बाहुते तुमि मां शक्ति, हृदये तुमि मां भक्ति? यानी हे मां, तन की शक्ति भी तुम ही हो, मन की भक्ति भी तुम ही हो । उन्होंने स्पष्ट किया कि मां की भक्ति किसी मूर्ति की पूजा नहीं है । It is the reverence of the people for the land that sustains them.

माननीय अध्यक्ष जी, इन तमाम तर्कों के बावजूद कांग्रेस के एक बड़े तबके ने अपनी तुष्टीकरण की राजनीति का खेल बंद नहीं किया । धर्म को रिलीजन समझना और मातृ पूजा को मूर्ति पूजा के रूप में देखना अंग्रेजों और मुस्लिम लीग की पॉलिसी हो सकती थी क्योंकि इसमें उनका राजनैतिक स्वार्थ छिपा हुआ था । जान-बूझकर ?वंदे मातरम? को खंडित किया गया, उसे तुष्टीकरण का शिकार बनाया गया । इससे क्या हासिल हुआ? अध्यक्ष महोदय, क्षमा करें, कांग्रेस की अपीज़मेंट की पॉलिसी न सिर्फ पार्टिशन को रोकने में विफल रही, बल्कि मैं मानता हूं कि यह पार्टिशन का कारण भी बनी । जहां एक ओर कांग्रेस ने तुष्टीकरण की राजनीति की है, वहीं हमने ?सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास? की भावना के साथ काम किया है ।

अध्यक्ष जी, आज़ादी के आंदोलन के दौरान कांग्रेस के कुछ लोगों की अपने आपको सैक्युलर दिखाने की बेचैनी इतनी बढ़ चुकी थी कि भारतीय संस्कृति, भारतीय परंपरा और हमारी महान् सभ्यता से जुड़ी कोई भी बात उन्हें कम्युनल दिखाई

देती थी। भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी माइथोलॉजिकल नफरत के कारण ही ?वंदे मातरम? इसका शिकार बन गया। मैं आज एक घटना का उल्लेख आपके समक्ष करना चाहता हूं जिससे यह बात पूरी तरह से और स्पष्ट हो जाती है। विदेश मंत्रालय की एक उच्चस्तरीय बैठक में, जहां नेहरू जी स्वयं मौजूद थे, कॉमन वैल्थ सैक्रेट्री वाई.डी. गुंडेविया जी ने पूछा कि अगर कल को कम्युनिस्ट केंद्र की सत्ता में आ जाएं, तो सरकारी तंत्र का क्या होगा? नेहरू जी ने झुंझलाकर जवाब दिया, कम्युनिस्ट, कम्युनिस्ट, भारत के लिए खतरा कम्युनिज्म नहीं है, खतरा है तो हिंदू राइट विंग कम्युनिज्म। मैं यह प्रमाण के आधार पर कह सकता हूं कि इस पुस्तक में लिखा है, अगर कोई प्रमाण मांगेगा तो मैं प्रमाण भी दे सकता हूं।

अध्यक्ष जी, दुर्भाग्य से नेहरू जी यह देखने के लिए जीवित नहीं रहे कि उसी राइट विंग ने हमेशा संविधान के मूल्यों के अनुरूप काम किया है। हमने संविधान के मूल्यों की अवहेलना कभी नहीं की है।

कम्युनिस्ट विचारधारा से जन्मे लेफ्ट विंग एक्स्ट्रमिज्म के कारण न जाने कितनी पीढ़ियाँ बर्बाद हो गईं। देश के कई हिस्से विकास में पीछे रह गये। पहले की सरकारें नक्सलवाद या वामपंथी उग्रवाद की इस समस्या का समाधान नहीं ढूँढ़ पाईं। इस समस्या का समाधान अगर किसी ने ढूँढ़ा, तो वे हैं हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी। उनके नेतृत्व में लेफ्ट विंग एक्स्ट्रमिज्म आज पूर्णत: समाप्ति की ओर है। आज वह अपनी साँसें तोड़ रहा है।

यह कितनी बड़ी विडम्बना थी कि जिस कम्युनिस्ट आइडियोलॉजी ने कई देशों में सत्ता पाने के लिए हिंसा का रास्ता अपनाया। उस विचारधारा को खतरा न मानकर ?वसुधैव कुटुम्बकम्? की भावना में विश्वास रखनेवाली विचारधारा को खतरा माना गया। यह बात कोई रैंडम थॉट नहीं थी। यह एक ऐसा पूर्वाग्रह था, जिसने तुष्टिकरण की राजनीति को जन्म दिया। इसी तुष्टिकरण की राजनीति के कारण कुछ पड़ोसी देशों से आए अल्पसंख्यक समुदाय के शरणार्थियों को दशकों तक अपने अधिकारों से वंचित रखा गया। इसी तुष्टिकरण की राजनीति के कारण मुस्लिम महिलाओं से समान अधिकार छीने गये। इसी तुष्टिकरण की राजनीति के कारण भारत का विभाजन हुआ। इसी तुष्टिकरण की राजनीति के कारण आज पश्चिम बंगाल से बहुत-से परिवारों को पलायन करना पड़ रहा है।

अध्यक्ष महोदय, बंगाल वह भूमि रही है, जहाँ भारत के सबसे बड़े सामाजिक सुधारों और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की नींव रखी गई। जहाँ सती प्रथा के खिलाफ आवाज़ उठाई गई, विधवा पुनर्विवाह को बढ़ावा दिया गया। बाल विवाह की कुरीति के खिलाफ आवाज़ उठाई गई। इसी बंगाल की धरती ने भारतीय पुनर्जागरण के जनक राजा राम मोहन राय को जन्म दिया। महान समाज सुधारक श्री ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जी की जन्म और कर्म-भूमि बंगाल ही रहा। इसी पवित्र धरती पर जन्मे स्वामी विवेकानन्द जी ने सन् 1893 में हुई विश्व धर्म संसद में भारत की सनातन सभ्यता के महान मूल्यों से पूरी दुनिया को अवगत कराया था। इसी धरती पर जन्मे गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर जी ने भारत को पहला नोबल प्राइज़ भी दिलवाया था।

अध्यक्ष महोदय, बंगाल वह पवित्र भूमि है, जहाँ चैतन्य महाप्रभु, स्वामी परमानन्द, स्वामी रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द जैसे संतों ने जन्म लिया है। इनकी उपस्थिति ने बंगाल को अध्यात्म, संस्कृति और हमारी सभ्यतागत चेतना का एक उज्ज्वल केन्द्र बना दिया है।

यह दुख की बात है कि कभी महान विचारों और क्रांतिकारी परिवर्तनों की जननी रही यह बंगाल की भूमि बाद के समय में तुष्टिकरण की राजनीति का केन्द्र बना दी गई है। यह सचमुच विडम्बना है कि वही भूमि, जहाँ से राष्ट्रीय एकता का बिगुल बजा था, वहीं से देश की एकता और अखंडता को चुनौती देने वाला नक्सलवादी उग्रवाद भी उसी धरती से पैदा हुआ।

अध्यक्ष महोदय, यह भी विडम्बना है कि जहाँ से महिलाओं के समान अधिकार के लिए सामाजिक आन्दोलन शुरू हुआ था, आज वही भूमि महिलाओं के लिए असुरक्षित हो गई है। यह विडम्बना है कि जहाँ से भारत के पहले आईसीएस अधिकारी सत्येन्द्रनाथ टैगोर जी आए, आज उसी धरती पर युवा बढ़ती बेरोज़गारी के कारण हताश हो रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय, यह विडम्बना है कि वही भूमि, जहाँ के सपूत स्वामी विवेकानन्द जी ने भगवा वस्त्र पहनकर पूरी दुनिया को भारतीय सभ्यता की महानता से परिचित कराया था, आज उसी भूमि पर भगवा रंग का मजाक उड़ाया जाता है, उससे घृणा की जाती है।

अध्यक्ष महोदय, बंगाल का यह पतन हुआ है - दशकों तक सत्ता में रही वामपंथ की सरकारों के कारण, उनके द्वारा की गई हिंसा के कारण, तृणमूल कांग्रेस पार्टी के कुशासन के कारण, उसकी विभाजनकारी राजनीति के कारण, उसकी तुष्टिकरण की नीति के कारण और घुसपैठियों को शरण देने के कारण ऐसा हुआ है।

अध्यक्ष महोदय, बंकिम चन्द्र चटर्जी जी ने कहा था कि बंगाल हिन्दू और मुसलमान दोनों का है। बंगाल की भलाई के लिए यह जरूरी है कि हिन्दू और मुसलमानों में एकता हो। जिस व्यक्ति के ऐसे विचार हों, क्या वे कभी सांप्रदायिक गीत लिख सकते थे? कुछ लोगों के द्वारा वंदे मातरम् में उपयोग किए गए रूपक (मेटाफर्स) को मिस-इंटरप्रिटेट किया गया है। हो सकता है कि यह काम कई बार नासमझी में किया गया हो, पर मेरी समझ से कई बार यह काम जान-बूझकर किया गया है।

यह बात नहीं है कि हमारे मुस्लिम भाइयों ने बंकिम चन्द्र चटर्जी जी के मेटाफर्स को सही अर्थ में नहीं समझा था। मौलाना रज़ा उल करीम ने कहा था कि वंदे मातरम् जैसे निर्दोष और सर्वांग-सुंदर गीत को भी सांप्रदायिक कहते हैं, पर जिनके पास उदार दृष्टि है, उन्हें वंदे मातरम् गीत को समग्र दृष्टि से देखना चाहिए। वे देखेंगे कि उसमें बुतपरस्ती का कहीं पर कोई दोष नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, यह मैं कहना चाहूंगा और हमें यह देखना है कि इस्लाम किसको बुतपरस्ती कहता है और उसकी हदें कहां पर हैं। सच्चाई है कि भारतीय मुस्लिमों ने बंकिम चन्द्र चटर्जी जी के भाव को ? (व्यवधान) कौन बैठाने वाला है? कौन बैठाएगा? क्या बात करते हैं? ? (व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, इनको रोकिए। ये हमारे साथी थे। ? (व्यवधान)

श्री कीर्ति आज़ाद (बर्धमान-दुर्गापुर) : आप विषय पर बात करिए। ? (व्यवधान)

श्री राज नाथ सिंह : अध्यक्ष महोदय, यह सच्चाई है। संसद में कोई चाहे जो बोले, सच बोले, सत्य से थोड़ा परे भी बोले, लेकिन शोर-शराबा नहीं मचाना चाहिए। आपको बाद में जब भी खड़े होकर बोलने का अवसर मिले, आप उसका प्रतिकार कर सकते हैं। यह संसद की मर्यादा है। मैंने संसद सदस्य रहते हुए सदैव इसका ध्यान रखा है। मेरे बारे में यह कोई नहीं कह सकता है। मैंने संसद की मर्यादा कभी नहीं तोड़ी है।

अध्यक्ष महोदय, सच्चाई यह है कि भारतीय मुस्लिमों ने बंकिम चन्द्र चटर्जी के भाव को कांग्रेस या मुस्लिम लीग के कुछ नेताओं से कहीं अधिक गहराई और सही अर्थ में समझा है। हमारे यहां की सूफी परंपरा में, विशेषकर पंजाब और बंगाल में अक्सर यह भाव देखने को मिलता है, जिस भाव से वंदे मातरम् लिखा गया है। ख्वाजा गुलाम शरीफ ने लिखा है -

?ऐ हुस्न-ए-हक़ीक़ी नूर-ए-अज़ल,

तैनूं वाजिब ते इम्कान कहूं,

तैनूं दशरथ लक्ष्मण राम कहूं,

तैनूं सीता-जी जानान कहूं।?

इसका भावार्थ है ? हे सत्य सौंदर्य, हे दिव्य प्रकाश, तुम्हें क्या नाम दूं? क्या तुम्हें दशरथ कहूं? लक्ष्मण कहूं, राम कहूं या सीता कहूं?

अध्यक्ष महोदय, मशहूर वकील राम जेठमलानी जी ने एक बात कही थी और मुझे वह बात अच्छी तरह से याद है। उन्होंने कहा था कि इस्लाम में अल्लाह को रब इसलिए कहा जाता है, क्योंकि उसका गुण है ? ?रबूबियत? यानी पालन पोषण करना। यही गुण ?मां? में होता है, जो अपने बच्चों के तन और मन दोनों का पोषण करती है। यही दिव्य गुण हमारी मातृभूमि में भी है। जिस तरह से हम अल्लाह के सामने उसकी अनंत रबूबियत के लिए सजदा करते हैं, उसी तरह मां भारती के सामने भी सजदा करना हमारा फर्ज़ है, क्योंकि यह धरती हमारा पोषण करती है।

अध्यक्ष महोदय, इसलिए वंदे मातरम् कोई हिन्दू-मुसलमान का सवाल नहीं है। यह तो हर इंसान का फर्ज़ है, जो इस धरती पर श्वास लेता है। सच यह है कि वंदे मातरम् ने भारत के सभी लोगों के दिलों को स्पंदित किया है। चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान हो।

बंगाली और संस्कृत में लिखा गया यह गीत तमिल, मराठी, कन्नड़, गुजराती, हिन्दी, तेलुगु, मलयालम और भारत की हर भाषा बोलने वालों के दिलों में घर कर गया। यह गीत अनेकता में एकता का सबसे बड़ा उदाहरण है। इसी वजह से इसने उन लोगों को विचलित किया, जो ?एक भारत, श्रेष्ठ भारत? के विचार से डरते थे।

अध्यक्ष महोदय, सभी ने इसमें संगठित और एक होने की आवाज़ सुनी। बस कुछ लोगों ने इस गीत का मतलब गलत निकाला और गलत समझा। अब इस समझ को बदलना होगा, सही समझ पैदा करनी होगी और वंदे मातरम् का भी सही अर्थ अब हमें समझना होगा। हम सबको यह समझना होगा कि बंकिम चंद्र चटर्जी जी वन्दे मातरम् के माध्यम से किसे संबोधित कर रहे थे? सब्यसाची भट्टाचार्या ने अपनी किताब में लिखा है कि जब बंकिम बाबू ने सप्तकोटि यानी सात करोड़ की आबादी के बारे में लिखा, तो उसका मतलब बंगाल प्रेसीडेंसी की पूरी आबादी से था, जिसमें बंगाल, बिहार, उड़ीसा, असम और छोटा नागपुर के कुछ हिस्से भी शामिल थे।

अध्यक्ष महोदय, इसका उल्लेख बंकिम बाबू ने स्वयं वर्ष 1872 में किया। इसलिए यह केवल किसी सात करोड़ आबादी के समुदाय की आवाज़ नहीं थी। यह किसी धर्म या संप्रदाय का नारा नहीं था। यह तो समूचे भारत की एक स्वर लहरी थी, जिसमें हर भारतीय की आस्था, हर भारतीय की आशा एक साथ गूंज उठी थी। जो लोग वन्दे मातरम् का विरोध इस आधार पर करते हैं कि यह मूर्ति पूजा को बढ़ावा देता है, वे बंकिम बाबू के विचारों की रत्ती भर समझ नहीं रखते हैं। मेरा ऐसा मानना है। वन्दे मातरम् में मूर्ति पूजा की कोई बात नहीं है। बंकिम बाबू स्वयं मूर्ति पूजा के समर्थक नहीं थे। यह जानकारी बहुत कम लोगों को है। बंकिम स्वयं मूर्ति पूजा के समर्थक नहीं थे। यह बात उनके द्वारा सन् 1874 में लिखे गए एक लेख से बिल्कुल साफ हो जाती है।

अध्यक्ष महोदय, बंकिम बाबू के लेखन से यह भी स्पष्ट होता है कि उनका मानना था कि भारतीय संस्कृति में भगवान की प्रतिमा या भावगम्य एक सेतु है, एक माध्यम है, माध्यम है सत्य को जानने का, माध्यम है ईश्वर के स्वरूप को समझने का। इसीलिए वन्दे मातरम् में मां भारती कोई मूर्तिमान देवी नहीं है, बल्कि वह उस भावना की एक प्रतीक है, जिसके लिए हर भारतीय के हृदय में प्रेम है। मैं यह दोहराना चाहता हूं कि ब्रिटिश शासन और कुछ कट्टरपंथियों ने शायद इस बात को नहीं समझा था या समझने का प्रयास नहीं किया था कि वन्दे मातरम् के मूल में क्या है? लेकिन मैं यह पूछना चाहता हूं कि कांग्रेस पार्टी ने इन लोगों का साथ क्यों दिया, जबकि हम लोग तब भी वन्दे मातरम् के साथ हुए अन्याय के विरोध में खड़े थे? आज भी हम वन्दे मातरम् के सम्मान के साथ किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करेंगे। वन्दे मातरम् का गौरव हमारा गौरव है। यह हमारा गौरव ही नहीं है, हमारे पूरे भारत देश का गौरव है।

अध्यक्ष महोदय, स्वतंत्रता आन्दोलन में महात्मा गांधी और बाल गंगाधर तिलक से लेकर राजेन्द्र बाबू और डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे महानायक मौज़ूद थे, जो भारत की सभ्यता और संस्कृति पर गर्व करते थे। इसी का प्रभाव हमारे संविधान की मूल प्रति में अंकित चित्रों में दिखता है। श्री नंदलाल बोस जी के मार्गदर्शन में बने ये चित्र भारत की आत्मा को भी प्रतिबिम्बित करते हैं। सिन्धु घाटी सभ्यता की मुहर, वैदिक आश्रम, श्री राम और रावण का युद्ध, गीता उपदेश, भगवान बुद्ध का धर्मचक्र, नटराज, महाबलीपुरम का गंगा अवतरण, छत्रपति शिवाजी महाराज और गुरु गोविन्द सिंह जी, इन सभी को संविधान में सम्मान मिला है। संविधान में अंकित चित्रों में भारत को उसी रूप में दिखाया गया है, जैसा हमारा भारत है - सभ्यतागत, आध्यात्मिक और गौरवशाली भारत।

अध्यक्ष महोदय, आजादी के बाद कांग्रेस ने भारत की सभ्यता, संस्कृति और यहां तक कि भारत के संविधान को भी हमेशा अपने संकीर्ण हितों की बलि चढ़ाया है। तुष्टिकरण की राजनीति कांग्रेस के लिए हमेशा संविधान, भारत की संस्कृति, सभ्यता, सम्प्रभुता और मानवता के ऊपर रही है। वन्दे मातरम् के साथ कांग्रेस ने संविधान को भी खंडित करने का काम किया है। वर्ष 1951 में पहला संविधान संशोधन करके मूल संविधान के चरित्र को बदल दिया गया।

यह इतना बड़ा परिवर्तन था कि कानून के जानकारों ने इस संशोधन को ?दि सेकेंड कांस्टिट्यूशन? की संज्ञा दी थी। उस समय हमने संविधान की आत्मा को बचाने की लड़ाई भी लड़ी थी। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने इसका बहुत जबरदस्त विरोध किया था। उन्होंने पंडित नेहरू से कहा था - ?You are treating this Constitution as a scrap of paper.?

यानी आप इस संविधान के साथ रद्दी कागज जैसा व्यवहार कर रहे हैं। यह डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा था। यही नहीं, 42वें संशोधन से भी संविधान को पूरी तरह बदल दिया गया था। संविधान की प्रस्तावना के साथ ही खिलवाड़ किया गया। ऐसे कुछ शब्द जोड़े गए - ?सेक्युलर? और सोशलिज़्म?, जिन्हें संविधान सभा ने उस समय नकार दिया था।

अध्यक्ष महोदय, संविधान और उसके मूल्यों के साथ खिलवाड़ आगे भी जारी रखा गया। ?यूनिफॉर्म सिविल कोड? हमारे संविधान में निहित एक महान संवैधानिक आदर्श है।

अध्यक्ष महोदय, शाह बानो केस में सुप्रीम कोर्ट ने एक बहुत ही प्रगतिशील फैसला दिया था, जो कि मुस्लिम महिलाओं के हक में था। उस फैसले को उलटने के लिए जब कांग्रेस की सरकार में संसद में एक कानून पास किया गया, तो यह पूरी तरह से स्पष्ट हो गया कि कांग्रेस के लिए न्याय से ज्यादा महत्वपूर्ण वोट बैंक और तुष्टिकरण की राजनीति है।

अध्यक्ष महोदय, तुष्टिकरण की राजनीति के कारण ही इतने सालों तक जम्मू-कश्मीर से आर्टिकल-370 नहीं हटाया गया, जिसके कारण वहां आतंकवाद को बढ़ावा मिला। जम्मू-कश्मीर विकास से वंचित रह गया। इस भूल को सुधारने का काम भी यदि किसी ने किया है, तो हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया है। ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, स्वस्थ लोकतंत्र की सबसे अहम पहचान होती है - sanctity of the electoral process. यह हैल्दी-डेमोक्रेसी की सबसे अहम पहचान होती है। लेकिन, continuous migration, deaths and rapid urbanisation मतदाता सूचियों को डिस्टॉर्ट कर देते हैं। इससे चुनावों की विश्वसनियता प्रभावित होती है, जेन्यूइन वोटर्स को नुकसान होता है और साथ ही चुनावी वैधता पर भी स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठते हैं।

अध्यक्ष महोदय, यहीं पर एसआईआर जैसी प्रक्रिया की आवश्यकता पड़ती है, ताकि मतदाता सूची को ठीक किया जाए। ? (व्यवधान) लेकिन, जब कुछ दलों के नेता चुनाव हारते हैं या उन्हें हार सामने दिखाई देती है, तो वे इस पूरी प्रक्रिया को ही लाकर कठघरे में खड़ा कर देते हैं। ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, यह संवैधानिक संस्थाओं के प्रति गहरे अनादर के भाव को दर्शाता है। ? (व्यवधान) ये ही लोग लगातार चुनाव आयोग पर एक साजिश के तहत हमले कर रहे हैं। यह कोई साधारण आलोचना नहीं है, यह एक सोची-समझी साजिश का हिस्सा है।

अध्यक्ष महोदय, संवैधानिक संस्थाओं को बदनाम करना राष्ट्र के साथ अन्याय है, क्योंकि ये ही संस्थाएं हमारे लोकतंत्र की रीढ़ हैं। लेकिन, इन दलों के लिए यह कोई नई बात नहीं है। संस्थाओं को कमजोर करना और उनके निर्णयों पर संदेह खड़ा करना इनकी लंबी राजनीतिक परंपरा रही है।

अध्यक्ष महोदय, आज जब देश मजबूत लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ आगे बढ़ रहा है, तब ऐसी नकारात्मक राजनीति न केवल निराशाजनक है, बल्कि देश हित के विरुद्ध भी है।

अध्यक्ष महोदय, कुछ दलों ने अपने राजनीतिक स्वार्थ साधने के लिए सिर्फ कांस्टिट्यूशन को ही नहीं नुकसान पहुंचाया है, बल्कि अपीज़मेंट-पॉलिटिक्स के लिए भारत की संस्कृति को भी नीचा दिखाया है।

अध्यक्ष महोदय, यह बात इतिहास के पन्नों में दर्ज है कि जब डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण और उद्घाटन में शामिल होकर सांस्कृतिक पुनर्जागरण का संदेश देना चाहा, तब कांग्रेस ने इसका कड़ा विरोध भी किया था।

अध्यक्ष महोदय, राम मंदिर निर्माण की मांग करोड़ों भारतीयों की आस्था की प्रतीक थी, लेकिन, कुछ दलों ने न केवल वोट बैंक की राजनीति के कारण इसका निरंतर विरोध किया। ? (व्यवधान) सदियों के संघर्ष, एक लंबी न्यायिक लड़ाई और सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक निर्णय के बाद कहीं जाकर भगवान श्री राम के मंदिर का निर्माण हुआ है। ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, यह केवल एक मंदिर का निर्माण नहीं है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता के आत्मगौरव की पुनर्स्थापना भी है।

अध्यक्ष महोदय, इन सभी बातों को देखकर मैं यह कह सकता हूं कि वंदे मातरम् की अस्वीकृति धार्मिक नहीं, बल्कि स्ट्रैटिजिक थी।

अध्यक्ष महोदय, जहां कुछ लोग वंदे मातरम् के साथ सौतेला व्यवहार कर रहे थे, सांप्रदायिक बता रहे थे, वहीं दूसरी ओर महात्मा गांधी और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जैसे नेताओं को इसमें किसी प्रकार की सांप्रदायिकता नहीं दिखी थी।

अध्यक्ष महोदय, महात्मा गांधी ने कहा था कि वंदे मातरम् मेरे मन में गहराई तक बैठ गया है। जब मैंने पहली बार इसका गायन सुना, तो मैं रोमांचित हो गया। मैं इस पर मोहित हो गया। यह गांधी जी ने कहा है। मुझे इसमें केवल राष्ट्रीय भावना ही दिखाई दे रही थी। मुझे ऐसा कतई नहीं लगा कि यह गीत एक हिन्दू गीत है। यह महात्मा गांधी ने कहा था, मैं नहीं कह रहा हूँ। उन्होंने यह भी कहा था कि वंदे मातरम् में कोई द्वेष-भावना नहीं है। वंदे मातरम् में कोई दोष नहीं है। हम अपनी मां में जो सद्गुण देखते हैं, उन सभी गुणों को कवि ने भारत माता के अंदर देखा है। यह महात्मा गांधी ने कहा था।

अध्यक्ष महोदय, डॉ. राजेंद्र बाबू ने कहा था कि जहाँ तक वंदे मातरम् की बात है, तो यह मूर्ति-पूजा को बढ़ावा नहीं देता है। माँ दुर्गा का मतलब कोई मूर्ति नहीं है, बल्कि यह उस देश का दूसरा नाम है, जो हम सबको प्यारा है। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद हमारी आज़ादी की लड़ाई के बड़े नेताओं में से एक थे। उन्होंने भी वंदे मातरम् के नैरो और सेक्टेरियन इंटरप्रिटेशन को सिरे से नकार दिया था। उन्होंने भी वंदे मातरम् गीत को बहुत गहराई से देखा था। उन्हें इसमें इस्लामी सिद्धांतों और वेदांत दर्शन का सुंदर मेल पाया। वेदांत कहता है कि सच्चाई के बहुत सारे रूप हो सकते हैं। एक ही सत्य को अलग-अलग लोग अलग-अलग तरीके से देखते और पूजते हैं। दूसरा विचार इस्लाम से आता है। वहाँ वहदत-ए-दीन, यानी सभी धर्मों की एकता की बात है। इस्लाम में भी सभी धर्मों की एकता की बात है। सुलह-ए-कुल, यानी सभी के साथ शांति और भाईचारे की बात की गई है। वंदे मातरम् गीत में उन्होंने यह अद्भुत संगम, सामंजस्य और समानता देखी। बदरुद्दीन तैयब जी, मोहम्मद रहीमतुल्ला सयानी, नवाब सैयद मोहम्मद बहादुर, डॉ. एम. ए. अंसारी, मौलाना आज़ाद, इनमें से किसी ने भी वंदे मातरम् का कभी विरोध नहीं किया है।

जहाँ तक मूर्ति-पूजा की बात है, तो आज मैं इस सदन के माध्यम से सभी देशवासियों को बताना चाहता हूँ कि अरबी और फ़ारसी साहित्य में भी उम्म-अल-कुरा, यानी ग्राम्य में जननी, उम्म-उल-मोमिनीन, यानी विश्वास करने वालों की माँ और उम्म-उल-किताब, यानी ग्रंथ-जननी जैसे शब्द मिलते हैं। क्या इन्हें भी मूर्ति-पूजा की संज्ञा दी जाएगी?

अध्यक्ष महोदय, वंदे मातरम् को सांप्रदायिक बताकर विरोध करना एक बहाना मात्र था, लेकिन असली कारण पूरी तरह राजनीतिक था। सन् 1885 से लेकर 1905 तक कांग्रेस का न अपना कोई राष्ट्रीय गीत था और न अपना कोई झंडा। अब समय आ गया है कि कांग्रेस गुलामी की मानसिकता को छोड़े और वंदे मातरम् के पूर्ण स्वरूप को स्वीकार करे। मैं पूर्ण स्वरूप को स्वीकार करने की बात कर रहा हूँ। हो सकता है कि देश के लोग आपको अभी भी माफ कर दें। मैं याद दिलाना चाहता हूँ कि वंदे मातरम् ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी थीं। वर्ष 1905 में स्वयं मोतीलाल नेहरू जी ने पंडित नेहरू को लिखे पत्र में लिखा था ? ?हम ब्रिटिश शासन के इतिहास की सबसे अधिक संकटपूर्ण अवधि से गुजर रहे हैं। इलाहाबाद में भी वंदे मातरम् आम अभिवादन बन गया है। यदि अभियान चलता रहा, तो जब तुम गए थे, यहाँ लौटने पर उसे बिल्कुल बदला हुआ पाओगे।? यह मोतीलाल नेहरू ने कहा है। इतना जन समर्थन होने के बाद भी तथाकथित रिलिजियस सेंटिमेंट हर्ट होने के नाम पर वंदे मातरम् का बराबर विरोध किया गया। कुछ लोगों द्वारा तरह-तरह के षड्यंत्र करके इस गीत को दोयम स्थान पर लाकर खड़ा कर दिया गया। जब नेताजी कांग्रेस से निकले और आज़ाद हिंद फ़ौज की स्थापना की, तो फ़ौज के संचालन गीतों में वंदे मातरम् को राष्ट्रीय गीत का स्थान दिया गया था। पंडित नेहरू ने वंदे मातरम् के खिलाफ तरह-तरह के तर्क दिए। उनके अनुसार वंदे मातरम् ऑर्केस्ट्रा पर आसानी से नहीं बजाया जा सकता है।

उन्होंने लिखा है कि in Nehru ji?s assessment, tune was not more important than the words. I quote him:

> ?In regard to the National Anthem tune, it was felt the tune was more important than the words, and this tune should be such as to represent Indian musical genius as well as to some extent, the Western, so that it might be equally adaptable to orchestra and a band music, and to be played abroad?

नेहरूजी ने कहा था, वे यह भी मानते थे कि राष्ट्रगान का असली महत्व विदेशों में ज्यादा है। अपने देश में कम है। उन्होंने कहा था कि

> ?The real significance of the National Anthem is perhaps more abroad, than in the home country.?

यह तर्क महज बहाना था। शास्त्रीय संगीतकार मास्टर कृष्णराव जी ने नेहरू जी के तर्क को खारिज किया था। उन्होंने वंदे मातरम् की तीन अलग-अलग ट्यून्स संविधान सभा में ही प्रस्तुत की थीं। वर्ष 1949 में कृष्णराव जी ने एक पत्र में लिखा है कि कुछ लोग कहते हैं कि वंदे मातरम् बैण्ड पर नहीं गाया जा सकता है, किंतु मेरा पक्का विश्वास है कि यह संभव है

और वह भी बड़े ही सुंदर ढंग से संभव है। मैं अपनी तर्ज में इसे गॉड सेव द किंग से अधिक प्रभावशाली बना सकता हूं। अध्यक्ष महोदय, और तो और स्वयं गुरूदेव रविन्द्र नाथ टैगोर ने भी बहुत पहले ही वंदे मातरम् की ट्यून तैयार की थी, लेकिन पंडित नेहरू ने वंदे मातरम् के खिलाफ अपना मन बना लिया था। नेहरू जी ने कुछ लोगों का हवाला देते हुए कहा भी था कि ?There was not enough movement in it? जिस गीत ने फ्रीडम मूवमेंट को नई ऊर्जा दी, नेहरूजी को उस गीत में मूवमेंट ही नजर नहीं आ रहा था। यह भारत के लोगों के साथ एक भद्दा मजाक था, जहां आस के प्रतीक के चुनाव के लिए शब्दों और उसके मतलब से ज्यादा इस बात को महत्व दिया गया कि विदेशी लोगों को उसकी ट्यून कैसी लगेगी। यह सोच गुलामी की मानसिकता में जकड़े हुए लोगों की हो सकती है। प्रधानमंत्री मोदी जी देश को इसी कॉलोनियल माइंड स्तर से निकालने का ही प्रयास कर रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, दिनांक-24 जनवरी, 1950 को संविधान सभा ने देश का राष्ट्र गान अपनाया। संविधान सभा में राष्ट्रगान पर हुई चर्चा कुल मिलाकर 30 मिनट से भी कम चली थी। क्या इसका अर्थ यह था कि राष्ट्रगान अन्य मुद्दों की तुलना में कम महत्वपूर्ण था? नहीं। शायद जो लोग वंदे मातरम् को राष्ट्रगान नहीं बनाना चाहते थे, उन्हें यह आभास हो गया था कि अगर चर्चा हुई, तो स्वतंत्र भारत का राष्ट्रगान क्या होगा? शायद इसलिए ही इस पर ज्यादा चर्चा करना उचित नहीं समझा गया। वंदे मातरम् को तमाम सम्मान देने की बात कही गयी थी, लेकिन वास्तव में इसे दोयम दर्जा दिया गया। अगर समान सम्मान देने का वादा किया गया था, तो क्यों उस समय की सरकारों ने वंदे मातरम् को Prevention of Insults to National Honour Act में स्थान नहीं दिया? मैं इस सवाल का भी जवाब चाहूंगा।

अध्यक्ष महोदय, यह इस देश का दुर्भाग्य है कि जिस गीत के बारे में गांधी जी ने कहा था कि जब तक यह देश रहेगा, वंदे मातरम् रहेगा। उस गीत को गाने का हक मांगने के लिए अदालतों के दरवाजे खटखटाने पड़े और तो और कई बार उसे न गाने के लिए फतवे भी जारी किए गए। अन्याय सिर्फ वंदे मातरम् के साथ नहीं हुआ है, बल्कि बंकिम बाबू की पूरी विरासत के साथ हुआ है। पश्चिम बंगाल के काँचड़ापाड़ा में स्थित बैठकखाना, जहां बंकिम बाबू ने वंदे मातरम् गीत लिखा था, वह राष्ट्र के लिए वंदनीय स्थल होना चाहिए था, लेकिन जो उपेक्षा वंदे मातरम् की हुई, वहीं उपेक्षा उस स्थान की भी हुई। इस जगह से न केवल लोग अनजान हैं, बल्कि इस जगह की स्थिति भी बहुत ही दयनीय हो गई है।

अध्यक्ष महोदय, वंदे मातरम् के साथ-साथ बंग्ला भाषा के साथ भी अन्याय हुआ है। हमारी सरकार ने बंग्ला भाषा को क्लासिकल लैंग्वेज का दर्जा देकर बंगाल, बंग्ला भाषा और बंकिम बाबू के साथ हुए अन्याय को सही करने का प्रयास किया है।

अध्यक्ष महोदय, आज हम आजाद हैं, हम दुनिया की एक बड़ी ताकत है और विकसित राष्ट्र बनने की राह पर हम तेजी से आगे बढ़ चले हैं। मैं आज सदन को बतलाना चाहता हूं कि 150 वर्ष पूर्व लिखे वंदे मातरम् गीत में आज के भारत के उदय का मार्ग भी देखा जा सकता है। वंदे मातरम् के माध्यम से बंकिम बाबू ने उत्तिष्ठत जागृत का संदेश दिया यानी जब भारत का हर नागरिक वंदे मातरम् कहेगा तभी भारत सशक्त बनेगा। वंदे मातरम् ही विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त करेगा, हमारे आत्म बल को बढ़ाएगा, राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देगा, स्वदेशी की भावना को भी बढ़ावा देगा।

अध्यक्ष महोदय, मेरा सभी सांसदों से आग्रह है कि हम सब एक साथ आएं और विचार करें कि क्या हम कॉन्स्टीट्यूशन के आर्टिकल 51ए के तहत सभी नागरिकों के लिए एक नई फंडामेंटल ड्यूटी नहीं जोड़ सकते, जिसके अंतर्गत हम वंदे मातरम् का वैसा ही सम्मान करें, जैसा कि हम राष्ट्र गान का सम्मान करते हैं? अगर हम ऐसा करते हैं तो यह वंदे मातरम्, इसके लेखक और बंगाल के महान राष्ट्रवादी चिंतक बंकिम बाबू को एक परफेक्ट ट्रिब्यूट होगी। मैं यह मानता हूं।

अध्यक्ष महोदय, अंत में, मैं कहना चाहता हूं कि वंदे मातरम् हमारा गौरव है, हमारी पहचान है और हमारे संविधान की सबसे ऊंची पुकार है। वंदे मातरम् मातृभूमि के प्रति वात्सल्य का अनहद नाद है। वंदे मातरम् स्वतंत्रता संग्राम के उन अज्ञात, अवर्णित सैनिकों की याद है, जिन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। यह उस पीड़ा को भावपूर्ण श्रद्धांजलि है, जो असंख्य मतवालों ने आजादी प्राप्त करने के लिए सहा था, बर्दाश्त किया था। वंदे मातरम् हर उस सैनिक को हौसला देता है, जो आज भी अपनी मातृभूमि के लिए हर दुश्मन का सामना कर रहा है। वंदे मातरम् हमारी एकता का भी प्रतीक है, स्वाधीनता का संकल्प है, वीरता का यह जयघोष है, त्याग का महामंत्र है और बलिदान का अमरगान है। वंदे मातरम् हमारे गौरवशाली अतीत का स्मरण है, हमारे स्वर्णिम भविष्य का आह्वान है और यह मातृभक्ति का एक अनुपम भाव है। संस्कृति का शाश्वत प्रकाश है, सभ्यता का यह गौरव है, धर्म की रक्षा का यह संदेश है, कर्म की प्रेरणा है, शक्ति का आह्वान है, विजय का विश्वास है, अमरत्व का स्वर है, पवित्रता का स्पंदन है और आस्था का आधार है। वंदे मातरम् भारतीयता का और राष्ट्रीयता का एक सशक्त हस्ताक्षर भी है। इसलिए गर्व से कहो? वंदे मातरम्, वंदे मातरम्, वंदे मातरम्। धन्यवाद।

17.38 hrs

***m39श्री अवधेश प्रसाद (फैज़ाबाद):** माननीय अध्यक्ष महोदय, हम आपके बहुत आभारी हैं। आज सदन में एक ऐतिहासिक विषय पर हमारे नेता माननीय अखिलेश यादव जी ने, जो देश के भविष्य हैं, कांग्रेस के नेता आदरणीय गौरव जी और प्रियंका गांधी जी ने अपने विचार रखे हैं।

17.38½ hrs (Shri A. Raja *in the Chair*)

हम इन विचारों से अपने को संबद्ध करते हुए आज अपनी बात कहना चाहते हैं। वंदे मातरम् इस देश की एकता, इस देश की अखंडता, इस देश की आपसदारी और भाई-चारे का संकेत है। लेकिन अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि आज जो हमारी सरकार है, चाहे उत्तर प्रदेश में योगी जी के नेतृत्व में हो, चाहे हमारे देश की सरकार हो, आज भेद किया जा रहा है। आज आपसी विवाद पैदा किया जा रहा है। अभी हाल में 25 नवंबर को माननीय प्रधान मंत्री अयोध्या में प्रभु श्रीराम के मंदिर में पताका फहराने गए थे। हम नहीं समझ पाए कि मुझे इग्नोर क्यों किया गया?

हमें पास क्यों नहीं दिया गया? हमें उसमें शामिल होने का निमंत्रण क्यों नहीं दिया गया? यह मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जो लोग हैं, यह अवधेश प्रसाद का अपमान नहीं है, बल्कि अयोध्या के प्रभु श्री राम के लोगों को अपमान है। साथ ही साथ जो वंदे मातरम् का संदेश है, वह संदेश अधूरा प्रतीत होता है। मान्यवर, आज जब वंदे मातरम् पर हमारे देश के लायक प्रधान

मंत्री जी ने शुरुआत की है, ऐसे समय में अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि आज आजाद देश में इंसान को ?की कोशिश की जा रही है। यह धरती किसी दूसरे की नहीं है, यह लखनऊ स्थित काकोरी काण्ड के शहीदों की धरती है। काकोरी में रामपाल पासी, जो 70 साल के थे, बीमार रहते थे, मंदिर के किनारे एक चबूतरा था। मंदिर थोड़ा दूरी पर था। बीमारी के कारण उनको पेशाब हो गया। ? लोगों ने उनको बेइज्जत करके ? का काम किया। वह भी ऐसे समय पर, जब देश में 20 तारीख को सारा देश दीपावली का त्यौहार मना रहा था। हमारे लायक मुख्यमंत्री सामूहिक दीपदान कराने फैजाबाद गए हुए थे। उसमें भी मुझे नहीं बुलाया गया। यह वंदे मातरम् का संदेश नहीं है। इस देश ने अमृत महोत्सव मनाया है, लेकिन वीरांगना उदा देवी पासी, जिनका देश की आजादी में बहादुरी भरा योगदान रहा है, जिन्होंने लखनऊ स्थित सिकंदराबाद चौराहे पर 36-36 अंग्रेजों को मार गिराया था और शहीद हुई थीं, उनका अमृत महोत्सव में कहीं कोई नामो-निशान नहीं है। यह हमारा वंदे मातरम् पर जो संदेश है, वंदे मातरम् की जो इच्छा-आकांक्षा है, सरकार का उसके विपरीत आचरण है। आज वंदे मातरम् पर 10 दिन की चर्चा होनी चाहिए थी। मैं तो चाहता था कि एक विशेष सत्र बुलाया जाता और उस विशेष सत्र में वंदे मातरम् पर चर्चा भी होती। वंदे मातरम् की इच्छा-आकांक्षा है कि वंदे मातरम् जिस तरह का हिंदुस्तान चाहता है, जिस तरह का समाज चाहता है, उसके लिए हम खरे उतरे या नहीं।

मान्यवर, यह देश किसी एक जाति का नहीं है। यह देश किसी एक धर्म का नहीं है। हमारे जनपद फैजाबाद, जिसका नाम अयोध्या हो गया है, वहां पर अशफ़ाकुल्लाह ख़ाँ, जिनकी 27 वर्ष की उम्र थी, उनको फांसी के फंदे पर लटकाया गया। उनकी मां उनसे मिलने आईं। जब उनसे पूछा गया कि आप किससे मिलना चाहते हो, तो उन्होंने जवाब दिया कि हम भारत माता से मिलना चाहते हैं। जब उनसे पूछा गया कि आपके इस शरीर को, जिसकी मौत हो रही है, कहां दफनाया जाए, तो उन्होंने कहा कि हम आजाद देश की धरती पर दफन होना चाहते हैं। यह उनकी भावना थी। यह भावना थी पंडित राम प्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाकुल्लाह ख़ाँ, राजेंद्र सिंह लहरी की। यह देश ऐसे महान पुरुषों का, शहीदों का देश है और इन्हीं सबकी मेहनत से, इन्हीं सबकी बहादुरी और वीरता से यह देश आजाद हुआ है, लेकिन आज उसके उलटे आचरण हो रहा है। आज एक तरफ वंदे मातरम् पर चर्चा हो रही है, वहीं दूसरी तरफ हमारे देश में लाखों-करोडों नौजवान हैं, जो पढ़े-लिखे हैं, पर उनके हाथ में कोई काम नहीं है। यह वंदे मातरम् की मंशा नहीं है।

मान्यवर, आज जाति के नाम पर, धर्म के नाम पर, मजहब के नाम पर भेदभाव किया जा रहा है। इसलिए आज हमें संकल्प लेना है कि हमें वंदे मातरम् के सम्मान में ऐसा हिंदुस्तान, ऐसा समाज, ऐसी सरकारी बनानी है, जिसमें कहीं पर अन्याय न हो, अत्याचार न हो, जाति के आधार पर काम न हो, किसी को सताया न जाए, कोई भूखा न हो, कोई नंगा न हो, कोई बेरोजगार न हो।

मान्यवर, आपने इस महत्वपूर्ण विषय पर हमें बोलने का मौका दिया, इसके लिए हम आप सभी के प्रति बहुत-बहुत आभारी हैं। धन्यवाद।

***m40SUSHRI MAHUA MOITRA (KRISHNANAGAR) :** Thank you, hon. Chairperson Sir.

Why are we all gathered here today? It is simply because the Government of the day wishes to have a discussion on our National Song ? *Vande Mataram* in the 150th year of its birth. हमने आपकी बात को ध्यान से सुना है। राजनाथ जी और पी एम साहब दोनों ने आपनी बात सदन में रखी है।

?बहुत खुबसूरत है बात

लेकिन अगर दिल भी होता तो क्या बात होती।?

The irony is not lost on us Parliamentarians present here, or on the billion-plus Indians we represent, that we are living in an India today where real unemployment among the youth is upwards of 20 per cent; where we are choking in a national capital with AQI levels routinely over 800; when the Centre is purposefully starving non-BJP States of their MGNREGA, housing and water dues; and where millions of people are being subjected to a hurried, arbitrary process of mass disenfranchisement.

When, session after session, we in the Opposition are bullied, browbeaten and prevented from raising pressing issues of national importance, suddenly the Government finds it so important, so necessary, so urgent to discuss the historical complexities of a song. What is even more ironic is the claim that the hate and divisiveness in today?s India can be linked back to this song.

By the way, just two weeks ago, on 24th November 2025, ...

So, *Vande Mataram*, in your view as of last week - placed on record in a Parliamentary Bulletin, is a slogan. A slogan that was both indecorous and non-serious, and yet you suddenly want to discuss it for 10 hours in this House. Why?

I will tell you why, because no doubt some ... BJP IT Cell minion has probably advised you that the *Vande Mataram* card, if played right, will give the BJP an advantage in the 2026 Bengal elections. There is no other reason behind the timing of this discussion - none at all. Take it from me.

We are delighted not only to have this fabulous opportunity to give you a history lesson, but also to demonstrate to you how delving into *Vande Mataram* will only prove how removed you are from the soul of Bengal, from the psyche of Bengal, and how our ?*Maa?* will never be hostage to your narrow electoral goals. Let the history lesson begin. What do you say? Let it begin.

Shri Bankim Chandra Chatterjee?s two-stanza hymn, *Vande Mataram*, was first published in the literary journal ?*Bongo Dorshon?* on 7th November, 1875. At that time, there were no patriotic societies or nationalist organizations in India, except for the Indian League in Calcutta, which was founded by patriotic Bengalis - Shishir Ghosh, Anand Mohan Bose and Surendranath Banerjee, to rally public support against British colonial rule.

The RSS and the BJP were nowhere in sight. The RSS was formed 50 years later, in 1925; and the BJP was formed 105 years later, in 1980. Incidentally, the ruling party - the *Sangh Parivar* do not sing *Vande Mataram*.

I remember this hilarious episode in 2017, I think it was, on TV, where a BJP spokesperson called ... was asked to sing *Vande Mataram*. He kept looking at his mobile phone, and even then, he could not sing it. Also, in August 2017, I remember a Cabinet Minister in the UP Government, ... was unable to correctly sing the song on a TV news show.

In January 2019, before the last Lok Sabha election, BJP leaders held a protest where they attempted to make Muslims sing the song. They themselves could not sing the song correctly. So, the meeting thus ended into chaos and the BJP leaders and their followers chanted slogans like *?Is Desh me agar rehna hoga, to Vande Matram kehna hoga?*. So, frankly, the BJPs commitment to this song is a badly scripted comedy. The British banned the use of this slogan ?Vande Matram? under the sedition laws and banned singing it in any public place.

When India?s youngest freedom fighter, Bengal?s brave son, Khudiram Bose was led to the gallows in 1908, he had Vande Matram on his lips. When in 1927 Ram Prasad Bismil walked to the gallows in Gorakhpur jail, when Ashfaqullah Khan walked to the gallows in Faizabad jail, they all had Vande Matram on their lips. But this is the same slogan that the ... finds non-decorous and non-serious in the .... Who, in the BJP, who in the RSS, and who in the Treasury Benches can claim even a tenuous link to the freedom struggle that today you feel you are the guardians of Vande Matram and will teach us Bengalis and the rest of India what its significance is?

Out of 585 total prisoners in Andaman Cellular Jail - *Kaalapani* - between 1909 and 1938, about 68 per cent, 398 were Bengalis. The second largest contingent was from the Punjab, 95 revolutionaries. Why did you not rename the cellular Jail after Barin Ghosh, after Ullaskar Dutt, after Indu Bhushan Roy? What homage have you paid to Bengal? What homage have you paid to the

land of Vande Matram? Today, you are having a discussion on this. The hymn Vande Matram did not gain much popularity till it was included in Bankim Chandra Chattopadyay?s novel Anandmath in 1882 when it was published. Now, when he published it, he added four extra stanzas to it. The first two stanzas which he had written in 1875 were a lyrical ode to the motherland. It says, ?giver of bliss, beauty?. The version in the novel which incorporated in1881-82 had a different tone than that of the original poem.

The figure of sweetness and light was now endowed with a fearsome ecodrama and trappings of war, almost. But this is a keeping with the narrative of the novel which was about the Sanyasi Rebellion. It is important to note here that in the next four stanzas that he wrote, Bankim Chandra Chattopadyay used the words *sapta koti* ? which means seven crore. Now, seven crore in the 1871 Census was the population of undivided Bengal, Bihar, Odisha and Assam. So, this means that the the hymn was about Bengal and the mother he refers to is also in Bengal?s concept and Bengal?s context. This was not originally written as a pan-India song. It was not. Let us be very clear about that.

So, how did it become this national song? How does A.R. Rehman sing it in 1997? How? It was none other than the Poet Laureate Rabindranath Tagore who composed the first musical call of the song based on ?Desh Ragini? around 1885. Rishi Bankim liked the song and the tune so much, he himself included it in the third edition of his book ?Anandmath? in 1886. Tagore in 1937 writes to Nehru, ?The privilege of originally setting its first stanza to the tune was mine when the author was still alive,? Bankim died in 1894, he says, ?I set the tune while Bankim was still alive. And I was the first person to sing it.? So, Tagore was the first person to sing it publicly before a public gathering of the Kolkata Congress in 1896. So, Tagore sets the tune and he sings it publicly in the presence of Rahimtulla Sayani, Dadabhai Naoroji, Surendra Nath Banerjee. When did the song gain mass popularity? Only after 1905 when the Swadeshi Movement as a reaction to Lord Curzon?s partition of Bengal took place, the itinerary singers sung in Prabhat Pheris every morning to raise national consciousness. Rabindranath Tagore himself on Raksha Bandhan day, 16th October, 1905 led the famous anti-partition protest where Hindus and Muslims tied Rakhis on each other and said Vande Matram.

Today, this BJP Government which claims to promote Vande Matram has ensured that even the moon, that moon of *Raksha Purnima*, that moon of *Eid* has been partitioned. Hindu women can

break their *Karva Chauth* fast on their roof with the sighting of the moon but a Muslim in a BJP-ruled State is forbidden from offering *Eid ka Namaz* on his roof to the same moon. And you are blaming a song for India?s divisiveness.

The song was sung again during the Congress session in Banaras in 1905, by Tagore's niece, Sarala Devi Choudhurani, who replaced the *saptkoti*, the seven crores, with *tringsho koti*, which means 30 crores, which is the population of India in the last census of 1901. So, this is the first time that the song is gathering a pan-national appeal. Gandhiji, in the *Indian Opinion* paper, wrote in December 1905: ?This song is so popular, just as we worship our mother; so is this song a passionate prayer to India.?

Tagore continued to use the refrain *?Vande Mataram?* almost as a slogan in some of his own songs. He says it in many of his own songs: ?*Ek sutre bnaadhiyachhi sahosro jibon?.* Many of his own songs use the term *?Vande Mataram?*. The Swadeshi agitation of 1905 and 1908 saw *?Vande Mataram?* as a clarion call. The great Tamil poet, Subrahmaniya Bharati translated it in Tamil in 1905. It began to be sung in meetings and processions all over India, from coastal Andhra Pradesh, from Vijayawada to the canals and cantonments of Punjab where after Jallianwala Bagh where they did not think of it as a Sanskrit-Bengali hymn but a shared call of resistance.

You, this Government today, claim to be the guardians, the true upholders of the spirit of *?Vande Mataram?*?. We have listened to the Prime Minister for an hour; and we have listened to the hon. Defence Minister for an hour tell us about how they are the true upholders of *?Vande Mataram?*. So let me, as a true Bengali, as a proud Bengali, speak for *Dosh Koti* Bengalis today, who this Government call Bangladeshis, and Rohingyas. This Government harasses us on the streets, and in colonies. This Government throws us out when we are pregnant across the border. I am going to dissect the song, stanza by stanza, and demonstrate how this Government is butchering both the spirit and the soul of *?Vande Mataram?*, far more than any 1937 Resolution ever did.

Sujalam Suphalam Malayaja Sheetalam

Shasya Shyaamalam Maataram

What do we have here? What have they done on your watch? *?Sujalam?*, which means, beautiful abundant water. Over 70 per cent of India's surface water is undrinkable today. India ranks 120th out of 122 countries in the Water Quality Index, and 21 major cities, including Delhi and Bangalore, are expected to deplete their groundwater reserves by 2030. And yet, in the face of this data, the Government is cutting the Jal Jeevan Mission money to all the states. Bengal itself is owed Rs. 3,000 crore in Jal Jeevan Mission money. This is what you are doing for *?Sujalam?*.

"Malayaja shitalam", which means, the cool fresh air. This is a joke. The AQI in the National Capital today is between 800 and 1,000 routinely. Our children are choking, and the elderly are dying. You know what the Centre has done? The Centre has exempted 78 per cent of thermal power plants from installing key anti-polluting systems. The Environment Ministry has spent less than one per cent of its Rs. 858 crore pollution funds in 2024-25. The fossil fuel driven pollution claims 1.72 million lives in India, and premature mortality due to outdoor air pollution costs India $339 billion. That is 9.5 per cent of our GDP. That is what we are doing for *"Malayaja shitalam".*

?Shasyashyamalam?, which means, the blessed fertility of the soil, what has the Government done? The Ministry of Agriculture and Farmer's Welfare saw a reduction in its budget of two-and-a-half per cent this year. The Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana meant for the poorest of farmers suffered a cut of Rs. 3,600 crore. It is estimated that 37 per cent of India's land is affected by degradation. About two-thirds of soil samples collected from India are deficient in nitrogen, phosphorus and potassium, and 85 per cent contain too little carbon for functioning soil systems.

?Suhasinim sumadhura bhashinim?, which means, sweet smiles, sweet in speech. They, the ruling party, with their hate speech routinely call for violence against Muslims and minorities. From calls for genocide in Haridwar to open threats in rallies, they use terms like ?vote bank?, infiltrators, *ghuspaithiya*, and describe those with more children as dog whistles. You impose Hindi on us. You call Bangla a Bangladeshi language. You have unleashed the worst kind of linguistic terrorism on all of us where people are scared to speak their mother tongue in the streets of Delhi, and in the streets of Gurgaon. There is no *"sumadhura bhashinim"* in today's BJP.

*?Sukhadam varadam, Mataram?,*means, give us happiness. Today, an arbitrary hurried exercise of your design is making the Election Commission force such work pressure that BLOs are committing suicide. And, what does the Election Commission say to us? They say: ?Oh, it is in the

line of duty. They should be happy doing it.? India is ranking 118 out of 147 countries in the 2025 World Happiness Report.

18,00 hrs

To be a minority in India today is to be perpetually suspect, perpetually second-class and perpetually subordinate. Far from feeling happy, minorities are fearing the State instead of feeling protected by it? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Hon. Members, it is 6 o?clock already. I want to know the sense of the House. If the House decides, we can go on up to the discussion is over and time can be extended.

Time is extended.

SUSHRI MAHUA MOITRA: *?Tumi Vidya, tumi Dharma?*. Let us talk about ?*Vidya?* first. Under this Government, outlay for education is still at an abysmal 3.8 per cent, which is far below the six per cent envisaged by the NEP and far below other developed nations. Grants-in-aid for the All India Council of Technical Education has dropped nearly 61 per cent in the last two years. The UGC?s budget has been slashed by 47 per cent. Let us take the example of the Delhi University. The University of Delhi is grappling with the fund gap of Rs. 250 crore in this financial year. It needs Rs. 544 crore, the UGC has allocated just Rs. 313 crore. *?Tumi Vidya?* does not seem so.

Now, we come to ?*Tumi Dharma?*. When Rishi Aurobindo translated the verses of ?*Vande Mataram?* into English in *Karmayogin* in 1909, he translated *Dharma* as conduct, not religion. Here was the root of the difference between a communalistic and a nationalistic interpretation and the political use of ?*Vande Mataram?* as a song, as a war cry. It is not a communalistic interpretation. It is a nationalistic interpretation and Rishi Bankim's hymn *Dharma* signifies conduct. For a ruling party, for a Prime Minister, it should not just be *Dharma*, it should be *Raj Dharma*.

I cannot help but remind this House of late Prime Minister Atal Bihari Vajpayee, who in March 2002, when asked what a certain Chief Minister ought to do, famously said, राजधर्म का पालन करें। राजधर्म राजा के लिए है, शासक के लिए है। प्रजा-प्रजा में भेद नहीं हो सकता। न धर्म के आधार पर, न जाति के आधार पर, न संप्रदाय के आधार पर।

Hand on heart, tell this House, whether the Government is fulfilling its *Dharma*. No.

Bahute Tumi Ma Shakti, Hridoye Tumi Ma Bhakti. Rishi Bankim said, faith should be in your heart and strength should be in your arms. This Government instead has moved faith into its arms. You have made ?*bahute bhakti?* with your brute force, with your majority and you are bulldozing your way into the national secular fabric and your heart is weak because our enemies are striking again and again. Yet, we are letting a President of a third country proudly proclaim over and over again that he blackmailed India into accepting a ceasefire.

Amlangatulam, ?which is without a stain, without compare?; where has the Government brought us today? Let me compare across some major global indices since 2014. The UN's Report says inequality reduces India's Human Development Index by 31 per cent, one of the highest losses in the region. In the World Press Freedom Index, India fell from 140 in 2014 to 151 today. On the World Economic Forum's Global Gender Gap Index, India went from 114 in 2014 to 131 today. Most important, on the Global Hunger Index, which measures child malnutrition, India used to rank 55 out of 76 in 2014. Today, it ranks 102 out of 123. So, we are certainly not without stain. Let me for once and for all debunk the Ruling Party's false claim that a truncated song is always an insult.

?Jana Gana Mana? was originally written as a Brahmo hymn in 1911 and first consisted of five stanzas. It was called *Bharoto Bhagyo Bidhata*. Remember that the Brahmo Samaj was formed by Raja Ram Mohan Roy. This is the same Raja Ram Mohan Roy that Madhya Pradesh Higher Education Minister, Inder Singh Parmar called a British agent, a *Dalal*, working for religious conversion. If your party's man is calling Raja Ram Mohan Roy a *Dalal*, I wonder what kind of higher education he can be responsible for. *?Jana Gana Mana?* is also a truncated song. Of the five stanzas, only the first stanza is sung as a national anthem. The second stanza says, ?*Aharaha tobo ahoban priocharito, Shuni tobo udar bani, Hindu Boudho Shikh Jaino Paroshik Musalmano Christani?*. This means something relatively simple. Tagore addresses *Bharoto Bhagyo Bidhata*, the maker of India's destiny and here is a verse whose restoration would meet a strong symbol and a strong gesture against divisiveness. But, you are not bringing a resolution to bring that in. You are talking about what religious context you can view ?*Vande Mataram?* in.

And this is where you have made the biggest mistake, Mr. Prime Minister. You ignited this entire debate as a distraction to take away from your Government's failings, which I have demonstrated using the song's lyrics as a key. But you do not stop there.

One of the chief spokespersons of the BJP, a fellow MP here, went one stop further and said that this truncation was done at Nehru's behest. He said he had learned this by reading a book by the historian Sachiv Bhattacharya. Mr. Chairperson, Sir, there is no such book. There is no historian called Sachiv Bhattacharya who has written a book on the history of *Vande Mataram*. He does not exist. He does not exist, except in the fertile manure that constitutes the MP's imagination.

HON. CHAIRPERSON: Please conclude.

SUSHRI MAHUA MOITRA: There is a historian who has written a book about Vande Mataram and his name is Sabyasachi Bhattacharya, not Sachiv Bhattacharya. The BJP dare not refer to this book because if they do, they would have to admit that this very specific book says that the identity of the man who suggested that *Vande Mataram* be sung in a shortened version, so as not to provoke divisive action, is not Nehru. It is not Bose, it is Kobi Guru Ravindranath Tagore.

HON. CHAIRPERSON: Please conclude.

SUSHRI MAHUA MOITRA: So, let us set the record straight. Bhattacharya is clear. First Subhash Bose, then the members of the Congress Working Committee, convening for the Calcutta session of the Congress in 1937, wrote to Tagore, asking him his views on the song. To his reply, Tagore wrote: ?The core of *Vande Mataram* is a hymn to Goddess Durga. This is plain, so there can be no debate about it. The novel *Anandamath* is a work of literature, and so the song is appropriate to it. But Parliament is a place of union for all religious groups, and there the song cannot be appropriate?. On October 26th, 1937, three days prior to the session, Gurudev wrote again to Nehru on this issue. He, with a special relation to *Vande Mataram*, suggested that the first two stanzas should be adopted, and his letter profoundly influenced the resolution.

HON. CHAIRPERSON: Please conclude.

SUSHRI MAHUA MOITRA: Sir, I want to read just last paragraph. Rishi Bankim was a highly complex mind, and *Anandamath* was not his final word on communal history. His last novel, *Sitaram*, imagines a Hindu realm, founded by a heroic and idealistic king who defeats his Muslim adversaries. However, he comes to embody and exceed all the evil attributed to Muslims, and all his Hindu associates abandoned him.

HON. CHAIRPERSON: Please conclude.

SUSHRI MAHUA MOITRA: So, if you have the guts to get into the issue, target the man who very wisely edited this song. It was neither Nehru nor Bose, it was Rabindranath Tagore. If you have the courage to withstand truth, fight an election in Bengal in 2026 by saying that Tagore was responsible for dividing India. Let us see where that takes you. Tagore is the one who sang ?*Vande Mataram*? publicly. He anchored it to the conscience of our nation. It was Bengal's clarion call. It is no *Jumla* that the BJP can expropriate before an election. You try it and you will see what its consequences are. Ten crore Bengalis will rise, 20 crore arms, to teach you the real meaning of *Vande Mataram*.

Bande Mataram!

***m41श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा (रोहतक) :** महोदय, धन्यवाद।

महोदय, ?वन्दे मातरम्? को केवल साहित्य या राष्ट्रगीत की सीमाओं तक सीमित नहीं किया जा सकता है। ?वन्दे मातरम्? उस महान राष्ट्रीय आन्दोलन का उद्घोष है, जिस आन्दोलन में धर्म, जाति और प्रान्त की सीमाओं को लांघकर जिस गीत ने देश को एक सूत्र में बांधने का काम किया था। भारतीय राष्ट्रवाद, आजादी की लड़ाई और भारतीयता के आध्यात्मिक इतिहास में ?वन्दे मातरम्? का स्थान अद्वितीय है। आज भी जब हम यह गीत गाते हैं तो इस गीत के एक-एक अक्षर में हमें देश की मिट्टी की सुगंध आती है। हमें इस गीत के एक-एक अक्षर में लाखों शहीदों की तस्वीर दिखाई देती है। हमें इस गीत के एक-एक अक्षर में स्वतंत्रता संग्राम की आवाज सुनायी देती है। इस गीत के एक-एक अक्षर में आजाद भारत के पिछले 75 साल की गौरव गाथा की गूँज भी सुनाई देती है और भारतवर्ष के स्वर्णिम भविष्य के सपने भी संजोये जाते हैं। ?वन्दे मातरम्? एक गीत ही नहीं, यह भारत की राष्ट्रीय चेतना जगाने का एक महामंत्र था और इस महामंत्र को देने वाले बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय जी को इसीलिए ऋषि कहा गया है, मैं उनको महा ऋषि भी कहूँगा।

आज वंदे मातरम् देने के 150वीं वर्षगांठ पर मैं सरकार से यह मांग करूंगा कि इसको देने वाले महा ऋषि, जिनको प्रियंका जी ने महाकवि भी कहा, बंकिम बाबू की प्रतिमा लोकतंत्र के इस मंदिर, संसद में स्थापित की जाए। सरकार इस पर प्रस्ताव लाए, हम उसका समर्थन करेंगे। मैं साथ में यह भी कहूंगा कि वंदे मातरम् का भाव समझते हुए सरकार एक प्रस्ताव और एक संकल्प यह भी लाए कि यह गीत जो भारत की एकता का सूत्रधार था, उस गीत को, उस एकता को खंडित करने के स्रोत के रूप में उस गीत का दुरुपयोग न किया जाए, मैं सरकार से यह मांग करता हूं।

वंदे मातरम् का डेढ़ सौ साल का अपना सफर रहा है। सन् 1875 में बंकिम बाबू की कलम से अंकित यह गीत सन् 1896 में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जी द्वारा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कोलकाता अधिवेशन में पहली बार इसका गायन हुआ। इसी के साथ तब से लेकर आज तक सवा सौ साल तक इस गीत का निरंतर गायन कांग्रेस पार्टी के अधिवेशनों में और कार्यक्रमों में चलने की परम्परा शुरू हुई, जो आज तक कायम है।

सन् 1905 में अंग्रेज लॉर्ड कर्जन ने सांप्रदायिक आधार पर बंगाल के दो टुकड़े करने का प्रस्ताव दिया, तो बंगाल में हर धर्म, हर मजहब, हर जाति के लोग एक साथ वंदे मातरम् के इस गीत के गान के साथ खड़े हुए और बंग-भंग के विरोध में आंदोलन हुआ, इस आंदोलन की अगुवाई भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, लाल, बाल, पाल जैसे महान कांग्रेस के नेताओं ने की। उसके बाद सन् 1907 में देश के दूसरे कोने अविभाजित पंजाब, जिसका आकार हिन्दुकश पर्वत से लेकर यमुना के तट तक था, जब अंग्रेजों की गाज पंजाब के किसानों के अधिकारों पर पड़ी, तो पंजाब में 'पगड़ी संभाल जट्टा' आंदोलन हुआ। इस 'पगड़ी संभाल जट्टा' आंदोलन में पंजाब के एक-एक गांव में वंदे मातरम् की गूंज फिर सुनाई दी। अंग्रेजों ने आंदोलनकारियों पर बहुत यातनाएं ढहायी और उस आंदोलन में शहीद भगत सिंह जी के चाचा सरदार अजीत सिंह जी और मेरे स्वयं के परदादा चौधरी मातूराम हुड्डा जी को अंग्रेजों ने उस समय काले पानी की सजा सुनाने का कार्य किया। सन् 1907 के बाद सन् 1908 में खुदीराम बोस जैसे क्रांतिकारी नौजवान ने वंदे मातरम् का नारा देते हुए फांसी के फंदे को चूमने का कार्य किया।

उसके बाद देश के दो कोनों में, दो केंद्रों में, लाहौर से लाला लाजपतराय और कोलकाता से श्री अरबिंदो ने वंदे मातरम् नाम से प्रकाशन शुरू किए, जिसने राष्ट्रीय चेतना को जगाने का कार्य किया। सन् 1921 में महात्मा गांधी ने जब असहयोग आंदोलन का बिगुल बजाया तो देश में लाखों कांग्रेसी वंदे मातरम् का नारा देते-देते अंग्रेजों की जेलों में गए। यह धीरे-धीरे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्यक्रमों में गायन करने वाला एक गीत ही नहीं, बल्कि देश की आवाज बन चुका था।

गांधी जी ने इस गीत के बारे में क्या कहा, यह मैं पढ़कर बताना चाहूंगा। गांधीजी ने सन् 1915 में लिखा : "जब मैं छोटा था, तब मुझे आनन्द मठ या उसके अमर लेखक बंकिम के बारे में कुछ नहीं पता था, तब भी वंदे मातरम् ने मुझे प्रभावित किया था और जब मैंने इसको पहली बार सुना तो इसने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया था। मैं इसमें सबसे पवित्र राष्ट्रवाद की भावना को पाता हूं।" इसी प्रकार से जब पंडिज जवाहरलाल नेहरू सन् 1929 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चयनित हुए तो 1929 के कांग्रेस के अधिवेशन में उन्होंने अपने भाषण का समापन वंदे मातरम् के गायन से किया और उन्होंने अधिवेशन की आयोजन समिति को चिट्ठी लिखी कि हर अधिवेशन का प्रारंभ वंदे मातरम् के गीत से किया जाए। सन् 1937 की बहुत बातें हुई, सन् 1937 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जी के प्रस्ताव को हुबहू स्वीकार करते हुए, वंदे मातरम् को राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकार किया, लेकिन उसके बाद क्या हुआ?

उसके बाद जब कांग्रेस की केन्द्रीय कार्य समिति ने यह प्रस्ताव पारित किया तो अंग्रेजों के महापिट्ठू मुस्लिम लीग के मुहम्मद अली जिन्ना ने इसका विरोध किया और कहा कि कांग्रेस केवल हिन्दुओं तक सीमित हो गयी है और मुस्लिम विरोधी हो गयी है। जब मुहम्मद अली जिन्ना ने यह कहा, तो मैं यह बात रिकॉर्ड में लाना चाहूंगा कि मुहम्मद अली जिन्ना का मुँहतोड़ जवाब पंडित जवाहर लाल नेहरू ने दिया। 6 अप्रैल, 1938 को पंडित जवाहर लाल नेहरू ने जिन्ना को एक करारा पत्र लिखा और कहा कि ?मिस्टर जिन्ना, यह याद रखिए कि वन्दे मातरम् गीत भारतीय राष्ट्रवाद के साथ पिछले 30 सालों से अधिक समय से गहराई से जुड़ा हुई है। इसके साथ अनगिनत बलिदान और भावनाएँ जुड़ी हुई हैं। लोकप्रिय गीत न किसी आदेश से पैदा होते हैं और न उन्हें जबरन थोपा जा सकता है। ये जनभावनाओं से उपजते हैं। पिछले 30 सालों से अधिक समय में

ऐसा कभी नहीं माना गया कि वंदे मातरम् गीत में कोई सांप्रदायिक भाव छिपा है और इसे हमेशा से भारत की प्रशंसा में देशभक्ति का गीत माना गया है।?

अंग्रेजों के महापिट्ठू जिन्ना जब वंदे मातरम् का विरोध कर रहे थे और कांग्रेस और पंडित नेहरू उस विरोध का करारा जवाब दे रहे थे तो कुछ ऐसे भी संगठन थे, जो सत्ताधारी दल से जुड़े हुए हैं, जो अपना गीत गा रहे थे। उन्होंने जिन्ना के इस विरोध के बारे में उस समय कुछ भी ऐसा नहीं कहा, जो रिकॉर्ड में हो।

यही नहीं, 14-15 अगस्त, 1947 की मध्यरात्रि में, जब भारत स्वतंत्र हो रहा था, आज़ादी की पहली सांस हिन्दुस्तान लेने जा रहा था, तो पंडित नेहरू ने संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी को एक पत्र लिखा और उस पत्र में उस कार्यक्रम की रूप-रेखा को प्रस्तावित किया, जो आज़ादी का पहला महोत्सव मध्यरात्रि में मनाया जा रहा था। उस पत्र में यह लिखा कि ?मैं आग्रह करता हूं कि उस कार्यक्रम का प्रारम्भ वंदे मातरम् के गायन से हो? और ऐसा ही हुआ।

अन्तत: देश की आज़ादी के बाद वर्ष 1950 में संविधान सभा ने इसको राष्ट्र गीत के रूप में अपनाया और खूबसूरती यह थी कि उस संविधान सभा में सरदार पटेल, मौलाना आज़ाद, डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद, पंडित जवाहर लाल नेहरू, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर, मेरे स्वर्गीय दादा जी चौधरी रणवीर सिंह हुड्डा और श्यामा प्रसाद मुखर्जी भी शामिल थे। सब ने एक मत से, एक स्वर में इसको अपना राष्ट्र गीत माना। 284 सदस्यों में से एक सदस्य ने भी कोई आपत्ति नहीं की, एक ने भी इसके किसी एक अक्षर पर भी कोई संशोधन प्रस्तुत नहीं किया। राष्ट्र गीत के रूप में एकता के भाव से हमने इसे अपनाया। देश की आज़ादी में असंख्य लोगों ने वंदे मातरम् बोलते-बोलते अपने प्राणों की आहूति दी, असंख्य लोगों ने अंग्रेजों की यातनाएं सहीं, जेलों के दर्शन किए।

सभापति महोदय, मुझे भी इस बात पर गर्व है कि मैं एक ऐसे परिवार से हूं, जिसकी दो पीढ़ियों ने आज़ादी के आंदोलन में कुर्बानियां दी। मेरे परदादा जी को अंग्रेजों ने कालापानी की सजा सुनाई, तो मेरे अपने दादा जी आठ सालों तक ब्रितानिया हुकूमत की काली कोठरी और जेलों में रहे, जिनमें उन्हें चार सालों की सजा वंदे मातरम् के गायन के बाद हुई। उन्होंने जब अपनी आत्मकथा लिखी, तो उस आत्मकथा का नाम, चौधरी रणवीर सिंह जी की आत्मकथा का नाम ?सांग ऑफ फ्रीडम वंदे मातरम्? के नाम से था। यह भाव था।

आज वर्तमान संदर्भ में, जब हम वंदे मातरम् का गायन करें तो हमें वंदे मातरम् गीत के अर्थ को भी गहराई से समझने की आवश्यकता है। वंदे मातरम् गीत की आत्मा में भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिक प्रतीक भारत माँ है, मगर प्रश्न उठता है कि बहुत-से देश अपनी जन्मभूमि को पिता कहते हैं, बहुत-से मुल्कों में से कोई इसे बन्धु कहता है, कोई भाई कहता है, कोई बहन कहता है। मगर, भारत माँ ?माँ? ही क्यों है, क्योंकि माँ जननी है, माँ पालनहारी है। भारत की संस्कृति में माँ ही करुणामयी है। माँ ही है, जो चाहती है कि उसकी हर संतान फले-फूले, खुश रहे, हर संतान को वरदान मिले, हर संतान के प्रति करुणा हो, जैसे कि इस गीत के आगे के अक्षरों में कहा गया है। वह माँ ही है, जिसके लिए हर संतान बराबर है। राज नाथ सिंह जी ने कहा कि भारत माँ के लिए ?जन-गण-मन? और ?वंदे मातरम्? बराबर है। मगर वह माँ ही है, जिसके लिए हर संतान बराबर है। संतान-संतान में भेद नहीं हो सकता, चाहे वह संतान किसी भी धर्म के है, चाहे वह किसी जाति के है, किसी

भाषा की है, यह उन्होंने नहीं कहा। वह माँ ही है, जो हमेशा चाहती है कि उनकी संतान आपस में प्यार से रहे, मोहब्बत से रहे। उनका आपस में लड़ाई-झगड़ा न हो। हर संतान के लिए माँ से बढ़ कर कुछ भी नहीं हो सकता। मातृभक्ति का भाव हर संतान के दिल में पवित्र होता है। कोई संतान यह नहीं कह सकता कि मुझे माँ से ज्यादा प्यार है और तुझे माँ से कम प्यार है। इसलिए, दूसरों की देशभक्ति करने पर प्रश्नचिह्न लगाने वाले सच्चे देशभक्त नहीं हो सकते। माँ ही क्यों, क्योंकि हमारी सृष्टि और संस्कारों में माँ से बड़ा कोई नहीं हो सकता। माँ से बड़ा कोई व्यक्ति नहीं हो सकता। माँ से बड़ा कोई संगठन नहीं हो सकता। माँ से बड़ी कोई सरकार नहीं हो सकती। माँ से बड़ी कोई विचारधारा नहीं हो सकती। माँ से बड़ा कुछ नहीं हो सकता और भारत माँ से बड़ा तो कुछ भी नहीं हो सकता, यह हमारे संस्कार है।

कोई सच्चा मातृभक्त अपनी माँ को कभी भी अपनी राजनीति का हथियार नहीं बना सकता। वह मातृभक्ति क्या, जो राजनीति में अपनी माँ को घसीटे! आज मैं देखता हूं, तो मुझे दुख होता है, जब मातृभक्ति की आड़ में वोटभक्ति की लालच दिखाई देती है। आज मैं देखता हूं, तो मुझे दुख होता है, जब राष्ट्रवाद को वोटवाद के लिए प्रयोग करने के प्रयास होते हैं। मातृभक्ति पवित्र होनी चाहिए। अपनी राजनीतिक शक्ति बटोरने के लिए मातृभक्ति का प्रयोग नहीं होना चाहिए। कुछ लोग ?वंदे मातरम्? से ज्यादा ?वंदे वोटरम्? का उच्चारण करते हैं। इसे आज यह देश देख रहा है। विभिन्नताओं और अनेकताओं से भरा यह देश है। अगर इस देश को कोई एकता के भाव में पिरो सकता था तो अपनी माता के लिए जो भाव उत्पन्न हुआ, वह पिरो सकता था। यही कारण था कि आजादी के आंदोलन में देश एक हुआ। अंग्रेजों के फूट डालो और राज करो -डिवाइड एंड रूल, जाति व धर्म के आधार पर देश व समाज को तोड़ो और भारत माँ को गुलामी की जंजीर में जकड़े रहो। अंग्रेजों की उस रणनीति को देश ने एक होकर विफल किया। इसी एकता का भाव बंगाल में बंग-भंग के विरोध में जो आंदोलन हुआ, उसमें दिखा। यही एकता का भाव वर्ष 1950 में दिखा, जब संविधान सभा ने एक स्वर और एक मत से सब ने इसको राष्ट्रगीत के रूप में चुना। वहां यही एकता का भाव दिखा। भारत माँ के प्रति जो भाव था और उसमें कैसे सब लोग एकसूत्र में बंधते चले गए, इसका मैं एक उदाहरण देना चाहता हूं। शाहजहांपुर से दो दोस्त आए - पंडित राम प्रसाद बिस्मिल और क्रांतिकारी अशफाक उल्ला खान। इन दोनों को ब्रिटानिया हुकूमत ने जब फांसी की सजा सुनाई तो अशफाक उल्ला खान क्या लिखते है! फांसी पर लटकने से पहले उनकी कलम क्या लिखती है! उन्होंने जो लिखा, उसे मैं पढ़ना चाहूंगा। अशफाक उल्ला खान ने लिखा - ?जाऊंगा खाली हाथ, मगर यह दर्द साथ ही जाएगा, जाने किस दिन हिन्दुस्तान आजाद वतन कहलाएगा।? बिस्मिल कहते हैं - ?फिर आऊंगा, फिर आऊंगा, फिर आकर भारत माँ तुझको आजाद कराऊंगा।? अशफाक उल्ला खान कहते हैं - ?जी करता है, मैं भी कह दूं, पर मजहब से बंध जाता हूं। मैं मुसलमान हूं, पुनर्जन्म की बात नहीं कर पाता हूं। हाँ, खुदा अगर कहीं मिल गया तो अपनी झोली फैला दूंगा और जन्नत के बदले, उससे यहीं पुनर्जन्म मांगूंगा।? एक मुस्लिम युवक के हृदय में देशभक्ति क्या हिलोरे मार रही थी। वह कह रहे हैं कि अगर खुदा मिल गया, पुनर्जन्म की इजाजत नहीं है, लेकिन मैं उससे जा कर मांगूंगा और भारत माँ की गोदी में पुनर्जन्म लेने की बात खुदा से कहूंगा।

लेकिन फिर भी कुछ लोग नारों में विवाद खोजते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि ये नारा इससे अच्छा है, वो नारा इससे अच्छा है। कुछ लोग कहते हैं कि मैं ये नारा बोलूंगा, कुछ लोग कहते हैं कि मैं ये नारा बुलवाऊंगा। नारों में तुलना नहीं हो सकती है। देशभक्ति की भावना पवित्र है या नहीं, इस नारे के पीछे इस बात की चर्चा तो हो सकती है, लेकिन नारे में तुलना

और नारों में विवाद से देश का भला नहीं हो सकता है। बहुत से नारे आए। ?भारत माता की जय? यह नारा गूँजा। महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, कांग्रेस पार्टी और आजादी के आंदोलन की सभाओं में ?भारत माता की जय? का नारा गूँजा। बंकिम चन्द्र चटर्जी की कलम से वंदे मातरम् आया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, आजाद हिन्द फौज हम कैसे भूल जाएं, जिनसे जय हिन्द का नारा आया। हम शहीद-ए-आज़म भगत सिंह को कैसे भूल जाएं, जिन्होंने ?इंकलाब जिन्दाबाद? और ?हिन्दुस्तान जिन्दाबाद? का नारा दिया। हम कैसे भूल जाएं अजीमुल्लाह खान को जिन्होंने मादर-ए-वतन हिन्दुस्तान जिन्दाबाद का नारा दिया।

राष्ट्रभक्ति के मार्ग के नारे, भारतमाता की वंदना के नारे और इन वंदना के नारों में विवाद, ये देशहित में नहीं है। देश की आजादी की हमने एक पिक्चर आनन्द मठ देखी है, जहाँ लता मंगेशकर जी ने वंदे मातरम् का गीत गाया और हमने देश की आजादी की 50वीं सालगिरह पर ए. आर. रहमान द्वारा वंदे मातरम्, माँ तुझे सलाम, अब माँ तुझे सलाम का गीत भी हमने सुना। कुछ लोग हैं, जो इन गीतों के पीछे के शब्दों को पकड़ते हैं, लेकिन असली राष्ट्रभक्त वे हैं, जो इनके पीछे सच्ची राष्ट्रभक्ति है या नहीं है, उस बात को समझने का प्रयत्न करते हैं। अपने दिल में जो राष्ट्रभक्ति का भाव है, उसमें पवित्रता लाने का तप करना, यही मैं समझता हूँ कि आज सार्थक बात होगी।

देश की आजादी के आंदोलन में जब स्वतंत्रता सेनानी वंदे मातरम् का नारा देते थे, वे पवित्र भाव के साथ देते थे, क्योंकि उस समय वंदे मातरम् बोलने पर जेल की चोट मिलती थी, चुनाव की वोट नहीं मिलती थी। आज उस भाव को याद करने की जरूरत है।

आजाद हिन्दुस्तान के 75 वर्ष पर भी मैं कुछ कहना चाहूँगा। आज हम वंदे मातरम् का उद्घोष कर रहे हैं, तो पिछले 75 वर्ष की गौरवगाथा को भी हम याद कर रहे हैं। वंदे मातरम्, क्योंकि पिछले 75 वर्षों में हम भारतमाता की संतानों ने विंस्टन चर्चिल जैसे उन लोगों को गलत साबित किया, जो कहते थे कि हिन्दुस्तान में इतनी अनेकताएँ हैं कि टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा, देश एक नहीं रहेगा, लेकिन पंडित जवाहर लाल नेहरू, बाबा साहब अंबेडकर और सरदार पटेल ने देश की जो नींव रखी थी, उस नींव पर 75 साल में देश एक भी रहा है। देश ने अपितु सिक्किम जैसे प्रदेश को एकतरफ अपने तरफ मिलाया, तो गोवा से पुर्तगालियों को भगाने का काम किया, इसीलिए वंदे मातरम्।

वंदे मातरम् इसीलिए कि वंदे मातरम् का विरोध करने वाले मोहम्मद अली जिन्ना के पाकिस्तान के दो टुकड़े करके हिन्दुस्तान ने दुनिया के भूगोल को बदलने का काम किया इसीलिए वंदे मातरम्। वंदे मातरम् इसीलिए कि आज तक के इतिहास में आज विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र अगर कहीं है, तो वह भारतवर्ष है इसीलिए वंदे मातरम्। देश-दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वंदे मातरम्। देश की आजादी के समय 30 करोड़ देशवासियों को बाहर से अनाज आयात करके पेट भरना पड़ता था। उस देश के किसानों ने आज देश के 140 करोड़ देशवासियों का पेट भी भरने का काम किया और हमारे गोदामों को भरने का काम किया इसीलिए वंदे मातरम्। वंदे मातरम् इसीलिए कि जो देश की फौज, जय हिन्द, जो दुनिया की सर्वश्रेष्ठ सेना है, उस सेना ने कभी भारतमाता का शीश झुकने नहीं दिया इसीलिए वंदे मातरम्। वंदे मातरम्, हम सबसे प्राचीन सभ्यता हैं, मगर सबसे युवा देश हैं। ओल्डर सिविलाइजेशन मगर यंगेस्ट नेशन इसीलिए वंदे मातरम्। वंदे

मातरम् इसीलिए क्योंकि नेहरु जी के कार्यकाल में बने आईआईटीज़, आईआईएम्स, एम्स से निकले डॉक्टर्स और इंजीनियर्स, जब दुनिया के कोने-कोने में गए तो पूरी दुनिया ने माना कि अगर सबसे सर्वश्रेष्ठ डॉक्टर्स, इंजीनियर्स कहीं से आए हैं, प्रोफेशनल्स आए हैं, तो वो हिन्दुस्तान के माने गए इसीलिए वंदे मातरम्। वंदे मातरम् इसीलिए कि जो इसरो बनाई गई, उस इसरो के माध्यम से अमरीका के मुकाबले 20 प्रतिशत बजट में हमारा मंगलयान मार्श पहुँच गया इसीलिए वंदे मातरम्।

वंदे मातरम् इसीलिए कि देश के सामने पिछले 75 वर्षों में जो आंतरिक चुनौतियां आईं, वे अलगाववादी ताकतें, आतंकवादी ताकतें, उन्होंने जब सर उठाया, तो हमने कुर्बानी देनी थी। लाखों लोगों ने कुर्बानी दीं। हमारी पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने भी अपनी जान की कुर्बानी दी, राजीव गांधी जी ने भी अपनी जान की कुर्बानी दी। लेकिन इन आतंकवादी, अलगाववादी विचारधाराओं को पनपने नहीं दिया और देश को एकजुट रखा। आज भी भारत माता एक है, इसीलिए वंदे मातरम्। वंदे मातरम् इसीलिए कि कोई चाहे न चाहे इस देश को आगे ले जाने में सभी का योगदान था, सभी का योगदान है और सभी का योगदान रहेगा। भारत माता सबकी थी, भारत माता सबकी है, भारत माता सबकी रहेगी। इसीलिए वंदे मातरम्, वंदे मातरम्, वंदे मातरम्।

HON. CHAIRPERSON: Hon. Minister, Shri Gajendra Singh Shekhawat.

***m42श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत :** माननीय सभापति महोदय, आपके अनुरोध पर सम्माननीय सदस्यों की स्वीकृति से सदन का समय बढ़ाया गया है। सभी सम्मानित सदस्यों की सदन में उपस्थिति चर्चा को समृद्ध कर रही है। क्योंकि देर तक संसद का सत्र चलने की संभावना है, इसलिए माननीय संसद सदस्यों के लिए रात्रि भोज की व्यवस्था एमपी डाइनिंग, प्रथम तल, संसद भवन में की गयी है। माननीय सदस्य कृपया यथा-सुविधा जा कर भोजन का आनंद ले सकते हैं।

HON. CHAIRPERSON: Hon. Member, Shri Biplab Deb.

***m43श्री बिप्लब कुमार देब (त्रिपुरा पश्चिम) :** माननीय सभापति महोदय, मुझे एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय के ऊपर आपने बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। वंदे मातरम् एक स्पंदन है, वंदे मातरम् हमारे सांस में बसे हुए शब्द हैं। वर्ष 1757 से लेकर वर्ष 1947 तक दो सौ वर्षों का जो अंग्रेजों का शासन है, उसमें बड़ी मात्रा में हमारे सेनानियों का त्याग, तपस्या, बलिदान, संघर्ष और स्वतंत्रता संग्राम का जो इतिहास है, वह दो सौ वर्षों का है। आप इसे लिखेंगे तो बहुत लम्बे समय तक इसे पढ़ना भी पड़ेगा और लिखना भी पड़ेगा। इसकी सीमाएं असीम हैं, किन्तु जो शब्द मैंने बोले हैं, यह दो सौ वर्षों तक हमारे संघर्ष और बलिदान का इतिहास है। इनको एक लाइन में जो जोड़ सकता है, वह लाइन है- वंदे मातरम्। दो सौ वर्षों तक की कहानी पूरी दुनिया को बताने की जरूरत नहीं है। हम वंदे मातरम् का उच्चारण करते हैं, तो अपने आप वह समाहित हो जाता है। अंग्रेजों ने वंदे मातरम् बोलने वाले हजारों-लाखों शहीदों को फंसी के मंच पर झुलाया है। वही शब्द था, वही वाक्य थे- वंदे मातरम्।

मैं माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का धन्यवाद देना चाहता हूं। वंदे मातरम् के 150 वर्ष जब हमने पूरे किए, तब आपने पूरे देश भर में अलग-अलग सरकारी तौर पर और गैर-सरकारी तौर पर बहुत सारे आयोजन किए, डाक टिकट रिलीज किए। पूरे वर्ष के कार्यक्रम की रचना की, लेकिन इसकी जरूरत क्यों है? आज की नयी जनरेशन जब तक इसको नहीं मनाएगी, तब तक स्वाधीनता संग्राम में जिन ऋषि-मुनियों और स्वतंत्रता सेनानियों ने बलिदान दिया है, उनके बारे में वह कैसे जान पाएंगे? एआई का जरूरत है, किंतु सरदार वल्लभ भाई पटेल को जानें, इसकी भी जरूरत है। नेता जी सुभाष चंद्र बोस को जानें, इसकी भी जरूरत है। श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी को जानें, इसकी भी जरूरत है। स्वामी विवेकानंद को जानें, इसकी जरूरत है। जब लोग देश को प्यार करते हैं, देश को मानते हैं, तभी देश आगे बढ़ता है। वह देश आगे जाकर सशक्त और शक्तिशाली बनता है। इसलिए हम इतिहास का स्मरण करते हैं।

सभापति महोदय, आज लोकतंत्र के मंदिर से मैं बंकिमचन्द्र चटर्जी को प्रणाम करना चाहता हूं। जो ऋषि हैं, मुनि हैं और साथ ही साथ जिन्होंने स्वंतत्रता संग्राम में बलिदान दिया है, मैं उन सभी को प्रणाम करता हूं। मेरा सौभाग्य है कि आपने मुझे इस पर बोलने का अवसर दिया। प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी चाहते हैं कि देश के लोग इस बात को जानें। श्री बंकिचन्द्र चटर्जी का वंदे मातरम् केवल कुछ पंक्तियां नहीं हैं, यह एक आत्मा है और इसकी सुंदरता को किसने पहली बार गाकर बढ़ाया था? कविवर श्री रविंद्रनाथ ठाकुर ने पहली बार इसको गाया था।

वंदे मातरम् के बैकग्राउंड के बारे में संसद में सुबह से चर्चा हो रही है। सभी लोगों ने इस चर्चा में भाग लिया है। मैं यह कहना चाहता हूं कि वंदे मातरम् की चर्चा में भाग लेते हुए प्रियंका जी यहां बोल रही थीं कि कांग्रेस देश के लिए है और बीजेपी चुनाव के लिए है। लेकिन संसद में सत्य बोलना पड़ेगा कि कांग्रेस परिवार के लिए है और बीजेपी देश के लिए है। मैं दीपेन्द्र हुड्डा जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि गौरव गोगोई जी के सामने उन्होंने हिम्मत करके डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का नाम तो लिया। नहीं तो डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का नाम लेना भी उनको खटकता है। आज इस संसद ने दिखा कि कांग्रेस के एक सांसद ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का नाम लिया।

अकेले वंदे मातरम् की रचना बंगाल से हुई, ऐसा नहीं है। बंगाल से ऐसे बहुत सारे ऋषि-मुनि हुए हैं, जिन्होंने भारत की वंदना की है। मैं कुछ पंक्तियां बंगाली में पढ़ना चाहता हूं- Spoke in Bengali

स्वामी विवेकानंद जी ने भी भारत की हर संतान को बोला है कि तुम जन्म से ही भारत के लिए बलि प्रदत्त हो। बंगाल के जो महाहपुरुष हैं, मैं उनका नाम गर्व से लेना चाहता हूं, क्योंकि 'वंदे मातरम्' के साथ अगर इन महापुरुषों का नाम न लिया जाए तो इसकी पूर्णता नहीं होगी। स्वामी विवेकानंद, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय, शरत चट्टोपाध्याय, महर्षि अरविंदो घोष, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, गुरुदेव श्री रविंद्र नाथ ठाकुर, कालीप्रसन्न सिंह, राजा राम मोहन राय, काज़ी नजरूल इस्लाम, डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी, देशबंधु चित्तरंजन, ऐसे बहुत सारे मुनि-ऋषि हैं। इस धरती पर बंगाल के क्रांतिकारियों में नेताजी सुभाषचंद्र बोस, अमर शहीद खुदीराम बोस, बाघा जतिन, सचींद्रनाथ सान्याल, रासबिहारी बोस, मास्टर सूर्य सेन, प्रफुल्ल चाकी, वीणा दास, कल्पना दत्त, प्रीतिलता वादार, अनंत सिंह, कंवला सिंह, बिनॉय बादल, जैसे महान ऋषि लोगों ने बंगाल में जन्म लिया है। अनुशीलन समिति, युगान्तर जैसी पहली क्रांतिकारी संस्था बंगाल में ही बनी थी। उसी के कारण बंगाल के स्वाधीनता

संग्रामी और बंगाल की भूमि, 'वंदे मातरम्' की तपस्या और उसका तेज अंग्रेजों के लिए मुश्किलात लाए थे। इसीलिए, अंग्रेजों ने डरते हुए वर्ष 1911 में बंगाल से परिवर्तित करके दिल्ली को राजधानी बनाया था।

सभापति महोदय, जब त्रिपुरा में भारतीय जनता पार्टी की पहली बार सरकार बनी तो मुख्यमंत्री के नाते मुझे काम करने का मौका मिला था। वहां लंबे समय तक कम्युनिस्ट रहे। आपको जानकर हैरानी होगी कि त्रिपुरा की असेम्बली में न 'वंदे मातरम्' होती थी, न 'जन-गण-मन' होती थी। नेशनल फ्लैग तो दूर की बात थी। मैंने वहां जाकर परम्परा शुरू की कि असेम्बली की शुरूआत 'जन-गण-मन' से शुरू होगी और 'वंदे मातरम्' से समाप्त होगी। यह कम्युनिस्ट का चेहरा है। वहां उन्होंने 35 साल तक राज किया। वहां 'वंदे मातरम्' और 'जन-गण-मन' नहीं होता था। त्रिपुरा में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद यह शुरू हो गया है।

सभापति महोदय, भारतीय शास्त्र की दृष्टि से 'वंदे मातरम्' का अर्थ पृथ्वी माता है। अब हमें तो बोलना पड़ेगा, क्योंकि यहां महुआ मोइत्रा जी और प्रियंका गांधी जी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का नाम लिया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना वर्ष 1925 में हुई थी। हम उसमें भारत माता का जयगान करते हैं और 'नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे' बोलते हैं। जैसे ही 'नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे' बोलते हैं और भारत का पूजन करते हैं तो हम साम्प्रदायिक हो जाते हैं। भारत माता का पूजन क्यों करते हैं, 'नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे' क्यों बोलते हैं, मैं सदन में एक बात रखना चाहता हूं कि वर्ष 1875 में 'वंदे मातरम्' को बंकिम चंद्र चटर्जी जी ने लिखा था, उस समय संघ का जन्म नहीं हुआ था, लेकिन उसके पहले से भारत माता के पूजन की बात इस देश में होती थी। यह पुरातन काल से होती आ रही है। अभी महुआ जी ने बोला कि जो शहीद हुए थे, वे 68 पर्सेंट बंगाल से हैं। मैं मानता हूं कि 68 पर्सेंट बंगाल से हैं, लेकिन आज बंगाल की हालत क्या है? क्या 68 पर्सेंट भागीदारी हर क्षेत्र में बंगाल की है। आप लोग सत्ता में बैठे हैं, इससे पहले 34 साल तक कम्युनिस्ट रहे। शिवदास बंदोपाध्याय जी ने एक गीत लिखा था, वह भी भारत माता को माता के रूप में वंदना करके, महिला रूप में वंदना करके ही लिखा था। वह भी बंगाल से ही हैं। उसकी कुछ पंक्तियां मैं बंगाली में बोलूंगा -

Bharat Amar Bharat Barsha /Swadesh Amar Swapno Go /Tomate Amra Loviya Jonmo Dhonno Hoyechi Dhonno Go/Kiritdharini Tusarsringge/ Sobuj Sajano Tomar Desh/ Tomar Upoma Tumi E To Maa /Tomar Upoma Tumi E To Maa/ Tomar Ruper Nahi To Sesh

Which means ?India, O' my people of India/ self-governance is my dream dear/Having taken birth in your lap, blessed I have been, blessed/ Wears crown of row of snow, graced by green is your nation./Your simile is only you, O' mother, your beauty has no horizon./If dense clouds descend all of sudden in vast skies of yours. /Holding hands in hands, we all together shall dawn a new aurore.?

द्विजेन्द्रलाल राय बंगाल के ही कवि हैं, उन्होंने भी भारत माता को माता रूप में ही कल्पना करके जो गीत गाया था, उसकी दो पंक्तियां मैं पढ़ना चाहूंगा।

"O shey Sokol Desher Rani, shey je amar jonmobhumi" which means

O? she is the queen of all lands,

She is my motherland

आज जो प्रश्न उठा था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जो राष्ट्र वंदना की थी और भारत माता का पूजन किया था, इससे पहले इसकी शुरुआत हो चुकी थी। मैं साथ ही साथ यह कहना चाहता हूं कि आज उस बंगाल की हालत क्या है, जिस बंगाल के बारे में महुआ जी बोल रही थीं। 68 पर्सेंट बंगाल से जन्मे स्वाधीनता संग्राम सेनानियों ने बलिदान दिया। मैं मानता हूं और जानता भी हूं, किंतु यह बलिदान देने के बाद भी जिस बंगाल की जीडीपी वर्ष 1953 में 25 पर्सेंट से 27 पर्सेंट होती थी, जो बंगाल, देश को मजबूत करता था आज उसकी जीडीपी सिंगल डिजिट में क्यों चली गई? वहां पर लगातार 34 साल कम्युनिस्ट की सरकार रही है, तो स्टालिन, लेनिन, माओवादी यह सब चलता है। मैं मानता हूं। वर्ष 2011 में बंगाल में तृणमूल की सरकार आई। बंगाल किस चीज के लिए जाना जाता था? बंगाल नम्बर - 1 पर क्यों था? आज जो बंगाल सोचता है, उसे कल पूरा भारत सोचता है, यह क्यों बोला जाता था?

HON. CHAIRPERSON : Please conclude now.

श्री बिप्लब कुमार देब : आज बंगाल की इंडस्ट्री कहां गई? आज बंगाल की मुख्य मंत्री बोलती हैं कि बंगाल में महिला की पूजा की जाती है, कुमारी पूजा होती है। इतने कवियों ने कविताएं लिखी हैं और बंगाल की मुख्य मंत्री बोलती हैं कि 7 बजे के बाद महिलाएं घरों से न निकलें। मैं आज पूछना चाहता हूं कि देश का पहला स्टील प्लांट कहां लगाया गया था? वह बंगाल में लगाया गया था। देश का पहला मोटर कारखाना कहां था- वह बंगाल में था। गंगा आकर दो भाग में बह गई, हुगली और पद्मा कहां हैं- बंगाल में हैं। मेरा कहना है कि तृणमूल के सांसद, हमारे मित्र बंगाल के बारे में कह रहे थे, आपके पास बंगाल शासन करने का दायित्व है, तो आपने बंकिम चंद्र के घर की क्या हालत की है? अभी 21 नवम्बर को इंडियन एक्सप्रेस में लेख आया था कि जो बंकिम चंद्र का घर है, उस घर की हालत बहुत खराब है। मैं माननीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि सरदार बल्लभ भाई पटेल का गुजरात में जन्म हुआ और उन्होंने दुनिया का सबसे बड़ा स्टेचू गुजरात में सरदार बल्लभ भाई पटेल का बनाया है, किंतु बंगाल में बंकिम चंद्र का स्टेचू क्यों नहीं बना, बंगाल में रविन्द्रनाथ टैगोर का सबसे ऊंचा स्टेचू क्यों नहीं बना? नेताजी सुभाष चंद्र बोस का क्यों नहीं बना?

कम्युनिस्ट ने स्टैच्यू नहीं बनाया, मैंने मान लिया, किंतु तृणमूल कांग्रेस ने क्यों नहीं बनाया, ममता बनर्जी ने क्यों नहीं बनाया? ? (व्यवधान) बंगाल के इतने ऋषि, मुनियों ने बलिदान दिया, तो भी वहां पर किसी एक का स्टैच्यू दिखाई नहीं पड़ता है।? (व्यवधान) मैं प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी से अपील करता हूं, बंगाल का समय हो चुका है। ? (व्यवधान) आप आइए, बंगाल को आगे लेकर जाइए। ? (व्यवधान) भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसी बंकिम चन्द्र चटर्जी की मूर्ति बंगाल में जरूर बनाइएगा।? (व्यवधान) मैं इतना कहकर अपने विषय को समाप्त करता हूं।? (व्यवधान)

***m44SHRI S. VENKATESAN (MADURAI):** Hon. Chairperson Sir, Vanakkam. Vande Mataram song of Bankim Chandra Chatterjee has been discussed in detail in this country for more than a century. Gurudev Rabindranath Tagore who composed the tune for this song for the first time also wrote about this song in his novel *Ghare Baire* (The Home and the World) written after twenty years after that incident.

The Constituent Assembly even discussed in detail and decided to accept only two stanzas of this song leaving aside four other stanzas. Now this ruling party has desired to have a discussion on the 150th anniversary of this song. As mentioned by Hon Prime Minister, Vande Mataram remained as the soul of the freedom struggle. This is true. Not only this slogan, even Jai Hind is another slogan which is equally important like Vande Mataram. Inkulab Jindabad slogan is also equally important. Lakhs of people came together with each of these slogans and sloganeering. Those who were hanged to death; who showed their chest for bullets; who were killed by firing of cannons; who were kicked by the horse hooves; who were attending public meeting at Jallianwala Bagh; who looted the Chittagong arms depot; who went on Dandi march for salt making; and who operated ships in Tuticorin- thus lakhs of people came together for a noble cause at every slogan. But on which slogan you came together? You were behind those people against whom these slogan were raised.

Even though if you happen to participate in the freedom struggle, you wrote apology letter for participating by mistake in that struggle and due to which you were released. Those who raised these slogan were the one who wrote those slogans and who participated in the freedom struggle. You were all the time on the opposite side. But now you are insisting to have a discussion. This clearly shows that there lies your politics in action. And I am duty-bound to say this openly to the citizens of this country about your double-standards. This nation has a pluralism. Eswara, Allah Tere Naam is the slogan of ours.

This slogan even was used more often than Vande Mataram. Have you ever said Eswara, Allah Tere Naam? But on the other side, what are you doing now? The States where BJP is in power are sending circulars to sing all the six stanzas of Vande Mataram. Maharashtra State has even sent such a circular. We want to ask this question that who gave you the freedom to decide what the lips of others should utter? Injuries should be treated and cured. But you are adding salt to the injuries.

You have kept 12 statues inside this new building of Parliament. Do you know whose statues are kept? Shiva, Vishnu, Brahma, Durga, Midhuna, Manjsree, Yogini, Lingeswar are the statues which are placed in the new building of Parliament. Why have you not kept any statue of Christianity or any physical identity as per Holy Quran? You do not want the pluralistic identity of this nation to be reflected in this House or Building. Whereas you are preaching about patriotism. Friends, where does this pluralism come from? This is our history. This history even stretches beyond this place and up to Tirupparankunram. Every person is looking at the lamp which was lit at the top of Uchi Pillayar temple. But only Dargah is visible to your eyes. People want devotion. But you want enmity. Everybody wants spirituality. But you want riots.

While talking about the poem and novel of Shri Bankim Chandra Chatterjee, I am reminded of a story told by a famous poet of Tamil Nadu Kaviyarasu Kannadasan. I want to share that story with you. Wall between Heaven and Hell got collapsed. Both sides were quarrelling on who will be given the task of building that wall. Lastly, people on the heaven side said that they would file a case for a decision in this matter. Then the people on the side of Hell said that they were sure to win as the person who is expected to give the judgement belongs to their side. This story suits the present day Tamil Nadu very much. Lamps can be lit by the holy people as per the stone pillar inscriptions found at the temple and this has been the practice followed for last several hundreds of years. But a stubborn holy person is in denial mode for lighting the lamp. We will say this in this House that Justice will not go in vain.

This is the important message for this august House. I do not know from where you got the original source to authenticate the 150 years of this national song. First two stanzas were written. Then four stanzas were written in the novel titled Ananda Math. There is no clear mention about the year in which it was written. But you have a need. The need is relating to the forthcoming elections in West Bengal. You always this of elections every time.

The nation needs something else. But your requirement is winning elections. Four labour codes have affected Crores of labour force of our country. But you are not ready to discuss about that in this august House. Aviation sector has come to a standstill. But you are not ready to discuss about that. Delhi is very much affected by air pollution. You would not speak about that issue.

Hon Prime Minister reminded about Mahakavi Bharathi. In the year 1908, Mahakavi Bharathi translated Vande Mataram song in Tamil. Since Prime Minister reminded about Mahakavi Bharathi, I want to say this. These are the wonderful lines of the great poet Mahakavi Bharathi. ?Those who cannot make efforts to stop famine killing our mother; will simply say Vande Mataram as lip service.? This are the lines said by Mahakavi for you. Thank you for this opportunity.

***m45SHRI MAGUNTA SREENIVASULU REDDY (ONGOLE):** Thank you very much, hon. Chairperson, Sir for giving an opportunity for me to speak on 150^{th} anniversary of the National Song: Vande Mataram.

Sir, I rise today on behalf of my party and my leader Sri Nara Chandrababu Naidu Garu with great humility and pride to speak on a subject that lies at the heart of our national identity, our freedom struggle, and our national song: Vande Mataram.

Sir, this hymn is not merely poetry. It was a call to awaken a sleeping nation to take back control. It was a call towards a religion of patriotism. It placed a motherland, our Bharat Mata, at the centre of devotion, sacrifice and duty.

Sir, from Bengal to Bombay, from Amritsar to Andhra Pradesh, this song became the marching rhythm of our freedom struggle.

Sir, if you know, the popular music director, who has composed music for this song also, like A. R. Rahman ji and Hariharan ji, if you hear the song, you will get Goosebumps.This song provokes everybody to feel happy. Sir, the song Vande Mataram has also gone totally into the minds of the children. It has great impact on their minds.

Sir, now, I would like to talk about the role of Andhra Pradesh in the freedom movement. The spirit of Vande Mataram stirred the youth of Andhra Pradesh as well. In 1938, students at Osmania University in Hyderabad challenged the Nizam?s ban on singing Vande Mataram.

Sir, at that time, the brave 350 students were expelled and also, our former Prime Minister P.V. Narsimha Rao was there. National leaders praised their bravery and condemned the repression of their voice by the Nizam. Being brave in the face of wrong has never been difficult for my people and perhaps one name shines in this regard, a name that fills every heart in Andhra Pradesh with pride, Maanyam Veerudu Alluri Sitaram Raju.

His story is not merely a history, it is an epic of courage, sacrifice and love for his people.

Alluri Sitarama Raju was a courageous leader, who shook the British Empire. When British soldiers surrounded him and shot at him, he shouted 'Vande Mataram'.)

Sir, he was the greatest man. When he was surrendered by the British Army, when they were shooting him also, he has shouted ?Vande Mataram.?

<u>19.00 hrs</u> (Kumari Selja *in the Chair*)

Madam Chairperson, Alluri Sitaram Raju was born in 19th century. By the age of 18, he became a *sanyasi* and died at the age of 27. He always worked for the development of all tribal communities. His life was short but his impact was eternal. He showed that resistance was not merely an act. For the people of Andhra Pradesh, Alluri is not a chapter in a textbook. He is like a legacy, a living memory, a source of pride that echoes in every hill, every river, every household. His death at the tender age of 27 brought an early end to a brilliant man. Mahatama Gandhi honoured his bravery. Pandit Jawaharlal Nehru called him a hero and Netaji Subhash Chandra Bose praised his determination and supreme sacrifice.

Madam Chairperson, mentioning the freedom movement in Andhra Pradesh, I would like to state that from Andhra Kesari Tanguturi Prakasam to Narsimha Reddy to Acharya NG Ranga, we are culminating the glory of Alluri Sitaram Raju. This shows that it is our responsibility to ensure that the courage of our freedom fighters is never forgotten. Their stories must forever live in the minds and hearts of our youth. With these words, I bow my head to the heroes of our land and to *Bharat Mata*. I love my India. *Jai* Bharat, *Jai* Andhra and Vande Mataram.

***m46SHRI MADDILA GURUMOORTHY (TIRUPATI):** Thank you, hon. Chairperson Madam, for giving me the opportunity to speak on *Vande Mataram*. Hon. Chairperson, Madam, *Vande Mataram* was written by Bankim Chandra Chatterjee about 150 years ago. It is much more than a song. It is a salute to our motherland. *Vande Mataram* inspires ordinary Indians to become fearless freedom fighters and reminds them that the nation?s honour and the people?s welfare are sacred.

Hon. Chairperson, Madam, that spirit demands that every Government and every institute protects the dignity, health and future of its citizens, especially of the poorest and the most vulnerable sections. Recent leaders like Shri YS Jagan Mohan Reddy, with their focus on welfare,

social justice and transparent delivery of schemes to mothers, farmers, students, and the poor, represent a modern continuation of that spirit of service to *Bharat Mata*. Yet in recent times, considering my State of Andhra Pradesh, there have been painful lapses that go against this ideal. ?(*Interruptions*)The growing push towards the privatisation of medical education is making access to medical colleges and healthcare careers a privilege for a few instead of a service to many people. Farmers are struggling without assured Minimum Support Price and are being pushed into distress, despite feeding the nation? (*Interruptions*). Last-mile delivery failures, where welfare schemes are announced with great fanfare, do not effectively reach beneficiaries on the ground. There is shocking negligence where school children have been hospitalised after consuming substandard food in hostels and mid-day meals? (*Interruptions*). There have been deeply disturbing incidents of sexual assault in campuses.

Madam, these are not just administrative failures, but they are moral betrayals that wound the soul of the Republic and defeat the very purpose of the great history and spirit of Vande Mataram.

Hon. Chairperson, Madam, true patriotism today means not only celebrating our National Song and our glorious past, but also having the courage to confront these injustices; to demand accountability; and to work tirelessly so that every policy, every budget, and every decision reflects genuine respect for Bharat Mata and her children.

Vande Mataram. Jai Hind.

***m47DR. ANGOMCHA BIMOL AKOIJAM (INNER MANIPUR):** Thank you, Madam Chairperson for giving me this opportunity to share some of my thoughts on today?s debate. One of the first things that came to my mind when I heard about this 10 hour dedicated discussion on Vande Mataram is what is the purpose of this discussion. Why are we discussing this topic? There are real issues that we face. In our time as Legislators here, we have important issues to discuss, which are, huge unemployment issue in this country; issue of the quality of air in Delhi; the civil aviation crisis; and not to mention about the tragedy of Manipur. We have been demanding that we should, at least, have around about three to five hours discussion on Manipur, but nobody cares about it. And you think that this is *Desh Bhakti*.

To deny a legitimate discussion on the present real issues such as, unemployment issue in this country, or the pollution issue, or the Manipur crisis, the fact is that you still have 65,000 people

homeless in Manipur due to this crisis, which was caused by the failure of the Government to impose a Constitutional order in that State. We do not discuss that and you want to discuss and sing Vande Mataram, and by doing that, you think that that will infuse patriotic feelings in the people. That is the first thought that struck me.

The second part is this. After all, the discussion can have a meaning in itself because this Song had played a very crucial role in our freedom struggle against the Britishers. So, we need to reflect on and give homage to the writer of this Song as well as thousands and thousands of patriots who had sacrificed their lives singing this Song as they fought against the Britishers.

Many of the things that I wanted to say have already been enunciated by my fellow Members here. So, I will not go into it but I will just pick up one of the reasons why such commemorative discussions entail, which is, to reflect on what is that Song all about and what is its relevance for us today. First of all, I realize that the BJP Government wants to discuss this because Bengal elections are coming up. There is another reason which is very crucial for us to understand as to why this discussion has been brought to the House. It is the kind of an imagination of India that they have and their nationalist project which is rooted in religious and cultural models, particularly, in the world, what we have seen of the German variety, which speaks the common language and which shares a cultural trait constituting a nation. It is something that they wanted to pursue. There is an ideological project and that was clearly seen in the speeches given by the Members of the Treasury Benches including the Prime Minister and our Defence Minister.

But the fact must be recorded that when this Song was written, as it has been noted here, it was not *Bharat Mata* but it was *Bang Mata*. And in the iconography which was drawn by Rabindranath Tagore in 1905, in the light of the partition of Bengal, that picture of the *Bang Mata* -- including the lyrics, as some of the Members have already pointed out -- tells you that seven crores clearly refers to Bang Mata and not Bharat Mata.

Of course, it has generated patriotic feelings. So, the fact that it was imagined is not a national-level imagination of India or Bharat. This song was a rallying point for the freedom-struggle in Bengal. I must also mention that this idea of ?*Bongo Mata?* has a similar kind of imagination in my home State. In the 1930s, there was a song we used to sing as follows:

?The daughter of Bharat our loving mother Manipur, we bow to you?.

The ?Mother? we were referring to was Manipur in the 1930s, but Manipur was not the only one. If you remember, in Karnataka you have a similar song in the 1930s:

?Jaya Bharata Jananiya Tanujate, Jaya He Karnataka Mate?

?The mother Karnataka, daughter of Bharat.? Kuvempu?s famous line. What we understand from history is that, just as the Bengalis imagined ?*Bongo Mata?*, Manipur also had the imagination of ?*Manipur Mata?*, just as *Karnataka Mata* exists. How this acquires a national character is part of the trajectory, and we must revisit this trajectory as we commemorate the 150th year of this song.

The idea of ?nation? in this country, it must be reminded, was an alien concept. None other than the person we call the National Poet ?
Shri Rabindranath Tagore, insisted on this. He said that a nation has turned humanity into a ?geographical demon.? He was very sceptical of the idea of a nation. Everybody knows this, and yet we call him our national poet.

Similarly, Mahatma Gandhi was very sceptical of the institution called the ?modern State?. He thought it was an impersonal machine rooted in violence; that is why he suggested ?village republics.? But the irony is that, the way we have begun to imagine this ?nation?, there are two competing ideologies: one represented by the Indian National Congress, and the other, which some authors call ?communal ideological moorings.? Then the side, which the BJP loves to do it, the religious-cultural imagination was an organic conception of the nation. That is clearly seen in today?s speech as well.

They invoke the idea of ?blood and soil.? If you remember, our Prime Minister has said that the colour of blood is more important than the colour of a passport. This is a familiar slogan from 1930s Italy fascist. They used to say *?Blut und Boden?* (Blood and Soil). The cultural nationalists project to see this country as an organic entity by flattening its diversity. That is one kind of imagination of nationhood, and that is why this song becomes important to the ruling party.

In contrast to this imagination of *Bharat Mata*, you have another competing image presented by people like Shri Jawaharlal Nehru. In his book ?The Discovery of India?, he asks: Who is this *Bharat Mata*? And he insists that Bharat Mata is nothing but you and me ? the millions of people in this country. When you say ?victory to Mother India,? you mean victory to these people. You and me

and different speakers ? whether it is Karnataka Mata, Manipur Mata, or Bongo Mata ? have all come together. This coming together is what has created the country that we are familiar with and which we represent in this House. That history must be remembered as we discuss *Vande Mataram*. We must remember that this coming together of various elements, speakers of different languages, and people of diverse faiths is what makes this country India ? the country we know and the country codified in our Constitution.

In the preceding constitutions, Section 5 of the Government of India Act, 1935, this country was described as a ?Federation of India?. Under that same Act, Manipuris joined as part of a ?Federated State? under Section 8.

This federation of India turned India into Union of States as we know today in our Constitution. This coming together of India, that is what Bharatmata would mean - different individuals, different cultures. It is this what our Constitution says, we should be providing Justice, Liberty, Equality and Fraternity. That is what we promised to ourselves on 26th November, 1949 and we implemented on 26th January, 1950. The question that we must be asking today as we mark this *Vande Mataram?s* 150th year is this. Have we been able to deliver that Justice, Liberty, Equality and Fraternity to the end? Just as we keep on singing about Vande Mataram, you exclude people.

Take, for example, the North East. For 75 years, it is not a myth. Just as Europeans have said India has past, not history. And Bengali nationalists say that we must have a history. That is the nationalist imagination. Today, the North East is still not included in the so-called Indian history. Dalits have been excluded. You are suspicious of minorities like Muslims. You keep on excluding people. You are not doing justice to Bharat *Mata* which is the millions of citizens in this country. So, the true meaning of celebrating Vande Mataram is to uphold what we have promised to ourselves in our Constitution. And it is in this sense, just as you are able to spend 10 hours for the discussion here, I dare the nationalist feeling in you, the *desh bakti*, the devotion in you, which calls for a discussion on Manipur at least for three hours. For Heaven?s sake, let us discuss Manipur and then, we will know what is *Vande Mataram* means to all of us.

Thank you, Madam Chairperson.

***m48सुश्री बाँसुरी स्वराज (नई दिल्ली) :** सभापति महोदया, धन्यवाद।

महोदया, वंदे मातरम् एक मंत्र है। यह भारत की भक्ति का मंत्र है और यह भारत के रस का भी मंत्र है। वंदे मातरम् केवल एक जयघोष ही नहीं, बल्कि यह भारत की राष्ट्र आत्मा की अनंत प्रतिध्वनि है। भारत में राष्ट्रवाद एक राजनीतिक संरचना नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक चेतना है। जहां भूमि भूखंड नहीं, मां के तौर पर देखी जाती है। जहां पर हम भारत को भौगोलिक सीमाओं में नहीं, बल्कि संस्कारों में निहित देखते हैं।

सभापति महोदया, यहां तक कि अगर हम आध्यात्मिक चेतना की बात करें, तो यह सिर्फ कोइंसिडेंस या इत्तेफाक की बात नहीं कि 7 नवंबर, 1875 को जब बंकिम बाबू ने वंदे मातरम् की रचना की, तब उस दिन अक्षय नवमी भी थी। अक्षय नवमी भारतीय संस्कृति का एक बहुत पावन और महत्वपूर्ण दिन है। यह वह दिन है, जब भगवान कृष्ण ने अपनी बाल लीला समाप्त करके धर्म की स्थापना के लिए मथुरा प्रस्थान किया।

सभापति महोदया, आज मैं यह जरूर कहूंगी कि वंदे मातरम् हमारा राष्ट्र ज्ञान, धर्म, कर्तव्य और राष्ट्र धर्म की साक्षात प्रेरणा कर्मयोगी भगवान कृष्ण से प्राप्त करके ही संचालित करता है। इसीलिए, पूरे देश को, कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, यह गीत एकता के सूत्र में बांधता है।

सुजलाम् सुफलाम् मलय़जशीतलाम्,

शस्यश्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।

यह सिर्फ एक वाक्य नहीं है, यह दिखाता है कि प्राकृतिक वरदानों से सुशोभित भारत माता अपनी संतानों को, अपनी जन-समृद्धि, अपने फलों से, अपनी पावन और शीतल हवा से किस तरह उसका लालन-पोषण करती है।

सभापति महोदया, इसीलिए, भारत माता हमारे लिए एक अमूर्त, अनाम अवधारणा नहीं है, बल्कि मां दुर्गा, मां काली, मां लक्ष्मी, मां सरस्वती का साक्षात जीता-जागता स्वरूप है, जो कि शक्ति, साहस, सौम्यता और ज्ञान का रूप है।

आज विपक्ष के उपनेता ने एक बात कही कि उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने कभी भी वंदे मातरम का विरोध नहीं किया। मैं दो पत्र आपके समक्ष और सभा के पटल पर रखना चाहती हूँ। पहला पत्र है, जो तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू जी ने डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी को 21 जून, 1948 में लिखा था। मैं इसको कोट कर रही हूँ और अंग्रेज़ी में पढ़कर सुनाऊँगी, ताकि किसी भी प्रकार की भ्रांति न हो। उन्होंने कहा कि :-

> ?Personally, I do not think Vande Mataram is at all feasible as a national anthem, chiefly because of its tune, which does not suit orchestral or band rendering. Our national anthem has to be played by a foreign orchestra all over the world.?

महोदया, अजीब सी बात है कि भारत की आज़ादी का यह मंत्र नेशनल ऐन्थम इसलिए नहीं बन पाया, क्योंकि तत्कालीन प्रधानमंत्री को यह लगा कि यह गीत विदेशी ऑर्केस्ट्रा पर यह ढंग से नहीं बज सकता है। ऐसा लगता है कि आज़ादी के बाद भी कांग्रेस पार्टी मानसिक रूप से स्वाधीन नहीं हुई थी। मैं दूसरा पत्र सभा के पटल पर रखती हूँ, जो

तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू जी ने तत्कालीन गवर्नर श्री प्रकाश जी को 8 अगस्त, 1949 को लिखा था। उन्होंने कहा कि -?For my part, I think, it would be most unfortunate for *Vande Mataram* to be adopted as the National Anthem.? यानी, व्यक्तिगत तौर पर तत्कालीन प्रधानमंत्री वंदे मातरम् का नेशनल ऐन्थम बनना दुर्भाग्यपूर्ण मानते थे। आज एक बहुत ही वरिष्ठ सांसद, जो विपक्ष की तरफ बैठे हुए हैं और एक दल के नेता भी हैं। उन्होंने हमसे एक सवाल पूछा था। उन्होंने पूछा कि ?आप कितने सेक्यूलर हैं?? मैं विपक्ष से पूछना चाहती हूँ और खासकर उस नेता से तथा कांग्रेस पार्टी से पूछना चाहती हूँ कि धर्मनिरपेक्षता की आड़ में सांप्रदायिक ताकतों के आगे कांग्रेस पार्टी ने घुटने टेके, जिसने वर्ष 1937 में त्रिदेवी, यानी हमारी शक्ति की आवाहन वाले सभी छंदों को बेरहमी से वंदे मातरम से काट दिया, लेकिन आप हमसे पूछते हैं कि हम कितने सेक्यूलर हैं?

महोदया, जब ऐसे तुष्टिकरण की राजनीति के पटल पर वंदे मातरम् की बलि चढ़ा दी गई थी, इसलिए स्वर्गीय श्रीमती सुषमा स्वराज को वर्ष 1996 में इस सदन के पटल पर यह कहना पड़ा कि ?हाँ, हम सांप्रदायिक हैं, क्योंकि हम वंदे मातरम् गाने की वकालत करते हैं, क्योंकि हम राष्ट्रध्वज के सम्मान के लिए लड़ते हैं।?

महोदया, यह मोदी का नया भारत है। यह भारत वंदे मातरम् के मूल मंत्र को केवल आत्मसात ही नहीं करता, बल्कि ग्राउंड पर उसको चरितार्थ भी करता है। यह मोदी का नया भारत है, जहाँ पर बिना माँगे मैटरनिटी लीव को 12 से 26 हफ्ते बढ़ा दिया जाता है। यह है - वंदे मातरम्। यह मोदी का नया भारत है, जो नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित करके महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए पथ प्रशस्त करता है। यह है - वंदे मातरम्। यह मोदी का नया भारत है, जो आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से विश्व की सबसे बड़ी हेल्थ इंश्योरेंस ही नहीं, हेल्थ एश्योरेंस स्कीम देता है। उस स्कीम में पांच लाख रुपये का मुफ्त इलाज प्रदान करता है तथा वय वंदना कार्ड से हमारे वरिष्ठ नागरिकों का भी ख्याल रखता है। यह है - वंदे मातरम्। यह मोदी का नया भारत है, जो न्यूक्लियर एनर्जी और भारत की स्पेस को एकाधिकार, यानी सरकारी एकाधिकार से निकालकर भारत की युवा शक्ति उसमें योगदान दे पाए, इसके लिए उसको खोलता है। यह है - वंदे मातरम्।

महोदया, यह वंदे मातरम् की पराकाष्ठा है कि मोदी के नए भारत में भारत की अर्थव्यवस्था 11वें नंबर से वैश्विक पटल पर आज चौथे नंबर पर आ गई है। यह मोदी का नया भारत है, जहाँ पर वंदे मातरम् चरितार्थ होता है। मेरे देश के युवाओं के लिए भारत की स्टार्टअप इकोनॉमी वैश्विक पटल पर थर्ड लार्जेस्ट इकोसिस्टम बन जाती है। लेकिन, आज मेरा मन बहुत व्यथित है, क्योंकि एक बहुत ही माननीय सांसद महोदया ने कहा कि वंदे मातरम् की बहस हो रही है। शायद मेरी तरह वह भी पहली बार की एमपी हैं। हम दोनों ने इस सदन में मात्र 12 महीने ही गुजारे हैं। मैं आपके माध्यम से उनसे कहना चाहती हूँ कि यह चर्चा है, जो सकारात्मक होती है, बहस नहीं है।

माननीय सांसदा ने कहा कि आप अतीत में क्यों मंडरा रहे हैं। महोदया, मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगी कि जो सभ्यता अपने इतिहास को भुला देती है, उसका कोई भविष्य नहीं होता है, क्योंकि यदि आप इतिहास की गलतियों से सीखते नहीं हैं, तो इतिहास वो गलतियां आपके लिए दोहराता है। आज उन्होंने कहा कि यह चर्चा एक चुनावी अमले में है, क्योंकि उन्होंने बंगाल के चुनाव की बात की है। मैं आपके माध्यम से उनको कहना चाहूंगी कि बंगाल वंदे मातरम् की जन्म भूमि है।

बंगाल वह पावन धरती है, जिसने आजादी का यह मूल मंत्र दिया, यह जयघोष दिया, जिसने स्वदेशी का यह उदघोष दिया, लेकिन आज मेरा बंगाल बहुत गंभीर और चिंताजनक स्थिति में है। क्यों? क्योंकि वहां की रूलिंग डिस्पेंसेशन वंदे मातरम् की आत्मा का गला घोंट रही है। आज राजनैतिक स्वार्थ के कारण राजनैतिक हिंसा बहुत ही गहराई से वहां पर जड़ें पकड़ रही है। आपके माध्यम से इस सदन को और इस देश को मैं आश्वस्त करना चाहती हूं कि भगवा श्रीराम का रंग है। भगवा क्रांति का रंग है और मैं बंगाल की जनता को कहूंगी कि बहुत जल्दी वे इस अराजकता से मुक्त होंगे। क्योंकि हो गई है जीत की तैयारी, आ रहे हैं भगवाधारी। महोदया, बिहार तो केवल झांकी है, पश्चिम बंगाल बाकी है। मैं अंत में अपनी वाणी को विराम देने से पहले आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को धन्यवाद भी देती हूं और अभिनंदन भी करती हूं कि उन्होंने वंदे मातरम् की 150 साल की वर्षगांठ का एक वर्ष का स्मरणोत्सव जो मनाया है, इससे उन्होंने भारत के युवा को पुन: अपनी धरोहर से जोड़ दिया है। महोदया, वंदे मातरम् सतत् है, शाश्वत है, समृद्ध भारत की प्रेरणा है, विकसित भारत की आधारशिला है। वंदे मातरम्। बहुत-बहुत धन्यवाद।

***m49SHRI E. T. MOHAMMED BASHEER (MALAPPURAM):** Madam, a strange situation is prevailing in contemporary India. There were a lot of disputes with regard to *?Vande Mataram?*, but because of the wise deeds of our leaders, we were able to cool that down. Since 1930, everything has been settled which is a great thing. There were a lot of controversies and disputes. Finally, because of the interventions of our leaders like Mahatma Gandhi ji, Pandit Nehru ji, Rabindranath Tagore ji, Rajendra Prasad ji, Netaji Subhas Chandra Bose and many others, we wisely rose up to the occasion and had discussions. We arrived at the conclusion that we would not take the disputes forward.

There are two specific reasons for that. The song *?Vande Mataram?* consisted of six stanzas. It was finally decided that we would sing only the first two stanzas and we will continue with that. I do not want to go into the reasons. Secondly, it was decided that nobody should be compelled to recite that. It is because of these two particular wise reasons, things were in a settlement mode. Now, why I said that it is a strange situation is because there are bad situations.

This House should deal with the issues in an amicable way and we have succeeded in that because we all love the nation, whatever may be the differences of opinion.

Sir, I will tell you two or three examples of the contributions of our leaders. On 26th October, 1937, Shri Rabindranath Tagore wrote a letter to the committee formed by the Congress addressing it to Pandit Jawaharlal Nehru stating that only the first two stanzas of the *Vande Mataram* song should be sung and that no one should be forced to sing the rest. Further, two days before the

Constitution of India was adopted and brought into force, President Rajendra Prasad announced that only the first two stanzas of the song would be given the status of the national song. There was no dispute.

Who is creating problem now? Certainly, the Opposition is not doing that. We want peace, harmony, and cordiality. But here, adding fuel to fire type of work is going on the part of the Government. They are precipitating the situation. We have to realise it. Now, a propaganda has been started by the Ruling Party which is glorifying Bankim Chandra Chatterjee. I have not read the books but I know what exactly it is because I read the review. I was trying to understand what exactly his prediction was. You are trying to glorify him. The situation is such that it will flare up.

The hon. Prime Minister participated in the 150th anniversary of *Vande Mataram* in Delhi on 7th November, 2025. It was a widely attended meeting. In that gathering, the hon. Prime Minister, Narendra Modi ji, said: ?In 1937, important lines from *Vande Mataram* were separated from it. That very separation sowed the seeds for partition. Why was that separation done? The divisive mentality remained a challenge for the country. Even today, the condescending Nehru's leadership committed a historical sin and mistake by associating this song with religion.? Are we reopening all these things, Sir? In a country like this, which believes in peace and cordiality, this kind of thing should not be there.

If anybody asks you, what is the greatest treasure India has, everybody's reply will be, ?the Constitution of India and the National Anthem?. We are proud of that. Unfortunately, when we have such a great National Anthem, why should we have all these disputes? We have to be proud of that. The Indian National Anthem, ?*Jana Gana Mana?*, is the profound expression of the spirit, unity, and timeless civilisation and heritage of India. Written by Rabindranath Tagore, the Anthem celebrates the idea of a nation that is diverse in language, culture, geography, but united in purpose, and destiny. The powerful verses evoke a sense of pride, reminding every citizen that India's strength lies in its unity, and in the guiding spirit that leads the nation through challenges and triumphs.

Similarly, Madam, the Anthem is more than a song. It is a reflection of India's collective identity, a tribute to its freedom struggle, and daily reminder of the values of harmony, sacrifice, and patriotism.

When we are having this treasure with us, why should we quarrel, why should we make new issues? I humbly suggest that this House, after this discussion, should send a message to the world that we are united. We are not here to fight. That message should be given. That should be the outcome of this discussion. I hope, we will unitedly fight against all kinds of disunity in this country.

With these few words, I conclude. Thank you.

***m50SHRI MALVINDER SINGH KANG (ANANDPUR SAHIB):** Madam Chairperson, I thank you for providing me the opportunity to speak on the important issue of completion of 150 years of Vande Matram song. Remembering the spirit of Vande Matram song, I would like to say that martyrs like Kartar Singh Sarabha, Gadari Babas and several others from Punjab made supreme sacrifice for the independence of the country. Infact, at the time of completion of 150 years of Vande Matram song, it was needed to introspect whether the present government of the country is safeguarding the spirit of Vande Matram song. I feel that very motive behind this discussion is the forthcoming elections, more particularly as mentioned by several members that it the turn of West Bengal now. It is only to divide the nation.

When the groups of young people of 17 to 20 years with the spirit of Vande Matram, major sacrifices were done by Punjab and West Bengal because these states had to face the division. Maximum martyrs came from these two states and lacs of people had to migrate to other parts. Even after getting independence, the spirit of Vande Matram in these states has withstood the difficult times, be it legacy of General Harbax Singh or Abdul Hameed. But it seems that as on date, too, that the nation needs the spirit of Vande Matram for uniting the people. Present government of the country is crushing the human rights of particular minorities. Where they are unable to form the government like the state of Punjab that gave a number of martyrs, the conspiracy for taking charge of its capital is being attempted.

Partition of Punjab didn?t take place at the time of independence only, Haryana was also snatched from us which was a part of Punjab. Madam, it is your state also.

Guru sahibs, particularly Guru Nanak Dev ji many centuries ago had said- Pawan Guru Pani Pita Mata Dharat Mahatt. They had accorded significance to the mother earth centuries ago. Our martyrs like Shahid Bhagat Singh, Chandra Shekhar Azad, Kartar Singh Sarabha had understgood

the spirit of brotherhood andunity of this country which was shown to us by the Rishis, Munis and saints in the form of ?Manas ki jaat sabhe ek pehachanbo?. They made sacrifices tp strengthen this spirit. I feel that on the occasion of 150 years of Vande Matram and as hon. Prime Minister had also mentioned about the commemoration of 350 years of martyrdom of Guru Tegh Bahadur, it was needed to discuss safeguarding of human rights. Guru Tegh Bahadur ji sacrificed his life when the Pandits of Jammu & Kashmir went to him for saving their lives. This event should have been discussed today. Message of his martyrdom was needed to be discussed.

Today in the disguise of 150 years of Vande Matram song, the Govt is trying to divide the society and country. Govt should have avoided the politics of vote bank. While I convey my thanks to you, I appeal to the Govt of the day that the need of the hour is to strengthen the spirit of brotherhood. If the nation has to be strengthened, the real spirit of the brotherhood in the country is to be safeguarded as was done by Guru Rabindra Nath Thankur and Guru Gobind Singh ji for taking the country to the top position. Bringing such discussions for the vote bank politics, it is not required today. I, once again, thank you for providing me an opplortunity to speak on the subject.

***m51सुश्री इकरा चौधरी (कैराना) :** सभापति महोदया, आज हमारे राष्ट्र गीत के 150 वर्ष पूरे होने पर हो रही महत्वपूर्ण चर्चा में गर्व के साथ एक भारतीय होने के नाते मैं अपने विचार यहां रखना चाहती हूं। सदन में इतिहास को तोड़-मरोड़ कर पेश करके फिर से मुस्लिम तुष्टिकरण के नाम पर भारतीय मुसलमानों को कटघरे में खड़े करने की कोशिश की जा रही है, लेकिन मैं सदन में बताना चाहूंगी कि हम भारतीय मुसलमान जिन्ना के आह्वान को ठुकरा कर अपने इस प्यारे वतन की इस मिट्टी के साथ मजबूती से जुड़े रहें। हमने महात्मा गांधी जी, बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर जी, रविन्द्र नाथ टैगोर जी, सुभाष चंद्र बोस जी, मौलाना अबुल कलाम आजाद जी और अशफाक उल्ला खां साहब के विचारों को अपनाया है। हम भारतीय मुसलमान इंडियंस बाय चॉइस हैं, बाय चांस नहीं। वंदे मातरम् के किन छंदों को राष्ट्रगीत के तौर पर अपनाया जाए, यह फैसला सर रविन्द्र नाथ टैगोर और सुभाष चंद्र बोस जी जैसे नेताओं के परामर्श के बाद हुआ है। क्या अब हम उन महान नायकों की समझ पर प्रश्न चिन्ह उठाएंगे, उन्हें देश को बांटने वाला और तुष्टिकरण करने वाला कहने का पाप करेंगे? उन महान हस्तियों ने वंदे मातरम् के उन छंदों को अपनाया, जिन्होंने देश के हर वर्ग हर धर्म को मानने वालों को एक सूत्र में पिरोने का काम किया है।

सभापति महोदया, मैं एक घटना आप लोगों के सामने रखना चाहती हूं। वर्ष 1998 में उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री रविन्द्र शुक्ला जी ने स्कूलों में राष्ट्र गीत को गाना अनिवार्य कर दिया था लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने, जो उस समय लखनऊ के दौरे पर थे, उत्तर प्रदेश सरकार के इस फैसले पर नाराजगी जताई और यूपी सरकार ने राष्ट्रगीत को अनिवार्य करने वाले मंत्री को बर्खास्त कर दिया था।?(व्यवधान)

अंब मैं सत्ता पक्ष से सवाल करना चाहूंगी कि राष्ट्र गीत को स्वेच्छा पर छोड़ने का जो विजन आजादी के समय लोगों का था, उसी का अनुसरण माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने किया तो क्या वह भी मुस्लिम तुष्टिकरण कर रहे थे, जी नहीं, अटल बिहारी वाजपेयी जी राज धर्म निभा रहे थे। देश में सब धर्मो को एक साथ लाना सबके जज्बात का एहसास करना ही सबसे बड़ा राष्ट्रवाद है।

माननीय सभापति महोदया, आज हमें वंदे मातरम् के असली भाव को समझना जरूरी है । यह गीत देश के जल, जंगल, जमीन, हरियाली और निर्मल हवा की वंदना को समर्पित है । यह भारत की जन-जन की मंगल कामना करती है कि भारत का हर नागरिक स्वस्थ रहे, सुरक्षित रहे और सम्मान के साथ जी सके । सुजलाम् सुफलाम् का अर्थ है ? ऐसा देश जहां स्वच्छ और पर्याप्त जल हो । जहां नदियां जिंदा हों, बहती हों और जीवन देती हों, लेकिन आप यमुना का हाल देखिए । दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति की वर्ष 2025 की रिपार्ट बताती है कि यमुना के कई हिस्सों में बीओडी का स्तर 127 एमजी पर लीटर तक पहुंच चुका है, जबकि किसी जीवित नदी के लिए वह 3 एमजी पर लीटर से कम होना चाहिए । यह सिर्फ नदी का संकट नहीं है । यह किसान का संकट है ।

नमामि गंगे के नाम पर हजारों करोड़ रुपये खर्च हो गए, लेकिन सच्चाई यह है कि आज भी गंगा और यमुना के किनारे किसान मजबूरी में उसी जहरीले पानी से खेती कर रहे हैं, वही ज़हर अनाज में उतरता है. और वही ज़हर किसानों की ज़िंदगी को धीरे-धीरे खत्म कर देता है ।

सभापति महोदया, जब पानी ज़हर होगा, तो सुजलाम् कैसे होगा? जब किसान बर्बाद होगा, तो सुफलाम् कैसे होगा?

मलयज शीतलाम् - मलय का अर्थ मलय पर्वत से बहने वाली ठंडी, सुगन्धित चंदन जैसी हवा, जो जीवन देती है, बीमारी नहीं देती है । आज मैं इस सदन से पूछना चाहती हूं कि क्या आज के भारत की हवा मलयज शीतलाम् है, नहीं । बस, संसद से बाहर कदम रखिए, गहरी सांस लीजिए । यह चंदन की महक नहीं, बल्कि यह ज़हर है, जो आपके और हमारे फेफड़ों में उतर रहा है ।

दुनिया के 20 सबसे प्रदूषित शहरों में से 13 भारत में है, दिल्ली की हवा में सांस लेना रोज 20 सिगरेट पीने जैसा है । भारत हर साल सर्दियों में जहरीली हवा के प्रकोप से घिर जाता है, एक्यूआई गंभीर स्तर पर आ जाता है । ठंडी हवा का सपना गैस चेम्बर की हकीकत बन चुका है । हम वह देश हैं, जहां सरकार प्रकृति पर बने गीत का मान मर्दन तो करती है, किन्तु उसी प्रकृति जंगल, हवा और पेड़ को बचाने वाले कानूनों को धीरे-धीरे खुद ही खत्म कर रही है । यही है आज के मलयज शीतलाम् की अफसोसजनक सच्चाई, अगर हम हवा को साफ नहीं कर पाए, न सुजलाम बचेगा न सुफलाम बचेगा ।

सभापति महोदया, शस्य श्यामालम का अर्थ है, ऐसा देश जहां उपजाऊ जमीन हो, जहां खेत फसल से भरे हो, किसान कर्ज और निराशा में न डूबा हो । आज किसान सिर्फ मौसम से नहीं लड़ रहा है, प्रदूषण और नीतियों की बेरूखी, सिस्टम की नाइंसाफी से लड़ रहा है । एक तरफ कॉरपोरेट लोन माफ होते हैं, दूसरी तरफ किसान को उसका वाजिब

एमएसपी भी नहीं मिल पाता है। आप ग्लोबल सुपर पॉवर बनने की बात करते हैं, लेकिन हमारी पर कैपिटा इनकम दुनिया में 136वें नम्बर पर है। हम अपने छोटे पड़ासी देश से भी पीछे हैं।

हमारे लोग ढ़ाई हजार डॉलर तक एक साल में नहीं कमा पा रहे हैं। जिन अरबपतियों की ये रक्षा करते हैं, वे इतना पैसा एक सेंकड में कमा लेते हैं। आज वंदे मातरम् को बुनियाद बनाकर राजनीति की जा रही है। लेकिन जमीन और जंगल पूंजीपतियों को सौंपी जा रही है, आदिवासियों को उनके घरों से उजाड़ा जा रहा है। मातरम् में जो मातरम् आता है वह सिर्फ मातृभूमि की वंदना नहीं है, वह इस धरती की हर नारी, देश की हर बेटी और हर महिला के सम्मान की भी बात करती है। लेकिन अगर आप आंकड़े देखेंगे, एनसीआरबी की हाल की रिपोर्ट के अनुसार देश में हर वर्ष लगभग 30 हजार से अधिक बलात्कार हो रहे हैं यानी एक दिन में 80 से अधिक महिलाएं यौन हिंसा की शिकार होती हैं और ये सिर्फ दर्ज मामले हैं। जब जम्मू-कश्मीर की एक बच्ची हिंसक अत्याचार की शिकार होती है, जब सत्ता से जुड़े लोगों पर आरोप लगते हैं और कार्रवाई वर्षों लटक जाती है, जब उन्नाव की पीड़िता लखनऊ के दरबार में इंसाफ के लिए अपनी जान देने पर आमादा होती है, जब बिलकिस बानो के अपराधियों का सरकार के लोगों द्वारा स्वागत किया जाता है तो ये घटनाएं वंदे मातरम् की आत्मा पर चोट पहुंचाती है।

मैं अंत में इतना ही कहना चाहती हूं, वंदे मातरम् सिर्फ अतीत की ललकार नहीं बल्कि वर्तमान की जिम्मेदारी है। यह आत्ममंथन की घड़ी है। यही समय है कि हम वंदे मातरम् को सिर्फ नारा नहीं, नीति और जिम्मेदारी बनाएं। मैं अपने जज्बात को आलम ए इकबाल तराना ए हिन्द के साथ इस सदन में रखना चाहती हूं,

सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा,

हम बुलबुले हैं इसकी ये गुलसितां हमारा,

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना,

हिन्दी हैं हम वतन हैं हिन्दुस्तां हमारा।

[محترمہ اقرا چودھری (کیرانہ) : چیرمین صاحبہ، آج ہمارے راشٹریہ گیت کے 150 سال مکمل ہونے پر ہوری اہم چرچا میں فخر کے ساتھ ایک ہندوستانی ہونے کے ناطے اپنے خیالات یہاں رکھنا چاہتی ہوں۔ ایوان میں تاریخ کو توڑ مروڑ کر پیش کرکے پھر سے مسلم تُشٹی کرنکے نام پر بھارتیہ مسلمانوں کو کٹگھرے میں کھڑا کرنے کی کوشش کی جارہی ہے،

لیکن میں ایوان میں بتانا چاہوں گی کہ ہم بھارتیہ مسلمان جنّاح کی آئڈیولوجی کو ٹھکرا کر اپنے اس پیارے وطن کی اس مٹی کے ساتھ مضبوطی سے جُڑے رہے۔ ہم نے مہاتما گاندھی جی، بابا صاحب بھیم راؤ امبیڈکر جی، رویندر ناتھ ٹیگور جی، سبھاش چندر بوس جی مولانا ابولکلام آزادجی اور

اشفاق اللہ خاں صاحب کے وچاروں کو اپنایا۔ ہم بھارتیہ مسلمان انڈین بائی چوائیس ہیں، بائی چانس نہیں۔ وندے ماترم کے کن چھندوں کو راشٹریہ گیت کے طور پر اپنایا جائے، یہ فیصلہ سرر ویندرناتھ ٹیگور اور سبھاش چندر بوس جی جیسے نیتاؤں کے مشورے کے بعد ہوا کیا ہم اب ان عظیم نائکوں کی سمجھ پر سوال اُٹھائیں گے، انہیں دیش کو باٹنے والا اور تُشٹی کرنے کرنے والا کہنے کا پاپا کریں گے؟ ان عظیم لوگوں نے وندے ماترم کے ان چھندوں کو اپنایا، جنہوں نے ملک کے ہر طبقے اور ہر مذہب کے ماننے والوں کو ایک سوتر میں پِرونے کا کام کیا ہے۔

چیرمین صاحبہ، میں ایک واقعہ آپ لوگوں کے سامنے رکھنا چاہتی ہوں۔ سال 1998 میں اتر پردیش سرکار کے منتری رویندر شکلا جی نے اسکولوں میں راشٹریہ گیت کو گانا کمپلسری کر دیا تھا لیکن تتکالین پردھان منتری جناب اٹل بہاری واجپئی جی نے جو اس وقت لکھنؤ کے دورے پر تھے، اتر پردیش سرکار کے اس فیصلے پر ناراضگی جتائی اور یو۔پی۔ سرکار نے راشٹریہ گیت کو کمپلسری کرنے والے منتری کو برخاست کر دیا تھا (مداخلت)

اب میں ستّا پکش سے سوال کرنا چاہوں گی کہ راشٹریہ گیت کو اپنی مرضی پر

چھوڑنے کا جو ویژن آزادی کے وقت لوگوں کا تھا، اسی کا انوسرن محترم اٹل بہاری واجپئی جی نے کیا تو کیا وہ بھی مسلم تُشٹی کرن کر رہے تھے، جی نہیں، اٹل بہاری واجپئی جی راج دھرم نبھا رہے تھے۔ ملک میں سبھی مذاہبوں کو ایک ساتھ لانا، سب کے جذبات کا احساس کرنا ہی سب سے بڑا راشٹرواد ہے۔

محترمہ چیرمین صاحبہ، آج ہمیں وندے ماترم کے اصلی بھاؤ کو سمجھنا ضروری ہے۔ یہ گیت ملک کے جل، جنگل، زمین، ہریالی اور نِرمل ہوا کی وندنا کو سمرپِت ہے۔ یہ بھارت کی جن۔جن۔ کی منگل کامنا کرتی ہے، اور بھارت کا ہر شہری صحت مند رہے، محفوظ رہے اور عزت کے ساتھ جی سکے۔ سُجلام، سُفلا کا مطلب ہے ایسا ملک جہاں صاف اور بھرپور پانی ہو۔ جہاں ندیاں زندہ ہوں، بہتی ہوں اور جیون دیتی ہوں، لیکن آپ جمنا کا حال دیکھئے۔ دہلی پردوشن نینترن کی سال 2025 کی رپورٹ بتاتی ہے کہ جمنا کے کئی حصوں میں بی۔او۔ڈی۔ کا استر 127 ایم۔جی پر لیٹر تک پہنچ چکا ہے، جبکہ کسی جیوت ندی کے لئے یہ 3 ایم۔جی۔ پر لیٹر سے کم ہونا چاہئے۔ یہ صرف ندی کا سنکٹ نہیں ہے۔ یہ کسان کا سنکٹ ہے۔

نمامی گنگے کے نام پر ہزاروں کروڑ روپئے خرچ ہو گئے، لیکن سچائی یہ ہے کہ آج بھی گنگا اور جمنا کے کنارے کسان مجبوری میں اسی زہریلےپانی سے کھیتی کر رہے ہیں، وہی زہر اناج میں اترتا ہے، اور وہی زہر کسانوں کی زندگی کو دھیرے دھیرے ختم کر دیتا ہے۔

چیرمین صاحبہ، جب پانی زہریلا ہوگا، توسجلام کیسے ہوگا؟ جب کسان برباد ہوگا تو سُفلام کیسے ہوگا؟

ملیج شیتلام، ملئے کا مطلب ملے پربت سے بہنے والی ٹھنڈی، سُگندھت چندن جیسی ہوا، جو زندگی دیتی ہے، بیماری نہیں دیتی ہے۔ آج میں اس ایوان سے پوچھنا چاہتی ہوں کہ کیا آج کے بھارت کی ہوا ملیج شیتلام ہے، نہیں۔ بس، سنسد سے باہر قدم رکھئے، گہری سانس لیجئے۔ یہ چندن کی مہک نہیں بلکہ یہ زہر ہے، جو آپ کے اور ہمارے پھیپھڑوں میں اتر رہا ہے۔

دنیا کے 20 سب سے آلودگی والے شہروں میں سے 13 بھارت میں ہیں، دہلی کی ہوا میں سانس لینا روز 20 سیگریٹ پینے جیسا ہے۔ بھارت ہر سال زہلی ہوا کے پرکوپ سے

گھر جاتا ہے، اے۔قیو۔آئی۔ گمبھیر استر پر آجاتا ہے۔ ٹھنڈی ہوا کا سپنا گیس چمبر کی حقیقت بن چکا ہے۔ ہم وہ دیش ہیں، جہاں سرکار پرکرتی پر بنے گیت کا مان مردن تو کرتی ہے لیکن اسی پرکرتی جنگل، ہوا اور پیڑ کو بچانے والے قانونوں کو دھیرے دھیرے خود ہی ختم کر رہی ہے۔یہی ہے آج کے ملیج شیتلام کی افسوس جنک سچائی، اگر ہم ہوا کو صاف نہیں کر پائے، نا شُجلام بچے گانہ سُفلام بچے گا۔

چیرمین صاحبہ، شسیہ شیاملم کا مطلب ہے، ایسا دیش جہاں اُپجاوٗ زمین ہو، جہاں کھیت فصل سے بھرے ہوں، کسان قرض اور نا امیدی میں نہ ڈوبا ہو۔ آج کسان صرف موسم سے نہیں لڑ رہا ہے، پردوشن اور نیتیوں کی بے رخی، سسٹم کی نا انصافی سے بھی لڑ رہا ہے۔ ایک طرف کارپوریٹ لون معاف ہوتے ہیں، دوسری طرف کسان کو اس کا واجب ایم۔ایس۔پی۔ بھی نہیں مل پاتا ہے۔ آپ گلوبل سپر پاوٗر بننے کی بات کرتے ہیں لیکن ہماری پر کِپٹا انکم دنیا میں 136 نمبر پر ہے۔ ہم اپنے چھوٹے پڑوسی دیشوں سے بھی پیچھے ہیں۔

ہمارے لوگ ڈھائی ہزار ڈولر تک ایک سال میں نہیں کما پا رہے ہیں۔ جن ارب پتیوں کی یہ حفاظت کرتے ہیں، وہ اتنا پیسہ ایک سیکنڈ میں کما لیتے ہیں۔آج وندے ماترم کو بنیاد بنا کر راجنیتی کی جا رہی ہے۔ لیکن زمین اور جنگل پونجی پتیوں کو سوپے جا رہے ہیں، آدی واسیوں کو ان کے

گھروں سے اُجاڑہ جا رہا ہے۔ ماترم میں جو ماترم آتا ہے وہ صرف ماتر بھومی کی وندنا نہیں ہے، وہ اس دھرتی کی ہر ناری، دیش کی ہر بیٹی اور ہر مہیلا کے سمّان کی بھی بات کرتی ہے۔ لیکن اگر آپ آنکڑے دیکھیں گے، این-سی-آر-بی۔ کی حال کی رپورٹ کے مطابق دیش میں ہر سال لگ بھگ 30 ہزار سے زیادہ بلاتکار ہو رہے ہیں یعنی ایک دن میں 80 سے زیادہ مہیلائیں یون ہنسا کا شکار ہوتی ہیں اور یہ صرف درج معاملے ہیں۔ جب جموں کشمیر کی ایک بچی ہنسک اتیاچار کی شکار ہوتی ہے، جب ستا سے

جُڑے لوگوں پر آروپ لگتے ہیں اور کاروائی سالوں تک لٹک جاتی ہے، یا اُناوُ کی پیڑیتا لکھنوں کے دربار میں انصاف کے لئے اپنی جان دینے پر آمادہ ہوتی ہے، جب بلقیس بانوں کے اپرادھیوں کا سرکار کے لوگوں دوارہ سواگت کیا جاتا ہے تو یہ گھٹنائیں وندے ماترم کی آتما کو چوٹ پہنچاتی ہیں۔

میں آخر میں اتنا ہی کہنا چاہتی ہوں، وندے ماترم صرف اتیت کی للکار نہیں بلکہ ورتمان کی ذمہ داری ہے۔ یہ آتم منتھن کی گھڑی ہے۔ یہی وقت ہے کہ ہم وندے ماترم کو صرف نارہ نہیں، نیتی اور ذمہ داری بنائیں۔ میں اپنے جذبات کو علامہ اقبال کے ترانائے ہند کے ساتھ اس ایوان میں رکھنا چاہتی ہوں۔

سارے جہاں سے اچھا ہندوستاں ہمارا

ہم بلبلے ہیں اس کی یہ گلستاں ہمارا

مذہب نہیں سکھا تا آپس میں بیر رکھنا

ہندی ہیں ہم وطن ہیں ہندوستان ہماراشکریہ]

***m52माननीय सभापति :** आपको हिन्दुस्तान से प्रॉब्लम है?

***m53श्रीमती लवली आनंद (शिवहर) :** सभापति महोदया, आपने मुझे राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में सदन में चल रही चर्चा में भाग लेने के लिए अनुमति दी है, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद । मैं अपनी पार्टी और बिहार के माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी को धन्यवाद देती हूं । मुझे हर्ष हो रहा है कि आज हमारे देश की राष्ट्रीय गीत पर सदन में चर्चा हो रही है । भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी ने 24 जनवरी, 1950 को भारतीय संविधान में प्रस्ताव रखा और वंदे मातरम् को राष्ट्रीय गीत के रूप में अपनाया गया ।

सभापति महोदया, 150 वर्ष पहले 7 नवम्बर, 1875 को बंकिम चन्द्र चटर्जी की रचना वंदे मातरम् साहित्यिक पत्रिका ?बंग दर्शन? में प्रकाशित हुई थी और बाद में आनंद मठ उपन्यास में 1882 में प्रकाशित हुई थी। बाद में 1896 में माननीय रबिन्द्र नाथ टैगोर जी द्वारा इसे मुख्य नारे के रूप में स्थापित किया जिसने आजादी के आंदोलन में लोगों को एक डोर में बांधने का काम किया, जिसके कारण अंग्रेजों की नींद उड़ गई थी। यही कारण था कि अंग्रेजों ने डरकर इस गीत की लोकप्रियता को देखते हुए सार्वजनिक गायन पर प्रतिबंध लगाया। किन्तु इसके बाद भी इसका गायन बंद नहीं हुआ और आजादी के आंदोलन में यह प्रेरणा का स्रोत बना।

सभापति महोदया, राष्ट्रगीत वंदे मातरम् की रिकॉर्डिंग का भी इतिहास है, जो वर्ष 1907 को माननीय हेमचंद बंदोपाध्याय जी के द्वारा पहली बार रिकॉर्ड किया गया था। स्वतंत्रता संग्राम की अमर धरोहर और देशभक्ति की अलख जगाने वाले राष्ट्रगीत वंदे मातरम् का सदन और पूरे देश में देशभक्ति के कार्यक्रमों को आयोजित कराने के लिए मैं माननीय प्रधान मंत्री जी को हृदय से धन्यवाद देती हूं। प्रधान मंत्री जी की दूरदर्शी सोच आज देश के चहुंमुखी विकास की ओर अग्रसर है। देश की आर्थिक तरक्की हो रही है। लोगों में खुशहाली है। विकास की रफ्तार इतनी तेजी से बढ़ रही है कि दूसरी तिमाही में जीडीपी 8.2 प्रतिशत की दर से आगे बढ़ रही है। इस कारण आलोचकों को चिंतित होना तो स्वाभाविक ही है, उन्हें विश्वास नहीं होता है। फिर भी हमारे माननीय प्रधान मंत्री जी ने देश को विकसित भारत बनाने में अपने सफल प्रयास को वर्ष 2047 तक पूरा करने के लक्ष्य को निर्धारित कर दिया है। इसके प्रमाण भी सामने हैं। भारत विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था से तीसरी अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर है। इसके लिए माननीय प्रधान मंत्री जी बधाई के पात्र हैं। इसके साथ ही मैं बिहार के मुख्य मंत्री आदरणीय श्री नीतीश कुमार जी को गत विधान सभा में मिली शानदार सफलता पर भी बधाई देती हूं। यह दो दशकों की उनकी सेवाओं, आम जनता का उनके प्रति अटूट विश्वास का ही प्रतिफल है। उन्होंने गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड कायम करते हुए 10वीं बार मुख्य मंत्री पद की शपथ ली। आगे वे पूरी निष्ठा व तत्परता से बिहार को सजाने-संवारने में लगे हैं और गांधी जी, लोहिया जी और जय प्रकाश जी के सपनों को बिहार पूरा करने में कामयाब हो, यह मेरी हार्दिक कामना है।

महोदया, मैं यह कहना चाहती हूं कि वंदे मातरम् केवल दो शब्द नहीं हैं। यह हमारे राष्ट्र की आत्मा है। जब हम वंदे मातरम् कहते हैं, तो हम अपने देश के प्रति कृतज्ञता, सम्मान व प्रेम व्यक्त करते हैं। यह हमें याद दिलाता है कि हमारा राष्ट्र हमारी सबसे बड़ी पहचान है और इसकी रक्षा, उन्नति और सम्मान हमारा कर्तव्य है। हमारी पहचान, हमारी संस्कृति और हमारे राष्ट्र का गौरव,सब-कुछ वंदे मातरम् में समाया हुआ है। हमारे देश में विविधता है, भाषा, जातियां, परंपराएं हैं,लेकिन इन सबको एक सूत्र में बांधने वाली आवाज है- वंदे मातरम् । मैं यह भी कहना चाहूंगी कि जो विपक्ष के लोग कह रहे हैं कि अतीत को यहां पर दोहराने की जरूरत नहीं है। देश और समाज मर जाता है, जो अपने महापुरुषों को याद नहीं करता है, जो अपनी वीरांगनाओं को याद नहीं करता है, अपने वीरों की कुर्बानी को याद नहीं करता है। माननीय प्रधान मंत्री जी के प्रति मैं पुन: आभार व्यक्त करती हूं कि उन्होंने वंदे मातरम् पर यहां चर्चा का अवसर प्रदान किया। वंदे मातरम् हमारी रग-रग में है। हमारी तीन-तीन पीढ़ियों ने देश की आजादी के लिए बलिदान दिया है। आनंद मोहन के दादाजी और मेरे दादाजी स्वतंत्रता सेनानी थे। आनंद मोहन जी जेपी आंदोलन की उपज हैं। 17 साल की उम्र से उन्होंने जेपी आंदोलन के साथ वंदे मातरम् को भी

गाया है। यह उनकी रग-रग में है। देश की स्वाधीनता जब खतरे में थी, देश में काला कानून था, तो आनंद मोहन जी ने जेपी आंदोलन के माध्यम से आवाज उठाई।

महोदया, वीर कुंवर सिंह जी बहुत बड़े स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने 80 वर्ष की उम्र में अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए और जब उनके बायें हाथ में गोली लगी, तो दायें हाथ से उस हाथ को काटकर गंगा मैया को समर्पित कर दिया। यह हमारा वंदे मातरम् है। हम यह कहना चाहते हैं कि यहां वीरों का गुणगान होता है, साथ ही वीरांगनाओं ने भी बड़ी कुर्बानियां दी हैं। उनका भी यह वंदे मातरम् है। हमें अपने देश को सजा-संवारकर रखना है। आने वाली पीढ़ियों के लिए यह सबक है-वंदे मातरम्, क्योंकि उन्हें बताना जरूरी है कि हमारा इतिहास क्या था, तभी हम वर्तमान और भविष्य को सजा सकते हैं। धन्यवाद।

***m54SHRI TANGELLA UDAY SRINIVAS (KAKINADA):** Hon. Chairperson and respected Members of the House, I rise today on behalf of Jana Sena Party with immense pride to speak on the occasion of the 150th anniversary of Vande Mataram, a song that is not just words and melody, but the soul of our nation?s struggle for freedom.

Vande Mataram was composed by Bankim Chandra Chatterjee in 1875 and later immortalized in his novel Anandmath. It became a unifying chant for Indians across the country. Every time an Indian sang this song, it inspired courage, unity, and a resolve to reclaim our freedom.

Singing it is an act of resistance, a declaration that India would never bow down to the colonial rule. Across the country, the call for freedom inspired countless communities and along the coast of Andhra Pradesh, East Godavari emerged as one of the most vibrant centres of resistance. Before the era of non-violence, East Godavari had already produced fearless warriors who took up arms for freedom. The foremost among them was Dwarabandala Chandraya, the fearless revolutionary who led an armed rebellion against the British in the late 19th century. With unmatched courage, Chandraya Dora united locals and tribals. Communities struck at colonial outposts and challenged the might of the empire at a time when rebellion meant certain death. His sacrifice stands as a proud reminder that the flame of patriotism burned intensely in Andhra Pradesh even before national movements took shape. But East Godavari?s contribution went beyond armed resistance.

It also gave India inspiring leaders like Duvvuri Subbamma, who mobilised women to join the nationalist cause fearlessly and stood firm. She faced imprisonment while organising communities, inspiring countless women to participate in meetings, protests and civil disobedience. The involvement of women from Andhra was a powerful reminder that the struggle for freedom was truly inclusive, drawing courage and commitment from every segment of society. Building on the spirit of

mass awakening, East Godavari became a forefront region for Gandhi?s civilian disobedience. While nations watched Gandhi march from Sabarmati to Dandi, the same wave of resistance rose on our shores.

The Salt Satyagraha in Uppada and Kothapalli of Pithapuram taluk became East Godavari?s answer to Gandhi. Volunteers walked to the beach, boiled seawater and made salt in open protests against British authority. Even when faced with raids and lathi charges, the people refused to step back, ensuring the Andhra coast stood shoulder to shoulder with Gujarat in the national movement.

Today, the spirit of Vande Mataram continues to guide us under the leadership of our hon. Prime Minister Narendra Modi ji. The spirit of national unity and cultural pride has become stronger across the country. His emphasis on *Ek Bharat Shreshtha Bharat* reinforces the very ideals that Vande Mataram embodies -- unity, resilience and unwavering love for our motherland.

In response to renewed external claims over Arunachal Pradesh, every citizen proudly sang the National Song on the streets, in schools and public spaces. Their courage demonstrates that no pressure can shake their Indian identity or other devotion to the nation.

Sir, we celebrate 150 years of Vande Mataram. Let us carry its spirit forward, supporting patriotism, inspiring the next generation, and working together to build a stronger nation, a united and prosperous India.

Jai Hind.

***m55श्री धैर्यशील संभाजीराव माणे (हातकणंगले) :** धन्यवाद सभापति महोदया। इस गौरवपूर्ण क्षण में आपने मुझे अपनी बात रखने का अवसर दिया, इस हेतु मैं आपके तहेदिल से आभार व्यक्त करता हूं। भारत की गौरवशाली परंपरा और भारत के राष्ट्रीय गीत का गुणगान आज यह संसद सबके सामने साझा कर रही है। इस उपलब्धि को डेढ़ सौ साल हो गए हैं। एक शब्द, जिसने अखंड भारत को एक संघ करने का काम किया, जो भारत अनेक खंडों, प्रांतों, भाषाओं में बंटा हुआ था, केवल एक शब्द के जादू से सबको एक साथ ले जाने का काम बंकिम जी ने उस समय किया।

वंदे मातरम् के एक शब्द ने अखंड भारत को एक संघ में लाने का काम किया। अनेक देश बने, अनेक देशों के गीत बने, लेकिन भारत का यह इकलौता ऐसा देश है, जिसमें देश को अपनी मां का दर्जा दिया गया है। बंकिम जी के इस गीत के माध्यम से पूरी दुनिया में भारत का परचम लहरा   है। आज भारत का नौजवान जिस भी क्षेत्र में जाता है, वह भारत माता की जय कहता है और वंदे मातरम् कहकर अपनी शुरूआत करता है। मैं फख्र महसूस करता हूं कि यह केवल किसी एक जाति या

केवल समुदाय का शब्द नहीं है। यह अखंड भारत की विचारधारा को दर्शाता है। जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी, देश हेतु अपने प्राणों को समर्पित किया, वे किसी एक जाति के नहीं थे।

20.00 hrs

हर जाति के लोग यहां पर आए, उन्होंने अपना समर्पण किया और वे बहुमान, गर्व से ?वन्दे मातरम्? कहते हैं। आज जो संसद में चर्चा चल रही है, विपक्ष के नेता जो कह रहे हैं, मैं बहुत ही आहत हुआ हूँ, एक नेत्री ने कहा कि जवाहर लाल नेहरू जी की बात को उन्होंने कोट किया, उन्होंने कहा कि वे कभी भी यह नहीं चाहते थे कि इसकी कुछ पंक्तियां निकाल दी जाएं। अगर यह बात सही है तो क्या संसद इन पंक्तियों को वापस जोड़ने का काम कर सकती है और क्या आप उसका समर्थन करेंगे? मैं इस बारे में निश्चित रूप से उनसे पूछना चाहूँगा। दोगली राजनीति हम लोग नहीं कर रहे हैं। देश को जब हम आगे रखते हैं, अभी आपने बांसुरी स्वराज जी का भाषण सुना, उनके पिताजी का निधन दो दिन पहले हुआ है, लेकिन देश ?वन्दे मातरम्? की बात कर रहा है, तो देश की बिटिया यहां पर आकर, वह मातम नहीं मनाकर बैठी, वह ?वन्दे मातरम्? कहने के लिए इस सभाग्रह में उपस्थित रही।

यह जज्बा है, यह जोश है, एक भावना है और इस भावना के साथ भारत देश एक साथ आगे बढ़ रहा है। जो लोग यहां सभाग्रह में बैठे हैं, ?वन्दे मातरम्? कुछ लोग नहीं कहते थे, लेकिन मैं मोदी जी का अभिनन्दन करना चाहूँगा कि 150 साल पुराना होने के बाद, आज जो ?वन्दे मातरम्? नहीं कहते थे, उनको भी ?वन्दे मातरम्? कहना पड़ेगा और ?वन्दे मातरम्? कहकर ही उनको शुरुआत करनी पड़ेगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी भाषा को विराम देता हूँ। महाराष्ट्र के शिवाजी महाराज ने जो स्वराज्य का सपना देखा था, उसको साकार करने का काम इतिहास में जिन भी लोगों ने किया, उनको नमन करते हुए मैं अपनी बात को विराम देता हूँ। जय हिन्द।

***m56श्री राजेश रंजन (पूर्णिया) :** महोदया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

मैं अपनी बात रवीन्द्र नाथ टैगोर जी की एक बात से करता हूँ। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने संकीर्ण राष्ट्रवाद पर सवाल उठाया था। उन्होंने कहा था कि देशभक्ति को मानवता पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। उन्होंने विश्वबंधुत्व पर जोर दिया और प्रसिद्ध रूप से कहा कि देशभक्ति हमारा अंतिम आध्यात्मिक आश्रय नहीं हो सकती है। मेरी शरण मानवता से है। उन्होंने सच्ची आजादी के बारे में सवाल उठाए और पूछा कि क्या आप अस्वस्थ हैं, क्या आप स्वतंत्र हैं, क्या आप खुश हैं और लोगों की सच्ची आजादी के लिए संकीर्णता से ऊपर उठने की चुनौती उन्होंने दी। टैगोर की देशभक्ति की दृष्टि जो आमार सोनार बांग्ला जैसी कविता में दिखाई देती है, कि भारत की आध्यात्मिकता, महानता और मानवीय संबंधों पर केन्द्रित थी, न कि राजनीति पर। उन्होंने दूसरी बात 100 वर्ष पहले कही थी कि हमें बंगाल का इतिहास चाहिए, अन्यथा बंगाली बच नहीं पाएंगे। बंगाल का इतिहास चाहे जैसा भी लिखा जाए, यह मातृभूमि के लिए पुष्पांजलि है। क्या एक गरीब व्यक्ति जो सोना और चांदी इकट्ठा करने में असमर्थ है, उसे जंगली फूलों से मातृभूमि को श्रद्धांजलि नहीं देनी चाहिए। यह बात रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने कही थी। तीसरी पंक्ति उन्होंने यह कही थी कि शक्ति, बुद्धि और धन मानवता का हिस्सा हो सकता है, लेकिन क्या शांति, सद्भाव और अच्छाई इससे भी उच्चतर हिस्सा नहीं है।

मैडम, इनको समझ में नहीं आयेगा कि राष्ट्रीय गीत हमारे जीवन की संस्कृति है, हमारा संस्कार है, हमारा चरित्र है, हमारा विचार है, वह हमारे चिंतन में है, वह हमारे समर्पण में है, वह हमारे आहार, व्यवहार, खान-पान में है। वह हमारे दायित्व और कर्तव्य की मूल आत्मा है और भावना है। अब ये 150 साल के बाद इस तरह की बात इस सदन में कर रहे हैं, जहां समय, काल, पात्र, टाइम, पर्सन, प्लेस, दुनिया पूरी इकोनॉमी की बात कर रहा है, पानी की बात कर रहा है, हवा की बात कर रहा है। पूरी दुनिया आर्थिक आजादी की बात कर रही है, हर व्यक्ति की खुशी की बात कर रही है। ये हमें संस्कार पढ़ा रहे हैं। इनका कोई संस्कार नहीं है, ये वे लोग हैं। ?वन्दे मातरम्? सिर्फ एक चीज नहीं है, वह निभाने की चीज होती है। राष्ट्रीय गीत सम्माननीय है, लेकिन राष्ट्र की समस्या का समाधान, यह बात हम नहीं कह रहे हैं, यह बात रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने कही थी, साहस, बलिदान और राष्ट्रभक्ति का प्रतीक राष्ट्रवाद से ज्यादा मानवतावाद, नव मानवतावाद, नैतिकतावाद, मूल्यवाद एवं रोटीवाद की महत्वपूर्ण परिभाषा है। देशभक्ति भूखे पेट नहीं चलती है। इसीलिए उन्होंने कहा था कि ?वन्दे मातरम्? सिर्फ गीत नहीं मूल्यों का प्रतीक है।

उन्होंने साफ शब्दों में एक बात कही थी कि कुछ लोग कभी आएंगे और शेर की खाल पहनेंगे और उसकी शक्ल में शेर बनकर भारत की मूल आत्मा की बात करेंगे। मैडम, मुझे थोड़ा सा समय दीजिए। संविधान को किसने जलाया था? देश के संविधान ने भारत को लोकतंत्र बनाया, जलाकर आपने किसे संस्कार का परिचय दिया? मैं आपसे जानना चाहता हूं कि 53 साल आपने राष्ट्रीय झंडा क्यों नहीं लगाया? मैं आपसे जानना चाहता हूं कि आपकी संस्था में, संगठन में और आपके संघ में कभी वंदे मातरम् का संगीत और गीत क्यों नहीं हुआ? ? (व्यवधान) कभी उसका सम्मान क्यों नहीं हुआ? ? (व्यवधान)

मैं आपसे एक बात कहना चाहूंगा कि आप यहां अपनी कमियों को ढकने के लिए, छुपाने के लिए डेढ़ सौ साल के बाद, जिसका पूरी दुनिया सम्मान करती है, पूरा राष्ट्र जिस सच्चाई के रास्ते पर चलता है, आप एक बात बताइए कि आप आजादी के वक्त कहां थे? नेहरू जी 10 साल जेल में रहे, मिट्टी पर रहे, आप आजादी के बाद कहां थे? सुभाषचंद्र बोस हेडगेवार के पास गए, हेडगेवार जी ने उन्हें लौटा दिया, फिर वे सावरकर जी के पास गए, फिर उन्होंने लौटा दिया। संघ और इनके नेताओं ने हमेशा अंग्रेजों का सपोर्ट किया। हमेशा ब्रिटिश हुकूमत के साथ रहे।

मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि कौन सी सोच आपके लिए तिरंगे, नारे और राष्ट्रगान से बड़ा बन गई? मैं आपसे ढोंग के बारे में नहीं पूछूंगा, लेकिन इतना पूछूंगा कि जो जिद्द, अहंकार और वफादारी, आप जिसके लिए कर रहे थे, आप वह बता दीजिए। आप हमें एक बात बताइए कि ये मोदी जी के भारत की बात करते हैं। मैं दो मिनट में खत्म कर दूंगा।

मैडम, मैं मोदी जी की दो करोड़ नौकरी से शुरू करता हूं। वर्तमान में भारत का हर व्यक्ति बंदी बना हुआ है, करोड़ों लोग बंदी बने हुए हैं। आप इंडिगो को देख लीजिए। मैडम, पूरा भारत गुलाम बन चुका है। ? (व्यवधान)

दूसरा, मैं स्विस बैंक के पैसे से शुरू करता हूं। ? (व्यवधान) मैडम, दो मिनट दीजिए। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आपको ज्यादा समय दे चुके हैं। आप खत्म कीजिए।

? (व्यवधान)

श्री राजेश रंजन: मैडम, मैं शुरू करता हूं डॉलर से, मैं शुरू करता हूं नोट बंदी से, मैं शुरू करता हूं जीएसटी से, मैं शुरू करता हूं किसान की आत्महत्या से। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति :आप शुरू नहीं, खत्म कीजिए।

? (व्यवधान)

श्री राजेश रंजन : आप बिहार में बुलडोजर चला रहे हो। आप गरीबों पर जुल्म कर रहे हो। आप बात करते हो, राष्ट्रवाद की। आपके जीवन में मानवतावाद नहीं है। ? (व्यवधान) आप इकोनॉमी की बात नहीं करते हो, आप एजुकेशन की बात नहीं करते हो, आप वाटर की बात नहीं करते हो, आप प्रदूषण की बात नहीं करते हो, आप रुपया की बात नहीं करते हो, आप शेयर मार्केट की बात नहीं करते हो। ? (व्यवधान) आप स्टार्टअप की बात नहीं करते हो।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप बैठ जाइए, अब खत्म कीजिए। राजेश रंजन जी आप बंद कर दीजिए। अब खत्म कीजिए।

? (व्यवधान)

श्री राजेश रंजन : आप बात करते हो, कब्रिस्तान, श्मशान, ईद, बकरीद की। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप खत्म कीजिए।

? (व्यवधान)

श्री राजेश रंजन : आप बात करते हो, नफरत की। आप नफरत पैदा करते हो।?(व्यवधान)

***m57डॉ. संबित पात्रा (पुरी) :** सभापति महोदया, मैं आज वंदे मातरम् से आपका अभिनंदन करता हूं और सभा गृह में मौजूद सभी सांसदों को, यहां न पक्ष है, न विपक्ष है। यहां सभी भारतीय बैठे हैं, सभी बंधुओं को वंदे मातरम्। ? (व्यवधान) मैं माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को धन्यवाद देना चाहूंगा। सही मायने में देखा जाए, तो जब से भारत आजाद हुआ है, पहली बार वंदे मातरम् का उत्सव सदन में मन रहा है, क्योंकि जब शताब्दी वर्ष हुआ था, आज सुबह भी माननीय प्रधान मंत्री जी ने बताया कि उस समय आपातकाल की स्थिति थी। भारतवर्ष, भारत माता जंजीरों में जकड़ी हुई थी और इमरजेंसी चल रही थी। उसके बाद वर्ष 2006 में यूपीए वन ने एक बार प्रयास किया था, लेकिन वह गलत डेट में प्रयास किया था, वंदे मातरम् को उत्सव के रूप में मनाने का। अगर सही मायने में देखा जाए तो आज आज़ाद हिन्दुस्तान में पहली बार सदन के सभागृह में ?संगच्छध्वं, संवदध्वं सं वो मना:? अर्थात् सभी एक साथ, एक मन के साथ, एक आवाज़ में, एक साथ चलते हुए ? वंदे मातरम्? का उत्सव मना रहे हैं।

महोदया, ?वंदे मातरम्? एक गीत नहीं है, यह एक मंत्र है। कई बार दो शब्द होते हैं, जो पर्यायवाची लगते हैं, मगर पर्यायवाची नहीं होते हैं। उनका अर्थ अलग होता है, जैसे कि देश और राष्ट्र। देश और राष्ट्र में भिन्नता है, पार्थक्यता है। जो देश है, वही राष्ट्र नहीं है। देश की सीमाएं होती हैं। देश में मंत्री होते हैं, देश में विभाग होता है। देश में नदियां होती हैं, देश में

समुद्र होता है, देश का एक वित्त होता है, देश की एक अर्थ नीति होती है, देश की रक्षा नीति होती है, मगर राष्ट्र आत्मा होता है, राष्ट्र की सीमाएँ नहीं होतीं, राष्ट्र विचार में रहता है, राष्ट्र का स्पंदन होता है। उदाहरण के लिए, अगर देश कहा जाए तो गंगा मात्र एक नदी है, एक नदी, जिसका एक उद्गम स्थल है और वह एक सागर ?गंगा सागर? में जाकर समाहित हो जाती है। उसमें कितना पानी है, उसमें क्या बॉयो डायवर्सिटी है, देश के अन्तर्गत यह सब चर्चा की जा सकती है, मगर जैसे ही हम कहते हैं कि भारतवर्ष एक राष्ट्र है, तत्क्षणात् उसी समय गंगा एक नदी नहीं रहती, बल्कि गंगा ?माँ? का रूप धारण कर लेती है, वह गंगा मैया हो जाती है।

<u>20.11 hrs</u> (Shrimati Sandhya Ray *in the Chair)*

यदि देश कहा जाए तो हिमालय केवल एक पर्वत श्रृंखला होती है, लेकिन अगर राष्ट्र कहा जाए तो भारतवर्ष में हिमालय वह आलय है, जहां से दुर्गा आविर्भाव लेती है, जहां कैलाश में शिव शंकर शम्भू विराजमान हैं, यह एक विचार है। ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार देश और राष्ट्र में पार्थक्यता है, गीत और मंत्र में पार्थक्यता है। गीत शरीर को स्पर्श करता है, गीत कर्णप्रिय हो सकता है, गीत की एक कालावधि होती है, किन्तु मंत्र अक्षय होता है, मंत्र अनंत होता है। मंत्र आत्मा को स्पर्श करता है, जैसे ?वंदे मातरम्? आत्मा को स्पर्श करती है।

अभी बाँसुरी जी ने भी बताया और सभी ने बताया कि 7 नवम्बर, 1875 को जब ?वंदे मातरम्? लिखा गया, वह तिथि अक्षय नवमी की तिथि थी, जिसको ?आँवला नवमी? भी कहते हैं और यह कार्तिक पूर्णिमा से कुछ दिन पहले का यह जो विशेष दिन है, यह ?वंदे मातरम्? को अक्षय बनाता है।

?आनंदमठ? नामक जिस पुस्तक में, जिस उपन्यास में ?वंदे मातरम्? निहित है, मैंने उसे पढ़ा है। मैं उसका वह एक पन्ना मूल स्वरूप में पढ़ना चाहता हूं, जहां ?वंदे मातरम्? लिखा गया है। मैं इसे बंगाली में ही, मूल स्वरूप में, पढूँगा ?

"Mahendra Bolilo, "E toh Desh, e toh Maa noy". Bhabananda Bolilo, "Amra onno maa manina, janani jonmobhumishyo, sarbarupi gariyoshe. Amra boli jonmobhumi jononi, amader maa nei, baap nei, bhai nei, bondhu nei, stree nei, putra nei, ghor nei, bari nei, amader ache kebol sei sujalaam sufalaam malayaj sheetalaam sasyashyaamalaa". Tokhon bujhiya Mahendra Bolilo "tobe abar gao. Abar gao".

Which means ?Mahendra exclaimed, ?Your narration is about the country. This is not about the mother.? Bhabananda replied, ?The only mother we worship is the motherland. We don?t have parents, brother, wife, friends, children or kin or even a house ? we only have the Motherland which is rich and prosperous in natural resources.? Mahendra understood everything and asked, "Then please sing again."

महेन्द्र ने समझ लिया और उन्होंने कहा, अच्छा भवानन्द, फिर से मुझे एक बार गाकर सुनाओ।

सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज शीतलाम्,

शस्य श्यामला मातरम्, वन्दे माऽऽऽऽऽऽऽतरम् ॥

This is the way it was sung for the first time in *Deshraga* in *?Anandmath?*. ?आनंदमठ? में इस पंक्ति में भवानंद कहते हैं कि हमारी पत्नी नहीं है, हमारा पुत्र नहीं है, कोई हमारी माता नहीं है, कोई हमारा पिता नहीं है, मेरा घर नहीं है, मेरा कोई संसार नहीं है, मेरी एक ही जननी है, वह है - ?वंदे मातरम्,? सुजलाम्, सुफलाम् भारत माँ ही तो मेरी माँ है।

मुझे दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि आज हम उस विषय पर चर्चा कर रहे हैं। उस पर आज हम चिंता कर रहे हैं। आज यहां तुष्टिकरण की राजनीति के विषय में जो बात हुई, यहां कुछ संसद सदस्यों ने अपने विषय को रखा। उस विषय को तोड़ने-मोड़ने की भी कोशिश की गई। यह कहा गया कि सुभाष चंद्र बोस जी ने जवाहर लाल नेहरू जी को चिट्ठी लिखी थी, जिसके आधार पर नेहरू जी ने स्पष्टीकरण दिया था। मैं कहना चाहूंगा कि सुभाष चंद्र बोस जी ने नेहरू जी को इसलिए चिट्ठी लिखा था, क्योंकि कांग्रेस वर्किंग कमेटी की मीटिंग कोलकाता में 26 अक्टूबर, 1937 में होने वाली थी।

उससे पहले 9 अक्टूबर को उसका एजेंडा आया था। एजेंडे में लिखा हुआ था कि सीडब्ल्यूसी इस बार तय करेगी कि ?वंदे मातरम्? का क्या करना है, इसे रखना है या विसर्जित कर देना है। सुभाष चंद्र बोस तड़प उठे थे। उन्होंने तड़पते हुए क्या लिखा था, उसे मैं पढ़ना चाहूंगा। मैं यह किताब पढ़ रहा हूं - वंदे मातरम् - दी बायोग्राफी ऑफ ए सॉन्ग - सब्यसाची भट्टाचार्य। इस किताब में लिखा है - While writing to you, I also plan to write to Jawaharlal Ji. वह टैगोर जी को लिख रहे हैं। Discussions are ongoing in the Congress circles on the subject of *Vande Mataram.* On 26th October 1937, the Congress Working Committee at their meeting in Calcutta will address the issue. Perhaps the Committee will decide to discard the song. I do not know your opinion in this matter and that is why I write to you. In Bengal, and among Hindus outside of Bengal, great excitement has been caused and I write to you to know what you feel. यह सुभाष जी ने लिखा था। अब मैं यहां पर उद्धृत करूंगा कि पंडित नेहरू ने ?वंदे मातरम्? के लिए क्या-क्या कहा है। यह सब कुछ इस किताब में ऑन रेकॉर्ड हैं। इसे मैं पढ़ रहा हूं। Nehru had only recently read the novel Anandmath, only six days before the Working Committee meeting.उन्होंने केवल छह दिन पहले ?आनन्द मठ? आनन-फानन में पढ़ लिया। उसके बाद नेहरू जी ने चिट्ठी लिखा। Nehru writes on 20th October 1937: ?I have managed to get an English translation of Anandmath. I am reading it at present to get the background of the song. It does seem that this background is likely to irritate the Muslims. I do not understand it without the help of a dictionary. आप चिंता कीजिए। नेहरू देश के प्रथम प्रधानमंत्री थे। वे ?आनन्द मठ? जैसी महान किताब, बंकिम ऋषि के उस महान ग्रंथ को आनन-फानन में छह दिन पहले पढ़ रहे थे, ताकि ?वंदे मातरम्? को रखना है या विसर्जित करना है, उसका वह निर्णय ले सकें। आप सोच कर देखिए कि भारतवर्ष के साथ यह किस प्रकार की धृष्टता थी। पंडित नेहरू जी कहते हैं कि मैं तो डिक्शनरी के बगैर ?वंदे मातरम्? समझ भी नहीं सकता हूं। एलओपी का भी वही हाल है, तभी आज वह

नदारद हैं। बिना डिक्शनरी के यह वंदे मातरम् क्या है, वे समझ भी नहीं सकते हैं। धन्यवाद है कि माननीय प्रधानमंत्री जी ने आज उनको मौका दिया है। कुछ लोगों ने घर में डिक्शनरी पढ़ कर आज यहां भाषण किया है, वरना अभी तक ?वंदे मातरम्? का अर्थ भी समझ में नहीं आता। आगे नेहरू जी क्या कहते हैं, उसे मैं पढ़ कर आपको सुनाऊंगा। नेहरू जी के सब कुछ कहने के बाद कांग्रेस वर्किंग कमेटी की मीटिंग होती है। रिजोल्यूशन मेरे हाथ में है, वह इस किताब में है। वंदे मातरम् को लेकर कांग्रेस वर्किंग कमेटी की जो रिजोल्यूशन है, उसमें बहुत कुछ है, लेकिन मैं कुछ पोर्शन पढ़ रहा हूं। The other stanzas of the song are little known and hardly ever sung. They contain certain illusions and a religious ideology which may not be in keeping with the ideology of other religious groups in India. The Committee recognizes the validity of the objections raised by the Muslim friends to certain parts of the song. While the Committee have taken note of such objections insofar as it has intrinsic value, the Committee wishes to point out that the modern evolution of the use of song as part of national life is of infinitely great importance. इसमें मैं आगे पढ़ता हूं। Taking all things into consideration therefore, the Committee recommended that whether the Vande Mataram is sung at national gatherings, only the first two stanzas should be sung with perfect freedom to organizers to sing any other song of any unobjectionable character.मतलब उनके मन में था कि ?वंदे मातरम्? ऑब्जेक्शनेबल है और ऑर्गनाइजर्स के ऊपर छोड़ दिया गया कि आप कोई और गाना भी गा सकते हैं, जो कि ऑब्जेक्शनेबल नहीं है।

बार-बार आप देखिए नेहरू जी का क्या कहना है? नेहरू जी, सरदार जाफरी को चिट्ठी लिखते है- ?Nehru told Sardar Jafri that the song contains too many difficult words which people do not understand and the ideas.?

मैं रिपीट कर रहा हूँ, इसे ध्यान से सुना जाए, नेहरू कह रहे हैं- ?Its contents are out of keeping with the modern notions of nationalism and progress.?

वंदे मातरम् में नेहरू कहते हैं, जो आइडियाज़ निहित हैं, वो मॉडर्न इंडिया के आइडियाज़ नहीं है, वो मॉडर्न नेशनलिज्म के आइडियाज नहीं हैं, इसलिए मैं चिंता में हूँ कि मुझे वंदे मातरम् को रखना है या नहीं रखना है। आप सोचकर देखिए देश के प्रथम प्रधानमंत्री, जिसके विषय में अभी माननीया प्रियंका जी ने भी बहुत कुछ बताया कि वन्स एंड फार ऑल नेहरू जी के ऊपर चर्चा हो जाए। अगर वन्स एंड फार ऑल नेहरू जी के ऊपर चर्चा हो गई, तो फिर मैं यही कहूँगा कि कई लोगों की लिगेसी को दबाकर नेहरू की लिगेसी बनाने की चेष्टा की गई है। सरदार पटेल की लिगेसी को दबाया गया है। यहाँ तक दबाया गया कि जब सरदार पटेल के अंतिम संस्कार का समय आया, तब नेहरू जी ने अपने कैबिनेट के कलीग्स को मना कर दिया था कि कोई भी सरदार पटेल की अंत्येष्टि में न जाए, इससे खराब और क्या हो सकता है?... (व्यवधान) केवल सरदार पटेल नहीं, बंगाल भी आज सुने और ओडिशा भी सुने, क्योंकि ओडिशा के भी माननीय सांसद बैठे हैं और पश्चिम बंगाल के भी माननीय सांसद बैठे हैं। सुभाष चन्द्र बोस की लिगेसी को कांग्रेस पार्टी और नेहरू ने दबाया है।

आज प्रियंका जी ने कहा कि इन नेताओं में अहंकार हो गया है, जो इतने बड़े-बड़े लोगों के लिए ऐसे शब्दों के प्रयोग करते हैं । मैं आदरणीय प्रियंका जी से कहना चाहूँगा कि प्रियंका जी अहंकार किसके पास था किस सरकार में था । एनसीईआरटी के वर्ष 2012 की हिस्ट्री की किताब में देखिए, वो जो कॉर्टून है, जिस कार्टून में एक केंचुए के ऊपर बाबा साहब अंबेडकर बैठे हुए हैं, केंचुए में लिखा हुआ है 'कांस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया' और पीछे हंटर लेकर बाबा साहेब को पंडित जवाहर नेहरू कोड़े मार रहे हैं । ये एनसीईआरटी की किताब में नेहरू को बड़ा और बाबा साहेब अंबेडकर को छोटा दिखाने के लिए कांग्रेस पार्टी ने किया था और इनकी हिम्मत है कि ये कहते कि हैं कि हम अहंकारी है । बाबा साहेब अंबेडकर को जो कोड़े मारने के कॉर्टून को एनसीईआरटी की किताब में छाप सकता है, मैं उनसे पूछता हूँ कि आप अहंकारी हैं कि हम अहंकारी हैं?

तीसरा विषय में यहाँ रखना चाहूँगा । In a cartoon also, you cannot insult Baba Sahib Ambedkar. I am sorry that, you feel that you can insult Baba Saheb Ambedkar.

मैं आज श्री महर्षि अरविन्दो जी को कोट करना चाहूँगा । जब महर्षि अरविन्दो जी से उनके शिष्य ने पूछा कि कांग्रेस पार्टी ने कई पैराग्रॉफ हटा दिए केवल दो स्टेन्जा ही रखे हैं । उसमें दुर्गा नाम था, सरस्वती जी का वर्णन था इसलिए हटा दिया गया, तो अरविन्दो जी ने वर्ष 1939 में झन्ना जाते हैं और अपने शिष्य को कहते हैं । मैं कोट कर रहा हूँ । अंग्रेजी में ही कहा था और अंग्रेजी में ही बोलता हूँ । Sir, Aurobindo commented:

"But it is not a religious song, it is a national song and the Durga spoken of is India as the mother. Why should not the Muslims accept it? In the Indian concept of nationality, the Hindu view would naturally be there. If it cannot find the place there, the Hindus may as well be asked to give up their culture in future."

उन्होंने कहा कि क्यों वंदे मातरम् में अगर दुर्गा लिखा गया है, उसमें अगर हिन्दू व्यू भी है, तो इतना कॉम्प्रोमाइज करके घबराने की क्या बात है? स्वाभाविक है, यह भारतवर्ष है, इस भारतवर्ष में हिन्दू व्यू आएगा ही, सनातन का व्यू आएगा ही । क्यों नहीं आए, क्यों नहीं आए? अनादिकाल से जो गंगा अविरल बह रही है, जो विचारधारा अविरल बह रही है, उस विचारधारा को हम शर्मिंदा होकर खंडित क्यों करें?

महात्मा गांधी जी ने क्या कहा था, आप वह भी सुन लीजिए । महात्मा गांधी जी ने कहा था-

> ?No matter what source was and how and when it was composed, it has become a most powerful battle cry among the Hindus and Musalmans of Bengal during the partition days. It was anti-imperialistic cry. As a lag, when I knew nothing of Anandmath or even Bankim, its immortal author, Vande Mataram had gripped me and when I first heard it, sang it, it has unfurled me.?

I associated the purest national spirit with it. It never occurred to me that it was a Hindu song or meant only for the Hindus. Unfortunately, now we have fallen on evil days. मैडम मैं बस दो मिनट लूंगा।

?त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी कमला कमलदलविहारिणी वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम् नमामि कमलां अमलां अतुलां सुजलां सुफलां मातरम्। वन्दे मातरम्।?

अंत में मैं मेरे बंगाल के साथियों से कहना चाहूंगा, क्या मां दुर्गा का नाम लेना सांप्रदायिकता है? बंगाल और ओडिशा हम सब एक संस्कृति, महाप्रभु जगन्नाथ जी को मानने वाले लोग हैं। 100 वर्ष पहले श्री बीरेंन्द्र कृष्ण भद्र ने महालय का वह आरती गाया है, जो हर बंगाली, हर ओडिया महालय के दिन सुबह पांच बजे उठ कर सुनता है। उसमें बीरेंद्र कृष्ण भद्र कहते हैं -

?त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका, सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता। अर्धमात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषत:। त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा।?

अर्थात् हे मां तू ही जननी है। क्या बंगाल दुर्गा को जननी कहने से डरेगी? क्या बंगाल की टीएमसी, ममता बनर्जी जिन्ना के आगे झुकेगी? मैं पूछता हूं, दुर्गा के आगे झुकना है या जिन्ना के आगे झुकना है। यह निर्णय टीएमसी करे। बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीय सभापति : श्री आगा रूहुल्लाह मेहदी जी।

? (व्यवधान)

***m58श्री आगा सैय्यद रूहुल्लाह मेहदी (श्रीनगर) :** मैडम चेयरपर्सन, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया इस डिबेट में हिस्सा लेने के लिए आपने समय दिया। सुबह से नेशनल सॉन्ग वंदे मातरम् पर डिस्कशन हो रही है। मैं यह समझता हूं कि इस मुल्क में इस नेशनल सॉन्ग के साथ न किसी का ऐतराज है, न कोई दो राय है। इस सॉन्ग को लेकर हर किसी का ऐहतराम है, मगर मसला सिर्फ तब पेश आता है, जब सुबह से बीजेपी और उनकी तरफ वाली पार्टियों की तरफ से तकरीरें शुरू होती हैं। जब यह कहा गया कि हिन्दुस्तान में रहना है तो वंदे मातरम् गाना है। यह कहा गया कि आप तभी इस मुल्क के बाशिंदे हो, जब आप ये गाना गाओ, ऐतराज तब शुरु होता है। आप वंदे मातरम् को नेशनल सॉन्ग मानते हैं, हम सभी मानते हैं। आप गाते हैं, हम नहीं गा सकते हैं। इसकी एक वजह है और उस वजह की आजादी हमें इस मुल्क की आईन ने ही दी है। कभी-कभी कुछ मामलों में दो चीजों के दरम्यान क्लैश होता है- एक नेशनल कॉन्सेप्ट और आपकी रिलीजियस फेथ। यह यूनिवर्सल है, इटरनल फैक्ट है। चाहे किसी भी मजहब से कोई भी वाबस्ता हो। मुसलमान हो, हिन्दू हो, सिक्ख हो, वह इटरनल आइडेंटिटी अपने मजहबी अकीदों को मानता है। वह अपनी मजहबी अकीदों को प्रायोरिटी देता है। मैं एक छोटा-सा उदाहरण दूंगा, इस मुल्क में पिछले कुछ वर्षों से सिटीजनशिप छोड़ने की तादाद लाखों में है। उनमें मैजोरिटी हिन्दू धर्म से वाबस्ता लोग हैं, जिन्होंने दूसरे मुल्कों में सिटीजनशिप ली है और इस मुल्क की सिटीजनशिप को वालंटियरली छोड़ा। मगर जब उन्होंने अपनी इस टेम्परी आइडेंटिटी को तब्दील किया, नेशनेलिटी को तब्दील किया। क्या उन्होंने अपनी रिलीजियस आइडेंटिटी को तब्दील

किया? क्या वे हिन्दू से किसी और मजबह में तब्दील हुए ? नहीं। उन्होंने टेम्पररी आइडेंटिटी को तब्दील किया, मगर इटरनल आइडेंटिटी को उन्होंने थामे रखा। क्योंकि वह उनके लिए इंटरनल आइडेंटिटी है। मजहब, धर्म इंटरनल आइडेंटिटी है, इंटरनल बिलिफ है। कल हम सब इस दुनिया से चले जायेंगे। पासपोर्ट, आधार कार्ड यहीं पर छोड़ कर चले जायेंगे। ये जब जायेंगे, तब वह अपने साथ धार्मिक काम, जो काम किये हैं, उसे साथ में ले जायेंगे।

जब मैं इस दुनिया से चला जाऊंगा तो पासपोर्ट, आधार कार्ड, टेम्परेरी आइडेंटिटी यहीं पर रह जाएगी। मेरी इटरनल आइडेंटिटी, मेरी मज़हबी आइडेंटिटी, मेरी मज़हब के अकाइद मेरे साथ चलेंगे, जिस तरह इनके साथ जाएंगे। वह इटरनल आइडेंटिटी है। जब यह क्लेश क्लैश सामने आता है तब हमें कॉन्स्टिट्यूशन ही आज़ादी देता है कि आपकी रिलिजस फंडामेंटल जो फ्रीडम है, आप उस रिलिजस फ्रीडम को इस मुल्क में कॉन्स्टिट्यूशन के हवाले से एक्सरसाइज़ कर सकते हैं। वंदे मातरम् का जब मसला पेश आता है और यह कहा जाता है कि आपको यह जबरदस्ती गाना पड़ेगा, तब हम यह कहते हैं कि आप गाएं, हम एहतराम देते हैं। नेशनल सॉन्ग है, हम उसका एहतराम करते हैं, इसमें दो राय नहीं है। आप गाएं हम एहतराम के लिए खड़े हो जाएंगे, मगर आप यह चाहेंगे कि हम भी गाएं तो मुमकिन ही नहीं है, हो ही नहीं सकता है। ? (व्यवधान) सब्र कीजिए, सुबह से इतने लोग बोल रहे हैं।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : माननीय सदस्य, आप चेयर को एड्रेस करें।

? (व्यवधान)

श्री आगा सैय्यद रूहुल्लाह मेहदी : जवाब सुनने का भी माद्दा रखो।? (व्यवधान) आप गाइए, आप बोलिए नेशनल सॉन्ग है। इसको कोई दो राय नहीं है। मगर हम पर थोपिए मत। हमें कॉन्स्टिट्यूशन इसकी आज़ादी देता है। आप खुद कहते हैं कि वंदे मातरम् ईजाद ही आज़ादी के लिए हुआ। बेशक हुआ, लेकिन आज़ादी किस चीज़ के लिए? आज़ादी इस चीज के लिए हिन्दू के हिन्दू होने की आज़ादी और इसी तरह से मुसलमान के मुसलमान होने की आज़ादी। सिक्ख के सिक्ख होने की आज़ादी और वह आज़ादी आप मुझ से छीन नहीं सकते हैं। किसी नाम पर नहीं छीन सकते हैं। किसी दबाव में नहीं छीन सकते हैं। किसी भी सिक्ख से उसके मज़हब की आज़ादी नहीं छीन सकते हैं। किसी भी हिन्दू से उसके मज़हब की आज़ादी नहीं छीन सकते हैं। किसी भी मुसलमान से उसके मुसलमान होने की आज़ादी नहीं छीन सकते हैं। कोई भी दबाव मुझे मजबूर नहीं कर सकता है। आप गाइए और हमें वह आज़ादी दे दीजिए। यह मज़हबी आज़ादी मुझे आपसे दूर नहीं करता। वही मज़हब जो मुझे कहता है लकुम दीनुकुम वलीया दीन। आपके लिए आपका दीन, मेरे लिए मेरा दीन। जिसको कॉन्स्टिट्यूशन ने आज़ादी दी, यह कहकर कि रिलिजियस फ्रीडम फंडामेंटल राइट है। हमारा कॉन्स्टिट्यूशन हमारे कुरान की उसी आयत की तर्जुमानी करता है।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : माननीय सदस्य, प्लीज़ चेयर को एड्रेस कीजिए।

श्री आगा सैय्यद रूहुल्लाह मेहदी : मैडम, मुझे दो मिनट दे दीजिए। कॉन्स्टिट्यूशन भी इसकी तर्जुमानी करता है कि आप अपने दीन पर चलिए और हमें अपने दीन पर अमल करने की आज़ादी दे दीजिए, आप ही की तरह। बात ज़बरदस्ती की है,

बात किसी और चीज की नहीं है।

माननीय सभापति : आप तीस सेकेंड में अपनी बात कम्प्लीट कीजिए।

श्री आगा सैय्यद रूहुल्लाह मेहदी : मैडम, मैं एक मिनट में पूरा कर रहा हूं। यह डिबेट सिर्फ और सिर्फ इसलिए हो रहा है कि जब हिन्दुस्तान का हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख इनसे पीने के लिए साफ पानी मांगे, सांस लेने के लिए साफ हवा मांगे, रोज़गार मांगे, जब इनसे महंगाई के बारे में जवाब मांगे, जब इनसे रोजगार मांगे तब ये सिर्फ यह बोल सकें कि रोज़गार के बारे में बात मत करो, वो देखो मुसलमान, उसको हमने वंदे मातरम् गाने के लिए मजबूर किया। वो देखो मुसलमान, हमने उसकी मज़हबी आज़ादी को खत्म किया। मुसलमान को दबाने की आढ़ में आप अपनी नालायकी छुपाना चाहते हैं और इस मुल्क पर राज करना चाहते हो। उसकी कुर्बानी मुसलमान को बनाना चाहते हो। मुसलमान इस बेगैरती पर कुर्बान कभी नहीं होगा। हमने इस मुल्क की आज़ादी के लिए खून दिया है और इस मुल्क में आज़ादी को बचाने के लिए भी अगर खून देना पड़े तो हमें देंगे। हम उनके साथ भी लड़े हैं और आपके साथ अगर हजार साल भी लड़ना पड़े तो हम लड़ेंगे। उसी गैरत से लड़ेंगे, उसी जज्बे से लड़ेंगे।? (व्यवधान)

***m59SHRI SELVARAJ V. (NAGAPATTINAM):** Hon. Chairperson Madam, Vanakkam. Thank you for allowing me to take part in this discussion. Vande Mataram is a slogan. It is an ideology; a feeling; a moment of pride; a song and a mantra. The meaning is I bow to you, my motherland. This song was written by Shri Bankim Chandra Chatterjee in Bengali in the year 1875. Gurudev Rabindranath composed music for this song. We are celebrating today the 150th anniversary of this song. But while celebrating we should not blame Congress Party and the Opposition parties. Our country India is particularly divided in the name of caste, religion and creed. Unity of our country is our motto. Saint Bavanandar who attained sainthood to save this nation said that the country where we are given birth should be praised as our motherland and tributes are to be paid to it.

This is a song of tribute to motherland. Swami Vivekanand wanted to read Anandha Math so as to read about Vande Mataram. Bankim Chandra Chatterjee wanted us to worship the motherland. There is aspect of love in politics. Sri Aurobindo said that love is expressed as the feeling towards nation, its citizens; its creed; its pride and happiness. It was the time when Bengal is seen in the form of Goddess Kali and revolutionary activities were carried out in the name of socio-nationalism. It was that time when Sikhs in Punjab paid homage to Guru Gobind Singh while singing songs in his praise. In Mumbai, the land of Tilak, revolutionary activities were carried out by praising and saluting the great Maratha Warrior Maharaja Shivaji and through Ganapathi worship. In Tamil Nadu Poet

Mahakvi Bharathi and several leaders worshipped Goddess Sakthi and spearheaded the movement of extremist nationalism and revolutionary ideas.

We should look at how Mahakavi Bharathi looks at Motherland and how he worships her. ? Our mother India which has 30 Crore people; but has only one face. Our mother India has 18 languages but her thought is one?, Mahakavi Subramania Bharathi said. In Tamil Nadu, leaders like Mahakavi Subramania Bharathi, V.O. Chidamabaranar who started Swadeshi Ship Company, Subramania Siva, Tiruppur Kumaran who is called as the saviour of national flag, Vanchinathan who shot dead Ash Durai, Anjalai Ammal who fought against the British with lots of courage, have all sung this Vande Mataram song during the freedom struggle at home and in streets. British banned this song. Then again people sang this song beyond that ban. At the time when we discuss this issues, there are several other issues which are less discussed. I urge that those issues have to be taken up for discussion. But without discussion the pertinent issues, we are having this celebration on 150 years of Vande Mataram. Particularly in areas of Tamil Nadu including Nagappattinam, 31 fishermen have been arrested by Sri Lankan Navy and are languishing in places which are difficult to live. I urge that these fishermen should be immediately released and brought back to Tamil Nadu soon. Similarly Ditwah cyclone has devastated the lives of several thousands of people living in Delta districts such as Nagappattinam, Thanjavur and Tiruvarur. People are living here without any relief measures. I urge that a central team should be sent to the cyclone affected areas and whatever demands are put by Tamil Nadu, the Union Government should come forward to fulfill those demands at the earliest. Similarly digitally the enumeration is being done and I request you that changes are to be made in this regard, Bharathiyar, sang Vande Mataram song in Tamil in an appreciable manner. I recite before you some lines of this song.

Let us say Vande Mataram; Let us bow before mother of our State.

Let us chant Vande Mataram

Let us not think about castes and religions;

As we have been given birth in this great nation;

Be it Brahmins or the ones belonging to other Castes, All are one.

Let us chant Vande Mataram

Let us bow before our Mother of State and country

We can have thousands of Castes, but how can a foreigner come to teach us Juistice

We can have thousands of Castes, but how can a foreigner come to teach us Juistice

We were given birth thirugh one mother

even if we fight amongst us we are borthers

Let us say Vande Mataram

Let us bow before our Mother of our State

Let us Chant Vande Mataram; Let us say Vande Mataram.

Thank you. Jai Hind.

***m60SHRI KALYAN BANERJEE (SREERAMPUR):** Thank you hon. Chairperson, Madam, it has been just sung.

As we celebrate 150 years of this timeless masterpiece, let us remember, great nations are not built by monuments or markets alone. They are built by the stories they choose to honour, the values they choose to preserve, and the songs they choose to pass on to the next generation.

If we want our children to inherit not only a prosperous India but a soulful India, then we must pass down not just the words of Vande Mataram, but the sense of responsibility it awakens.

As we stand at this 150 year milestone, let us rise once again not as spectators of history, but as carriers of its flame. Let us say with the same depth, the same modesty, and the same unshaken pride that our freedom fighters once felt ? Vande Mataram, I salute thee, Mother.

Madam, today?s debate was commenced with a political undertone. Today, we gather not for a ritual, not for a formality, but to honour 150 years of a song that once held our entire freedom movement together like a spine. A song that travelled from Bengal to the rest of India not as a poem, but as a pulse ? Vande Mataram.

When Bankim Chandra wrote those two words in 1875, he could not have known that one day they would rise higher than any speech, any slogan, any political promise. He was writing quietly, almost secretly. No empire could defeat it. No jail could silence it. No bullet could over power it. Because this song was not created for politics, it was created for the soul. But unfortunately, today, it has been made a political debate purpose.

Freedom fighters did not sing Vande Mataram to show power. They sang it to remember who they were. They sang it as they walked to jail, as they faced lathis, as they burnt foreign cloth, as they marched barefoot under the burning sun with only ? the strength of loving their motherland.

Today, 150 years later, we must ask ourselves an honest question: Are we worthy inheritors of that legacy, the resilience of a civilisation that had endured a thousand storms and still stood unbent?

When the British banned its public recital, the song became even more dangerous and even more beloved. It was whispered in the prison cells by young revolutionaries who did not fear death. It was sung on streets during the Swadeshi movement when common people found uncommon courage. It was carried on the lips of protesters who had nothing in their hands except the trembling but invincible power of hope.

Subhash Chandra Bose, Bhagat Singh, Rash Behari Bose, Chittaranjan Das, Aurobindo, leaders of different temperaments, but hearts tuned to the same rhythm ? all found their fire stoked by these very words. This was not merely a song, it was a heartbeat shared by the millions.

It was a National Song in spirit before it was in status; before India had a Constitution; before India had a Parliament, before India even had a flag of its own. *Vande Mataram* means unity. It means not uniformity, but unity; not rhetoric, but responsibility; not loudness, but depth. Perhaps, this is why the Song still moves us. It calls upon a something timeless, the instinctive feelings of belonging somewhere, of being part of a continuum that stretches backwards beyond memory and forward beyond imagination.

On this 150th year, let us not only celebrate the past, let us understand it, interpret it, and carry it forward with the intellectual honesty it deserves. *Vande Mataram* is not just a salute, but a reminder of the Mother whose soil sustains us, whose history humbles us, and whose future

depends on us. It blends Sanskritic imagery with the emotional directions of Bengali. It merges geography with spirituality. It elevates the idea of Motherland from a physical territory to a moral force.

During the Swadeshi Movement, it transformed into a cultural weapon, one that rejuvenated confidence where people had been taught to feel powerless. It united diverse communities, regions, and social backgrounds under one emotional umbrella. And yet, despite its political use, the Song itself remains above politics; its heart, its culture, civilizational, ethical.

Today, in an age of rapid modernization, globalization, and ideological conflict, *Vande Mataram* offers a reminder of what nationhood truly means, not uniformity.

Madam, I will just conclude. Yet, Bankimchandra did not write a national anthem in the modern sense, he wrote a devotional hymn to the lands, to the rivers, to the abundance and the divinity that Indian civilization had always recognized as feminine, as nurturing, as sacred. In that sense, *Vande Mataram* is not merely a literary composition, it is a civilisational metaphor. This Song is structurally remarkable. *Vande Mataram*. I salute the Mother.

Thank you, Madam.

***m61डॉ. प्रशांत यादवराव पडोले (भन्डारा-गोंदिया) :** सभापति महोदया, आज जब हम वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ मना रहे हैं, तो यह केवल एक गीत की वर्षगांठ नहीं है, बल्कि यह भारत की आत्मा, हमारी मातृभूमि की पुकार और हमारी राष्ट्रीय चेतना के जागरण का दिन है। वंदे मातरम्, ये दो शब्द उस समय के महामंत्र बन गए, जब भारत अंग्रेजों की गुलामी में था। इन दो शब्दों ने देश को एक सूत्र में पिरोया। इसने त्याग, बलिदान और मातृभूमि प्रेम की भावना को जन-जन में जाग्रत कराया।

महोदया, महात्मा गांधी ने कहा था कि वंदे मातरम हमारे आंदोलन की आत्मा है। श्री अरविंदो ने इसे भारत माता की दिव्य पुकार कहा था। मौलाना अब्दुल कलाम और खान अब्दुल ने वंदे मातरम् को राष्ट्र की प्रेरणा कहा था।

महोदया, आज डेढ़ सौ वर्षों के बाद वंदे मातरम् की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। यह गीत हमें हमारी मातृभूमि के प्रति कर्तव्य की याद दिलाता है। जब मैं वंदे मातरम् कहता हूं तो सबसे पहले मुझे उस किसान की याद आती है, जो अपनी धरती को अपने खून से सींचता है। उसी धरती मां की फसल कभी बाढ़ में बह जाती है, कभी सूखे में जल जाती है, कभी बेमौसम बारिश से टूट जाती है, तो कभी रोगों की मार से बर्बाद हो जाती है। 2,359 रुपये गुणा 16, अगर एक किसान की आमदनी देखते हैं तो वह 37 से 38 हजार रुपये होती है।

उसका खर्च 25,000-30,000 प्रति एकड़ है, अगर हम प्रतिदिन की आय देखें तो मात्र 40 रुपये है। क्या यही सपना स्वतंत्रता सेनानियों ने देखा था, जिन्होंने हमारे लिए बलिदान दिया? मोदी जी, आपने कैसा देश बना दिया, जहां किसान अपनी बेटी की शादी नहीं कर पाता, अपने बच्चों की पढ़ाई पूरी नहीं करा पाता और अपनी पत्नी की बीमारी का इलाज नहीं करा पाता। जब सारे रास्ते बंद हो जाते हैं तो वह किसान उसी तरह से बलिदान करता है जिस तरह से स्वतंत्रता सेनानियों ने हंसते-हंसते फांसी का फंदा पहन लिया था। पूरे देश के अन्नदाता की स्थिति कितनी दर्दनाक है कि आज वह अपनी मां की खातिर प्राण त्याग देता है। मोदी जी, अगर आज ?वंदे मातरम्? को सच्चे अर्थां में जीना है, सबसे पहले इस धरती मां के पुत्रों यानी किसानों को बचाना होगा। ?वंदे मातरम्? हमें केवल धरती माता का स्मरण नहीं कराता है बल्कि हमें हर उस रूप की रक्षा की जिम्मेदारी देता है, जिसे हम मां कहते हैं।

आज मुझे मणिपुर की महिलाएं याद आती हैं, जिन्हें हिंसा और जातीय तनाव में सुरक्षा के अभाव में नग्न कर दिया था। उनकी वेदना शब्दों में बयान नहीं की जा सकती है। मुझे कामकाजी महिलाएं याद आती हैं, जो रोजगार से लौटते समय भूखे भेड़ियों जैसी मानसिकता वाले लोगों का शिकार बन जाती हैं। दलित महिलाओं पर अत्याचार की घटनाएं हर दिन बढ़ती जा रही हैं। जब देश की बेटी सुरक्षित नहीं है तो भारत माता कैसे सम्मानित होगी? जिस देश में मां के दूसरे पुत्र यानी दलित अपमानित हों, उस देश में ?वंदे मातरम्? का नारा खोखला लगता है। इस समय देश की हालत ठीक नहीं है, देश में बेरोजगारी का संकट बढ़ रहा है। देश के युवा मातृभूमि के लिए योगदान देने के लिए उत्सुक हैं लेकिन उन्हें सैनिक नहीं अग्निवीर बना दिया जाता है और चार साल बाद सेना से निकाल दिया जाता है। महंगाई पूरी कमाई को खा जाती है। अन्नदाता, किसान और गरीब टूट रहे हैं। देश में सांप्रदायिक तनाव बढ़ रहा है। ?वंदे मातरम्? का जो गीत जोड़ता था, अब समाज को बांट रहा है। पर्यावरण विनाश की चरम सीमा पर है। हम नदियों को मां कहते हैं तो फिर मां क्यों प्रदूषण से दम तोड़ रही है? विकास के नाम पर धरती मां का अस्तित्व ही खतरे में डाला जा रहा है। चुनाव आयोग जैसी संस्थाओं को कमजोर किया जा रहा है। पत्रकार हो या समाज सेवी हो, सरकार के खिलाफ उठने वाली हर आवाज को दबा दिया जाता है।

महोदया, ?वंदे मातरम्? तब सार्थक होगा, जब किसान सुरक्षित होगा, दलित सम्मानित होगा, महिलाएं सुरक्षित होंगी, युवाओं को रोजगार के उचित अवसर मिलेंगे, जनता को न्याय मिलेगा, देश में कानून का राज रहेगा और सरकार आलोचना को सुनने का साहस दिखाएगी। ?वंदे मातरम्? केवल देश की भूमि को प्रणाम नहीं है, जनता के हर रूप को प्रणाम है जो इस देश को जीवित रखता है। मिट्टी में मां है, किसान में मां है, बेटी में मां है, दलित में मां है। ?वंदे मातरम्? कहने का हक तब कमाएंगे जब हर मां का सम्मान सच में निभाएंगे। ? (व्यवधान) मोदी जी आपातकालीन की बात करते हैं, वर्ष 2047 की बात करते हैं। हमें संविधान सिखाता है। ? (व्यवधान) हम भारत के लोग हैं, कहीं ऐसा न हो कि हम अडाणी के लोग बन जाएं। ? (व्यवधान)

अंत में, मैं अपनी बात समाप्त करना चाहूंगा। मिट्टी की मोहब्बत में जो आंसू बहा न पाए, वो क्या समझेंगे ?वंदे मातरम्? का सच्चा अर्थ क्या है?

वंदे मातरम्।

***m62डॉ. राजकुमार सांगवान (बागपत) :** आपने मुझे राष्ट्रीय गीत ?वंदे मातरम्? के 150 वर्ष पूर्ण होने पर चर्चा में भाग लेने का अवसर प्रदान किया, मैं इसके लिए आपका आभार व्यक्त करता हूं।

मैं सदन में एक ऐसे विषय पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं, जो हमारी राष्ट्रीय आत्मा की गहराई से जुड़ा हुआ है। ?वंदे मातरम्?, ये दो शब्द मात्र अभिवादन नहीं, बल्कि सामूहिक पहचान, त्याग, अखंडता और एकता का सामर्थ्यपूर्ण आह्वान है। ?वंदे मातरम्? को 19वीं शताब्दी में बंकिम चन्द्र चटर्जी जी ने रचा और यह स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जन-जन का प्रेरणा स्रोत बना। इसे वर्ष 1896 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में पहली बार गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर द्वारा गाया गया था।

तभी से यह अनगिनत भारतीयों को भयमुक्त होकर अन्याय के विरुद्ध खड़े होने और स्वतंत्र भारत का सपना देखने की प्रेरणा देता रहा। बंकिम बाबू के उपन्यास ?आनंद मठ? से लिया गया यह काव्य हमारी मातृभूमि को केवल एक भौगोलिक सीमा के रूप में नहीं, बल्कि शक्ति, करुणा और समृद्धि की दिव्य प्रतिमूर्ति के रूप में चित्रित करता है। इसकी पंक्तियाँ हमारी धरती की उर्वरता, हमारे लोगों के साहस और हमारी मिट्टी की पवित्रता को सजीव कर देती हैं।

माननीय महोदया, वर्ष 1950 में संविधान सभा ने अपने सामूहिक विवेक से जन-गण-मन को राष्ट्रीय गान का दर्जा दिया, जबकि वंदे मातरम् को राष्ट्रीय गीत के रूप में मान्यता प्रदान की गई। यह कोई समझौता नहीं था, बल्कि हमारे बहुलतावादी मूल्यों का उत्सव था। यह एक स्पष्ट घोषणा थी कि विविधताओं से भरे इस महान राष्ट्र में हम राष्ट्रीय गौरव के अनेक प्रतीकों को सम्मान दे सकते हैं।

महोदया, मैं उत्तर प्रदेश की वीरभूमि, विशेषकर बागपत की पवित्र धरती से हूँ। मातृभूमि के प्रति समर्पण किसी ग्रंथ में लिखा नहीं जाता, बल्कि यह हमारे अस्तित्व, हमारी सांसों और हमारी धड़कनों में रचा-बसा हुआ है। यहाँ का हर युवा, हर किसान, हर माँ-बहन अपने भीतर जन्मजात देशभक्ति लेकर चलते हैं। वंदे मातरम् हमारे लिए केवल एक गीत नहीं, बल्कि हमारी आत्मा का स्वर, हमारे गौरव की पुकार और राष्ट्र निर्माण की अनंत प्रेरणा है।

महोदया, मेरठ की क्रांतिधरा की 10 मई, 1857 की घटना का इतिहास गवाह है, जहाँ से प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन की शुरुआत हुई थी। वहाँ के अनेक क्रांतिकारियों ने बलिदान दिया। बाबा शाहमल जैसे महान क्रांतिकारी, धनसिंह कोतवाल जैसे महान क्रांतिकारी और पंडित कल्याण सिंह, चौधरी धर्मवीर सिंह, मौलाना इरशाद अली, बाबा हरनाम सिंह जैसे अनेक अनाम-गुनाम वीरों ने अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध संघर्ष की ज्योति प्रज्वलित की। यही कारण है कि यहाँ राष्ट्र प्रेम विरासत में नहीं, बल्कि रक्त में बहता है। आज हम इस गौरवशाली सदन में वंदे मातरम् पर पुनर्विचार कर रहे हैं। आइए, इसे अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि हमारी एकता में विविधता के जीवंत प्रतीक के रूप में पुनर्स्थापित करें। इसका उच्चारण स्वैच्छिक देशभक्ति का भाव रहे, न कि निष्ठा की किसी कसौटी का आधार। हमें अपने बच्चों को इसे केवल याद ही नहीं कराना, बल्कि इसके अर्थ, इतिहास और इसकी आत्मा से परिचित कराना चाहिए।

अंत में, मैं उन असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों की भावना को प्रणाम करता हूँ। जिन्होंने इसकी धुन में साहस पाया और इसकी पंक्तियों में अपना मार्ग पाया। वंदे मातरम् हमें सदैव सत्यनिष्ठा, समावेश और मातृभूमि की सेवा के प्रति अटटू समर्पण की प्रेरणा देता रहे।

वंदे मातरम्, जय हिंद।

***m63श्री राजा राम सिंह (काराकाट) :** सभापति महोदया, महात्मा गाँधी जी का उद्धरण बहुत लोगों ने दिया, मैं भी उन्हीं से शुरू करना चाहता हूँ। वंदे मातरम् पर चर्चा में महात्मा गाँधी की बात को याद रखना चाहिए। उस उद्धरण में है कि कोई फर्क नहीं पड़ता कि इसका स्रोत क्या था और यह कैसे और कब रचा गया था।

यह बंगाल के हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सबसे शक्तिशाली युद्धघोष बन गया था। निष्कर्ष के तौर पर संविधान सभा ने वंदे मातरम् पर चर्चा की थी और गीत के पहले दो छंदों को भारत के राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकार किया था, जबकि जन-गण-मन को राष्ट्रगान का दर्जा दिया था। यह बहस सुलझ चुकी है।

आज हमें जिस पर बहस करने की आवश्यकता है, वह यह है कि क्या कंपनी राज के पुनर्जन्म और ब्रिटिशों के साम्प्रदायिक विभाजनकारी एजेंडे की अनुमति दी जानी चाहिए? क्या मतदाता सूची में व्यवस्थित हेर-फेर और डोनाल्ड ट्रंप के जबरन शुल्क-युद्ध के सामने आज के शासकों की अधीनता के खिलाफ भारतीय लोगों की संप्रभुता की रक्षा की जानी चाहिए?

महोदया, मैं यह कहना चाहूँगा कि आज प्रधान मंत्री ने और रक्षा मंत्री ने राष्ट्रगान के रूप में इतने दिनों से जो गाया जा रहा है, उस स्टैंजा को यहाँ उद्धृत नहीं किया। उन्होंने वंदे मातरम् के बाकी स्टैंजाज़ को यहाँ पर उद्धृत किया।

21.00 hrs

जो बहस सैटल हो चुकी है, उसे री-ओपन करने की कोशिश की । यह बहुत ही अफसोसनाक है, यह बहुत ही खेदजनक है। मोदी जी में यह साहस है कि वे एक साथ बिरसा का नाम ले सकते हैं और दूसरी तरफ जंगलों की बड़े पैमाने पर कटाई, उस पर आदिवासियों के अधिकार से वंचना एक साथ कर सकते हैं। वे बाबा साहब अम्बेडकर का नाम ले सकते हैं और एक साथ संविधान का उल्लंघन कर सकते हैं। ये दोनों साहस उनमें हैं और इतने महत्वपूर्ण विषय पर वे साहस के साथ बोल सकते हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि अगर भारतीय राष्ट्रवाद पर बात की जाए, तो सच पूछिए तो भारतीय राष्ट्रवाद एंटी ब्रिटिश मूवमेंट के दौर में यह विकसित हुआ और खड़ा हुआ। इसके पहले तो कहीं पटियाला राज था, कहीं ग्वालियर राज था, कहीं सिंधिया राज था, तो कहीं कुछ राज था। सन् 1857 के पहले एक राजा दूसरे राजा को हराकर अपने राज्य का विस्तार करता था। लेकिन सन् 1857 का जो मूवमेंट था, जो एक एंटी ब्रिटिश मूवमेंट था, जिससे एक भारतीय राष्ट्र की बात शुरू हुई थी। वहाँ से इंडियन नेशन की बात शुरू हुई। आज इस बहस को लाने की जरूरत है कि क्या आज के साम्राज्यवाद के खिलाफ भारतीय राष्ट्र को हम खड़ा कर पा रहे हैं या डोनाल्ड ट्रम्प के सामने सरेंडर कर रहे हैं।

मैं समझता हूँ कि जिस बंगाल में बंग भंग आन्दोलन के बाद यह नारा बन गया था, वह बंग भंग आन्दोलन किस आधार पर हुआ था? वह धार्मिक एजेंडे के आधार पर हुआ था। वह हिन्दू-मुसलमान के आधार पर हुआ था। मैं समझता हूँ कि उसी के खिलाफ, बंग भंग के खिलाफ एक विद्रोह के रूप में बंगाल एक हुआ था, वह आन्दोलन में उतरा था। मैं समझता हूँ कि वह आन्दोलन पूरे बंगाल की भावना का, भाषा की एकता का प्रतिनिधि आन्दोलन था।

आने वाले चुनाव में, फिर से आज कौन-से लोग साम्प्रदायिक विभाजन कर रहे हैं? धर्म के आधार पर कौन देश को बांट रहे हैं? मैं समझता हूँ कि आज फिर बंगाल वंदे मातरम् के गीत को गाते हुए, उस एकता की भावना का इज़हार करेगा और ऐसी ताकतों को, जैसे उस समय पराजित किया था, वह आज भी पराजित करेगा।

मैं आपके सामने अंतिम बात अर्ज़ करना चाहता हूँ कि जो सार्वजनिक मताधिकार की बात थी, व्यक्ति के धार्मिक, जातीय, लिंग और अन्य पहचान के बावजूद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ये सारे लोग एक थे। इसलिए हमारे संविधान ने साफ-साफ कहा था कि संविधान लिंग, जाति, धर्म और भाषा के आधार पर अपने नागरिकों के बीच भेद-भाव नहीं करता है। वह केवल नेहरू की चिंता नहीं थी, आज वह हमारी भी चिंता है कि देश में जितने भी समुदाय हैं, चाहे वे हिन्दू हों, मुसलमान हों, सिख हों, ईसाई हों या बौद्ध हों, उन सारे लोगों की भावनाओं का रिप्रजेंटेशन इस देश में कैसे मिलेगा, यह हमारी भी चिंता है। यह केवल नेहरू की चिंता नहीं थी। आज यह इंडिया गठबंधन की भी चिंता है।

हम यह मानें कि बहुमत की सरकार चलेगी, लेकिन बहुमतवाद की सरकार नहीं चलनी चाहिए। बहुमतवाद की सरकार को भी हमारी बात को सुनना होगा। जाति को सुनना होगा, धर्म को सुनना होगा, भाषा को सुनना होगा। यह नहीं चलेगा, यही फासीज्म है। इसी के खिलाफ देश में हमने बतौर लोकतंत्र की पद्धति को अख्तियार किया था।

इसी के साथ, मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

***m64SHRI SUNIL DATTATREY TATKARE (RAIGAD):** Hon?ble Chairperson, we all are very fortunate to be here in this august House which is a heritage of democracy. These two words were source of inspiration for thousands of freedom fighters which ignited them to fight with britishers. ?Vande Mataram? was the prime cause for them to face any kind of inhuman oppressions and bear all the pains. ?Vande Mataram? holds the love, affection, and feelings which no other words can bear and I believe it firmly Hundreds of freedom fighters fought relentlessly to free our Mother India.

Today, we are celebrating 150 years of power and energy of these two words. I rise here to express my heartfelt feelings and emotions on this 150^{th} year of this powerful mantra. I am very proud that I belong to Raigad and represent it here in Lok Sabha. Chhatrapati Shivaji Maharaj was the first one to establish an independent self-rule State by removing the chains of slavery. Son of the soil Lokmanya Tilak declared that, ?freedom is my birthright, and I shall have it.? I belong to

Mahrashtra and we know that this song is a symbol of commitment, honor, pride and sacrifice. This song is very close to my heart as it is very emotional and patriotic in nature. Shri Bankimchandra Chatterjee wrote this song sitting in a very small darkroom in the year 1875 for the novel ? Anandmath?. He never thought that these two words would tie entire nation one in one strong string. Ours is a very diverse country and that is why it is very difficult to keep all Indians together. But, we come together to fight against british rule by uttering this powerful slogan ?Vande Mataram?. It was not a simple song but a Bugle call for war. During the partition of Bengal in 1905, all protesters shout this slogan to rage the agitation against britishers. Rabindranath Tagore sang this song and all the freedom fighters chose it as their life principle. It was not a political slogan as song but it was an expression of our love for our country. Great freedom fighters and martyrs like Bhagat Singh, Khudiram Bose sung it. We must keep in our minds that this song is a symbol of our heritage, history, freedom movement and sacrifices.

In the year 1927, Architect of Indian constitution, Mahamanav, Bharatratna Dr. Babasahed Ambedkar fought for equal rights at Mahad Lake in Raigad. To commemorate this human rights movement, Hon?ble Prime Minister Shri Narendra Modi should visit Mahad Lake and give a strong message for social equality.

It will complete 100 years of this agitations against untouchability in 2027 and to mark this historic event, we must plan for a Rs 300 crore project for this remarkable place. This year we are celebrating social assimilation and to spread this message of social quality, this Government must come forward.

I, being an MP from Raigad, would like to request you to accept my proposal to celebrate valuable constitution of Dr. Babasaheb Ambedkar in a fight against untouchability.

Jai Hind. Jai Maharashtra.

Jai Vande Mataram.

***m65श्री असादुद्दीन ओवैसी (हैदराबाद) :** मोहतरमा, आपने मुझे एक अहम मौजू पर बोलने का मौका इनायत फरमाया है, उसके लिए आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। बड़े अफ़सोस की बात है कि बड़ी धूमधाम से हुकूमत की तरफ से इस बात को रखा गया है, मगर यहां पर 30 से ज्यादा एमपीज़ मौजूद नहीं हैं।

मैडम, पहले तो मैं वज़ीर-ए-आज़म की इस बात की मज़म्मत करता हूं और उनको बताना चाहूंगा कि उन्होंने जिन्ना के बारे में जो कहा था, हम तो जिन्ना के सख्त मुख़ालिफ़ हैं, इसीलिए मैंने भारत को अपना वतन माना है।

मगर सन् 1942 में आपके प्यारे वीर और जिन्ना की पार्टी ने नॉर्थ-वेस्ट फ्रंटियर, सिंध और बंगाल में मिलकर हुकूमत चलाई थी। उस हुकूमत ने 1.5 लाख हिन्दू और मुसलमानों को अंग्रेजों की फौज में शामिल किया था, ताकि वे लड़ सकें। किसी शायर ने वज़ीर-ए-आज़म के बारे में अच्छा कहा था कि

?फरेब देकर जमाने को पारसा न बनिए,

इन्हें कहो कि वो बंदा बने, खुदा न बने,

अमीर-ए-शहर यही चाहता या हज़रत कि हमारी चीख गले में रहे, सदा न बने।?

मैडम, हमारे वज़ीर-ए-दिफ़ा जनाब राज नाथ सिंह साहब जी ने उम्मुल मोमिनीन और उम्मुल किताब के बारे में बड़ी ही अजीब-ओ-गरीब और तकलीफदेह बात कही है। उम्मुल मोमिनीन उनको कहते हैं, जो हमारे पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पत्नी हैं। वे हम तमाम मुसलमानों की मां हैं, हम उनको तसव्वुर करते हैं। मगर हम उनकी इबादत नहीं करते हैं। हम अपनी मां की इबादत नहीं करते हैं। उम्मुल किताब कुरान है। हम कुरान की इबादत नहीं करते हैं। कुरान अल्लाह का भेजा हुआ कलाम है। उसके बारे में भी शायर ने अच्छा कहा है कि

?खबर नहीं जिन्हें अपने दीन-ओ-मज़हब की,

हमें वे दीन का मतलब सिखाने निकले हैं।?

मैडम, अहम बात यह है कि हमारे मुल्क के आईन का इस लफ्ज़ से आगाज़ होता है कि ?We, the people?. इसका आगाज़ भारत माता के नाम से नहीं होता है। हमारे संविधान की जो प्रस्तावना है, वह कहती है - liberty of thought, expression, belief, faith, and worship. अगर दस्तूर का यह पहला सफा, यह बात करता है, तो फिर कैसे किसी शहरी को किसी खुदा, देवी और देवता की इबादत करने या सज़दा करने पर मजबूर किया जा सकता है। आप ही की पार्टी के सदस्यों ने आज जो बातें कही हैं, वे इसी की हो रही हैं।

मैडम, कॉन्स्टिट्युएंट असेम्बली में मोहतरमा रोहिणी कुमार चौधरी जी ने एक तज़्वीज़ दी थी कि प्रस्तावना किसी देवी के नाम से शुरू हो। उन्होंने खासतौर से वंदे मातरम् का ज़िक्र किया, मगर उसको कुबूल नहीं किया गया। फिर के. वी. कामथ साहब ने एक तज़्वीज़ दी कि ?इट्स सिटिजन्स? को बदलकर ?हर सिटिजन्स? किया जाए और खुदा के नाम से शुरू किया जाए। उस तरमीम को ही मुस्तरद कर दिया। हमारे संविधान का उसूल ये है कि भारत क्या है? वह उसकी आवाम है। आवाम ही कानून की मुसन्निफ है। आवाम की मर्ज़ी ही सबसे बालातर है। आवाम ही हाकिम है। मुल्क किसी खुदा, देवी, देवता या मज़हबी इलामत के नाम से नहीं चलता है और न ही मुल्क किसी एक मज़हब की मिल्कियत है।

इसीलिए बाबासाहेब अंबेडकर जी ने एक बात कही थी। उन्होंने मदर इंडिया के नज़रिए को मुस्तरिद किया था। बाबासाहेब ने एक नई इस्तेला वाज़ह कर दी और कहा ? विकसित भारत। बाबासाहेब अंबेडकर ने यह कहा था। अगर मज़हबी आज़ादी इस आईन का बुनियादी उसूल है, तो सवाल यह पैदा होता है कि उस वक्त जनाब राजेन्द्र प्रसाद जो कि कॉन्स्टिट्युएंट असेंबली के प्रेसीडेंट थे, उन्होंने किस बुनियाद पर वंदे मातरम् को कौमी तराना करार दिया? इस बारे में कोई स्टैट्यूरी रेज़ोल्यूशन नहीं है।

मैडम, मैं आपको बताना चाहूंगा कि ज्यूडिशियरी क्या कहती है। वर्ष 1986 का एक बिजो इमैनुएल केस है, जिसमें विटनेस जेहोआ ने कहा कि मैं नेशनल एंथम के वक्त खड़ी रहूंगी, मगर पढ़ूंगी नहीं। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि उसने कोई गुनाह नहीं किया है। वहीं अश्विनी उपाध्याय का वर्ष 2017 का सुप्रीम कोर्ट एक केस है। उन्होंने कहा कि वंदे मातरम् पर गाइडलाइन्स दी जाएं। सुप्रीम कोर्ट ने उस पर न कह दिया। उसके बाद आप ?प्रिवेंशन और इंसल्ट टू नेशनल ऑनर एक्ट, 1971? पर आ जाइए। इसमें नेशनल सॉन्ग नहीं है, सिर्फ नेशनल इम्बेलम और नेशनल एंथम है। उसके बाद 40वां संशोधन, आर्टिकल 51(क) पर आ जाइए। वह वर्ष 1976 में पास हुआ। उसमें भी इसका कोई ज़िक्र नहीं है।

मैडम मैं आपके सामने बताना चाहूंगा कि हमारे भारत का मज़मुआ क्या है? इसमें हिन्दू हैं, मुसलमान हैं, सिख हैं, ईसाई हैं, जैन हैं, एथिस्ट हैं, मेहनतकश हैं, किसान हैं, गरीब, मज़लूम और दलित लोग हैं। जो तकारीर आज हमने यहां सुनी है और बाहर जो सुनते हैं, अगर भारत को देवी कहना है और उसके आगे सज़दा करना है, तो दरअसल कौमपरस्ती और वतन से मोहब्बत को मज़हब में तब्दील कर रहे हैं। फिर यहां पर बोल रहे हैं कि अगर भारत में रहना है, तो वंदे मातरम् गाना पड़ेगा। यह संविधान के खिलाफ है, सुप्रीम कोर्ट के जजमेंट के खिलाफ है।

मैडम, वंदे मातरम् अगर कौमियत का मियार है, तो सवाल यह है हज़रत मोहानी की कौमियत क्या थी, जिसने इंकलाब ज़िंदाबाद का नारा दिया? अगर यूसुफ मेहर अली ने क्विट इंडिया, साइमन गो बैक का नारा दिया, तो उसकी कौमियत क्या थी? अगर हैदराबाद से मौलवी अलाउद्दीन जो काला पानी में मक्का मस्ज़िद का पहला मुजरिम है और तुरेबाज़ खान, जिसे मारकर उसकी लाश को हैदराबाद में आठ दिनों तक लटका दिया था, उसकी कौमियत क्या थी? इनायतुल्लाह कासी, जिसने मुरादाबाद में अंग्रेजों के खिलाफ जिहाद का फतवा दिया, उन्हें दो दिनों में फांसी की सज़ा दी गई। जब वे फांसी की सजा के लिए वे जा रहे थे, तो मौलाना कासी की ज़बान पर क्या था? वे हमारे रसूलुल्लाह प्रॉफेट की नाद पढ़ रहे थे। वे पढ़ रहे थे कि -

?कोई गुल बाकी रहेगा, न चमन रह जाएगा।

पर रसूलुल्लाह का दीन-ए-हसन रह जाएगा।।?

उनकी कौमियत क्या थी? महमूद उल हसन, हुसैन अहमद मदनी छः महीने माल्टा की जेल की ग्राउंड में पड़े रहे। उनकी कौमियत क्या थी? अल्लामा फ़ज़ल-ए-हक खैराबादी का काला पानी का वह सेल पुकार-पुकार इनसे पूछ रहा है। जो वहीं पर मर गए, जिनकी कब्र वहां पर है, बताओ मेरी कौमियत क्या थी?

मैडम, मैं एक मुसलमान हूं। मैं इस्लाम को मानने वाला बावेकार इंसान हूं। मेरे मज़हब की बुनियादी तालीम तौहीद है। ?ला इलाहा इल्लल्लाह? - नहीं है कोई खुदा सिवाए अल्लाह के। कुरान में अल्लाह क्या बोल रहा है - इय्यका नाअबुदु वा-इय्यका नस्ताआऐन। तुम मेरी इबादत करो और मुझे मानो। यह मुझे कहां से मिल रहा है? आर्टिकल-25 से मिल रहा है। मुझे कहां से मिल रहा है?

Liberty of thought, expression, belief, faith, and worship से मिल रहा है। इसलिए, इसको जोड़ना बहुत ही खतरनाक होगा।

हमारे प्रॉफेट मोहम्मद सालेह अलैहिस्सलाम जब मदीने को गए, तो उन्होंने उस वतन के लिए दुआ की। उन्होंने कहा कि अल्लाह, मदीने की मोहब्बत हमारे दिलों में और इज़ाफ़ा कर दे, मक्के से ज्यादा कर दे। इस्लाम मुसलमान होना, हमारे ईमान में मुल्क की मोहब्बत बीच में नहीं आती। मुल्क से मोहब्बत है और हमेशा रहेगी, क्योंकि ये असीम कुर्बानियां यहां पर शामिल हैं, जिन्होंने जंग-ए-आज़ादी में हिस्सा नहीं लिया, आज अगर वे वतन की मोहब्बत का दर्स देंगे, तो बड़ा गलत होगा।

मैडम, मैं आपके सामने एक चीज पढ़ूंगा। रवींद्रनाथ टैगोर जी ने सुभाष चंद्र बोस जी को लैटर लिखा, किसी ने उसे यहां नहीं पढ़ा। टैगोर साहब ने क्या कहा? ?But Parliament is a place of union for all religious groups, and there the song cannot be appropriate. When Bengali Mussulmans show signs of stubborn fanaticism, we regard these as intolerable. When we too copy them and make unreasonable demands, it will be self-defeating?. मैं इसको ले करूंगा, आप इसे देख लीजिएगा।

मैडम, जितने तक़रीर यहां पर हुए, सब जन-गण-मन पर तनक़ीद किए। मुझे यह कहना पड़ेगा कि जन-गण-मन पर आप लोग इतनी तकलीफ क्यों उठा रहे हैं? आखिर इतनी तकलीफ क्यों है? मैंने जब जाकर देखा, तो मुझे 28 दिसंबर का ऑर्गनाइज़र मैग्ज़ीन का आर्टिकल मिला, जिसमें ऑर्गनाइज़र लिखता है - What is the moral sanction behind Government?s choice of Jana Gana Mana except that it can be made an item of entertainment at the sumptuous parties thrown by Government officials? आप बताइए कि इस पर आप क्या बोलेंगे? फिर उसके क्लाइंट कैसा करते हैं? It will mean we cannot love our motherhood. It will mean that Vande Mataram is buried alive with the words ?Jana Gana Mana? on the tombstone, and that tomb will also be the Jana Gana Mana as the will of the people. इस पर आप क्या बोलेंगे?

मैडम, मैं आपको यह बताना चाह रहा हूं कि वतन की मोहब्बत हमारे लिए बहुत अहम है। मगर, आप हमको यह बताइए कि अभी यहां पर आनंद मठ के बारे में बहुत कुछ कहा गया। मैं आपको सिर्फ दो मिसालें देता हूं। आनंद मठ के पेज नंबर - 79 और 80 को पढ़ लीजिए। इसके बाद सनातन, जहां मुसलमानों के घर पाते थे, उन्हें आग लगा देते थे। आप पेज नंबर - 98 पढ़ लीजिए - हमें सिर्फ इन मुसलमानों को जड़ से खत्म करना है, क्योंकि ये खुदा के दुश्मन बन चुके हैं। फिर आप पेज नंबर - 115 और 116 देखिए। फिर मुख़्तलिफ इलाकों में ये मुसलमानों को सजा देने के लिए भेजे जाते, जहां मुसलमान आबादी नजर आती, जला दिया जाता।

मैडम, फिर आप पेज नंबर - 120 देख लीजिए। बंकिम लिखते हैं कि सनातियों को मालूम नहीं था कि अंग्रेज हिंदुस्तान को निजात दिलाने वाले हैं। ये आप क्यों कर रहे हैं? मैडम, मैं ये पेपर्स ले कर दूंगा। भारत में हमारी आजादी इसलिए आई और बेकरारी रही, क्योंकि हमने मुल्क और मज़हब को एक चीज नहीं बनाया। हमने ऐलान किया कि हमारी मुल्क मुख़्तलिफ तबकाद मज़ाहिब पर मुश्तमिल है। हमारी मुश्तरिका तकदीर हमारी कौमियत का सरचश्मा है। यह खास ज़बान सखबदे-मज़हब नहीं है। अगर वंदे मातरम् का मतन कौम और मज़हब को एक बना देते हैं, अगर हम इसे वफादारी का टैस्ट बनाते, तो फिर मान लीजिए कि गांधी, अंबेडकर, टैगोर, बोस और आजादी के लाखों सिपाहियों की सोच को छोड़कर गोडसे की सोच की हिंदू ? (व्यवधान) मैडम, मैं अपनी बात खत्म कर रहा हूं। ? (व्यवधान) हिंदू कौम परस्तान को इख्तियार करेंगे।

मैडम, मुझे वतन से बेइंतेहा मोहब्बत है और इंशा-अल्लाह हमेशा रहेगी। लेकिन, बावजूद इसके कि मेरी मस्जिद, मेरी इबादतगाह, मेरे कपड़े, मेरे कारोबार पर हमले होते हैं, मगर, मैं फिर भी कहता हूं कि वतन मेरा है और वतन को हम छोड़कर नहीं जाएंगे। हुकबुल वतनी का क्या मुतालिबा है? हुकबुल वतनी यह कहता है कि वतन से मोहब्बत है, जो जुर्म को खत्म करो, गरीबी को खत्म करो, बेरोजगारी को खत्म करो, जबर का खात्मा करो, अमन का गहवारा बनाओ, पाकिस्तान की दहशतगर्दी को खत्म करो, एक्सप्लॉयटेशन को रोको, शरारत को रोको, मुल्क के खिलाफ की जाने वाली साजिश को खत्म करो।

मैडम, भारत एक चमन है, जहां पर हर फूल को खिलना चाहिए। अगर सारे फूल खिलेंगे, तो उनकी खुशबू से ही यह वतन मुअत्तर होगा। लेकिन, अगर इस चमन का माली यह कहेगा कि सिर्फ एक ही फूल खिलेगा, तो मैं जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं कि अगर एक ही फूल खिलेगा, तो वह सेहरा बन जाएगा और माली माली नहीं रहेगा, वह जल्लाद कहलाएगा। ? (व्यवधान)

इसलिए, मैडम, हम उम्मीद करते हैं कि हुकूमत इस पर ज़ोर-जबर न करे। ? (व्यवधान)

मैडम, हम उम्मीद करते हैं कि हुकूमत इस पर ज़ोर ज़बर न करे। मेरा राइट है और यकीनन मैं जानता हूं कि आजादी की लड़ाई में वंदे मातरम् का नारा था। अगर आप इसको ज़बर करेंगे, तो यह संविधान के खिलाफ है। वफादारी का सर्टिफिकेट हमसे मत लीजिए। आपके बुजुर्गों की किसी एक किताब में कहां पर क्या लिखा है, बता दीजिए। मैं एक शेर से अपनी बात को खत्म कर रहा हूं। मैं अपनी बात खत्म कर देता हूं, क्योंकि आप बहुत जल्दी में हैं।

?भारत जिंदाबाद, हिन्दू-मुसलमान जिंदाबाद,

दलित जिंदाबाद, ईसाई जिंदाबाद, आदिवासी जिंदाबाद,

जो किसी खुदा को नहीं मानते, वे भी जिंदाबाद।?

मैडम, हम उम्मीद करते हैं कि इस रूह को आप समझेंगे। क्या आप सिर्फ अपनी आइडियोलॉजी को लेकर चलेंगे? जनाब बंकिमचन्द्र साहब के बारे में मैं आपके सामने डॉक्यूमेंट ले कर रहा हूं कि उन्होंने बीए का एग्जाम पास नहीं किया था।

वह सात मार्क्स से फेल हो गए थे। मैं यह आपके सामने रख रहा हूं। आप जिनको लिटरली जायन्ट बता रहे हैं। ऐसा नहीं है। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।

جناب اسدالدین اویسی) حیدرآباد:(محترمہ آپ نے مجھے ایک اہم موضوع پر بولنے کا موقع عنایت فرمایا ہے، اس کے لئے آپ کا بہت بہت شکریہ۔ بڑے افسوس کی بات ہے کہ بڑی دھوم دھام سے حکومت کی طرف سے اس بات کو رکھا گیا ہے، مگر یہاں پر 30 سے زیادہ ایم۔پیز موجود نہیں ہیں۔

میڈم، پہلے تو میں وزیرِ اعظم کی اس بات کی مذمت کرتا ہوں اور ان کو بتانا چاہوں گا کہ انہوں نے جنّاح کے بارے میں جو کہا تھا، ہم تو جنّاح کے سخت مخالف ہیں، اس لئے ہم نے بھارت کو اپنا وطن مانا ہے۔

مگر سال 1942 میں آپ کے پیارے ویر اورجنّاح کی پارٹی نے نارتھ ۔ ویسٹ فرنٹیر، سندھ اور بنگال میں مل کر حکومت چلائی تھی۔ اس حکومت نے 1.5 لاکھ ہندو اور مسلمانوں کو انگریزوں کی فوج میں شامل کیا تھا، تاکہ وہ لڑ سکیں۔ کسی شاعر نے وزیرِ اعظم کے بارے میں اچھا کہا تھا کہ

فریب دیکر زمانے کو پارسا نہ بنے

انہیں کہو کہ وہ بندہ بنیں خُدا نہ بنے

امیرِ شہر کی یہی چاہتا ہے یا حضرت

ہماری چیخ گلے میں رہے صدا نہ بنے

میڈم، ہمارے وزیرِ دفاع جناب راجناتھ سنگھ جی نے ام المونین اور ام الکتاب کے بارے میں بڑی ہی عجیب و غریب اور تکلیف دہ بات کہی ہے۔ ام المونین انکو کہتے ہیں جو ہمارے پیغمبر محمد ﷺ کی بیوی ہیں۔ وہ ہم تمام مسلمانوں کی ماں ہیں، ہم ان کو تصور کرتے ہیں۔ مگر ہم ان کی عبادت نہیں کرتے ہیں۔ ہم اپنی ماں کی عبادت نہیں کرتے ہیں۔ ام الکتاب قرآن ہے۔ ہم قرآن کی عبادت نہیں کرتے ہیں۔ قرآن اللہ کا بھیجا ہوا کلام ہے۔ اس کے بارے میں بھی شاعر نے اچھا کہا ہے کہ

خبر نہیں جنہیں اپنے دین و مذہب کی
ہمیں وہ دین کا مطلب سکھانے نکلے ہیں

میڈم، اہم بات یہ ہے کہ ہمارے ملک کے آئین کا اس لفظ سے آغاز ہوتا ہے We the Peopleاس کا آغاز بھارت ماتا کے نام سے نہیں ہوتا ہے۔ ہمارے آئین کی جو پرستاونا ہے، وہ کہتی ہے۔ Liberty

اگر دستور کا یہ پہلا صفہ، یہ بات کرتا ہے، تو پھر of thought, expression, belief, faith and worship. کیسے کسی شہری کو کسی خُدا، دیوی اور دیوتا کی عبادت کرنے یا سجدہ کرنے پر مجبور کیا جا سکتا ہے۔ آپ ہی کی پارٹی کے ممبران نے آج جو بات کہی ہے، وہ اسی کی ہو رہی ہے۔

میڈم، کانسٹیٹوینٹ اسمبلی میں محترمہ روہنی کمار چودھری جی نے ایک تجویز دی تھی کہ پرستاوُنا کسی دیوی کے نام سے شروع ہو۔ انہوں نے خاص طور سے وندے ماترم کا ذکر کیا، مگر اس کو قبول نہیں کیا گیا۔ پھر کے۔وی۔کامت صاحب نے ایک تجویز دی اٹس سِٹیزن کو بدل کر ہر سٹیزن کیا جائے اور خُدا کے نام سے شروع کیا جائے۔ اس ترمیم کو ہی مسترد کر دیا۔ ہمارے آئین کا اصول یہ ہے کہ بھارت کیا ہے؟ وہ اس کی عوام ہے۔ عوام ہی قانون کی مصنف عوام ہے، عوام کی مرضی ہی سب سے بالاتر ہے۔ عوام ہی حاکم ہے۔ ملک کسی خُدا، دیوی، دیوتا یا مذہبی علامت کے نام سے نہیں چلتا ہے، اور نہ ہی ملک کسی ایک مذہب کی ملکیت ہے۔

اسی لئے بابا صاحب امبیڈکر جی نے ایک بات کہی تھی۔ انہوں نے مدر انڈیا کے نظریہ کو مسترد کیا تھا۔ بابا صاحب نے ایک نئی اسطلاح واضح کر دی اور کہا ۔ وِکست بھارت۔ بابا صاحب امبیڈ کر نے یہ کہا تھا اگر مذہبی آزادی اس آئین کا بنیادی اصول ہے، تو سوال یہ پیدا ہوتا ہے کہ اس وقت جناب راجندر پرساد جو کہ کانسٹیٹوینٹ اسمبلی کے پریذیڈینٹ تھے انہوں نے کس بنیاد پر وندے ماترم کو قومی ترانہ قرار دیا ؟ اس بارے میں کوئی اسٹیچوری ریزولیوشن نہیں ہے۔

میڈم، میں آپ کو بتانا چاہوں گا کہ جیوڈیشری کیا کہتی ہے، سال 1986 کا ایک بیجوامینول کیس ہے، جس میں وِٹنیس جےہوا نے کہا کہ میں نیشنل اینتھم کے وقت کھڑی رہوں گی، مگر پڑھوگی نہیں۔ سپریم کورٹ نے کہا کہ اس نے کوئی گُناہ نہیں کیا ہے۔ وہیں اشونی اُپادھیائے کا سال 2017 کا سپریم کورٹ کا ایک کیس ہے۔ انہوں نے کہا کہ وندے ماترم پر گائڈ لائنس دی جائیں۔ سپریم کورٹ نے اس پر نہ کہہ دیا۔ اس کے بعد آپ پریوینشن اور انسلٹ ٹو نیشنل اونر ایکٹ، 1971 پر آجائیے۔ اس میں نیشنل سونگ نہیں ہے، صرف نیشنل ایمبلم اور نیشنل اینتھم ہے۔ اس کے بعد چالیسواں امینڈمینٹ، آرٹیکل 51 (اے) پر آجائیے۔ وہ سال 1976میں پاس ہوا۔ اس میں بھی اس کا کوئی ذکر نہیں ہے۔

میڈم، میں آپ کے سامنے بتانا چاہوں گا کہ ہمارے بھارت کا مجوعہ کیا ہے؟ اس میں ہندو ہیں، مسلمان ہیں، سکھ ہیں، عیسائی ہیں، جین ہیں، ایتھکس ہیں، محنت کش ہیں، کسان ہیں، غریب، مظلوم اور دلت لوگ ہیں۔ جو تقاریر آج ہم نے یہاں سُنی ہیں اور باہر جو سنتے ہیں، اگر بھارت کو دیوی کہنا

ہے اور اس کے آگے سجدہ کرنا ہے تو دراصل قوم پرستی اور وطن سے محبت کو مذہب میں تبدیل کر رہے ہیں۔ پھر یہاں پر بول رہے ہیں کہ اگر بھارت میں رہنا ہے، تو وندے ماترم گانا پڑے گا۔ یہ آئین کے خلاف ہے، سپریم کورٹ کے ججمینٹ کے خلاف ہے۔

میڈم، وندے ماترم اگر قومیت کا معیار ہے، تو سوال یہ ہے کہ حسرت موہانی کی قومیت کیا تھی، جس نے انقلاب زندہ باد کا نعرہ دیا تھا؟ اگر یوسف مہر علی نے کوِٹ انڈیا، سائمن گو بیک کا نارہ دیا، تو اس کی قومیت کیا تھی؟ اگر حیدرآباد سے مولوی علاوالدین جو کالا پانی میں مکہ مسجد کا پہلا مجرم ہے اور طرے باز خان، جسے مار کر اس کی لاش کو حیدرآباد میں 8 دنوں تک لٹکا دیا تھا، اس کی قومیت کیا تھی؟ عنایت اللہ کاسی، جس نے مرادآباد میں انگریزوں کے خلاف جہاد کا فتویٰ دیا انہیں دو دنوں میں پھانسی کی سزا دی گئی۔ جب وہ پھانسی کی سزا کے لئے جا رہے تھے تو مولانا کاسی کی زبان پر کیا تھا؟ وہ ہمارے رسول اللہ ﷺ کی نعت پڑھ رہے تھے۔ وہ پڑھ رہے تھے کہ

کوئی گُل باقی رہے گا، نہ چمن رہ جائے گا

پر رسول اللہ ﷺ کا دینِ حسن رہ جائے گا

ان کی قومیت کیا تھی؟ محمود الحسین، حسین احمد مدنی 6 مہینے مالٹا کی جیل کی گراؤنڈ میں پڑے رہے۔ ان کی قومیت کیا تھی ؟ علامہ فضل حق خیر آبادی کا کالا پانی کا وہ سیل پکار پکار کر ان سے پوچھ رہا ہے۔ جو وہی پر مر گئے، جنکی قبر وہاں پر ہے، بتاؤ میری قومیت کیا تھی؟

میڈم، میں ایک مسلمان ہوں۔ میں اسلام کو ماننے والا با وقار انسان ہوں۔ میرے مذہب کی بنیادی تعلیم توحید ہے۔ لا الہ الا اللہ ، نہیں ہے کوئی معبود سوائے اللہ کے۔ قرآن میں اللہ کیا بول رہا ہے۔ ایاک نعبدو وایاک نستعین تم میری عبادت کرو اور مجھے مانو۔ یہ مجھے کہاں سے مل رہا ہے؟ آرٹیکل 25 سے مل رہا ہے۔ مجھے کہاں سے مل رہا ہے؟ Liberty of thought, expression, belief, faith and worshipسے مل رہے ہیں، اس لئے اس کو جوڑنا بہت ہی خطرناک ہوگا۔

ہمارے پروفیٹ محمد صالح علیہ السلام جب مدینے گئے تو انہوں نے اس وطن کے لئے دعا کی۔ انہوں نے کہا کہ اللہ مدینے کی محبت کا ہمارے دلوں میں اور اضافہ کر دے، مکہ سے زیادہ کر دے۔ اسلام میں مسلمان ہونا، ہمارے ایمان میں ملک کی محبت بیچ میں نہیں آتی۔ ملک سے محبت ہے

اور ہمیشہ رہے گی۔ کیونکہ یہ عظیم قربانیاں یہاں پر شامل ہیں، جنہوں نے جنگِ آزادی میں حصہ نہیں لیا، آج اگر وہ وطن کی محبت کا درس دیں گے تو بڑا غلط ہوگا۔

میڈم، میں آپ کے سامنے ایک چیز پڑھوگا۔ رویندر ناتھ ٹیگور جی نے سبھاش چندر بوس جی کو ایک لیٹر لکھا، کسی نے اسے یہاں نہیں پڑھا۔ ٹیگور صاحب نے کیا کہا؟ But Parliament is a? place

of union for all religious groups, and there the song cannot be appropriate. When Bengali Musalmans show signs of stubborn fanaticism, we regard these as intolerable. When we too copy them and make unreasonable demands, it will be self defeating?. میں اس کو لے کروں گا۔ آپ اسے دیکھ لیجئے گا۔

میڈم، جتنے تقریر یہاں پر ہوئے ، سب جن۔گن۔من۔ پر تنقید کیئے۔ مجھے یہ کہنا پڑے گا کہ جن۔گن۔من۔ پر آپ لوگ اتنی تکلیف کیوں اُٹھا رہے ہیں؟ آخر اتنی تکلیف کیوں ہے۔ میں نے جب جا کر دیکھا، تو مجھے 28 دسمبر کا آرگنائزر میگزین آرٹیکل ملا، جس میں آرگنائزر لکھتا ہے۔ What is the moral sanction behind Government?s choice of Jana.Gana.Mana except that it can be made an item of entertainment at the sumptuous parties thrown by Government Officials? آپ بتائیے کہ اس پر کیا بولیں گے؟ پھر اس کے کلائنٹ کیسا کرتے ہیں؟ It will mean the cannot love over motherhood. It will mean that Vande Mataram is buried alive with the words Jana Gana Mana on the tombstone, and the tomb will also be the Jana Gana Mana as the the will of the people. اس پر آپ کیا بولیں گے؟

میڈم، میں آپ کو یہ بتانا چاہ رہا ہوں کہ وطن کی محبت ہمارے لئے بہت اہم ہے۔ مگر، آپ ہم کو یہ بتائیے کہ ابھی یہاں پر آنند مٹھ کے بارے میں بہت کچھ کہا گیا۔ میں آپ کو صرف دو مثالیں دیتا ہوں۔ آنند مٹھ کے پیچ نمبر 79 اور 80 کو پڑھ لیجئے۔ اس کے بعد سناتن، جہاں مسلمانوں کے گھر پاتے تھے، انہیں آگ لگا دیتے تھے، آپ پیج نمبر 98 پڑھ لیجئے، ہمیں صرف ان مسلمانوں کو جڑھ سے ختم کرنا ہے،کیونکہ یہ خدا کے دُشمن بن چکے ہیں۔ پھر آپ پیج نمبر 115-116 دیکھئے۔ پھر مختلف علاقوں میں یہ مسلمانوں کو سزا دینے کے لئے بھیجے جاتے، جہاں مسلم آبادی نظر آتی جلا دیا جاتا۔

میڈم، پھر آپ پیج نمبر 120 دیکھ لیجئے۔ بنکم لکھتے ہیں کہ سناتنیوں کو معلوم نہیں تھا کہ انگریز ہندوستان کا نجات دلانے والے ہیں۔ یہ آپ کیوں کر رہے ہیں؟ میڈم، میں یہ پیپرس لے کر دوں

گا۔ بھارت میں ہماری آزادی اس لئے آئی اور برقرار رہی کیونکہ ہم نے ملک اور مذہب کو ایک نہیں بنایا۔ہم نے اعلان کیا کہ ہمارا ملک مختلف طبقات، مختلف مذاہب پر مشتمل ہے۔ ہماری مشترکہ تقدیر ہماری قومیت کا

سر چشمہ ہے۔ یہ خاص زبان سخاوت مذہب نہیں ہے۔ اگر وندے ماترم کا مطن قوم اور مذہب کو ایک بنا دیتے ہیں، اگر ہم اسے وفاداری کا ٹیسٹ بناتے ہیں تو پھر مان لیجئے کہ گاندھی، امبیڈکر، ٹیگور، بوس اور آزادی کے لاکھوں سپاہیوں کی سوچ کو چھوڑ کر گوڈسے کی سوچ کہ ہندو (مداخلت) میڈم، میں اپنی بات ختم کر رہا ہوں۔ (مداخلت)

میڈم، مجھے وطن سے بے انتہا محبت ہے اور انشا اللہ ہمیشہ رہے گی۔ لیکن با وجود اس کے کہ میری مسجد، میری عبادت گاہ، میرے کپڑے، میرے کاروبار پر حملے ہوتے ہیں، مگر میں پھر بھی کہتا ہوں کہ وطن میرا ہے اور وطن کو ہم چھوڑ کر نہیں جائیں گے۔حب الوطنی کا کیا مطالبہ ہے، حب الوطنی یہ کہتا ہے کہ وطن سے محبت ہے۔ تو جرم کو ختم کرو، غریبی کو ختم کرو، بےروزگاری کو ختم کرو، ایکسپلائٹیشن کو روکو، شرارت کو روکو، ملک کے خلاف کی جانے والی سازشوں کو ختم کرو۔

میڈم، بھارت ایک چمن ہے، جہاں پر ہر پھول کو کھلنا چاہئے۔ اگر سارے پھول کھلیں گے تو ان کی خوشبو سے ہی یہ وطب معطر ہوگا۔ لیکن اگر اس چمن کا مالی یہ کہے گا کہ صرف ایک ہی پھول کھلے گا، تو میں ذمہ داری کے ساتھ کہہ رہا ہوں کہ اگر ایک ہی پھول کھلے گا، تو وہ سہرا بن جائے گا اور مالی مالی نہیں رہے گا، وہ جلّاد کہلا ئے گا (مداخلت)

اس لئے میڈم، ہم امید کرتے ہیں کہ حکومت اس پر زور زبر نہ کرے۔۔ (مداخلت)

میڈم، ہم امید کرتے ہیں کہ حکومت اس پر زور زبر نہ کرے۔ میرا رائٹ ہے اوریقیناً میں جانتا ہوں کہ آزادی کی لڑائی میں وندے ماترم کا نارہ تھا۔ اگر آپ اس کو زبردستی کریں گے تو یہ آئین کے خلاف ہے۔ وفاداری کا سرٹیفکیٹ ہم سے مت لیجئے۔ آپ کے بزرگوں کی کسی ایک کتاب میں کہاں پر کیا لکھا ہے، بتا دیجئے۔ میں ایک شعر سے اپنی بات ختم کر رہا ہوں۔ میں اپنی بات ختم کر دیتا ہوں۔ کیونکہ آپ بہت جلدی میں ہیں۔

بھارت زندہ باد، ہندو مسلمان زندہ باد

دلت زندہ باد، عیسائی زندہ باد آدی واسی زندہ باد

جو کسی خدا کو نہیں مانتے ، وہ بھی زندہ باد

میڈم، ہم امید کرتے ہیں کہ اس روح کو آپ سمجھیں گے۔ کیا آپ صرف اپنی آئیڈیولوجی کو لیکر چلیں گے؟ جناب بنکم چندر صاحب کے بارے میں آپ کے سامنے ڈاکیومینٹ لے کر رہا ہوں کہ

انہوں نے بی۔اے۔ کا ایگزام پاس نہیں کیا تھا۔ وہ سات مارکس سے فیل ہو گئے تھے۔ میں یہ آپ کے سامنے رکھ رہا ہوں۔ آپ جن کو لٹرلی جائنٹ بتا رہے ہیں۔ ایسا نہیں ہے۔ آپ کا بہت بہت شکریہ ---

[

***m66एडवोकेट चन्द्र शेखर (नगीना) :** सभापति महोदया, धन्यवाद । मैं इस सदन का ध्यान भारत के राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् के इतिहास, उसके राष्ट्रीय महत्व और उसकी संवैधानिक स्थिति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। हालांकि, सब लोग इस पर बोल चुके हैं, लेकिन जो हमें सुनने वाले हैं, वे भी सुनेंगे, इसलिए इस पर चर्चा करना बहुत जरूरी है। वंदे मातरम् कोई साधारण गीत नहीं है । यह भारत की आज़ादी की लड़ाई का सबसे प्रज्ज्वलित उद्घोष रहा है । प्रख्यात बांग्ला लेखक बंकिमचंद्र चटर्जी ने इसे वर्ष 1875 में लिखा। वर्ष 1905 में जब लॉर्ड कर्जन ने बंगाल विभाजन की घोषणा की, तब यही गीत ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जन-प्रतिरोध की गूँज बन गया । ब्रिटिश पुलिस जब भारतीयों की आवाज दबाने के लिए लाठियाँ चलाती थी, गोलियाँ दागती थी, तब हमारे क्रांतिकारी नायक-नायिकाएं वंदे मातरम् की गर्जना से आसमान गुंजा देते थे । अनेक वीरों ने फाँसी के तख्ते पर चढ़ते हुए, गोलियों का सामना करते हुए अंतिम शब्द वंदे मातरम् ही कहे थे। इतना ही नहीं, अंग्रेज इस गीत से इतने भयभीत हुए कि उन्होंने इस पर प्रतिबंध तक लगा दिया था।

महोदया, वर्ष 1937 में जब राष्ट्रगान तय करने का प्रश्न उठा, तो इसके लिए एक समिति बनाई गई। वर्ष 1937 में बनी वह तीन सदस्यीय समिति, जिसमें नेहरू जी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस और गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर जैसे महानायक शामिल थे । टैगोर जी की ही सलाह पर वंदे मातरम् के पहले दो अंतरों को राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकार करने की अनुशंसा की गई। इस अनुशंसा को संविधान सभा ने 24 जनवरी, 1950 को पूर्ण सहमति से राष्ट्रीय गीत का दर्जा प्रदान किया। ऐसे में आज उसकी स्थापित, स्वीकृत और सर्वमान्य स्थिति पर अनावश्यक विवाद खड़ा करना न केवल इतिहास के तथ्य और संविधान की मर्यादा के विपरीत है, बल्कि यह उन महान विभूतियों, विशेषकर बोस जी और रवींद्रनाथ टैगोर का भी अपमान है, जिन्हें आज भाजपा स्वयं अपना आदर्श बताती है।

मुझे याद है कि पश्चिम बंगाल विधान सभा चुनाव के दौरान माननीय प्रधानमंत्री जी टैगोर जी का लुक धारण किए हुए हम सब ने देखे थे। ऐसे में उन्हीं टैगोर जी की स्पष्ट सलाह पर निर्धारित राष्ट्रीय गीत की स्थिति पर सवाल उठाना, उनके विचारों और उस ऐतिहासिक समिति दोनों के प्रति असम्मान की श्रेणी में आता है। 24 जनवरी, 1950 को संविधान सभा द्वारा राष्ट्रीय गीत घोषित किए जाने के बावजूद यह भी सत्य है कि संविधान में अनुच्छेद 51(A) के तहत राष्ट्रगान ?जन गण मन? का सम्मान करना अनिवार्य है, जबकि वंदे मातरम् के लिए कोई संवैधानिक बाध्यता नहीं बनाई गई है। इसलिए वंदे

मातरम् का सम्मान हमारा नैतिक कर्तव्य है, लेकिन किसी भी नागरिक पर इसे अनिवार्य करना संविधान की भावना के अनुरूप नहीं है और हम संविधान को मानने वाले लोग हैं। हमारे महान स्वतंत्रता सेनानियों ने एक ऐसा भारत चाहा था, जहाँ देशभक्ति, स्वतंत्रता और सबकी आस्था तीनों का सम्मान साथ-साथ रहे।

सभापति महोदया, वंदे मातरम् इस देश की आत्मा में बसता है, परंतु देशभक्ति को किसी एक नारे, एक गीत या एक प्रतीक तक सीमित करना भी उचित नहीं है। हमारा भारत, संविधान, विविधता और स्वतंत्रता पर विश्वास करने वाला भारत है। इसी संदर्भ में, मैं संविधान निर्माता परम पूज्य डॉ. बाबा साहेब की एक अमर पंक्ति कोट करना चाहता हूँ, जिसमें उन्होंने कहा कि - ?राष्ट्र व्यक्ति से बनते हैं, मिट्टी से नहीं।? यानी, राष्ट्र की असली शक्ति उसके नागरिक हैं, उनकी चेतना, उनके अधिकार और उनकी स्वतंत्रता है। मैं इस सदन में यह भी कहना चाहता हूँ कि वंदे मातरम् हमारा गर्व है, हमारी विरासत है, लेकिन गर्व को कभी जबरन नहीं थोपा जाता है। गर्व दिल से स्वीकार किया जाता है। वंदे मातरम् वह गीत है, जिसने अंग्रेज़ी साम्राज्य हिला दिया था। आज इसे राजनीति में घसीटना उसकी महानता को कम करना है। वंदे मातरम् हमें जोड़ता है और तोड़ने वालों की पहचान भी बता देता है। जो इसे हथियार बनाए, उनकी नीयत देश नहीं, सिर्फ़ अपनी राजनीति चमकाना होता है।

सभापति महोदया, मैं एक अधिवक्ता हूं। उत्तराखण्ड के देहरादून में अधिवक्ता 29 दिन से कड़क ठंड में बैठे हैं। वे इसी राष्ट्र गीत को गुनगुनाते हुए आंदोलन कर रहे हैं कि उत्तराखण्ड की सरकार हमें सरकारी चैम्बर दे। मैं आपको यह बात इसलिए कह रहा हूं क्योंकि हमने किसान आंदोलन देखा, पहलवान बेटियों का आंदोलन देखा, अध्यापकों का आंदोलन देखा, युवाओं का आंदोलन देखा, लेकिन मैं यह भी मानता हूं कि सत्ता इस पर राजनीति कर रही है और अंत में कहना चाहूंगा कि

वंदे मातरम् है दिल की धड़कन, इसे लड़ाई की दीवार न बनाओ

मां के नाम पर नफरत की राजनीति का बाजार न सजाओ

हम सम्मान से कहेंगे, यह फर्ज है हमारा,

पर किसी नागरिक की आजादी पर पहरा, यह संस्कार नहीं है हमारा।

सभापति महोदया, इतिहास पर बात होगी, जो आज नहीं हैं, उन पर बात होगी, लेकिन वर्तमान पर भी तो बात होनी चाहिए न। वर्तमान में इतिहास से हमें सीख लेनी चाहिए। आज देश का हाल क्या है? लोगों को बुनियादी सुविधाएं नहीं मिल रही हैं। रोटी, कपड़ा और मकान की व्यवस्था नहीं है। जुल्म, जाति, अन्याय, अत्याचार, दलितों पर, पिछड़ों पर, मुसलमानों पर, आदिवासियों पर लगातार जारी हैं और कोई कहने, सुनने वाला नहीं है। जब भी कोई अपनी आवाज उठाएगा, उसको देश विरोधी घोषित कर दोगे। धर्म विरोधी घोषित कर दोगे। इस प्रथा से क्या देश आगे बढ़ सकता है? एक ऐतिहासिक प्रमाण बता रहा हूं, रामप्रसाद बिस्मिल जी ने आजादी की लड़ाई के लिए हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन बनाया, लेकिन जब उन्हें लगा कि एक धर्म, एक जाति या एक क्षेत्र के लोग आजादी की लड़ाई नहीं लड़ सकते, तो वर्ष 1928 में शहीद-ए-आजम सरदार भगत सिंह जी ने उसमें सोशलिस्ट वर्ड जोड़ा। हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन क्यों बना? क्योंकि जब

हम मिलकर रहेंगे, तभी देश आगे बढ़ सकता है और आज जब मैंने सत्ता पक्ष को सुना, तो मुझे पूरा ऐसा लगा कि वे राजनीतिक एजेंडे के जरिए सिर्फ मुसलमानों को टारगेट करते हुए इस बहस को लाना चाहते थे, इसके पीछे उनका कोई और तर्क नहीं था। सभापति महोदया जी, अपनी बात खत्म करते हुए मैं यह कह रहा हूं कि आज का नौजवान अपना हक मांग रहा है, आज की बेटियां उड़ान चाहती हैं, उनके लिए सरकार की कोई योजना नहीं है। बस लगातार इसी एजेंडे में फंसाकर वह देश के नौजवानों को कुचलना चाहती है। यह ज्यादा दिन नहीं चलेगा। मैं आपके माध्यम से सरकार से कहना चाहता हूं कि बुनियादी मुद्दों पर चर्चा करें। बेरोजगारी पर चर्चा करें। मंहगाई पर चर्चा करें। महिला सुरक्षा, सम्मान और उनके सशक्तिकरण पर चर्चा करें। देश की तरक्की में कैसे मिल कर आगे बढ़ें इस पर चर्चा करें। बहुत-बहुत धन्यवाद। जय भीम, जय भारत, जय संविधान, जय मंडल, जय जोहार।

***m67श्री हनुमान बेनीवाल (नागौर) :** सभापति महोदया, आपने मुझे आज राष्ट्रगीत वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने पर सदन में हो रही विशेष चर्चा पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए धन्यवाद। देश वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने का महोत्सव मना रहा है। यह पुण्य अवसर हमें नई प्रेरणा देगा, देशवासियों को कोटि-कोटि नई ऊर्जा से भरेगा। इस दिन को इतिहास की तारीख में अंकित करने के लिए भी आज सब लोग मिल कर चर्चा कर रहे थे, लेकिन दुर्भाग्य इस बात का है जो संख्या हाउस के अंदर होनी चाहिए, लोग इसको इतना सीरियस नहीं ले रहे हैं। न इधर के लोग ले रहे हैं, न उधर के लोग ले रहे हैं। इधर के नेता बात कर रहे थे, अब तो कोई नहीं दिख रहा है। तीन-तीन, चार-चार लोग बैठे हैं। यह तो हम सिंगल मेंबर हैं जो लोक सभा का कोरम पूरा कर रहे हैं। सभापति महोदया, मैं इस देश के महापुरूषों, अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों और भारत मां की संतानों को वंदे मातरम् के इस मंत्र के लिए अपना जीवन खपाने के लिए आज श्रद्धापूर्वक नमन करता हूं। मैं देशवासियों को इस अवसर पर बधाई देता हूं।

सभापति महोदया, मेरे से पूर्व नगीना और हैदराबाद से आने वाले सांसदों ने इस देश के वर्तमान हालत की बात कही है। वंदे मातरम् की रचना बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय जी ने वर्ष 1875 में की थी और बाद में वर्ष 1881 में उनके उपन्यास आनंद मठ में यह प्रकाशित हुआ। जब बंकिम बाबू ने वंदे मातरम् की रचना की, तब भारत अपने स्वर्णिम दौर, जो सोने की चिड़ियां कहलाता था, उससे बहुत दूर जा चुका था। उस समय विदेशी आक्रमणकारियों के हमले, लूटपाट, अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों के चलते हमारा देश गरीबी और भुखमरी के चंगुल से कराह रहा था, तब भी बंकिम बाबू ने इस बुरे हालात की स्थिति में, जब चारों तरफ दर्द था, विनाश था, शोक था, सबकुछ डूबता हुआ नजर आ रहा था, ऐसे समय बंकिम बाबू ने संपूर्ण भारत का आह्वान किया क्योंकि उन्हें विश्वास था कि मुश्किलें कितनी भी क्यों न हों, भारत अपने स्वर्णिम दौर को पुनर्जिवित कर सकता है। इसलिए उन्होंने वंदे मातरम् का आह्वान किया। भारत की आजादी के आंदोलन में वंदे मातरम् जैसी रचना की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसलिए गुलामी के उस कालखंड में वंदे मातरम् इस संकल्प का उदघोष बन गया था और वह उदघोष था भारत की आजादी का। मां भारती के हाथों से गुलामी की बेड़ियां टूटेंगी और उसकी संतानें स्वयं अपने भाग्य की भाग्य विधाता बनेंगी।

सभापति महोदया, मैं राजस्थान की धरती से आता हूं। यह धरती भी शक्ति, भक्ति और वीरों की धरती रही है। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों और बहुत से लोगों ने आजादी के आंदोलन में अपनी शहादत दी। हमारे आजादी के आंदोलन में भगत

सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुभाष चंद्र बोस, सुखदेव, राजगुरु, रानी लक्ष्मीबाई, राम प्रसाद बिस्मिल, मंगल पांडे, उधम सिंह और लाला लाजपत राय जैसी विभूतियों ने अपने बलिदान से देशवासियों को प्रेरित किया।

मै जिस कौम से आता हूँ, उस जाट कौम ने भारत के इतिहास में सबसे ज्यादा मातृभूमि के लिए प्राण न्यौछावर किये। भारत की आजादी की लड़ाई में जाट समुदाय के कई प्रमुख क्रांतिकारियों, जिनमें राजा महेंद्र प्रताप सिंह, राजा नाहर सिंह, शाह मल, भगत सिंह, उधम सिंह, बलदेव राम बुरडक और अवतार सिंह शराबा जैसे नाम शामिल हैं, जिन्होंने देश के लिए अपना जीवन समर्पित किया तथा हंसते-हंसते फांसी के फंदे को चूम लिया।

सभापति महोदया, जो हालात बन रहे हैं, आज वंदे मातरम् पर जो ऐतिहासिक बहस हो रही है, उसके बाद हमें इन चीजों की ओर भी सोचना होगा कि आज देश के हालात क्या है? उस समय इस गीत से गोरे अंग्रेज बहुत डर गए थे और उस समय हमारे पास साधन, संसाधन नहीं थे। इस नारे को लोकप्रिय बनाने वाले लोगों में रविंद्रनाथ टैगोर, बिपिन चंद्र पाल और श्री अरविंदो जैसे महान विभूतियों को कई बार नजरबन्द किया। ब्रिटिश सरकार इनसे इतनी परेशान हुई कि जगह-जगह वन्दे मातरम् को बोलने पर पाबंदियां लगा दी गई। हम जो यह चर्चा कर रहे हैं, निश्चित रूप से आपका एजेंडा क्या होगा, इनका एजेंडा क्या होगा, मैं इसमें नहीं जाना चाहता हूं, लेकिन सभी कौम के महापुरुषों ने इस देश को आजाद कराने में अपना योगदान दिया। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई तमाम जातियों ने, आदिवासियों का अलग आंदोलन था, किसान अलग आंदोलन कर रहे थे, सारे क्रांतिकारियों ने इस देश को बचाने का काम किया। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के नेतृत्व में सिर्फ हिन्दू, सिख ही नहीं, बल्कि मुसलमान भाई-बहनों का भी प्रमुख योगदान रहा। मौलाना अबुल कलाम आजाद, अशफाक उल्ला खां, खान अब्दुल गफ्फार खान, डॉ. जाकिर हुसैन, मौलाना मोहम्मद अली जौहर, हसरत मोहानी, बेगम हजरत महल और यूसुफ मेहर अली जैसे प्रमुख लोग इसके अंदर शामिल रहे।

सभापति महोदया, यह अच्छी बात है कि प्रधान मंत्री जी ने वंदे मातरम् पर चर्चा की शुरुआत की। वंदे मातरम् और जय हिंद देश की संस्कृति एवं स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े नारे हैं। लेकिन इसी सरकार ने राज्य सभा में इन नारों के इस्तेमाल पर प्रतिबंध संबंधी अधिसूचना जारी की थी। राज्य सभा बुलेटिन में सांसदों को शिष्टाचार और परंपरा का हवाला देते हुए जय हिंद तथा वंदे मातरम् जैसे नारे नहीं लगाने की सलाह दी।? (व्यवधान) सरकार का नाम आते ही आपने घंटी बजा दी।? (व्यवधान) यहां पर कितने लोगों ने अपनी बातें कहीं, आप मुझे थोड़ा बहुत बोलने दीजिए।? (व्यवधान) जब इन्हीं पर चर्चा करते हैं तो बहुत कुछ हास्यास्पद लगता है। उम्मीद है कि वंदे मातरम् पर व्यापक और सार्थक चर्चा होगी। यह चर्चा पश्चिम बंगाल चुनाव को ध्यान में रखकर किसी एजेंडे में न बदल जाए और चर्चा करते समय राजनीति से ऊपर उठकर देश हित को प्राथमिकता दे। लेकिन यह दुर्भाग्य है कि आज इस चर्चा में भाजपा के ज्यादातर लोग राजनीति कर रहे थे और कांग्रसे वाले यहां नहीं हैं। यह भी बड़ा दुर्भाग्य है। आप देखिये।

वर्तमान सरकार को सिर्फ इस विषय पर नहीं, बल्कि देश के सामने मौजूद जटिल समस्याओं महंगाई, बेरोजगारी, आर्थिक विकास, महिला सुरक्षा, किसानों की व्यापक समस्याओं, सांप्रदायिक हिंसाओं, समाज में बढ़ते अपराध, युवाओं में बढ़ता नशा ? इन पर रोक लगाने की आवश्यकता है।

हाल के सितम्बर महीने में, जिनको लोग गोदी मीडिया कहते हैं, इंडिया टुडे सी वोटर द्वारा किए गए सर्वे के मुताबिक पीएम के नेतृत्व में पिछले 11 सालों में उनकी सबसे बड़ी असफलता युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी है। 27.1 फीसदी लोगों का मानना है कि बेरोजगारी इस सरकार की सबसे बड़ी असफलता है। 6.5 फीसदी लोगों ने आर्थिक उन्नति के धीमे होने की बात कही। 5.8 फीसदी लोगों के मुताबिक मोदी सरकार के रहते हुए अल्पसंख्यक समुदाय में भय का माहौल है। 5.3 फीसदी लोगों के मुताबिक महिला सुरक्षा और 4.8 फीसदी लोगों के मुताबिक आतंकवाद को न संभाल पाना भी दिक्कत है।

मैंने बहुत उम्मीद की थी और जब मैं पिछली बार जीत कर आया था तो मैं भी एनडीए में था। ऑपरेशन सिंदूर और उसके बाद जो हालात बने, वर्ष 2014 में सरकार आई, वर्ष 2019 और वर्ष 2024 में सरकार आई तो नौजवानों ने एक सपना सोचा कि अब बॉर्डर पर शहादत नहीं होगी। अब देश सुरक्षित हो गया, लेकिन अभी भी उतने ही लोग हमारे शहीद हो रहे हैं। यह शहादत कब रुकेगी, देश यह जानना चाहता है।

मैं एक घटना का जिक्र करना चाहूंगा। वर्ष 1905 में बंग-भंग आंदोलन के दौरान अंग्रेजों ने वंदे मातरम् के सार्वजनिक पाठ पर प्रतिबंध लगाया। फिर भी 14 अप्रैल, 1906 को बारीसाल में हजारों लोगों ने अंग्रेजों के आदेश को नहीं माना तब पुलिस ने उन पर लाठीचार्ज किया।

आज सरकार वंदे मातरम् पर चर्चा जरूर करवा रही है मगर बारीसाल में वर्ष 1906 में जो अंग्रेजी हुकूमत ने किया, क्या भाजपा की सरकार भी उसी नीति पर नहीं चल रही है? हरियाणा का जाट आरक्षण आंदोलन, राजस्थान का गुर्जर आरक्षण आंदोलन, पहलवान बेटियों का आंदोलन या फिर किसान आंदोलन का जिक्र करें, तो आपकी पार्टी की सरकारों ने आंदोलन को अंग्रेजों की तर्ज पर ही कुचलने का काम किया। ऐसे में आपको राष्ट्र गीत के महत्व को आत्मसात करने की आवश्यकता है। मैं बस एक मिनट में अपनी बात समाप्त कर रहा हूं। मुझे लग रहा है कि मैं जैसे ही थोड़ी सी बात कहता हूं, तो आप घंटी बजा देती हैं।

सभापति महोदया, यहां आज सब लोग चर्चा में भाग ले रहे हैं। हम सब यहां शाम तक बैठे हैं, तो आपको भी सभी को सुनने की आदत रखनी चाहिए, क्योंकि यदि आप सुनेंगी ही नहीं, तो सुधार कैसे होगा। मैं अपनी बात बस एक मिनट में समाप्त कर रहा हूं। मेरा बस इतना ही निवेदन था कि आज हम इतनी बड़ी चर्चा कर रहे हैं, हाउस चल रहा है। इंडिगो की फ्लाइट्स रद्द हो गईं, लेकिन आज साढ़े पांच बजे इंडिगो फ्लाइट के अंदर लूथरा ब्रदर्स, जो दोनों भाई हैं, उनके गोवा के नाइट क्लब में आग लग गई, 27 लोग मारे गए। उसके बाद यहीं से इंडिगो फ्लाइट से दोनों भाई भाग गए। हमारी पार्लियामेंट चल रही है, इससे बड़ा दुर्भाग्य और नहीं हो सकता। इसकी जांच आप लोग लगवाएं, यह भी मेरा निवेदन रहेगा। धन्यवाद।

***m68SHRI DURAI VAIKO (TIRUCHIRAPPALLI):** Thank you, Madam. *Vande Mataram* means *I bow to thee, mother.* Here, ?mother? refers to Mother India. *Vande Mataram* is not just a poem. *Vande Mataram* is an emotion. It was an inspiration behind freedom movement, a rallying cry against oppression. *Vande Mataram* rises above language boundaries. It rises above caste, creed, and

religion and binds us together as Indians. When the British banned *Vande Mataram*, thousands of Hindus and Muslims marched here, chanting together: *Vande Mataram, Vande Mataram.*

Vande Mataram means I bow to thee, my mother. Here, Mother refers to Mother India. Vande Mataram is not only a poem but a feeling. It was an inspiration for our Indian freedom struggle. It was a clarion call against the slavery of the British. Leaving aside all our differences in the name of language, religion, race, etc., this song united us as Indians. When Vande Mataram was banned by the British, thousands of patriotic Hindus and Muslims chanted slogans of Vande Mataram and sacrificed their lives for the sake of our nation.

Mahatma Gandhiji said that Vande Mataram is the unified strong voice raised by Hindus and Muslims against the Partition of Bengal. Mahakavi Bharati wrote this song ?Let us chant Vande Mataram; Let us bow to thee, our Mother of State? and he made this reverberate throughout the State of Tamil Nadu. Mahakavi Bharathi, V.O. Chidambaran Pillai who operated Swadeshi Ships, Subramania Siva, all three together spread Vande Mataram song throughout the State of Tamil Nadu. On 7 November 1875, this song was written by Shri Bankim Chandra Chatterjee. On this day only two stanzas of the song

was written by him. These two stanzas portrayed the natural beauty and grandeur of Bengal. Later four more Stanzas were included to this song by Shri Bankim Chandra Chatterjee.

These four Statzas portrayed Mother India as Goddess Durga guiding us to worship with devotion. These 4 stanzas have created controversy. Those 4 stanzas added to this song created controversy as it is considered to mention about a particular religion, God and Bangladesh as well. Indians live together as equals in the name of Hindus, Christians, Sikhs and followers of Islam. It was also questioned as this song particularly highlights a particular God of a religion, should it be sung as a national sang. Therefore during 1937, Scholars like Nethaji Subhash Chandra Bose, Jawaharlal Nehru, Dr. Rajendra Prasad, Maulana Abul Kalam Azad, have declared the first two stanzas as non-religious and announced as the National song.

As our National song is conceived with the intention and on the basis of Unity in Diversity, four stanzas have been removed. This was the one proposed by Rabindranath Tagore as well. Religious

forces wanted those four stanzas to be included to the Original song. Godse even criticized Mahatma Gandhi for this so badly.

Netaji Subhash Chandra Bose in his address before the INA in Singapore on July 5th, 1943 said, ?I have said that today is the proudest day of my life. For enslaved people, there can be no greater pride, no greater honour than to be the first soldier in the army of liberation. But this honour carries with it a corresponding responsibility and I am deeply conscious of it. I assure you that I shall be with you in darkness and sunshine, in sorrow and joy, in suffering and victory.?

Netaji who created the INA wanted that those controversial four Stanzas are to be removed from that song. Whether this kind of thought process was right or the religious forces which encouraged partition was right?

Whether the views of father of our nation Mahatma Gandhi was right or the views of the first terrorist of free India Godse was wrong? Today?s religious and communal forces are just portraying the same views expressed by Godse. They are devising their poll strategy through petty and partition politics. Vande Mataram will be a controversial matter because there elections due in West Bengal next year. Similarly Tirupparankunram is another issue surrounded with controversy. Therefore they want to create electoral gains with bloodshed by Hindus and Muslims. This will never take place and we will not allow them. This soil of our mother India does not belong only to you or me. But this belongs to Muslims, Christians and people of other religions as well. Let us unite ourselves with the motto of Unity in Diversity. Vande Mataram, Thank you, Vanakkam.

***m69SHRI TEJASVI SURYA (BANGALORE SOUTH):** Hon. Chairperson, Madam, I thank you for giving me this opportunity to participate in this debate on the joyous occasion of the nation commemorating 150 years of *Vande Mataram*. In the history of our nation, *Vande Mataram* is not just any patriotic song. It is the spark that ignited our freedom struggle. It is the mantra that awakened millions to national duty. It was the clarion call that inspired millions of masses to aspire for freedom and independence, gave them the confidence and courage to act on this confidence, this awakening, and gave the strength to re-find civilization of strength and confidence.

The song *Vande Mataram* was set to tune in Raag Desh, only natural because the song was synonymous with the country and this *Vande Mataram* united the nation by uniting people from all

over the country across our diversities. It echoed in the prisons; it worked with the satyagrahis; it gave confidence to those freedom fighters who entered the gallows. A few songs in world history have moved so many people, united so many people towards one unifying cause like *Vande Mataram* did. It is unfortunate that a song that occupied such a pristine place in this country?s history was cut into two portions, was truncated because a section of communal leadership in the country thought that the song did not accede to their religious sentiments. The Muslim League?s objections began way before Independence. Owaisi Ji was making a speech which was about the Constitution and its repercussions after Independence. But the thought, the principle that opposed *Vande Mataram* started way before Independence. In 1937, the Congress leadership led by Pandit Nehru surrendered to this demand of sectarian leadership and truncated *Vande Mataram.*

21.45 hrs (Shri Dilip Saikia *in the Chair*)

Vande Mataram was cut into and truncated in 1937. Because of this surrendering principle, because of this political cowardice, India was cut into two in 1947. The same principle that went into truncation of *Vande Mataram* in 1937 led to the Partition of India later in 1947. It was not accommodation, it was appeasement. It was not secularism, it was political surrender to communalism.

Madam Speaker, Babasaheb Ambedhkar understood the pitfalls of following this principle of appeasement and in his seminal work thoughts on Pakistan, he makes it a very important observation, and that is difference between appeasement and settlement. He says, ?It seems to me that the Congress has failed to realise two things. The first thing which the Congress has failed to realise is the fact that there is a difference between appeasement and settlement and the difference is an essential one. Appeasement means to offer to buy-off the aggressor by collaborating with him in rape, murder and arson on innocent Hindus who happened, for the moment, to be the victims of his displeasure. On the other hand, settlement means laying down the bounds which neither party to it can transgress. Appeasement sets no limits to the demands and aspirations of the aggressor, but settlement does it. The second thing that the Congress has failed to realise is that the policy of concession has increased their aggressiveness and what is worse is that the Muslims interpret these concessions as a sign of defeatism on the part of the Hindus and the absence of their will to resist. This policy of appeasement will involve the Hindus in the same fearful situation in which the allies found themselves as the result of policy of appeasement which they adopted towards Hitler.? This

was what Babasaheb Ambedhkar said. But the Congress party neither learnt a lesson then, nor learnt a lesson today.

This morning, Shrimati Priyanka Gandhi Vadra ji, the hon. Member was asking why are we debating this today, when there are so many contemporary issues to debate about. The reason why we are debating *Vande Mataram* and its history today is because the country and the present generation has to resolve that we will not make the mistakes of the past so that the future will not repeat the same mistakes. The concession that the Congress party did with the 1937 with *Vande Mataram* became a pattern - compromising cultural identity, compromising cultural confidence, compromising the borders of the country. The same mindset later carried into post independence era and into governance after independence. Appeasement became the political instinct of the Congress party. The point where it became the mainstay, the template that all so-called secular parties of this country follow was this. What this template, Sir, is the same mentality that agreed to truncate the *Vande Mataram*. It is the same mentality that opposed the Shah Bano verdict of the Supreme Court and overturned the Supreme Court Judgement. It is the same mentality. It is the same mentality that opposed *Vande Mataram;* It was the same mentality that banned books and films because it would hurt a section of the minorities. वही मानसिकता थी जो वंदे मातरम् को अपोज किया था, वही मानसिकता थी जो राम जन्म भूमि आंदोलन का भी विरोध किया था । It was the same mentality that supported Batla House encounter by calling it fake. It is the same mentality that opposed the decriminalisation of triple t*alaq*. It is the same mentality that even today, opposes Uniform Civil Code in the country. It is the same mentality that opposes *Vande Mataram* and that continues to oppose Article 370?s abrogation. It is the same mentality that advocated for partitioning of *Vande Mataram*, that led to the eventual partition of the country. It is the same mentality that even today, they are anti-CAA and does not support NRC in the country. It is the same mentality that is opposing SIR in the country. It is the same mentality that even today says that the Places of Worship Act should not be revisited.

It is the same mentality that is even today present in organisations like the All India Muslim Personal Law Board and Jamaat-e-Islami who even today oppose Vande Mataram. आज भी कांग्रेस पार्टी के कई ऐसे नेता हैं, जो वंदे मातरम् के खिलाफ बयान देते हैं । And even today, the Congress Party?s leadership has not shown the spine to condemn such statements. This is the continuity of the

appeasement policy of the Congress Party that has been a template of secular politics in this country.

Hon. Chairperson, Sir, what we have learnt from history is that if you yield an inch to the aggressor, he will reach for a province and if you give him a province, he will reach for the nation. This was the template that led to the partitioning of the country. The lesson the country must learn while commemorating 150 years of Vande Mataram celebration is that never again, never again, will we not yield an inch more to aggressors and appeasers; and we will not yield another thought, another inch of land, for those who think that appeasement is the template of secular and accommodative politics in the country.

Hon. Chairperson, Sir, the lesson the country needs to learn today is that the country cannot place religion above the Republic. The speeches of Asaduddin Owaisi ji and other Members of the Opposition made only one point that they will always place ? this was their assertion ? *Mazhab* over *Desh*. I want to tell them that this generation and the future generation of the country have learnt the lessons from the past. *Desh* will always be above *Mazhab* and this is the resolve of this country. The Constitution will always be above sectarian personal laws. The country?s Constitution will always be placed above Sharia. This is the message that the Constitution and the Parliament are giving in one note today that the country is above creed; that appeasement creates division and not unity; that appeasement will only buy you temporary peace and not permanent integration; and that the Constitution must be above the religious commands.

Hon. Chairperson, Sir, as the country today is celebrating 150 years of the Vande Mataram, we must remember the great words of Rishi Bankim Chandra ji, who gave before us the conceptualization of Maa Bharati as ?*Durga*?, as ?*Saraswati*?, and as ?*Lakshmi*?. Today, under the leadership of our Prime Minister, the country has emerged as the fourth largest economy in the world and is on the way to becoming the third-largest economy. The blessings of Maa Lakshmi is ever present on this bountiful and prosperous land of this country. The blessings of Maa Durga is always present in the ?Kshatra? spirit of this country; whether it is in Operation Sindoor or it is in surgical strikes against her enemies, the country will give a strong response for those who try to object her and those who try to belittle her.

In today?s age of knowledge-based economies, where the world is hurtling towards new changes through technologies like Artificial Intelligence and quantum computing, India will also show global leadership because the blessings of Maa Saraswati is always on this country.

This country will emerge as the ?Vishwa Guru? of the world by imbibing the qualities of Durga, of Lakshmi, and of Saraswati, and that will be the tribute the country will give to the great Rishi Bankim Chandra who gave this country the clarion call of Vande Mataram.

Thank you so much, hon. Chairperson, Sir.

Vande Mataram.

***m70SHRI CHAMALA KIRAN KUMAR REDDY (BHONGIR):** Today we are having a discussion on the occasion of the 150th anniversary of our national song Vande Mataram. But this does not appear to be an attempt to pass on the spirit of Vande Mataram to the younger generations of our country, instead it appears to be an attempt to malign Congress and other opposition parties. This song was first sung by Rabindranath Tagore in the National Congress meeting in 1896. Later on, in 1907 madam Bhikaji Cama inscribed Vande Mataram on our national flag and hoisted in Berlin, Germany. This is the proof that the Congress party took forward the spirit of Vande Mataram for the future generations of this country.

The Congress party made Rabindranath Tagore sing this song for the first time. By referring to 1937 treasury benches are trying to malign pandit Jawaharlal Nehru and other Congress leaders, they don't have any intention to move unitedly and carry forward the spirit of Vande Mataram to the youth of this country. They are repeatedly referring to what happened in 1937.

They are trying to project that some words from Vande Mataram song were removed at the behest of pandit Jawaharlal Nehru, but our leaders Priyanka Gandhi and Gaurav Gogoi made it very clear that a committee consisting of Rabindranath Tagore, Acharya Narendra Dev, Maulana Azad, pandit Jawaharlal Nehru was constituted to look into this matter.

Rabindranath Tagore was asked to suggest some words that will reflect democratic and secular character of our country. Now people of our country came to know these historical facts otherwise BJP was misleading the people of this country by blaming the Congress party.

Chairman sir, I am a new member of parliament and I am here for the last one and half years. Our country is facing numerous problems. Rupee weakened against the dollar and it fell to 90 rupees per dollar. Indigo passengers are stranded in various airports in our country. In Delhi there is severe air pollution, old and young are affected but we are not interested in discussing these burning issues.

Then, what are we interested in discussing? We are discussing either what happened before 1947 or about viksit Bharat of 2047. We are discussing the 30 trillion economy, but we are not interested in what is happening in our country right now. You are not discussing any pertinent issue in this winter session of 15 sittings. The Minister for Civil aviation should respond to the crisis in the aviation sector. There should be answers for pollution in Delhi.

We should know the reasons for weakening rupee against the dollar. Why are we not discussing the unemployment issue of our country? Your intention is to erase history pertaining to pandit Jawaharlal Nehru. What can you erase? He was the first prime Minister who established IITs, IIMs, BHEL, ICRISAT, LIC, PSUs, Steel plants and many other institutions. Bhakra Nangal and Nagarjuna Sagar projects were constructed for the welfare of farmers. Can you erase this history? You are talking about Viksit Bharat 2047 and 30 trillion economy but to realise that, you will have to put all other states first. Today the Telangana government is conducting the Telangana summit and 'Telangana Rising 2047' to create a 3 trillion economy. Speaker sir please give me one more minute.

I want to say that it is important to discuss the 150th anniversary of Vande Mataram song but at the same time you will have to look at the issues of our country.

The development should not be confined to double engine governments, we should also serve even those parties which are not here in this house. We should give appropriate importance to all stakeholders. Telangana Chief Minister is visiting Delhi several times to apprise Union Ministers regarding various issues faced by the Telangana like RRR, Metro, Musi Rejuvenation etc., I will conclude sir, please give me one more minute. I was waiting for this opportunity for quite some time.

Our chief minister Revanth Reddy has flagged many issues, therefore, the Central government should help us solve these problems. We should take 'Viksit Bharat' goal along with 'Telangana Rising', only then we can achieve the development of our country. If we try to indulge in

politics and caste based hatred, that will only harm our society. We should take forward the spirit of Vande Mataram and give it to our future generations.

Vande Mataram. Jai Hind. I thank you for giving me this opportunity.

22.00 hrs

***m71एडवोकेट प्रिया सरोज (मछलीशहर) :** सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, इसके लिए आपका धन्यवाद। वंदे मातरम्, ये दो शब्द मात्र नहीं, एक मंत्र है। बंकिम चंद्र चटर्जी ने जब इसे 1875 में रचा और 1896 में गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने इसे मंच से पहली बार गाया, तब यह कोई सरकारी आदेश नहीं था। यह उस समय के दबे हुए भारतीय आम जनता की पुकार थी।

वंदे मातरम् एक ऐसा राष्ट्रगीत है, जिसने जाति, धर्म, भाषा की दीवारों को तोड़ दिया। अंग्रेजी हुकूमत ने डिवाइड एंड रूल की नीति से हमें बांटने की कोशिश की थी। ऐसी स्थिति में एक हुंकार, एक मंत्र की जरूरत थी, जो पूरे देश को जोड़ दे। वंदे मातरम् वही मंत्र बना। इस गीत ने अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों को प्रेरणा दी और भारत की राष्ट्रीय पहचान तथा एकता का स्थायी प्रतीक बन गया। जब भी वंदे मातरम् गूंजा, परतंत्र भारत के नौजवानों में जोश भर गया, डर की बेड़ियां टूटीं और मातृभूमि के लिए बलिदान का जज्बा जाग उठा। यह कोई साधारण गीत नहीं है, बल्कि देशभक्ति की चिंगारी थी, जिसने विदेशी साम्राज्य की नींव को हिला दिया।

इतिहास खुद को दोहराता है, लेकिन इस बार किरदार बदल गए हैं। आजादी की लड़ाई में, वंदे मातरम् का यह नारा ब्रिटिश राज के लिए एक बड़ी चुनौती थी। ब्रिटिश राज इससे डरता था, क्योंकि यह नारा धर्म, प्रांत, जाति और भाषा के भेद को मिटाकर भारतीय को एकजुट करती थी। ब्रिटिश राज का हथियार था कि फूट डालो और राज करो, मतलब डिवाइड एंड रूल। आज भी देश में वही होता दिख रहा है। मौजूदा बीजेपी सरकार भी धर्म और जाति के आधार पर देश को बांटकर उसी डिवाइड और रूल की राह पर चलती हुई नजर आ रही है। ब्रिटिश राज की तरह मौजूदा सरकार भी वंदे मातरम् की सच्ची ताकत से शायद डरती है, क्योंकि यह नारा एकता का प्रतीक है। यही वजह है कि इन्होंने एकता को मजबूत करने के बजाय, इस नारे का इस्तेमाल कर देशवासियों को बांटने के लिए किया है। ये देशभक्ति का सर्टीफिकेट बांटते हैं कि कौन देश को मानता है और कौन नहीं, लेकिन इस देश की जनता अच्छी तरह समझ चुकी है कि जो लोग देशभक्ति को सर्टीफिकेट में कैद करते हैं, वह असल में देश की एकता से खौफ खाते हैं।

?तुम संसद में घूम रहे हो वंदे मातरम् के शोर से

और देश जल रहा है महंगाई के, बेरोजगारी के जोर से।

यह कैसा प्रेम है उस मां से, जो भूखे बच्चों को सुलाती है

तुम्हारी नीति तो बस अमीरों की तिजोरी को प्यार से सहलाती है।?

ध्यान देने वाली बात है कि संविधान निर्माताओं ने राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत को जनता पर थोपे जाने लायक नहीं समझा। उन्होंने जन-गण-मन को राष्ट्रगान और वंदे मातरम् को राष्ट्रगीत का सम्मान दिया। उन्होंने कहीं यह नहीं लिखा कि हर नागरिक को जबरदस्ती इसे गाना होगा। इसका मतलब साफ है कि देशभक्ति दिल से होनी चाहिए, दिखावे के लिए नहीं। आजाद भारत ने इसे लोगों की पसंद और श्रद्धा पर छोड़ना बेहतर समझा।

हमारे राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर मैं आप सभी को बधाई देती हूं। यह हमारे लिए गर्व का विषय है, पर क्या केवल गर्व कर लेना पर्याप्त है? जिस भारत मां की हम बात करते हैं, उसकी संतानों की आज क्या स्थिति है? देश से किए वादों और स्वतंत्रता के मूल्यों को हम कितना निभा पाए हैं?

आज की बहस असल में वंदे मातरम् को लेकर नहीं है। असल सवाल यह है कि देशभक्ति का मतलब क्या बताया जा रहा है? आजादी के समय देशभक्ति में सबको साथ लेकर चलने, एक-दूसरे की समझ को रखने और आगे बढ़ने की सोच थी। देशभक्ति का मतलब लोगों की सेवा करना था। आज देशभक्ति का मतलब बना दिया गया है कि सिर्फ नारे लगाओ और सवाल मत पूछो। संसद के शीतकालीन सत्र की शुरुआत में ही सरकार ने जोर दिया कि पहले दिन वंदे मातरम् पर चर्चा हो, इसलिए इन्होंने इस पर राजनीति गर्मा दी, वह भी कुछ महीने पहले क्यों? ताकि वे खुद को देशभक्ति का एकमात्र ठेकेदार साबित कर सकें। विपक्ष चुनावी सुधार जैसे गम्भीर मुद्दों पर चर्चा करना चाहता है। महंगाई, बेरोजगारी, प्रदूषण, चुनावी सुधार बाद में, पहले वंदे मातरम् पर इनके मुताबिक सियासत होनी चाहिए। यह स्पष्ट है कि मौजूदा हंगामा सिर्फ ध्यान भटकाने और भावनाएं भड़काने का साधन है।

आप जरा हकीकत पर नजर डालिए। जो नेता दिन-रात वंदे मातरम् और भारत माता की जय के नारे लगवाते हैं, उनकी नीतियों ने देश के लिए क्या किया? बेरोजगारी चरम पर है, युवाओं का भविष्य अंधकार में है, अर्थव्यवस्था संघर्ष कर रही है, लेकिन भाषणों में सब ?अमृत काल? बताया जा रहा है। समाज में जहर खोला जा रहा है और भाईचारे की जगह नफरत पर जोर है। क्या यही राष्ट्रभक्ति है?

आज मैं इस सदन के माध्यम से सरकार से कहना चाहती हूं कि देशभक्ति को मत बांटिए, इसे जीना शुरू कीजिए। वंदे मातरम् कहने का अधिकार हर भारतीय को उतना ही है, जितना आपको है। मैं एक छोटे से निवेदन के साथ समाप्त करना चाहती हूं कि हम सब वंदे मातरम् की भावना को दिल से अपनाएं। इस बहस को किसी धर्म या दल की लड़ाई मानने के बजाए भारत की एकता के प्रतीक बनें। मैं देश के हित में सरकार को आगाह करती हूं कि राष्ट्र प्रेम के दिखावे की राजनीति से ऊपर उठें। आपने वंदे मातरम् को अपना नारा बना दिया और हमने इसे मां की पुकार समझा। आपने इससे वोट मांगा, हमने इससे आजादी पाई। आपने इसे बांटने का जरिया बनाया, हमने इससे जोड़ने की कसम खाई।

महोदय, आपने इसे मंच पर गाया, हमने इसे खेत, खलिहान, जेल और शहादत में जिया। जब आप वंदे मातरम् पर बहस करते हैं, तो मैं दिल से बात कहती हूं, आप नहीं समझे थे, आप नहीं समझेंगे।

वंदे मातरम्, जय हिंद, जय भारत, जय समाजवाद।

***m72श्री दिलेश्वर कामैत (सुपौल) :** सभापति महोदय, आपने मुझे देश की आजादी एवं भारतीय इतिहास के मार्मिक काल तथा तत्कालीन वेदनाओं से ओत-प्रोत आजादी की आशा और उम्मीद के रूप में राष्ट्र गीत वंदे मातरम् पर चर्चा में भाग लेने का अवसर दिया, उसके लिए मैं आभार प्रकट करता हूं। मैं धन्यवाद देता हूं कि चर्चा के माध्यम से मुझे उन सभी हुतात्माओं को श्रद्धांजलि देने का अवसर मिला, जिन्होंने अपनी जान राष्ट्रहित में गंवा दी।

महोदय, वंदे मातरम् भारत का राष्ट्रीय गीत है, जिसे बंकिम चंद्र चटोपाध्याय ने 1870 के दशक में लिखा और अपने उपन्यास आनंद मठ में 1882 में शामिल किया। यह रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा पहली बार गाया गया था और सन् 1950 में संविधान सभा द्वारा इसे राष्ट्रीय गीत के रूप में अपनाया गया, जो स्वतंत्रता संग्राम का प्रतीक बन गया और आज भी राष्ट्रवाद, एकता और गौरव का प्रेरणा स्रोत है। वंदे मातरम् गीत के बोल, भारत की मातृभूमि की सुंदरता और शक्ति का वर्णन करते हैं, जिसमें "सुजलाम सुफलां मलयज शीतलां शस्यश्यामलां मातरम्", जल से परिपूर्ण, फलदायी, सुगंधित, हरी-भरी भूमि वाली मां, जैसे वाक्यांश शामिल हैं, जो मां के रूप में भारत को नमन करते हैं और उसकी महिमा का गुणगान करते हैं, जिसमें दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती जैसे देवी-देवताओं का भी उल्लेख है। इस गीत से सदियों से सुप्त भारत देश जग उठा और आधी शताब्दी तक यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम का प्रेरक बना रहा।

महोदय, वंदे मातरम्, राष्ट्र जागरण का अविस्मरणीय और अमर स्वर है। वंदे मातरम् हमारे देश की एकता अखंडता और भाईचारे का संदेश देने वाला है। भारत की आजादी के लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने जो बलिदान दिया, उसके लिए हम सभी ऋणी हैं। भारत माता के सपूत और बंगाल की माटी के लाल बंकिमचंद्र चटर्जी जैसे सुप्रसिद्ध लेखक ने उस वंदे मातरम् की रचना की, जो भारत की आजादी का सबसे बड़ा स्वर और हथियार बन गया। "सुजलाम सुफलां मलयज शीतलां शस्यश्यामलां मातरम्", बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों, सभी ने वंदे मातरम् गाया। फांसी के तख्त पर झूलते हुए, जो वंदे मातरम् बोलेते हुए, करोड़ों हुतात्मा देश के लिए मर मिटे। ये वंदे मातरम् की ही शक्ति थी जो पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक पूरा भारतवासी एकजुट भी हुआ और एकाकार भी हुआ।

महोदय, वंदे मातरम् के 150वें गौरवमय वर्ष पर हमारे यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सच ही कहा है कि वंदे मातरम, एक मंत्र है, एक ऊर्जा है, एक स्पप्न है, एक संकल्प है, मां भारती की साधना है, आराधना है। वंदे मातरम् हमें इतिहास में ले जाता है। ऐसा कोई संकल्प नहीं जिसकी सिद्धि न हो सके, वंदे मातरम् इसी को प्रमाणित करता है।

महोदय, देश आज वंदे मातरम् के 150वें गौरवमय वर्ष के आयोजन का साक्षी बन रहा है। हमारी सरकार ने इस ऐतिहासिक अवसर को नई पीढ़ी के लिए भी स्मरणीय बनाने के लिए सिक्का और डाक टिकट जारी किया है।

महोदय, अंत में मैं कहना चाहता हूं कि :

राष्ट्र की जय चेतना का गान वंदे मातरम्।

राष्ट्रभक्ति प्रेरणा का गान वंदे मातरम्।

बंशी के बहते स्वरों का प्राण वंदे मातरम्।

झल्लरी झनकार झनके नाद वंदे मातरम।

शंख के संघोष का संदेश वंदे मातरम्।

सृष्टि बीज मंत्र का है मर्म वंदे मातरम्।

राम के वनवास का है काव्य वंदे मातरम्।

दिव्य गीता ज्ञान का संगीत वंदे मातरम्।

हल्दीघाटी के कणों में व्याप्त वंदे मातरम्।

दिव्य जौहर ज्वाल का है तेज वंदे मातरम्।

वीरों के बलिदान की हुंकार वंदे मातरम्।

जन-जन के हर कंठ का हो गान वंदे मातरम्।

अरिदल थर-थर कांपे सुनकर नाद वंदे मातरम्।

वीर पुत्रों की अमर ललकार वंदे मातरम्।

***m73श्री अब्दुल रशीद शेख (बारामूला) :** सर, आपसे रिक्वेस्ट है कि मुझे टाइम दीजिए, क्योंकि आप तो घर जाएंगे, पर मुझे वापस जेल जाना है। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।

?निसार तेरी गलियों पर ऐ वतन,

कि जहां चली है रस्म कोई सिर उठा कर न चले।?

अपनी मातृभूमि से किसको प्यार नहीं हो सकता? मैं सलाम करता हूं उस धरती को, जिसने अंग्रेजों से आज़ादी तो ले ली, लेकिन अंग्रेजों की चालाकी और लीडरशिप की ना-अहली की वज़ह से उस अनडिवाइडेड इंडिया के तीन हिस्से कर दिए।

मैं सलाम पेश करता हूं उस धरती को, जिसने मुझे जन्म तो दिया, लेकिन साढ़े छ: सालों से मैं उसकी एक झलक देखने को तरस रहा हूं। मैं सलाम पेश करता हूं उस कश्मीर की धरती को, जिसे पंडित जवाहर लाल नेहरू, मुहम्मद अली जिन्ना, सरदार पटेल, मरहूम शेख मुहम्मद अब्दुल्ला, महाराजा हरि सिंह की ना-आक़िबत अंदेशों की वज़ह से 1947 से आज तक एक सियासी अखाड़ा बनाकर उसे ? बना दिया गया।

माननीय सभापति : ? - इसको एक्सपंज कर दीजिए।

श्री अब्दुल रशीद शेख : मैं सलाम करता हूं उस जम्मू-कश्मीर की धरती को, जिसे वर्ष 1947 में खूनी लकीर के जरिए दो टुकड़ों में तकसीम कर दिया गया।

मैं सलाम पेश करता हूं उस मातृभूमि को, जिसके साथ मोहतरम जवाहर लाल नेहरू से लेकर नरेन्द्र मोदी जी तक ने बहुत बड़े वादे किए, लेकिन एक भी वादा पूरा नहीं किया। मैं सलाम करता हूं अपनी उस मातृभूमि को, जहां 1999 से आज तक जंगलराज जारी है, हजारों लोग मरे हैं, न मारने वाले को पता कि मैंने क्यों मारा, न मरने वाले को पता कि मेरे साथ क्या हुआ।

सर, मैं सलाम पेश करता हूं उस मातृभूमि को, where people ask me about my identity and my religion. मैं सलाम पेश करता हूं उस मातृभूमि को, जहां टी.वी. चैनल्स यह डिसाइड करती हैं कि इस देश की फॉरेन पॉलिसी क्या होगी, जहां टी.वी. चैनल्स हमें राष्ट्रवाद का सबक पढ़ाती हैं। मैं सलाम पेश करता हूं उस अपनी धरती को, उस अपनी मातृभूमि को, जिसे भारत ने अपना ताज़ तो माना, लेकिन ताज़ की हिफाजत कभी नहीं की, ताज़ सिर पर रखना आया नहीं, ताज़ को संभालना आया नहीं।

सर, मैं सलाम पेश करता हूं अपनी उस मातृभूमि को, जहां वर्ष 1987 में नेहरू खानदान, मुफ्ती खानदान और शेख खानदान ने रिकॉर्ड तोड़ धांधली करके बंदूक को जन्म दिया, जिसकी वज़ह से हजारों लोग कब्रिस्तान में सो गए।

सर, मैं सलाम करता हूं जम्मू-कश्मीर की उस मातृभूमि को, जहां के लोकल अफसरों को डिस-एम्पॉवर किया गया। मैं सलाम करता हूं जम्मू-कश्मीर की उस धरती को, जिससे 5 अगस्त, 2019 को इस सरकार ने सब कुछ छीन लिया, स्टेट के दो हिस्से कर दिए, 370 छीना, 35ए छीना।

मैं सलाम करता हूं उस धरती को, जहां से मेरे कश्मीरी पंडित भाइयों को 1990 में एक साजिश के तहत वहां से निकाल दिया गया।

सर, न्याय कीजिए, न्याय कीजिए। मैं सलाम करता हूं कश्मीर की उस धरती को, जहां रहने वालों की हालत हिरण के उस बच्चे की-सी हो गयी है, जिसे जंगल में चारों तरफ से शिकारियों ने घेरा है। मैं सलाम करता हूं देश की उस धरती को, जिसने ऋषि सुनक, ममदानी और कमला हैरिस जैसे लोगों को पैदा किया, जिनकी जड़ें हिन्दुस्तान से जुड़ी हैं, लेकिन बदक़िस्मती से मुसलमानों को गैर-मुल्की कहा जाता है, टीपू सुल्तान की इंसल्ट की जाती है।

मैं सलाम करता हूं उस धरती को, जहां मुझे बदकिस्मती से मुस्लिम इन्तिहा-पसन्द कहा जाता है, लेकिन जम्मू में माता वैष्णो देवी कॉलेज में धर्म के नाम पर एडमिशन मांगा जाता है। मैं सलाम करता हूं जम्मू-कश्मीर की उस धरती को, जहां आज की तारीख में कोई गवर्नेंस नहीं है, ?

माननीय सभापति : ?- इसको एक्सपंज कीजिए।

श्री अब्दुल रशीद शेख : मैं हाथ फैलाकर, दामन फैलाकर यही गुज़ारिश करता हूं, सलाम करता हूं उस धरती को, जहां UAPA के तहत हजारों लोग तिहाड़ में बंद है।

लास्ट में, बस एक शेर अर्ज़ करता हूं ?

मेरे कारवां में शामिल कोई कमज़र्फ नहीं है,

जो न मिट सके वतन पे मेरा हमसफर नहीं है।

आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।

माननीय सभापति : वंदे मातरम्, भारत माता की जय बोलिए।

***m74श्री राजकुमार रोत (बांसवाड़ा) :** माननीय सभापति, आज आपने मुझे राष्ट्रीय गीत ?वंदे मातरम्? पर बोलने के लिए अवसर प्रदान किया है, इसके लिए आपका धन्यवाद।

महोदय, आज हम राष्ट्रीय गीत ?वंदे मातरम्? के 150 वर्ष पूर्ण होने पर संसद में चर्चा कर रहे हैं। इस गीत ने आजादी की लड़ाई में, हमारे देश के जो क्रांतिकारी थे, उनके अंदर जान फूंकने का काम किया था। मेरा आपके माध्यम से इस देश के आवाम से अपील है कि जो राष्ट्रीय गीत ?वंदे मातरम्? है, उसे देश प्रेम से ही जोड़ कर रखा जाए। उसे धार्मिक विवाद में नहीं डाला जाए। उसे धर्म से जोड़ कर विवाद उत्पन्न नहीं किया जाए। आज इस बात की चर्चा हो रही है कि कौन राष्ट्र प्रेमी है, कौन राष्ट्र विरोधी है, कौन ?वंदे मातरम्? से प्रेम कर रहा है, कौन इससे प्रेम नहीं कर रहा है। आखिर आज इसकी चर्चा की क्यों आवश्यकता पड़ी? इसका उद्देश्य क्या है? मेरा इस सदन से अपील है, विशेष कर सत्ता पक्ष के साथियों से अपील है। आप दिल पर हाथ रख कर सच्चाई बताएं कि क्या आप वंदे मातरम् से प्रेम करते हैं? क्या आपकी पार्टी ?वंदे मातरम्? की भावना के अनुरुप कार्य कर रही है? ?वंदे मातरम्? का अर्थ इस धरती की पूजा करना है और इस धरती को मातृभूमि मानना है। ?वंदे मातरम्? का अर्थ है कि हमें धरती को पूजनीय मानना है।

महोदय, आज वर्तमान समय में देखा गया है कि भारत की धरती को उद्योगपतियों के हवाले छोड़ा गया है। हम देख रहे हैं कि मातृभूमि को एक संसाधन माना गया है। इसे संसाधन मान कर हर जगह इसका अंधाधुंध खनन किया जा रहा है। पूरे देश में हमारी सुंदर नदियां हैं, नाले हैं, पहाड़ हैं। आज उनको उद्योगपतियों के हवाले कर दिया गया है। आज हसदेव, रायगढ़, छत्तीसगढ़ का आदिवासी धरती माँ की रक्षा के लिए रात-दिन आंदोलन कर रहे हैं। आज यहां ?वंदे मातरम्? का उद्बोधन किया जा रहा है। जल, जंगल और जमीन को उजाड़ने वाले जो उद्योगपति हैं, उनका साथ देने का काम किया जा रहा है। चाहे राजस्थान के करौली-सवाई माधोपुर का ट्राइबल प्रोजेक्ट हो, डूंगरी बांध हो, वहां भी लोग धरती माँ के लिए आंदोलन कर रहे हैं।

महोदय, आज की ही सूचना है कि मध्य प्रदेश के सिंगरौली में सीआरपीएफ पुलिस जवानों के बल पर आठ गांवों के आदिवासियों को बंधक बना कर पूरे जंगल को काटा जा रहा है। वहां की जमीन को उद्योगपतियों के हवाले किया जा रहा है।

आज देश में एक पेड़ माँ के नाम से आंदोलन चल रहा है, लेकिन मध्य प्रदेश के सिंगरौली में पांच लाख पेड़ काटे जा रहे हैं। एक तरफ हम ?वंदे मातरम्? की बात कर रहे हैं, लेकिन दूसरी तरफ धरती की सत्यानाश कर रहे हैं। आजादी की लड़ाई में ?वंदे मातरम्? गीत ने क्रांति लाया। उसी तरह भील प्रदेश के मानगढ़ का इतिहास व गोविंद गुरू का अंग्रेजों को ललकारने वाला एक क्रांतिकारी भजन था, जो अंग्रेजों से लड़ने के लिए गोला-बारूद से भी ज्यादा कारगर था। इसकी कुछ पंक्तियां मैं भीली बोली में रखना चाहूंगा। माननीय महोदय जी का अनुरोध आया था। मैं कोशिश करूंगा कि एक-दो पंक्तियां भीली बोली में प्रस्तुत करूं। मानगढ़ का जो इतिहास था, जहां के भील आदिवासी समुदाय ने अंग्रेजों को ललकारा था। इसे मैं भीली बोली में रखना चाहूंगा-

नई मानू रे, नई मानू भुरेटिया, नई मानू

दिल्ली में मारी गादी है, बेणका में मारी कलमें हैं

नई मानू रे, नई मानू भुरेटिया, नई मानू

लिमड़ी में मारो फेरो है, झालोद मारो व्यापार है,

नई मानू रे, नई मानू अंग्रेजीया

गोधरा में मारो दीवो हैं, अहमदबाद में मारी जाजम है,

नई मानू रे, नई मानू रे, नई मानू भुरेटिया।

सभापति जी, माननीय महोदय का अनुरोध था, इसलिए मैंने यह गीत सुनाया। मेरी जो मूल बात है, उसको मैं यहां रखना चाहूंगा। आजादी के वक्त क्रांतिकारियों ने ?वंदे मातरम्? गीत गा कर अंग्रेजों से हमारी मातृभूमि को आजाद करवाने का काम किया। उन्होंने अंग्रेजों से लड़ने का काम किया। आज आपके राज्य में फोर्स के दम पर छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में उद्योगपतियों के हाथ हमारी मातृभूमि को दिया जा रहा है। देश के आदिवासी, दलित और पिछड़ा समुदाय जल, जंगल और जमीन को देवी के समान मानते हैं। लेकिन, आप उसे संसाधन मान कर दोहन कर रहे हैं।

माननीय सभापति : माननीय सदस्य, आपका विषय आ गया है।

श्री राजकुमार रोत : महोदय, हमारी कुछ मुख्य बात हैं। हमारे यहां अरावली पर्वत श्रृंखला है। हमारे माननीय मंत्री श्री शेखावत जी यहां बैठे हुए हैं। अरावली पर्वत श्रृंखला को राजस्थान की रीढ़ की हड्डी माना जा रहा है। अभी सुप्रीम कोर्ट का जजमेंट आया। हमारी मोदी सरकार वहां स्वयं गई। 100 मीटर से नीचे वाली सारी पहाड़ियों का खनन करने के लिए अनुमति दी गई है। इसके माध्यम से अरावली पर्वत श्रृंखला को खत्म किया जाएगा। इसके बाद राजस्थान खत्म हो जाएगा, क्योंकि रेगिस्तान को रोकने का काम हो रहा है।

महोदय, मैं अंत में यही कहना चाहूंगा कि अगर ?वंदे मातरम्? को सम्मान देना है तो धरती को संसाधन मान कर उसका उत्खनन करना बंद करना पड़ेगा। हमने राष्ट्रीय गौरव दिवस के रूप में बिरसा मुंडा जयंती मनायी। बिरसा मुंडा जी का उद्धेश्य क्या था? वह जल, जंगल और जमीन के लिए लड़े थे। आज लाखों आदिवासियों को विस्थापित करके लाखों एकड़ जमीन उद्योगपत्तियों को दिया जा रहा है। अगर ?वंदे मातरम्? का सम्मान करना है तो जमीन का उत्खनन करना बंद करना पड़ेगा।

***m75श्री उमेषभाई बाबूभाई पटेल (दमन और दीव) :** सभापति महोदय जी, सर्वप्रथम मैं वंदेमातरम् कहकर अपनी बात शुरू करना चाहता हूँ, क्योंकि यही दो शब्द आज़ादी की लड़ाई की वो चिंगारी है,जो आज तक हमारे सीने में जलने वाली उस आग का नाम है, जिसने इस देश को आज़ादी दिलाई और आज भी राष्ट्रभक्ति की सबसे जीवंत अभिव्यक्ति है। लेकिन अध्यक्ष महोदय जी, वंदेमातरम् कोई नुमाइश का विषय नहीं है। यह कोई राजनीतिक हथियार नहीं है। यह हमारी मातृभूमि के प्रति श्रद्धा का स्वाभाविक उद्गार है। इसे सदन में चर्चा का मुद्दा बनाना, मेरे विचार से, उसकी पवित्रता का अपमान है।

सभापति महोदय जी, जब देश बेरोजगारी, महंगाई, प्रदूषण, किसान संकट, महिला सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, भुखमरी जैसी कई ज्वलंत समस्याओं से जूझ रहा है। जब लाखों युवा नौकरी की आस में भटक रहे हैं, जब हमारे किसान आत्महत्या करने को मजबूर हो रहे हैं, तब हम यहाँ "वंदेमातरम्" को लेकर बहस कर रहे हैं कि कौन कितना बड़ा राष्ट्र भक्त है और कौन नहीं? क्या हमसे जनता को यही उम्मीद है?

महोदय, पिछले 10 वर्षों में लोकसभा की कार्यक्षमता के औसतन मात्र 55 से 60 प्रतिशत रही है। इस वर्ष के मानसून सत्र में तो केवल 37 प्रतिशत ही काम हुआ है। बाकी समय नारेबाजी, हंगामा, तख्तियाँ और वेल में कब्ज़ा कर सदन का बहुमूल्य समय व्यर्थ कर दिया गया। सदन चलाने का एक दिन का खर्च आँकड़ों की मानें तो लगभग 9 करोड़ रुपये है। ऐसे देखा जाए तो पिछले 5 सालों में हंगामे की वजह से 1,500 से अधिक घंटे बर्बाद हुए। अनुमानित आंकड़ों की मानें, तो जनता के 2,000 से 3,000 करोड़ रुपये का नुकसान होने की बात है। अनुमानित आंकड़ों की मानें तो केवल 543 लोकसभा सांसदों पर सालाना करीब 650 करोड़ रुपये खर्च होते हैं। साथ में विविध समितियों के टूर एवं अन्य खर्चे जोड़ दें तो यह खर्चा सालाना 1,000 करोड़ रुपये से ज्यादा हो जाता है। हम सांसदों को तो अच्छा है, सदन चले या न चले वेतन मुफ्त, बिजली मुफ्त, पानी मुफ्त ट्रेन सफर और प्रतिवर्ष 34 फ्री एयर जर्नी, फ्री और फ्री।

महोदय, अनुमानित आँकड़ों के अनुसार एक सांसद पर लगभग 1 से 1.25 करोड़ रुपये खर्च होता है। जो गरीब जनता की गाढ़ी कमाई से आता हैं और जब सदन नहीं भी चलता, तब भी सांसदों को पूरा वेतन और भत्ता मिलता है। यह हम सांसदों के लिए ??नो वर्क और फुल पे?? की व्यवस्था है।

महोदय, पिछले मानसून सत्र में कई महत्वपूर्ण विधेयक लंबित थे, जो बिना चर्चा के या अधूरी चर्चा के पारित कर दिए गए।

माननीय सभापति : आप वंदे मातरम् पर प्रकाश डालिए।

श्री उमेषभाई बाबूभाई पटेल : कहा जाता है कि शून्य काल में 800 से अधिक मुद्दे उठने थे, वो सारे मुद्दे सदन में हमारे आपसी हंगामे की भेंट चढ़ गए। शून्यकाल एवं प्रश्नकाल भी नहीं चले। नतीजा? न सरकार से जवाब माँगा गया, न जनता की समस्याएँ उठीं।

माननीय सभापति : माननीय सदस्य आप वंदे मातरम् पर प्रकाश डालिए।

श्री उमेषभाई बाबूभाई पटेल : सर, पांच मिनट ही तो मिलने हैं, वह पांच मिनट पूरे कर लेने दीजिए।

माननीय सभापति : चर्चा वंदे मातरम् पर है।

श्री उमेषभाई बाबूभाई पटेल : सर, मैं वही बात कर रहा हूँ। सत्तापक्ष कहता है कि विपक्ष हंगामा करता है। विपक्ष कहता है कि सरकार चर्चा से भागती है, तो मैं विपक्ष के साथियों से पूछना चाहता हूँ कि प्रश्नकाल और शून्यकाल में तो सरकार की जवाबदेही होती है, तो यह प्रश्नकाल और शून्यकाल आपने सदन क्यों नहीं चलने दिया? किसने सरकार को भागने का मौका दिया? मैं सत्ता पक्ष और विपक्ष के दोनों साथियों से पूछना चाहता हूँ कि क्या हम ऐसे मुद्दे पर चर्चा कर एक-दूसरे पर कीचड़ उछालकर नीचा दिखाने के लिए आये हैं या फिर जनता ने हमें सड़क की लड़ाई सदन में लड़ने के लिए चुना है? नहीं, बिलकुल नहीं, जनता ने हमें सदन के अन्दर तर्क से, तथ्यों से, नीतियों से सार्थक चर्चा कर, जनहित एवं राष्ट्रहित के कार्य करने के लिए सदन में भेजा है।

महोदय जी, मैं दमन-दीव का एकमात्र लोकसभा का सांसद हूँ। हमारे पास विधानसभा नहीं है, हमारे पास राज्यसभा में प्रतिनिधित्व नहीं है। हमारी हर उम्मीद इसी सदन से है, लेकिन जब सदन ही नहीं चलता, तो हम अपनी जनता की आशाएं, अपेक्षाएं, उनकी आवाज़ और उनकी समस्याएँ कहाँ लेकर जाएँ?

महोदय जी, केवल वंदेमातरम् पर चर्चा करने से ही वंदेमातरम् का भाव सार्थक नहीं होगा, बल्कि ??वंदे मातरम्" का उद्घोष और राष्ट्रप्रेम तभी सार्थक होगा, जब सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों मिलकर आपसी मतभेदों से ऊपर उठ कर, संसद की गरिमा को अक्षुण्ण रखें और देश के अंतिम छोर पर खड़े अंतिम व्यक्ति तक उसकी हर मूलभूत आवश्यकता को पूरा करने में, उसे हर संभव सुख-सुविधाएँ एवं न्याय पहुँचाने में पूर्णतः सफल हों। अंत में, अध्यक्ष महोदय जी, वंदेमातरम् का सच्चा सम्मान तभी होगा, जब यह सदन सुचारु रूप से चले, जब यहाँ सार्थक चर्चा हो, जब जनता के मुद्दों पर काम हो। सर, एक ही मिनट है,मैं पांच मिनट के अंदर पूरा ही कर दूंगा।

सर, मैं पांच मिनट में पूरा कर दूंगा। जब सब मिलकर इस देश को मजबूत बनायें। वंदे मातरम् को नारा बनाना बंद कीजिए, उसे जीना शुरु कीजिए। सदन को चलने दीजिए, जनता के काम कीजिए। वंदे मातरम् गाने से नहीं, जीने से सार्थक होगा। जब तक हम अपनी मातृभूमि को अपने निजी स्वार्थ, पार्टी हित और सत्ता लोभ से ऊपर नहीं रखेंगे, तब तक यह नारा सिर्फ एक औपचारिकता ही बना रहेगा। जब तक हम हर दिन, हर पल अपने कर्म से ये सिद्ध न कर दें कि हमारा सर्वस्व मातृभूमि के चरणों में न्यौछावर है, तब तक यह वंदे मातरम् सार्थक नहीं होगा। जब जनता की हर तरह की आशाएं, अपेक्षाएं पूरी होगीं, तभी वंदे मातरम् का भाव सार्थक होगा। जय हिन्द, जय भारत। वंदे मातरम्।

माननीय सभापति : श्री जी. लक्ष्मीनारायण।

***m76SHRI G. LAKSHMINARAYANA (ANANTAPUR):** Vande Mataram is not just a song, it is the voice of the soul of India. The song was written by Bankim Chandra Chatterjee in 1875, which was later composed by Rabindranath Tagore. When this song was sung in front of the public in 1896, this song became the emotion of our country. Gradually it emerged as a war cry, sign of unity and sacrifice and also a source of inspiration for the freedom struggle. This song served as a bonding strength between various cultures, languages, castes, traditions and helped us take forward the spirit of unity in diversity. This song was widely sung in various public meetings and rallies.

It became a song for our freedom struggle and resulted in the National movement. On 24 January 1950 the constituent assembly accepted this song as our national song with full honours. That was not just a respect for that song but that was also an honour for the spirit which promoted unity and courage in our country. We are celebrating the 150th anniversary of our national song and we are conducting various National programs and public celebrations to promote this spirit amongst people of our country.

The spirit of Vande Mataram was not confined to Bengal or Delhi, it spread to the farther places like Anantapur in Rayalaseema of Andhra Pradesh. Mahatma Gandhi visited places like Tadipatri and Hindupur to spread the spirit of freedom struggle. The place where public meeting was conducted by Gandhiji in Hindupur is now being called as Gandhi chowk which silently witnessed the spirit of freedom struggle. People of Rayalaseema embraced the spirit of Vande Mataram. Schools established by Keshav Pillai, had secret meetings. A.M. Linganna Sevashramam in Parigi was the center for planning strategies for the freedom struggle. Villages displayed unprecedented

courage in opposing colonial rule. I would like to cite an incident, which happened in Vidapanu mandalam, Kothapalli.

The villagers stopped Britishers from transporting forest produce from Anantapur to Bellary by destroying a bridge. As a result Britishers got angry and imposed a heavy penalty of rupees 5000 on these villagers. Villagers paid that penalty by silently digesting the humiliation. Later on when the government returned that penalty back to the villagers, they constructed a primary school with that money. This is the greatness of Vande Mataram song.

Tribal leader Alluri Sitarama Raju participated in our freedom struggle and sacrificed his life. At a very young age he was attracted towards Vande Mataram song and participated in the freedom struggle. He stood against the Britishers and displayed the valour of Telugu people. It is a matter of pride to remember such great leaders and convey their courage to our future generations through this platform. On this occasion, I pay my tributes to all those leaders who sacrificed their lives in the freedom struggle and propagated the spirit of Vande Mataram. While we are celebrating the 150th anniversary of Vande Mataram, we also remember that the spirit is very much alive in the hearts of people in Anantapur. Their sacrifices remind us that patriotism means service, unity and courage. With these words I conclude my speech.

Vande Mataram. Jai Hind.

***m77श्री संतोष पांडेय (राजनंदगाँव) :** सम्माननीय सभापति महोदय, आज बहुत ही महत्वपूर्ण चर्चा चल रही है। मुझे माता के चरणों में शब्द पुष्प चढ़ाने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं।

माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का जितना आभार व्यक्त किया जाए, कृतज्ञता से यह मस्तक झुक जाता है। जैसे राजेन्द्र बाबू ने सोमनाथ मंदिर का पुनरुद्धार किया, भगवान राम की जन्मभूमि पर भव्य मंदिर का निर्माण हुआ, गुलामी के चिन्हों को मिटाने का काम किया, पथों के नाम बदले गए, उद्यानों के नाम बदले, रेलवे स्टेशन का नाम बदला, देश का सम्मान किया और इतना ही नहीं, देश के अधिकांश लोगों को जानकारी नहीं थी कि सरदार पटेल ने 562 रियासतों का विलयीकरण किया था। अधिकांश जनसंख्या को, हमारी युवा पीढ़ी को अभी जानकारी हुई है। इसके लिए माननीय मोदी जी का बहुत-बहुत आभार और धन्यवाद। आज जिस विषय पर हम चर्चा कर रहे हैं, इसके विषय में यदि मैं यह कहूं-

?जिनको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है

वह नर नहीं पशु निरा और मृतक समान है।?

हमारे राष्ट्र गीत को जो गौरव स्वतंत्रता के बाद मिलना चाहिए था और जिसे पूरे देश के हर कंठ में, चाहे वह वृद्ध हो, नर-नारी हो, नौजवान हो, चाहे बच्चे हों, सबके कंठ में यह गीत होता, क्योंकि यही गीत है, जिसने प्राण फूंकने का काम किया। हम सब जानते हैं, वंदे मातरम् यानी माता को प्रणाम। वह माता कौन सी है? कौन है वह माता? हम सब जब प्रात: काल उठते हैं तो सबसे पहले धरती माता को प्रणाम करते हैं और इतना ही नहीं जन्म से लेकर अंत काल में, जब मृत्यु का समय आता है तो परिवार के लोग कहते हैं कि अब धरती माता की गोद में उतारा जाए। यह वही माता है, जिसकी गोद में हम खेलते हैं, कूदते हैं, आगे बढ़ते हैं, विकास करते हैं, समृद्धि आती है। यह वही भारत माता है, जिसे पुराण, ऋग्वेद, यजुर्वेद, वाल्मीकि रामायण या तुलसीकृत हो, सभी ने माता का सम्मान किया है। भारत भारती में कवि ने कहा है-

?भू लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहाँ?

फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगा जल जहाँ।

सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?

उसका कि जो ऋषि भूमि है, वह वृद्ध भारतवर्ष है।

हां, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमोर है

ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?

भगवान की भवभूतियों का यह प्रथम भंडार है

विधि ने किया नर सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है।?

इस भारत माता को सामने बैठे विपक्ष के लोगों ने जब नेहरू जी के विषय में बात हुई तो कांग्रेस वाले किस प्रकार से बात करते थे, जिन्होंने केवल इसे जमीन का टुकड़ा माना। मात्र भूमि और मातृ भूमि में अंतर है। यह मात्र भूमि नहीं, यह मातृ भूमि है। इसीलिए हम सब जानते हैं कि वर्ष 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान संसद में तत्कालीन प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू के उस बयान की कड़ी आलोचना की गयी। पंडित नेहरू ने कहा था कि अक्साई चिन बंजर भूमि है, जहां घास का तिनका भी नहीं उगता है। जिस पर महावीर त्यागी जी ने अपनी टोपी उतारकर, अपना गंजा सिर दिखाते और सहलाते हुए तंज कसा था कि यहां भी कुछ नहीं उगता तो क्या इसको भी चीन को दे दें? यह घटना मातृ भूमि के प्रति उनके समर्पण, देश की जमीन के प्रति उनके समर्पण, नेहरू की नीतियों पर यह टिप्पणी की गयी थी। उसको पूरा देश जानता है।

नेहरू सरकार की, कांग्रेस सरकार की अक्साई चीन पर चीन के कब्जे के लेकर उदासीनता के बारे में महावीर त्यागी जी ने कहा था कि वे एक-एक इंच जमीन भी खोने के खिलाफ थे। कांग्रेस और नेहरू के लिए यह मात्र जमीन का टुकड़ा था, जिसे हम मातृभूमि कहते हैं, वह हमारी भारत माता है।

सभापति महादेव, हम सब जानते हैं, अथर्ववेद में भी कहा गया है-

"ये ग्रामा यद् रण्यं या सभा अधिभुभ्याम्,

ये संग्रामा: संमितयस्तेसु चारुवंदेम ते।"

इसी प्रकार से रामायण में वाल्मीकि जी ने वर्णन किया है कि जब लक्ष्मण जी सोने की लंका को देखकर वहां की प्रकृति, वहां की छटाएं और वहां के सौंदर्य के बारे में बोलते हैं तो भगवान राम समझ जाते हैं और वे पंक्ति में कहते हैं -

"अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते,

जननी जन्मभूमिश्च स्वार्गादपि गरीयसी।"

लक्ष्मण मेरा अवध इस सोने की लंका से बढ़कर है। हमारी जन्मभूमि हमारी मातृभूमि है। इसी प्रकार से हम सब जानते हैं कि इसके एक नहीं, अनेक उदाहरण हैं- 'गायन्ति देवा किलगीतकानि'। यह ऐसी भूमि है, जिसके बारे में रसखान ने गाया है। रसखान ने जिन शब्दों में वर्णन किया है, उसको मैं बताना चाहता हूं। वे अपने भाव में कहते हैं कि मैं यदि पक्षी बनूं तो कदम्ब के डाल की पक्षी बनूं। मैं यदि पशु बनूं तो जिसे भगवान कृष्ण चराते हैं, वैसा पशु बनूं।

"मानुष हों तो वही रसखान, बसों ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन,

जो पशु हो तो कहा बस मेरो, चरौ नित नंद की धेनु मझारन,

पाहन हो तो वही गिरिको धरयो कर छत्र पुरंदर कारण।"

यह ऐसी धरती है और इसीलिए कहा गया है कि

"गार्यन्ति देवा: किलगीति कानि,

धन्यास्तुये भारत भूमि भागे,

स्वर्गापवर्गा स्पद हेतु भूते।"

यहां देवता भी जन्म लेने के लिए तरसते हैं। इस भरत भूमि के लिए, जिस प्रकार के शब्द कह गए हैं, यह भाव ही नहीं है। एक दल और भी है, जो सामने बैठे हैं, जिनके नेता ने भारत माता को डायन कहा था। एक इनके नेता जो कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे, देवकांत बरूआ, जिन्होंने कहा था- 'Indira is India, India is Indira', यदि इनके लिए कोई भारत माता है तो वही हैं, जो इंदिरा गांधी थीं। आप इनके भाव को समझ सकते हैं।

सभापति महोदय, जिस प्रकार से राष्ट्र के वंदे मातरम् के ऐतिहासिक महत्व की उपेक्षा की गई, हम सबको एक बार फिर से इसको जागृत करने की जरूरत है। वर्ष 1757 तक मुगलों के अधीन लंबे समय तक रहने के बाद ब्रिटिश शासन का युग शुरू हुआ। वर्ष 1857 के विद्रोह के बाद देश भर के लोगों के मन में आशंका थी कि क्या राष्ट्रकवि स्वराज के सपनों को साकार कर पाएगा। उस समय बंकिम चंद चटर्जी ने राष्ट्रीय चेतना के इस महान स्रोत की रचना की। रविंद्र नाथ ठाकुर ने कहा था कि वंदे मातरम् जादुई शब्द है, जो लौह द्वार को खोल देगा, खजाने की दीवार तोड़ देगा, यह ग्लोरियस थॉट ऑफ टैगोर किताब के पृष्ठ 165 पर अंकित है। स्वयं बंकिम बाबू ने यह कहा कि मेरी सारी कृतियां गंगा में डूबो दी जाएं, उससे कोई हानि नहीं होगी। परन्तु यदि एक शाश्वत महान गीत बचा रहेगा तो मैं देश के हृदय में जीता रहूंगा। एक दिन ऐसा आएगा जब बंग भूमि इस गीत को सुनकर नाचने लगेंगे। यह भाव था 'वंदे मातरम्' के विषय में।

सभापति महोदय, मैं केवल इतना कहते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूं कि आज फिर से पुनर्स्थापना सम्मान देने का काम माननीय नरेंद्र मोदी जी ने किया है और यह जन-जन तक पहुंचे यही मेरी भावना है।

***m78श्रीमती ज्योत्स्ना चरणदास महंत (कोरबा) :** धन्यवाद सभापति महोदय, बहुत इंतजार के बाद मुझे बोलने का अवसर मिला। आज मैं ?वंदे मातरम्? की 150वीं वर्षगांठ पर हो रही इस ऐतिहासिक चर्चा में भाग लेने के लिए अत्यंत गर्व से और नम्रतापूर्वक खड़ी हुई हूं।

सभापति महोदय, मैं उस छत्तीसगढ़ की माटी से आती हूं, जहां के आदिवासियों ने भी अंग्रेजों की गोलियों का सामना इसी ?वंदे मातरम्? के उद्घोष के साथ किया था। बंकिम बाबू के गीत में ये शब्द केवल शब्द नहीं हैं, बल्कि ये शक्ति मंत्र हैं। उनका हर शब्द शक्ति मंत्र है, जिसने हमारे सोये हुए राष्ट्र को जगा दिया। एक माँ, एक महिला सांसद होने के नाते मैं इस गीत की भावनाओं को गहराई से महसूस करती हूं। मेरे दादा जी और मेरे ससुर जी स्वतंत्रता सेनानी रहे, तो मैंने भी इसे बहुत करीब से सुना है।

हम जब ?वंदे मातरम्? कहते हैं, तो हम अपनी धरती माँ को सम्मान देते हैं, माँ का दर्जा देते हैं। वह माँ जो कभी अपने बच्चों में भेदभाव नहीं करती, चाहे वह किसी भी धर्म के हों, लेकिन बहुत अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि आज कुछ राजनैतिक लाभ लेने के लिए इतिहास को तोड़-मरोड़कर इस ?वंदे मातरम्? को झगड़े में डाल दिया गया है और अक्सर यह सवाल उठाया जा रहा है कि इसे छोटा क्यों किया गया है? हमारी प्रियंका जी ने इसको विस्तृत रूप से इस सदन में रखा।

मुझे इस बारे में ज्यादा नहीं कहना पड़ेगा, लेकिन मैं इतना जरूर कहती हूं कि वर्ष 1937 में यह फैसला गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, पंडित नेहरू और मौलाना आजाद की उपस्थिति में सहमति से लिया गया था। पहले दो अंतरे माँ भारती के प्राकृतिक सौंदर्य पर आधारित हैं, इन्हें हर धर्म का व्यक्ति सम्मान से गा सकता था। उस समय हमारा लक्ष्य अंग्रेजों के खिलाफ पूरे हिंदुस्तान को एक करना था, न कि बांटना। आज जो लोग इस फैसले पर सवाल उठाते हैं, वे उन नेताओं पर सवाल उठाते हैं, जिन्होंने इस देश को आजादी दिलाई। उन पर प्रश्न उठाकर वे लोग उनकी राष्ट्रभक्ति पर सवाल उठाते हैं, जो बहुत निंदनीय है।

महोदय, हमारे छत्तीसगढ़ में कबीर साहब का बहुत प्रभाव है। संत कबीर ने एक दोहा कहा है कि

?साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।

सार सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय।।?

हम उस विचारधारा के हैं और हमारी कांग्रेस भी उसी विचारधारा की है कि हम गलत चीजों को सूपे की तरह उड़ा देते हैं और अच्छी चीजों को अपनाते हैं, लेकिन जो हमारी विचारधारा है, वे उससे अलग हैं। हर तरफ नफरत और गांधी, नेहरू के प्रति अपशब्द सुनना हम लोगों की आदत सी हो गई है और लगभग पिछले छह सालों से मैं इस सदन में यह सुन रही हूं, उन गांधी जी के लिए जिन्होंने ?वंदे मातरम्? का सपना साकार करने के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया, वे आज अपमान के घेरे में खड़े हुए हैं, यह आश्चर्य की बात है। आज मैं एक और बात कहना चाहूंगी कि यह हमारे ?वंदे मातरम्? की 150वीं वर्षगांठ है।

?सुजलाम, सुफलाम् मलयज-शीतलाम् शस्यश्यामलाम् मातरम्? हमारी धरती माँ की हरियाली, नदियां, पहाड़, स्वच्छ हवा, जल, जंगल, जमीन से भरपूर है, लेकिन आज अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि हमारे आदिवासियों ने, जिन्होंने अपने भारत को स्वतंत्र करने के लिए, उन आदिवासियों की जल, जंगल, जमीन आज खतरे में हैं। आज न पानी स्वच्छ है, न हवा स्वच्छ है, दिल्ली की हवा इतनी प्रदूषित है कि जहरीली हवा बन गई है। क्या यह जहरीला प्रदूषण हम लोगों के हिस्से में आएगा?

यह सरकार महिला विरोधी है, किसान विरोधी है, शिक्षा विरोधी है, बेटियां विरोधी है, यहां पर कोई भी सुरक्षित नहीं है। मैं यह दावे के साथ कह सकती हूं कि यहां पर कोई भी सुरक्षित नहीं है। अंत में मैं यह कहना चाहती हूं कि यदि ये सब और हम सब मिल करके ?वंदे मातरम्? को सम्मान देना चाहते हैं, तो 150 वर्ष बाद आज फिर एक बार हम यह सोचें कि बेरोजगारी, महंगाई और वायु प्रदूषण, जिससे हमारा देश लगातार जूझ रहा है, उससे निजात दिलाएं, ताकि हम राष्ट्रीय गीत की सभी पंक्तियों को साकार रूप दें और उसे सार्थक करें। मैं इसके साथ ही यह भी कहूंगी ? जय हिंद, ?वंदे मातरम्?।

***m79श्री पुष्पेंद्र सरोज (कौशाम्बी) :** महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। वंदे मातरम् केवल एक राष्ट्रीय गीत नहीं है, बल्कि उस भारत माता की कल्पना है, जिनके लिए हमारे पूर्वजों ने जान की कुर्बानी दी और इसी देश की मिट्टी को चादर की तरह ओढ़कर उसी मिट्टी में समा गए। यह वही भारत माता है जिनके लिए रानी लक्ष्मी बाई और बेगम हजरत महल जैसी वीरांगनाओं ने बलिदान दिया।

आज सवाल इसका नहीं है कि वंदे मातरम् से कौन सी पंक्तियां हटाई गईं और किसने हटाईं, बल्कि सवाल इसका है कि क्या हमारे महापुरुष सुभाष चंद्र बोस, मौलाना अबुल कलाम आजाद, सरोजनी नायडू, गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर जैसे महापुरुषों की विरासत, विवेक और देशभक्ति को मानने के लिए यह सरकार तत्पर है कि नहीं?

महोदय, माननीय प्रधान मंत्री जी ने आज सुबह अपने भाषण में कहा कि अंग्रेजों के समय में इस देश में बंगाल के माध्यम से ईस्ट इंडिया कंपनी का राज था। वे हमें लूट पाए, क्योंकि उन्होंने फूट डालो और राज करो की नीति अपनाई। वही रास्ता आज यह सत्ताधारी पार्टी अपना रही है। आज कुछ अरबपतियों के साथ गुजरात के जरिए एक नई वेस्ट इंडिया कंपनी बन गई है। यह वेस्ट इंडिया कंपनी जो समाज में विभाजन पैदा करती है और देश में प्रभाव एवं नियंत्रण स्थापित करने में पूरा जोर लगा रही है। जिस देश में 1 प्रतिशत लोगों के पास 40 प्रतिशत संपत्ति हो, जिस सरकार का लक्ष्य वर्ष 2030 तक 90 प्रतिशत बंदरगाहों को निजी हाथों को सौंपना हो, जहां 11 नए हवाई अड्डों के निजीकरण पर विचार किया जा रहा हो, वहां यह महसूस होना बिल्कुल स्वाभाविक है कि मानो सरकार नहीं, बल्कि कंपनियां ही देश की दिशा तय कर रही हैं। जिस तरीके से ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने समय में इंडिगो के जरिए हमारी जनता को सताने का काम किया, आज यही वेस्ट इंडिया कंपनी अपने इंडिगो के जरिए हमारी जनता को, इस देश की जनता को सताने का काम कर रही है। जिस तरह अंग्रेजों ने हमारे महापुरुषों की सामूहिक समझ और देशभक्ति पर प्रहार किया, उनकी नीतियों पर प्रहार किया, उसी तरह से आज उत्तर प्रदेश में दलितों, गरीबों, पिछड़ों के घरों पर बुलडोजर चलाया जा रहा है। ब्रिटिश राज में उन्होंने अपनों को भी नहीं बख्शा। आज इस सरकार ने कई वर्ष तक इनके समर्थक रहे माननीय प्रधान मंत्री के क्षेत्र के दाल मंडी इलाके में अपने ही

समर्थकों की दुकान तोड़ने का काम इस सरकार ने किया। यह यही बताता है कि सत्ता की भूख में अपनों की भी नीलामी लग जाती है।

प्रधान मंत्री जी ने बंकिम बाबू जी का बहुत जिक्र किया, लेकिन वे भूल गए कि बाबू जी ने स्वयं कहा था कि सामाजिक असमानता, राष्ट्र को कमजोर करने वाला एक विष है। बाबा साहेब अंबेडकर ने उनकी इसी सीख को संविधान में उतारकर हमारे देश को मजबूत बनाने का काम किया। आज भाजपा सरकार अंबेडकर के चेहरे का इस्तेमाल कर केवल वोट पाने का काम करती है। वह उनकी सिखाई हुई विचार धारा पर बिल्कुल अमल नहीं करती। वर्ष 1948 में देश के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद साहब ने शिक्षा को राष्ट्र निर्माण की सबसे मजबूत नींव बताया था। आज यही सरकार उसकी धज्जियां उड़ा रही है। आज मुझे इस देश का सबसे नौजवान सांसद होने के तहत यह बहुत शर्मनाक रूप से कहना पड़ रहा है कि इसी संसद परिसर के बाहर जब नीट और एसएससी के लिए लोग प्रदर्शन कर रहे थे, छात्र प्रदर्शन कर रहे थे, टीचर्स प्रदर्शन कर रहे थे, तो इसी सरकार ने उनको मारा-पीटा, बस में डाला।

महोदय, जिस सरकार का स्वतंत्रता संग्राम में कोई योगदान नहीं है, वह राष्ट्रवाद का सर्टीफिकेट बांटती है। जिस देश में भगत सिंह, अशफाक उल्ला खान जैसे कई नौजवान खुशी-खुशी आजादी के लिए फांसी चढ़ रहे थे और खून-पसीना बहा रहे थे, तब इनके नेता अंग्रेजों के सामने अपने माफीनामे लिख रहे थे। मैं सत्ता पक्ष से सीधा सवाल पूछना चाहता हूं कि जब इनके खुद के कई सांसद, कई नेता वंदे मातरम् का पूरा उल्लेख नहीं कर पाते हैं, स्वयं राष्ट्रगीत का पाठ नहीं कर पाते हैं, तो वे उसके नाम पर राजनीति कैसे कर सकते हैं?

प्रधान मंत्री जी ने नेहरू जी का जिक्र करते हुए कहा कि वे मुस्लिम लीग के आगे झुक गए थे। स्वाभाविक सवाल उठता है कि आज वंदे मातरम् की इस सदन में चर्चा करके बार-बार बंगाल और तमिलनाडु का जिक्र करके, क्या उसके पीछे यही मंसूबा है कि खुद की कुर्सी बचाने की भी राजनीति हो रही है? क्या आज सत्ता पाने के लिए खुद प्रधान मंत्री जी झुक रहे हैं?

मैं आखिर में सरकार से कहना चाहूंगा :

इस अहंकार में जी रहे हैं, जैसे उनको तो मरना ही नहीं।

तख्त पर ऐसे बैठे हैं वो, जैसे उनको उतरना ही नहीं।

यूं जहन्नुम का वो टिकट दे रहे हैं, जैसे खुद को खुदा मान बैठे हैं वो।

ऐसी सरकार को, इस अहंकार को मैं नहीं जानता, मैं नहीं मानता।

ऐसी तकरीर को, ऐसी तहरीर को मैं नहीं मानता, मैं नहीं जानता।

वंदे मातरम्, जय हिंद, जय भीम।

***m80SHRI SAUMITRA KHAN (BISHNUPUR):** Vande Mataram! Vande Mataram! Hon. Chairperson Sir, on the 150th glorified year, the discussion which has been introduced by our Honorable Prime Minister, is the reason behind my proud feeling. This day is very significant to me, because on the occasion of my birthday, I have got an opportunity to speak on Vande Mataram. So, I have to thank Bharatiya Janata Party because they have introduced the discussion on Vande Mataram which is our national slogan. King of literature Bankim Chandra Chattopadhyay said with grief that when Britishers do bird hunting it also becomes a news, but Bengalis don't have any history. He was the first person who showed the path to get freedom from the British boundary. In subjugated India sage Bankim Chandra gifted us Vande Mataram songs. The word Vande Mataram means to venerate mother and worship your motherland.

As per the words of sage Aurobindo, Vande Mataram is the vision of the mother. Today, when we follow Mahatma Gandhi Ji's words, "When we sing the oath of the motherland, Vande Mataram we sing it to be the whole of India." As per Rabindranath Tagore who is our Kaviguru, Vande Mataram mantra is not only for worshipping Bengal, this is to venerate the mother earth. If we raise our voice for this song for worship, in the whole world today, then in future it could be heard in every single house. Our sage Aurobindo Ghosh said " The mantra has been given and in a single day a whole people have been converted to the religion of patriotism."

Today with this Vande Mataram, my Bishnupur is associated, because Jadunath Bhatta ji who belongs to Bishnupur, was the first composer of Vande Mataram and composed it. So, as a resident of Bishnupur, I feel proud because Jadunath Bhatta ji composed the song Vande Mataram. In 1905, a procession was started with the slogan of Vande Mataram in Barishal. When Khudiram Bose went on the gallows, he raised the slogan Vande Mataram. But it's unfortunate that Congress and Trinamool Congress are saying we should discuss something else, apart from Vande Mataram. I strongly condemn them, and I am asking why hasn't Bankim Chandra been discussed in 150 years? Why hasn't Rabindranath Tagore been discussed? Why Dwijendralal Roy hasn't been part of the discussion? Why are only the Bharatiya Janata Party and the Central government raising this issue?

I am grateful to Bharatiya Janata Party for doing the discussion. It really makes me very happy. The RSS has been blamed always, but it is the only organisation that worships Bharat Mata. We see India as our mother. It's a matter of pride for me. If we say Vande Mataram then also they are feeling sad. I would say only one thing that today Trinamool Congress speaks on so many things

but they have been incapable of structuring a statue of Swami Vivekananda. In West Bengal, they also have been failed to construct a statue of Netaji Subhash Chandra Bose. Those who take part in procession with Vande Mataram, face attack. This is a matter of shame to me. Because of uttering Vande Mataram, one person from Murshidabad was martyred. Today the Bankim Chandra's house is in a dilapidated condition. The state government is not taking care of that.

I would say only one thing that only slogan which carried our country forward. This is the slogan for which we feel proud not only as a bengali but as an Indian also. India got independence only because of Vande Mataram and many of them are relating Vande Mataram with different races. I feel ashamed of it. Why did the Bharatiya Janata Party raise its voice after 150 years? Before that Congress government was in power. Has it ever occurred to you to discuss Vande Mataram? They

only cared for self-independence and all family members should hold position as MP, Minister, Prime Minister even their grandsons will get everything and apart from them, no one is going to get anything. On the other hand in the Bharatiya Janata Party, Prime Minister Narendra Modi ji, Home Minister Amit Shah ji and Defence Minister Rajnath Singh ji set an example of hard working that leads to success. I would say one thing only, that in West Bengal when we march with the Indian flag and Vande Mataram then Trinamool Congress workers attack us with stick. Why would this happen? If we utter Vande Mataram then we will be sent to jail. In West Bengal, women are not safe. It makes me sad, that from Trinamool, no one has said that we will build a big statue of Netaji Subhash Chandra Bose and Bankim Chandra. They didn't even mention that we will worship Swami Vivekananda.

We are proud of being Bengali. There are so many rebels in Bengali but apart from Hon. Prime Minister no one had given land. I didn't witness Netaji's statue in Delhi in my childhood but now our Honorable Prime Minister unveiled the statue of Netaji Subhash Chandra Bose that's why I bow and pay my respect to Hon. Prime Minister. He is the only person who pays respect to all Bengali people. We used to sing:

"Lavished with a wealth of grains and flowers is our Mother Earth?

In the midst of this is a land, more splendid than all other lands?

She is created by dreams, she is surrounded by memories?

Nowhere will you discover such a land as this?

O? she is the queen of all lands,

She is my motherland."

We must utter Vande Mataram. Apart from vande mataram, there are so many invaluable things that being imposed on the students of West Bengal for study. They have been directed to speak in Bangladeshi accent. I feel very sad because they aren't not talking about Babri mosque which is going to be constructed but when we worship Maa Durga, started procession from Bankim Chandra's house with the slogan of Vande Mataram and also when do procession with Swamiji's idol, we face obstacles. I am very grateful to Hon. Prime Minister because Bengali people are raising their voice, moving forward in every direction and working very hard only because of him. The Bengali people have received deep respect only from Bhartiya Janata Party.

I would also like to thank our Hon. Prime Minister Narendra Modi ji who has given immense respect to Bengali people. Now at the end of my speech I would like to add something. Bankim Chandra ji said about a small fact repeatedly and no one has mentioned it till now. There is a story that when Bankim Chandra Ji's daughter was singing too well but after singing Vande Mataram she said that 'No one is liking it.' Then he said ' if not today, then after twenty years from now, this Vande Mataram will take the country forward and this will unite everyone with a single thread.' He also said that, 'I might not alive but you may be here to see the success of Vande Mataram. It's very similar to the Hon. Narendra Modi Ji's vision of building 'Vikshit Bharat' in 2047. We will take our country forward with continuous chanting of Vande Mataram and in the whole world we would be the best of the best. We should say once again Vande Mataram! Vande Mataram!

***m81श्री विशालदादा प्रकाशबापू पाटील (सांगली) :** सभापति महोदय, इस अवसर के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। मैं सरकार को बधाई देना चाहता हूँ कि वंदे मातरम् लिखे जाने के 150 वर्ष पूरे होने पर उन्होंने चर्चा कराई। इसी साल जनवरी में राष्ट्रगीत को बने हुए 75 वर्ष पूरे हुए हैं। उसे भी सेलिब्रेट करना चाहिए था। वर्ष 2021 में 125 वर्ष पूरे हुए, जब पहली बार गुरुदेव जी ने यह गाना गाया था, उसे भी सेलिब्रेट करना चाहिए था। शायद उस वक्त बंगाल में चुनाव नहीं थे, तो उन्हें यह जरूरत महसूस नहीं हुई। स्वातंत्र्य संग्राम में लोगों को एकजुट करने में संगीत और कविता ने बहुत अहम भूमिका निभाई है। जैसे बंगाल में वंदे मातरम् और पंजाब में रंग दे बसंती है, वैसे ही हमारे महाराष्ट्र में साने गुरुजी ने कहा है -

बालसागर भारत होवो, विश्व शोभूनि राहो।

हमारे सांगली के जी. डी. माडगूळकर साहब ने कहा था:

?वेद मंत्राहून आम्हा वंद्य वंदे मातरम्।?

23.00 hrs

उसका जिक्र श्री अरविन्द सावंत जी ने किया था, इसलिए मैं उस पर और नहीं बोलूँगा। हमारे सांगली के शंकरराव निकम जी ने क्रांति से नाना पाटिल की जो पैरलल सरकार बनी थी, उसमें लोगों को इकट्ठा करने के लिए और लोगों को प्रेरित करने के लिए बहुत से गाने लिखे थे और गाये भी थे। मेरे दादा वसंत दादा पाटिल जी जब

अंग्रेजों से लड़े और छाती पर गोली खायी थी, तब उन्हें भी वंदे मातरम् एवं अन्य गीतों से प्रेरणा मिली होगी। इन गीतों में देश के आम दुश्मन- अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए और देश को एकजुट करने का काम किया था।

दुर्भाग्य यह है कि उन्हीं गीतों का प्रयोग आज सरकार लोगों को बांटने में कर रही है। मैं सत्ता पक्ष के कई वक्ताओं की बात सुन रहा था। वर्ष 1937 में क्या हुआ, इससे उनकी सुई आगे ही नहीं बढ़ रही थी। किसने क्या काटा, किस पर कितनी चर्चा हुई, इसी पर बात चल रही थी। हमें 150 साल पहले लिखे गये दो छन्दों का जश्न मनाना चाहिए था। जो चार श्लोक वर्ष 1882 में लिखे गये थे, उनका डेढ़ सौ साल पूरा होने में अभी सात वर्ष बाकी है। सात साल बाद भी बाकी की चर्चा हो सकती थी, लेकिन शायद सरकार यह समझती है कि सात साल बाद वे सत्ता में नहीं रहेगी, इसलिए अभी चर्चा कर रही है।

जन-गण-मन भी एक लम्बी कविता का हिस्सा है, जिसे हमने अपना लिया है। वैसे ही, हमारे राजनीतिक विचार कैसे भी हों, पार्टी अलग-अलग हो, लेकिन महाराष्ट्र में भी ?जय-जय महाराष्ट्र माझा? को राज्य-गान बनाने का काम एकनाथ शिंदे साहब ने किया था, जब वे मुख्यमंत्री थे, इसके लिए मैं उनको बधाई देता हूँ। लेकिन उस कविता- ?जय-जय महाराष्ट्र? का एक हिस्सा उन्होंने काट दिया था। क्या हमने उनके मंसूबे पर शक किया? नहीं किया। Which is why I say, आज सरकार की जो यह चर्चा है, उसमें कुछ संदेह-निर्माण होता है। The fact is that the youth of today want to stop this petty politics. They want you to talk about the nation; they want you to talk about the future of the country; they want you to talk about the future of the youth; they want you to talk about education; they want you to talk about health; they want you to talk about unemployment; they want to talk about pollution. There are so many things they want to talk about. Unfortunately, the Government does not understand. I really hope that they do. अगर ये न समझ पाए, तो वह दिन दूर नहीं कि उनको वहाँ से उठकर यहाँ आना पड़ेगा।

***m82श्री छोटेलाल (राबर्ट्सगंज) :** माननीय सभापति महोदय, मैं आज आपकी अनुमति से एवं हमारे पीडीए के मसीहा, जननायक माननीय श्री अखिलेश यादव जी की अनुमति से बहुत ही महत्वपूर्ण वंदे मातरम् विषय पर बोलने का मौका मिला है

।

अगर वंदे मातरम् का मतलब सब समझ जाएंगे, तो मुझे लगता है कि इस देश में अन्याय नहीं होगा। वंदे मातरम् का शाब्दिक अर्थ है- मैं माँ को नमन करता हूँ या माँ, मैं तुम्हारी स्तुति करता हूँ। यह भारत माता के प्रति गहरी अभिव्यक्ति और भक्ति के भाव को व्यक्त करता है, जो अपनी भूमि, नदियों, पहाड़ों और संस्कृति का प्रतीक है। इसे भारत के राष्ट्रीय गीत के रूप में आज़ादी के समय बनाया गया है।

यह गीत विदेशी शासन का विरोध करने से कहीं अधिक है। जब देश गुलाम था और गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई भारत माता कराह रही थी, तो हमारे देश के क्रांतिकारी रणबांकुरे जाँबाज़ सिपाहियों ने इस वतन की बलवेदी पर आत्म-आहूति देकर इस देश को आजाद करवाया था। वहीं पश्चिम बंगाल की धरती से नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने ललकारा था- ?ऐ हिन्दुस्तानियों तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।? वहीं बिहार और झारखंड की धरती से नीलाम्बर और पीताम्बर सिंह खरवार की तलवारें हुंकार भर रही थीं और पिस्टल भी हुंकार भर रहे थे- ऐ अंग्रेजों भारत छोड़ो, वरना ये पिस्टल की गोलियाँ तुम्हारे जबड़े में उतार दी जाएंगी। चित्तू पाण्डेय और मंगल पाण्डेय जैसे तमाम क्रांतिकारियों ने जान की बाजी लगाकर इस देश को आज़ाद करवाया था। जब देश आज़ाद हुआ, तो समझ लीजिए कि 16 साल, 18 साल और 22 साल के नौजवानों ने, जैसे खुदीराम बोस, अशफाकउल्ला खान, राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद, चित्तू पाण्डेय, मंगल पाण्डेय आदि क्रांतिकारियों ने अपनी जान की बाजी लगाकर देश को आज़ाद कराया था।

आज़ादी का मतलब यह नहीं होगा कि हम अन्याय करें। ?वंदे मातरम्? का मतलब होता है कि मैं मां से आराधना करता हूं, वंदना करता हूं। मैं यह गीत गाकर कहता हूं कि ?हे मां, मैं आज़ादी दिलवाऊंगा और भारत के लोग अच्छी तरह और न्यायपूर्वक तरीके से रहेंगे?। आज क्या हो रहा है? कहीं भी न्याय नहीं मिल रहा है। कोर्ट, कचहरी, थाना, आप जहां कहीं भी देखिए, वहां अन्याय हो रहा है। इतना ही नहीं, देश और प्रदेश के बच्चे जहरीली कफ सीरप पीने की वजह से मर रहे हैं। अवैध खनन हो रहा है, तमाम भ्रष्ट व माफिया लोग ऐसा कर रहे हैं।

महोदय, मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूं। इस गीत को मात्र दो दिन पहले लागू किया गया था। 26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू हुआ था और 24 जनवरी, 1950 को संविधान सभा ने इसको राष्ट्रीय गीत घोषित किया था। इसलिए यह गीत आया है, ऐसा न हो कि हम हिन्दूवादी हो गए हैं, तो हम हिन्दू और मुसलमानों के बीच झगड़ा पैदा करें। ऐसा नहीं होना चाहिए
।

सभापति महोदय, मैं कुछ पंक्तियां बोलना चाहूंगा। जब क्रांतिकारी जेल जा रहे थे, तब वे कोरा आंचल फैलाकर रहम की भीख मांग रहे थे। वे कहते थे ?

?माता हो ललनवा देदा, बहिनी हो वीरनवा देदा,

देशवा के कारण भौजी, आपन तू सजनवा देदा।?

***m83SHRI NILESH DNYANDEV LANKE (AHMEDNAGAR)**: Hon. Chairperson, I am thankful to the Nationalist Congress Party and hon. Sharad Pawarji and Honorable Supriya Suleji for giving me the opportunity to speak. I am expressing my thoughts on this historic and glorious occasion of the 150th anniversary of the national song Vande Mataram in this august house.

This is not just an anniversary but, a celebration of the spirit and cultural consciousness of the Indian freedom struggle. This song, composed by Bankim Chandra Chatterjee on 7 November 1875, has been a source of inspiration for crores of Indians. When the British partitioned Bengal in 1905, Vande Mataram became the slogan of the anti-British protesters. This slogan crossed geographical boundaries and united the compatriots.

Hon. Speaker, the land of Maharashtra has experienced the power of this song. Lokmanya Tilak spread this slogan throughout the country through his newspaper Kesari. Swatantraveer Savarkar took inspiration from this song while in prison. The tolerant rule of Chhatrapati Shivaji Maharaj and the inspired tradition of Saint Tukaram and Saint Dnyaneshwar and the culture of Maharashtra respect this song with harmony and unity.

Hon. Sharad Chandra Pawarji has clearly said that respect for Vande Mataram is mandatory. But, the proof of true nationalism is hidden in the tricolor and the Constitution. Let us recall the statement of Rajendra Prasad that it is unanimously agreed that in 1937, our nation-builder accepted the first two stanzas of the song as the national song, respecting the feelings of all communities and expressing respect for the native land.

Vande Mataram will not be a force of division but, of harmony and reconciliation. Let us realize this feeling through development, social justice, and constitutional values. In Vande Mataram, Sujalam Suphalam is inverted, which means rich in fruits and water. This is to solve the challenges of the present for us. Today's youth do not want slogans, they want employment. Service to the native land will happen when we give them employment and education. Let us salute the sentiment of Jai Jawan, Jai Kisan, Jai Vigyan, Jai Rozgar. The veneration of Sujalam Suphalam will be true when our farmers are free from drought and debt.

Our farmers in Marathwada and Vidarbha are struggling with a water crisis. It is the duty of the government to wipe off the tears of the farmers. The feeling of unity of Vande Mataram is important and this song makes us aware that we are Indians above caste and religion. Let us see the legacy of

Vande Mataram not only as pride but also as a feeling of unity. Let us realize this by following development, social justice, and constitutional values.

Thank you.

***m84श्री जुगल किशोर (जम्मू) :** सभापति महोदय, मैं सर्वप्रथम इस ऐतिहासिक अवसर पर इस पवित्र सदन में देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी जी का आभार प्रकट करता हूं, जिन्होंने वन्दे मातरम् पर चर्चा का शुभारंभ किया। वन्दे मातरम् स्लोगन नहीं, यह एक मंत्र है, जो देश के प्रति समर्पण भाव और त्याग की प्रेरणा देता है। यह वह मंत्र है, जिसके माध्यम से हमें आज़ादी मिली। आज़ादी दिलाने वाले वे शहीद वन्दे मातरम् गाते-गाते फांसी पर चढ़ गए, लेकिन कांग्रेस ने उन शहीदों को न श्रेय दिया, न सम्मान दिया और न ही वन्दे मातरम् का सम्मान किया।

महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि प्रधानमंत्री मोदी जी ने वन्दे मातरम् को सम्मान दिलाने का काम किया है। वन्दे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर भारतवर्ष में रैलियां निकाली जा रही हैं। वन्दे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य पर इसे उत्सव के रूप में मनाने का निर्णय देश के प्रधानमंत्री जी ने लिया है। मोदी जी ने वन्दे मातरम् को सम्मान देते हुए विशेष डाक टिकट और सिक्का भी जारी किया।

महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि आज हम सब एक ऐसे अमृत अवसर के साक्षी बन रहे हैं, जिसके 150 वर्ष पूरे हो रहे हैं। वन्दे मातरम् के ये वर्ष भारत की आत्मा, राष्ट्र की शक्ति और आजादी की लौ के 150 वर्ष हैं। 150 वर्ष सिर्फ एक संख्या ही नहीं, यह भारत की धड़कनों का लेखा-जोखा है। यह वह समय है, जिसने गुलामी से स्वतंत्रता तक की यात्रा को देखा है। मैं कहना चाहता हूं कि वन्दे मातरम् का अर्थ है - मातृभूमि मैं तेरी वन्दना करता हूं यानी यह गीत हमारी मातृभूमि भारत के प्रति असीम प्रेम और श्रृद्धा का प्रतीक है।

महोदय, आज़ादी के समय वन्दे मातरम् सिर्फ एक गीत नहीं, आज़ादी का परम आह्वान था। यह राष्ट्र की प्रार्थना थी, अंग्रेजों के जुल्मों के प्रति विद्रोह का शंखनाद और सनातन संस्कृति का घोष था। आजादी के हर बांकुरे में जोश भर देने वाला स्वर था ? वन्दे मातरम्।

महोदय, धन्य है वह मां, जिसने बंकिम चन्द्र चटर्जी जी को जन्म दिया। सन् 1875 में बंकिम चन्द्र चटर्जी जैसे विद्वान रचनाकार और राष्ट्रभक्त ने इस गीत की रचना की। उन्होंने यह गीत ही नहीं लिखा, बल्कि भारत की आत्मा को शब्दों में ढाला और भारत माता को एक पवित्र रूप में प्रतिष्ठित किया। वन्दे मातरम् के नारे ने अंग्रेजों के शासन के विरुद्ध संघर्ष को एकजुटता और उत्साह से भर दिया।

महोदय, वंदे मातरम् के मंत्र ने देश को एकजुट किया, जिसने अंग्रेजों को देश छोड़ने पर मजबूर किया।

महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि यह गीत स्वतंत्रता से पहले भी क्रांति था और स्वतंत्रता के बाद भी भारत की राष्ट्रीय चेतना है। अंग्रेज साम्राज्य ने इस गीत से डर महसूस किया, क्योंकि इसकी हर पंक्ति में देशभक्ति दिखाई देती थी और अंग्रजों

को इससे डर लगता था। ब्रिटिश शासन ने इस पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास भी किया, क्योंकि यह गीत जन-जन को जागृत कर देता था और आजादी की लड़ाई के लिए प्रेरित करता था।

महोदय, जहां-जहां यह गीत गूंजता था, वहां-वहां आंदोलन खड़े होते, सत्याग्रह जन्म लेते, क्रांतिकारी एकजुट होते और युवा देश के लिए प्राण देने को तैयार हो जाते।

महोदय, अंग्रेजों को डर भी क्यों नहीं लगता, क्योंकि वंदे मातरम् ने लाखों भारतीयों की नसों में ऊर्जा भर दी थी। मैं कहना चाहता हूं कि महान क्रांतिकारी भगत सिंह जेल की कालकोठरी में इसे गाते थे।

महोदय, नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद फौज की रैलियों में वंदे मातरम् गर्जन बनकर उठता था। राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्लाह खान जैसे अमर बलिदानियों का यह राष्ट्रगान पसंदीदा था। चंद्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस, लाला लाजपत राय, सरोजिनी नायडू, सभी इस गीत से प्रेरणा लेकर आजादी के संघर्ष में उतरे थे। अंग्रेजों ने भले ही हथियार उठाए हों, लेकिन, हमारे वीरों ने वंदे मातरम् को हथियार बना लिया था। यह वह मंत्र है, जिसे सुनकर अंग्रेज आगबबूला हो जाते थे और देशभक्तों पर अत्याचार करते थे।

महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि यह गीत, जिसे 150 वर्षों पहले लिखा गया था, वह आज भी उतना ही ताजा, उतना ही ओजस्वी और उतना ही ऊर्जावान है। वंदे मातरम् आज भी युवाओं को प्रेरित करता है, सैनिकों को उत्साहित करता है, मां भारती के प्रति श्रद्धा जगाता है और भारत को एक सूत्र में बांधने का काम करता है। वह मंत्र है - वंदे मातरम्।

महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि 150 साल बाद भी यह गीत कोई पुरानी कविता नहीं, बल्कि एक जीवित राष्ट्रीय भावना है।

महोदय, वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर जहां मैं यह चर्चा कर रहा हूं, वहां भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल जी का नाम मैं जरूर लूंगा, क्योंकि उनकी जन्म जयंती को भी 150 वर्ष पूरे हो रहे हैं। उन्होंने भी वही काम किया, जो वंदे मातरम् ने किया। यदि बंकिम चंद्र चटर्जी ने राष्ट्र की भावना को जन्म दिया, तो सरदार वल्लभ भाई पटेल की उस भावना ने देश को एकता के सूत्र में बांधने का काम किया। 565 रियासतों को एक सूत्र में बांधकर अखंड भारत का निर्माण करना, इतिहास में ऐसा दूसरा उहाहरण दुनिया में नहीं मिलता। आज यह देश गर्व के साथ कहता है कि भारत एकजुट है, क्योंकि पटेल थे।

महोदय, मैं आपका ज्यादा समय न लेते हुए अंत में इतना तो जरूर कहना चाहता हूं कि आज वंदे मातरम् के 150 वर्ष का यह महोत्सव इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत में राष्ट्रवाद की एक नई ऊर्जा, एक नई चेतना जागी है, जिसके केंद्र हमारे प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी हैं। आज जब विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी भारत की धरती पर खड़ी है, यह मोदी जी के नेतृत्व में पटेल के प्रति राष्ट्र की कृतज्ञता का सबसे अद्भुत प्रतीक है। मोदी जी ने हमेशा राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए काम किया है।

महोदय, मैं अंत में सिर्फ इतना ही कहना चाहूंगा कि भारत माता सिर्फ सम्मान की ही नहीं बल्कि अराधना की भी पात्र हैं। यह बहुत बड़ी विडंबना है कि जिस गीत ने भारत को आजादी दिलाई, उसी गीत को गाने में कांग्रेस संकोच करती है। भारत माता की जय कहने में भी कांग्रेसियों को शर्म आती है। कांग्रेस नेताओं ने वंदे मातरम् के गायन पर आपत्ति जताई थी।

महोदय, मैं अंत में आज यह गर्व से कहना चाहता हूं कि जम्मू-कश्मीर में आर्टिकल-370 हटने पर कहा जाता था कि धारा-370 हटी, तो यहां तिरंगा नहीं फहराया जाएगा। एक समय था, जब यह कहा जाता था। लेकिन, आज वहां वादियों में, स्कूलों और बाजारों में वंदे मातरम् हर रोज गूंज रहा है। वर्गों द्वारा सांस्कृति कार्यक्रम किए जा रहे हैं। ये 150 वर्ष सिर्फ वंदे मातरम् के ही नहीं, बल्कि मानसिक गुलामी के 150 वर्षों का भी अंत है।

महोदय, अपनी बात को समाप्त करते हुए मैं यह कहना चाहता हूँ कि हमें वंदे मातरम् को केवल गीत के स्वरूप में नहीं, बल्कि जीवन-शैली के रूप में अपनाना चाहिए। इसे हमें अपने दिल में बसाना चाहिए और हर कार्य में अपने देश के प्रति अपनी निष्ठा और प्यार को प्रदर्शित करना   चाहिए। वंदे मातरम्।

***m85श्री आनंद भदौरिया (धौरहरा) :** सभापति महोदय, धन्यवाद। मैं अपनी पार्टी समाजवादी पार्टी, अपने नेता पीडीए महानायक आदरणीय अखिलेश यादव जी के आशीर्वाद से अपनी बात रखने के लिए खड़ा हुआ हूँ।

मैं इस अवसर पर लोक सभा के आदरणीय अध्यक्ष जी का अभार प्रकट करना चाहता हूँ कि डेढ़ सौ वर्ष पहले मातृभूमि के वंदन का जो गीत था, जो आज़ादी के परवानों का तराना था, आज इस महान सदन में उस पर चर्चा करवाकर माँ भारती के चरणों में शब्द रूपी पुष्प अर्पित करने का हम लोगों को सौभाग्य प्रदान किया है।

आदरणीय सभापति जी, जब वंदे मातरम् की गूंज कानों में पड़ती है, तो हमारे मन-मस्तिष्क में ब्रिटानिया हुकूमत के सामने डटकर मुकाबला करने वाले शहीद अशफाक उल्ला ख़ान, रामप्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह जैसे तमाम अमर शहीदों के चेहरे नजर आते हैं, जिन्होंने हँसते-हँसते फाँसी के फंदे को चूमने का काम किया।

<u>23.22 hrs</u> (Hon. Speaker *in the Chair*)

हमें जेलों में यातनाएं सह रहे तमाम अमर शहीद नजर आते हैं, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी नजर आते हैं। हम उन सबकी पुण्य स्मृतियों को आज इस अवसर पर सादर नमन करते हैं। इसके साथ ही साथ, देश ने सरदार पटेल जी की 125वीं जयंती मनाई है। हम इस अवसर पर उनके चरणों में भी श्रद्धा सुमन समर्पित करते हैं। चाहे इधर के लोग हों, चाहे उस तरफ के बैठे हुए लोग हों, जो अभी सरकार में हैं, क्या आज आत्ममंथन का समय नहीं है? आज किसान, जो दो वक्त की रोज़ी-रोटी के लिए संघर्ष कर रहा है, जो कर्ज़ के बोझ तले दबा हुआ है और आत्महत्या करने को मजबूर है। आज बेरोज़गार नौजवान नौकरी के लिए दर-दर भटक नहीं रहा है। महँगाई ने आम आदमी का जीना दूभर कर दिया है, क्या इस पर हम लोगों को आत्म मंथन नहीं करना चाहिए? आज जब हम 150 वर्षों की बात कर रहे हैं, तो हमें याद रखना आवश्यक है कि वंदे मातरम् केवल भावनाओं का गीत नहीं, बल्कि हमारे संवैधानिक इतिहास का भी अभिन्न हिस्सा है। वंदे मातरम किसी एक दल की संपत्ति नहीं है, यह पूरे राष्ट्र की साझा धरोहर है। मैं चाहता हूँ कि देश में मनाए जाने वाले हर कार्यक्रम में वंदे मातरम्

के साथ-साथ संविधान की प्रस्तावना भी पढ़ी जाए, ताकि हम याद रखें कि जिस माँ की हम वंदना कर रहे हैं, उसी माँ ने हमें लोकतंत्र, न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की सौगात दी है।

अध्यक्ष जी, मैं बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय जी, गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर सहित तमाम ज्ञात-अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों को नमन करते हुए केवल इतना कहना चाहता हूँ कि वंदे मातरम नहीं, वंदित मातृभूमि के प्रति हमारी जिम्मेदारी ही इस गीत का सच्चा अर्थ है। आपने मुझे समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। वंदे मातरम। जय हिंद। जय भीम। जय समाजवाद।

***m86डॉ. शिवाजी बंडाप्पा कालगे (लातूर) :** आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका और अपनी कांग्रेस पार्टी के नेता तथा लातूर की जनता का धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने मुझे आज इस अत्यंत पावन और ऐतिहासिक विषय पर सदन में अपनी बात रखने का अवसर दिया। हम सभी आज उस अमर राष्ट्र गीत वंदे मातरम् की रचना के 150 वर्ष पूरे होने का उत्सव मना रहे हैं।

यह गीत मात्र एक रचना नहीं, बल्कि हमारी आजादी की लड़ाई का संकल्प है, यह भारत की बहुलतावादी संस्कृति का उद्घोष है, और यह हर भारतीय के हृदय में राष्ट्र-प्रेम का शाश्वत स्रोत है। अध्यक्ष महोदय, यह इतिहास का एक निर्विवाद सत्य है कि इस गीत को राष्ट्रीय फलक पर स्थापित करने का श्रेय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को जाता है। महोदय वर्ष 1896 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने इसे पहली बार गाया और तभी से यह गीत स्वतंत्रता आंदोलन का आधिकारिक उद्घोष बन गया।

अध्यक्ष महोदय, वर्ष 1905 के बंगाल विभाजन के खिलाफ हुए स्वदेशी आंदोलन में 'वन्दे मातरम्' ही जन-जन का नारा बना। हमारे महान नेता, चाहे वह लाला लाजपत राय जी हों, श्री अरबिंदो घोष जी हों, सभी ने इस मंत्र को अपनी शक्ति का आधार बनाया। यह गीत मृत्यु पर विजय का प्रमाण था। खुदीराम बोस से लेकर हमारे असंख्य गुमनाम क्रांतिकारियों ने फाँसी के फंदे पर भी 'वन्दे मातरम्' का उद्घोष किया। कांग्रेस ने हमेशा इस गीत को सर्वोच्च सम्मान दिया, क्योंकि यह भारत के सभी प्रांतों और समुदायों को जोड़ने वाला पुल था। मैं यहाँ उन ऐतिहासिक तथ्यों को स्पष्ट करना चाहता हूँ, जिन पर अक्सर भ्रम फैलाने का प्रयास किया जाता है। यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ही थी जिसने अत्यंत बुद्धिमत्ता और संवेदनशीलता के साथ राष्ट्रीय गीतों के महत्व को स्थापित किया।

अध्यक्ष महोदय आजादी के बाद हमारी संविधान सभा ने गहन विचार-विमर्श कर के सर्वसम्मति से 'जन-गण-मन' को राष्ट्रगान और 'वन्दे मातरम्' को राष्ट्रीय गीत का दर्जा दिया। यह फैसला इसलिए लिया गया ताकि राष्ट्रगीत की ऐतिहासिक और भावनात्मक शक्ति बनी रहे। साथ ही, राष्ट्रगान की संवैधानिक अनिवार्यता भी स्थापित हो।

अध्यक्ष महोदय, जिस फैसले का बार-बार उल्लेख किया जाता है- सन 1937 में कांग्रेस कार्यसमिति ने यह स्पष्ट किया था कि 'वन्दे मातरम्' के शुरुआती दो पद भारत माता की वंदना के रूप में सर्वथा स्वीकार्य हैं और देश इसे राष्ट्र-गीत के

रूप में स्वीकार करता है। यह फैसला राष्ट्र की एकता और सभी समुदायों की भावनाओं के बीच संतुलन बनाने के लिए लिया गया था, ताकि यह महान गीत कभी भी किसी राजनीतिक विवाद का हिस्सा न बने।

अध्यक्ष महोदय, एक मिनट समय और दीजिए। अगर हम सही तरीके से 'वन्दे मातरम्' और देश के स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान करना चाहते हैं, तो हमें संविधान का सम्मान करना पड़ेगा। चुनाव निष्पक्ष कराने पड़ेंगे और चुनावों में होने वाला भ्रष्टाचार कम करना होगा। सभी युवाओं को सस्ती शिक्षा और बेरोजगारों को काम देना होगा। सभी माता, बहनों को सुरक्षा देनी होगी। सभी को अच्छी हेल्थ की सुविधाएं देनी होंगी। किसानों को उनकी उपज का सही दाम देना होगा। सभी नागरिकों को शुद्ध पानी और पेट भर खाना देना होगा। यही 'वन्दे मातरम्' का सही सम्मान होगा। धन्यवाद। जय हिंद, वंदे मातरम्।

***m87श्री देवेन्द्र सिंह उर्फ भोले सिंह (अकबरपुर) :** आदरणीय अध्यक्ष जी, वंदे मातरम् पर चर्चा में आपके द्वारा मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया गया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी से अनुरोध किया था और उन्होंने आपसे यह बात कही इसके लिए आपको बार-बार धन्यवाद देता हूं। वंदे मातरम् पर लोकसभा में परिचर्चा का निर्णय अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसकी अनुगूंज हर भारतीय को प्रेरित करती है, गौरवान्वित करती है और एकता का संदेश देती है।देश के विद्यालयों में नित्य प्रति इसका गायन हमारे देश की पौथ में देश के प्रति एक समझदारी विकसित करती है। जवाबदेही उत्पन्न करती है और देश प्रथम की भावना को बलवती बनाती है। यह भी एक सुखद संयोग है कि वंदे मातरम की रचना के 150 वर्ष अभी पूर्ण हुए हैं, किंतु इस राष्ट्रीय गीत की उपयोगिता, प्रासंगिकता और निरंतरता उत्तरोतर उत्कर्ष की ओर अग्रसर है और इस स्थिति से हम सभी अभिभूत है। इस गीत की रचना सन 1875 में श्री बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा की गई और उनके उपन्यास आनंदमठ में इसे शामिल किया गया। मान्यवर, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय जी के तरीके से उनके पद चिन्हों पर चलने वाले हमारी लोकसभा क्षेत्र में जन्मे देशभक्त, स्वतंत्रता सेनानी श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' जी का जन्म 9 सितंबर 1896 को कानपुर के नरवल ग्राम में हुआ था, जो हमारे क्षेत्र का एक हिस्सा है। उनके पिता का नाम विश्वेश्वर प्रसाद और माता का नाम कौशल्या देवी था। महात्मा गाँधी, प० मोतीलाल नेहरु, गोविन्द वल्लभ पन्त, जमना लाल बजाज, महादेव देसाई, राजश्री पुरुषोत्तमदास टंडन, सोहन लाल द्विवेदी, राम नरेश त्रिपाठी, प० लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री, गणेश शंकर विद्यार्थी और प० प्रताप नारायण मिश्र जी के साथ भी उन्होंने काम किया है।

श्यामलाल जी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक सेनानी थे। उन्होंने असहयोग आंदोलन, नमक आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया। उन्हें कई बार गिरफ्तार किया गया और वे कई वर्षों तक जेल में रहे। कानपुर में जन्मे भारत माता के पुत्र श्यामलाल गुप्त जी का यह गीत आज भी भारत में बहुत लोकप्रिय है, जो कि 13 अप्रैल, 1924 में जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद कानपुर के फूल बाग में उनके द्वारा गाया था?

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,

झंडा ऊंचा रहे हमारा।

सदा शक्ति बरसाने वाला,

प्रेम सुधा बरसाने वाला,

वीरों को हरषाने वाला,

मातृभूमि का तन-मन सारा,

झंडा ऊंचा रहे हमारा।

स्वतंत्रता के भीषण रण में,

लखकर बढ़े जोश क्षण-क्षण में,

कांपे शत्रु देखकर मन में,

मिट जाए भय संकट सारा,

झंडा ऊंचा रहे हमारा।

इस झंडे के नीचे निर्भय,

लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय,

बोलें भारत माता की जय,

स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा,

झंडा ऊंचा रहे हमारा।

एक साथ सब मिलकर गाओ,

प्यारा भारत देश हमारा,

झंडा ऊंचा रहे हमारा।

इसकी शान न जाने पाए,

चाहे जान भले ही जाए,

विश्व-विजय करके दिखलाएं,

तब होवे प्रण पूर्ण हमारा,

झंडा ऊंचा रहे हमारा।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,

झंडा ऊंचा रहे हमारा।

मान्यवर, मैं एक मिनट में अपनी पूरी बात बताना चाहता हूं। 24 जनवरी, 1950 को इस गीत को संविधान सभा ने राष्ट्रीय गीत के रूप में मान्यता दी। वंदे मातरम् का शाब्दिक अर्थ है? मां, मैं तुम्हे नमन करता हूँ। यह एक ऐसा वाक्य है, जो समस्त भारतवासी परिजन के रूप में दिखाई देते हैं, उसके लिए माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी राष्ट्र प्रथम विचारधारा के रूप में कार्य कर रहे हैं। वर्तमान संदर्भ में इसकी चर्चा न केवल भारत के भूभाग को अंगीकृत किये हुए उसकी विशेषताओं का बखान करता है, बल्कि उसकी पारिवारिक स्थितियों को समाहित किए हुए इसके भावनात्मक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहलुओं को भी पर्याप्त रूप से रेखांकित करता है।

यह गीत भारत की एकता, साहस, आत्मबल और देशभक्ति को भी दिखाता है। इसका गायन व श्रवण हमें देश के प्रति, अपने कर्तव्यों के प्रति न केवल सजग बनाता है, बल्कि अनवरत हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देता रहता है। हमारे यहां देश भक्ति पर लिखे गए साहित्य की बहुतायत है तथा इसी वजह से हम लोग भौगोलिक, सांस्कृतिक और भाषाई भिन्नताओं के वावजूद एकसूत्र में मजबूती से बंधे हुए हैं।

यहाँ इस बात का उल्लेख करना भी मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है। केंद्र में भाजपा नीत सरकार और यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी व यशस्वी मुख्य मंत्री जी के कुशल नेतृत्व में सांसद सदस्यों को आबंटित की गई एमपी लैड योजना की धनराशि में से लगभग 60 लाख रुपये से अधिक लगाकर वहां एक पुस्तकालय का भवन बनाया गया। तत्कालीन राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी के द्वारा इसका उद्घाटन किया गया।

वंदे मातरम् गीत का प्रभाव अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी है, जिसे वर्ष 1907 में मैडम भीखाजी कामा ने बर्लिन में, वर्ष 1909 में मदन लाल ढींगरा ने इंग्लैंड में इसका उद्घोष किया। वर्ष1912 में गोपाल कृष्ण गोखले का केपटाउन में स्वागत वंदे मातरम् के जयकारे से किया गया। हम लोगों की यह सामूहिक जिम्मेदारी है कि वंदे मातरम् गीत की भावना एवं प्रेरणा को देश के घर-घर तक प्रचारित-प्रसारित करें और देश भक्ति की उत्कृष्ट भावना का संचार करें।? (व्यवधान)

हमारे देश के यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी आज पूरे देश में यही कार्य कर रहे हैं। जब हम आजाद हुए थे, तो उस समय हम किस स्थिति में थे और उसके बाद आज हम कहां पहुंचे हैं? नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में वर्ष 2047 में विकसित भारत का जो संकल्प है, उसे सामने बैठे हुए लोग किसी न किसी तरीके से रोकने के प्रयास में लगे रहते हैं। लेकिन हमारी जो भावना है, हमें अपना कार्य करने से कोई रोक नहीं सकता है।

इन्हीं शब्दों के साथ वंदे मातरम् कहते हुए मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं। जय हिंद, जय वंदे मातरम्।

माननीय अध्यक्ष : नीरज मौर्य जी, आप दो मिनट में अपना भाषण समाप्त कर दीजिएगा। घड़ी देख लीजिए।

***m88श्री नीरज मौर्य (आंवला) :** धन्यवाद माननीय अध्यक्ष महोदय । मैं आपका धन्यवाद इसलिए भी करूंगा कि आपने राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् के 150 साल पूरे होने पर इस सदन में चर्चा कराई । माननीय अध्यक्ष महोदय, आज मैं बंकिम दा को भी नमन करता हूं । राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् 150 साल से इस देश के कोने-कोने में लोगों के हृदय में वास कर रहा है । आज इस गीत को यहां पर बहुत सारे लोगों ने अपने-अपने माध्यम से रखा ।

वंदे मातरम्

हे मातृभूमि, तुम्हें नमन ।

सुजल भूमि, सुफल भूमि

मलय पर्वत की ठंडी हवाओं वाली

लहलहाती फसलों से ढकी हे जननी!

वंदे मातरम् ।

चांदनी रात में आभा बिखेरती हुई

फूलों से सजी, वृक्षों से शोभित धरा

मधुर हंसी, मधुर भाषा वाली

सुख देने वाली, वरदान देने वाली

हे माता! तुम्हें शत्-शत् नमन

वंदे मातरम् ।

मान्यवर, यह जो भाव है, आज अगर सारे भारतवासी इस पर काम करें, तो शायद जिस भाव की आज से 150 साल पहले जिसकी कल्पना की थी, वह तभी संभव है, क्योंकि आज हम देख रहे हैं कि सुजल भूमि, सुफल भूमि करने वाला जो अन्नदाता हमारा किसान है, वह किसान आज परेशान है । किसान जब भूखा मरता है, ऋण के बोझ से मरता है, आत्महत्या करता है, तो मन आहत होता है ।

मान्यवर, इसमें पहाड़ों की कल्पना की गई है, पर आज पहाड़ों पर किस तरह की त्रासदी आ रही है? मैं आपके माध्यम से सरकार से अपील करूंगा कि प्राकृतिक आपदाओं से देश को कैसे बचाया जाए? पहाड़ों पर जो घटनाएं हो रही हैं, उनसे देश को कैसे बचाया जाए, इसके लिए रोड मैप की आवश्यकता है ।

मान्यवर, आज भारत के 70 प्रतिशत लोगों को स्वच्छ जल नहीं मिल रहा है। हमारे देश के माननीय प्रधान मंत्री जी एक बड़ी महत्वकांक्षी योजना लेकर आए- ?हर घर नल जल योजना? । मान्यवर, मैं बहुत ही दृढ़ता के साथ यह कहना चाहता हूं कि इस योजना में भ्रष्टाचार की दीमक लग गई है। मान्यवर, जैसे आज चर्चा इस पर हो रही है, उसी तरह से ?हर घर नल जल योजना? पर भी सदन में चर्चा कराकर इस महत्वाकांक्षी योजना को जमीन पर मूर्त रूप दिया जाए, जिससे लोगों को स्वच्छ जल मिल सके।

मान्यवर, आज नौजवानों को रोजगार नहीं मिल रहा है। जो हमारे पी.डी.ए. के लोग हैं, उनको शिक्षा नहीं मिल रही है, चिकित्सा नहीं मिल रही है। जो मूलभूत सुविधाएं हैं, उनसे उनको वंचित किया जा रहा है। मान्यवर, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि आज यह कहा जा रहा है कि वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाएंगे, लेकिन इन 11 सालों में एक विकसित गांव नहीं बन पाया, एक स्मार्ट सिटी नहीं बन पाई।? (व्यवधान)

***m89श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज) :** नीरज जी, चर्चा वंदे मातरम् पर हो रही है और अभी आपने सुना कि कितनी जगह पर वंदे भारत गाड़ियां चल रही हैं।

माननीय अध्यक्ष : जगदम्बिका पाल जी, आप कितनी देर तक बोलेंगे?

श्री जगदम्बिका पाल : अध्यक्ष जी, मैं आपका अत्यंत आभारी हूं। मैं इस बात के लिए आभारी हूं कि मैं समझता हूं कि सदन के माध्यम से आज पूरा देश, पूरा विश्व इस बात को देख रहा होगा कि 150 वर्ष पूर्व अंग्रजों ने डिवाइड एंड रूल करके बंगाल को बांटने को कोशिश की। उस समय पूर्वी और पश्चिमी बंगाल का चाहे हिंदु हो या मुसलमान, वह उस बंटवारे के खिलाफ था। उस समय जो चिंगारी निकली, वही वंदे मातरम् की चिंगारी थी, वही बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की चिंगारी थी। आज उसको जिस नजरिए से लोगों ने कहा, जैसे आज कांग्रेस की नेत्री ने कहा कि इसकी चर्चा करने की क्या जरूरत है? इसकी जरूरत इसलिए है कि जब इसके 100 वर्ष पूरे हुए थे, तब चर्चा होनी चाहिए थी। लेकिन 100 वर्ष पूरे होने पर वर्ष 1975 का वह आपातकाल याद आ रहा है। जैसे अंग्रेजो ने सारे अधिकार छीने, उसी तरह से वर्ष 1975 में जब वंदे मातरम् की चर्चा इस सदन में होनी चाहिए थी, उस समय अखबारों पर सेंसर लगाया गया, बेगुनाह लोगों को मीसा में बंद किया गया,? (व्यवधान) मौलिक अधिकारों को छीना गया। इसलिए आज इस वंदे मातरम् की चर्चा की जरूरत है। कांग्रेस के एक उप नेता ने कहा कि हमारे अशफाक उल्ला साहब उस पक्ष में थे कि वंदे मातरम् होना चाहिए।? (व्यवधान) अगर आपके सबसे बड़े नेता अशफाक उल्ला साहब पक्ष में थे, रफी अहमद किदवई पक्ष में थे, तो फिर आपने वंदे मातरम् के पंख को काटने की क्यों हिमाकत की है?

अब दोहरी राजनीति नहीं चलेगी।?(व्यवधान) मेरे पास आंकड़ें हैं। वर्ष 1907 में लाहौर की गलियों में भी वंदे मातरम् गूंजता था। ढाका के मजिस्ट्रेट ने भी लिखा था, जब बंग का डिविजन हो रहा था, पूर्वी-पश्चिमी बंगाल का बंटवारा हो रहा था, तो सभी हिन्दू-मुस्लिम वंदे मातरम् गा रहे थे। वर्ष 1930 के बाद केवल तुष्टिकरण के लिए इसका विरोध हुआ है। आज डेढ़

सौ वर्षों के बाद नरेन्द्र मोदी जी ने वंदे मातरम् पर चर्चा कराई है और आपने इस पर 12 घंटों तक चर्चा की है। यह आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगा। इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

***m90माननीय अध्यक्ष :** माननीय सदस्यगण, आज इस सदन में राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् की 150 वर्ष की यात्रा पर 66 माननीय सदस्यों ने अपने विचार अभिव्यक्त किए हैं। सम्पूर्ण देश देख रहा है कि अर्धरात्रि को भी सभी माननीय सदस्यों ने वंदे मातरम् की 150 वर्ष की यात्रा में जिस तरह से त्याग, समर्पण और सेवा की है,मुझे आशा है कि हम सभी सदन में सामूहिकता के साथ मिल कर इस देश को इसी तरह से आगे बढ़ाते रहेंगे और इसी तरीके से ऐसे विषयों पर, जो हम सभी को गौरवान्वित करते हैं, यहां एक सक्रिय भागीदारी के साथ उन पर सकारात्मक चर्चा होती रहेगी।